2270 ११

* जय सियराम *

*:श्रीः *

॥ सतगुरु कृपा प्रकाश ग्रन्थान्तर ॥

वृहद् उपासना रहस्य

(प्रसङ्गावली)

जिसको

जय सियराम जय जय सियराम नामध्वनि प्रचारक
श्रीवैष्णव धर्म्मावलम्बी परमहंस
...१०८ श्री सियालाल शरणजी
...राज उपनाम श्री
...लताजू ने निर्माण
किया।

उसीको
... ...मसखी देवी तथा मुंशी श्री रामकुमार
लाल क्लर्क रामघाट बनारस वाले ने

पं० व्यङ्कटेशशास्त्री द्राविड़ बी० ए० द्वारा—
साङ्गवेदविद्यालय प्रेस, कैलासभवन, रामघाट काशी में
छपवाकर प्रकाशित किया।

तीसरीबार १००० [सम्वत् १९८६]

* जय सियराम *

जय सियराम जय जय सियराम जय सियराम

जय सियराम जय जय सियराम जय सियराम

* श्रीः *

॥ सतगुरु कृपा प्रकाश ग्रन्थान्तर ॥

वृहद् उपासना रहस्य

(प्रसङ्गावली)

जिसको

जय सियराम जय जय सियराम नामध्वनि प्रचारक
श्रीवैष्णव धर्म्मावलम्बी परमहंस
श्री १०८ श्री सियालाल शरणजी
महाराज उपनाम श्री
प्रेमलता जू ने मिर्माण
किया ।

उसीको

श्रीमती श्रीरामसखी देवी तथा मुंशी श्री रामकुमार
लाल क्लर्क रामघाट बनारस वाले ने
पं० व्यङ्कटेशशास्त्री द्राविड़ बी० ए० द्वारा—
साङ्गवेदविद्यालय प्रेस, कैलाशभवन, रामघाट काशी में
छपवाकर प्रकाशित किया ।

तीसरीबार १००० [सम्वत् १९८६]

सूचना ।

प्रिय पाठक, संत, सज्जन, जनों को विदित हो, की इस ग्रंथ में जिन्ह२ पृष्ट पंक्तियों में असुद्धी होगई है, सो सुद्धासुद्ध पत्र जो आगे लगा है, उससे नम्बर वार सुद्ध करिलें, जिसमें पाठ करते समय अर्थ में भ्रम न हो, और ध्यान रहे की ७२ वें पृष्ट से ८० पृष्ट तक नम्वर गड़वड़ है, ८१ नम्बर से क्रमसे है, कथा का क्रम वरावर ठीक हैं, केवल धोखे से दो फर्मे में एकही नम्बर छप गये हैं सो ।

सो सुधारि हरि जन सव लेहीं ।
दलि दुख दोष विमल जस देहीं ॥

इति

श्री हनुमान्नाटके ।

कल्याणानां निधानं कलि मल मथनं पावनं पावनानां ।
पाथेयं यन्मुमुक्षोः सपदि पर पद प्राप्तये प्रस्थितस्य ॥
विश्रांम स्थान मेकं कविवर वचसां जीवनं सज्जनानां ।
बीजंधर्म द्रुमस्य प्रभवतु भवतां भूतये राम नाम ॥१॥
सीता समेतं रघुवीर नाम जपन्ति जे नित्य मघौघ हारी ।
ते पुन्यवन्तः खलु भाग्यवन्तः परं पदं याति स्ववर्ग युक्तः॥

भूमिका ।

विदित हो, कि यह वृहद् उपासनारहस्य ग्रंथ को श्री सीता-रामजी महाराजने अपना नाम रटाय रटाय करीव चालीश वर्ष वाद ग्रंथकार द्वारा निर्मान कराया, जेहि पर कृपा करहिं जन जानी। कवि उर अजिर नचावहिं वानी ॥ सो जानै जेहि देहिं जनाई। इस ग्रंथ में १४ प्रसंग वर्णन किये हैं, जिन्हि में सम्पूर्ण वेद सास्त्र पुराणादि भगवत धर्म उपासना वेत्ता सज्जनों का यथार्थ सिद्धान्त निरूपन है, नवीन होने के कारण विना समुझाये अवूझनि की वूझ में इसका सत्य सिद्धान्त सिघ्र न आने से सन्देह जनक अवस्यही होगा। सो नई वात नहीं है प्रथम नवीन अवस्था में सवही ग्रन्थों का आन्दोलन होता ही आया है। अपनी अपनी वुद्धि के अनुसार निन्दा अस्तुति तौ जीव, भगवान की भी कियाही करते हैं। निर्विरोधिनो सुद्ध सात्विकी वुद्धि वाले गुरुमुख जीवों को सुद्ध भगवत उपासना का तत्त्र भासता है। दूसरों को नहीं, ज्ञान दृष्टि से प्रथम श्री गुरू प्रसंग गुरु करने वाले इस ग्रन्थ में देखैं, गुरु कैसा करना चाहिये। कौन २ पदार्थों का बोधक गुरू होना चाहिये, आत्मा जो बहिरङ्ग नश्वर पदार्थों में आसक्त हो अपना स्व स्वरूप भूलि गई है। उसे स्त्र स्त्ररूप का वोध कराय चेतावै, सम्यक् प्रकार की शंका समाधान करि सावधान करै, पुनःप्रभु के श्री नामादि वोध करावै, उपासना की राह दिखावै, श्री सीताराम जी महाराज की परिचर्या अर्थात् अष्ट याम की भावना बतावै, पुनः षट शरणागत, अरु षटसम्पत्ति, तथा प्रेम भक्ति अर्चना की रीति, अरु अर्थपञ्चक, रहस्यत्रय,

तत्वत्रय, श्रीङ्गारादिक पञ्चरस, सालोक्यादि पञ्च मुक्ती त्रपादादि प्रभु की बिभूती, इत्यादि कों का भले प्रकार बोध-कराय दे, पुनः गर्भ से चितागत तक का कौतुक दिखाय देइ, प्रभुके नाम रटने वालों से दश अपराध, तैसेही पूजकोंसे पूजा में ३२ अपराध, सतसंगियों से सतसंगमें ८२ अपराध, हो जातेहैं। सो सब का स्वरूप बताय उन्ह से बचावै, बहुरि द्वैता द्वैत, विशिष्टा द्वैतादिचतुः सिद्धान्तों में मुख्यामुख्यका भेद दिखावै, जीवों को तारने औ बुड़ाने वाला गुरू होता है। इस वास्ते गृहस्थ तथा विरक्त भाइयों को बढ़ियाँ गुरु करना चाहिये। ऐसा न होय दोहा—गली गली गुरुआ फिरैं हमते मन्तर लेउ। नर्क जाउ बा स्वर्ग तुम टका पहनी देउ॥ मोर दास कहाय नर आशा। करै तो कहहु कहाँ विश्वासा॥ तुलसी याचक भक्त पर रघुवर की रुचि नाँहिं। कपि दल लै लङ्का गये, नर न रहे जग माँहि॥ अरु, अमली होकर धरै ध्यान। गृही हो कैं कथै ज्ञान। योगी हो कै कूटै भग। कहैं कबीर तीनों ठग॥ लोभो गुरू लालची चेला। नर्क कुंड महँ ठेलमठेला॥ गुरु शिष अन्ध बधिर कर लेखा। एक न सुनै एक नहिं देखा। हरै शिष्य धन शोक न हरई। सो गुरु घोर नर्क महँ परई, इत्यादि, दम्भी, पाखंडी, लोभी, लम्पट, उपासना हींन गुरुअनि से जिन्हि को बचना होय, अरु उत्तमाचार्य्य गुरु करने की इच्छा होय, यथार्थ उपासना श्री सीताराम जी की ठीक ठीक निजात्मबोध, ऊपर लिखी सम्पूर्ण बातों का भली भाँति ज्ञान होने की, औ श्रीसियाराम नाम रटन के प्रेमकी चाह, हो तौ, इस श्री वृहद् उपासना रहस्य ग्रन्थ को गुरुमुख होय, सुद्ध सात्विकी बुद्धि से पढ़िये सुनिये, निरन्तर पाठ करिये, देखिये कैसा थोरे ही दिनों में श्री सीताराम जी में मन लगि जाता है। जो जो विषय श्री वैष्णवों को जरूरी जानना चाहिये, सो सो इसमें

भली भाँति वर्णन किये गये हैं। जो ध्यान देकर बारबार पढ़ेंगे, सो उत्तम वैष्णवता को पावेंगे, आत्मा औ परमात्मा का ज्ञान इसके समुझने से अवश्य हो जायगा, देहादि नश्वर अभिमान नानात्व अज्ञान दूर हो जायगा। असली नकली वैष्णवों की पहिचान हो जायगी, इस ग्रंथ को पढ़ने वारे नकलियों के फन्दे में परि कभी नष्ट न होइँगे। न कभो उत्तम श्री वैष्णव धर्म से विचलित होयँगे। परात्पर श्री सीतारामजी महाराज के नाम, रूप, लीला, धामादि की उपासना के पक्के ज्ञाता होवेंगे, जो बातें छिपी रहीं, वड़ी कठिनाई से गृहस्त लोगों को मिलती रहीं, जिन्ह के न जानने से उपासकों को वड़ी हानि रही, सो सब खोजि खोजि के प्रकाशित करि दी है। उपयोगी समुझिकै, जिन्हि को पढ़ि २ अवूझ,उपासना हींन लोग कितने वे जाने वूझे, हो सकैगा तहाँ तक जहाँ तहाँ निन्दा करि करि सज्जनों के चित्तमें घ्रिना का उद्योग करेंगे। आपु गये अरु आनहिं घालहिं। ऐसे जीव जगत में बहुत हैं। सुन्दर वेष बनाय बनाय विचारे गृहस्थों को ठगते फिरते हैं। परन्तु सज्जन लोग नीक विकार सब जानि लेते हैं। निन्दकी तो निन्दा करते हो रहते हैं। ग्रंथ को पढ़ि सुनि समुझि लीजिये, कि कैसा है, यही नहीं, कई ग्रन्थ इनके श्री वैश्नवधर्म प्रतिपादक निर्मित हैं, यथा—श्री प्रेमलता पदावली १ इसमें सवाचार सौ नाना प्रकार के पद हैं। सारसिद्धान्तप्रकाश २ इसमें करीव चार सौ कुंडलियाँ हैं। श्री नामरहस्यत्रयी ३ इसमें कवित्त छन्द सवैयनि में श्री सीता राम नाम महत्व वर्णन किया है। प्रेमलता बारहखड़ो ४ इसमें ककहरादि अक्षरों से प्रभुकी रूपादि की महिमा लिखी है। श्री गुरुमहिमा पदादिक में वर्णन हैं। श्री जानकीजी को स्तुति प्रसिद्ध ही है—उपासना पंचरत्न ६ एक हजार ग्यारह सौ दोहों में नानाप्रकार के

दृष्टान्त गुरु गुरुअनि के भेद वर्णन हैं। श्री श्रीसीतारामरहस्य दर्पण ७ मंजू छन्दों में श्री सीतारामजी के नाना प्रकार के रहस्य वर्णन हैं। और एक बड़ा भारी ग्रंथ श्रीसतगुरु कृपा प्रकाश नाम के लिखे रक्खे हैं। ये सब ग्रन्थ श्रीसीतारामजी के उपासकों के देखने योग्य हैं। कितने सज्जन छपाय २ प्रकाशित कर रहे हैं।

* दोहा *

मायाधारी सन्त की, किमि समुझैं वर बात।
काम कोह मद मोह नद, जो नित गोता खात ॥ १ ॥
चटक मटक सीखेउ अधिक, वेष सु धारेउ अङ्ग।
रटेउ न श्री सियराम मुख, तौ सब फीके ढङ्ग ॥ २ ॥
रटहि खूब सियराम जो, करि सुचि सन्तनि संग।
समुझहिं सो कछु काल महँ, यह रहस्य रस रंग ॥ ३ ॥
सियवर चरित छपाय जग, जो जन करहिं प्रचार।
तिन्हें देइँ सुख सुयश प्रभु, रति गति भगति उदार ॥ ४ ॥

इति भूमिका शुभम्।

आपका—सतगुरुराम शरण मधुरलता।

प्रकाशक ।

श्री सतगुरु पदपद्म शनेही रामसखी अरु रामकुमार ।
अति वड़ भागी जग सुख त्यागी सेवहिं नित सियराम उदार ॥
नाम रूप लीला सु धामके परम उपासक भाव भँडार ।
सियरघुनाथशरण निशिबासर निरखहिं सुछवि युगल सरकार ॥
तन मन धन निवछावरि करि दोउ सियाराम पद सेवत हैं ।
मनुष जन्म कर परम लाभ जेहि सोइ प्रण करि नित लेवत हैं ॥
प्रभु गुरु अर्पण करि प्रसाद सुठि शोक नशावन जेवत हैं ।
सियरघुनाथ सन्त द्विज सज्जन सेइ परम सुख देवत हैं ॥२॥
सोइ प्रिय दोनों भक्त जक्त हित लागि ग्रन्थ यह सुखदाई ।
बृहद उपासन रहस रहस निधि सह श्रद्धा दिये छपवाई ॥
सज्जन सुख प्रद, गुरु प्रसन्नता, अचल कीर्ति जग विच पाई ।
सियरघुनाथ शरण धनि धनि दोउ सन्त जन्म परहित भाई ॥३॥

दोहा—दोउ मामा अरु भानजी, रामघाट के तीर ।
बसहिं बनारस रस भरे, सुमिरहिं सिय रघुबीर ॥ १ ॥
नाम रूप लीलादि के, बड़े उपासक वीर ।
सह श्रद्धा अनुराग युत, लखहिं लखावहिं धीर ॥ २ ॥
सेवहिं नित सियराम पद, भाव भरे अहलाद ।
सुनहिं सुयश सियराम के, पावहिं अनुपम स्वाद ॥ ३ ॥
सोइ दोउ भक्त सु ग्रन्थ यह, श्रद्धा भक्ति समेत ।
छपवायेउ परमार्थ हित, सन्त शनेहिन हेत ॥ ४ ॥
सियबर कीर्ति छपाय जग जे जन करहिं प्रचार ।
तिनहिं देहिं निज धाम प्रभु. अति कृतज्ञ सरकार ॥ ५ ॥

प्रार्थना श्री ग्रन्थकर्त्ता जी की ।

* दोहा *

अवलोकहिं सु प्रसंग ये, सज्जन सुमति समेत ।
आदि अन्त लगि लाय मन, हुइहै हृदय सचेत ॥ १ ॥

मोरे उर न विवेक कछु, विद्या बुधि न विचार ।
कबिताई के दोष गुण, विदित न सारासार ॥२॥

प्रभु गुरु प्रेरि प्रसंग ये, लिखवायेउ मम हाथ ।
कहहिं सुनहिं समुझहिं सुजन, पावहिं सिय रघुनाथ ॥३॥

गुणग्राही मति मान जे, अवलोकहिं चितलाय ।
समुझहिं सारासार सब, मूरख हँसहिं ठठाय ॥४॥

गुणग्राही थोरे जगत, अवगुन ग्राही भूरि ।
गुणग्राही अमिफल चखें, अवगुन ग्राही धूरि ॥५॥

सरनि पङ्क मीनादि जल, घोंघा सोप सिवार ।
भरेउ लेत जेहि भाव जो, निज निज रुचि अनुसार ॥६ ।

तेहि विधि ग्रंथ त्रिकांड मय, कविनि करेउ निर्मान ।
सुजन हंस पय गहहिं गुण, खल बक अगुन अयान ॥७॥

बिगरी मोरि बनाइहैं, सज्जन सन्त मराल ।
हानि कहा खल गन हँसे, जिनहिं न प्रिय सियलाल ॥८॥

* इति प्रार्थना सुभम् *

शुद्धा शुद्ध पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	असुद्ध	सुद्ध
६४	१०	चली	चलीं
,,	१५	ग्रह्म	ब्रह्म
,,	२४	ससकार	संसकार
८९	१९	पत	तप
९०	४	रधि	रिधि
९७	१७	महिं	नहिं
१००	२	तेरा	तीरा
१०८	१२	सु	न
१०९	७	बुराई	दुराई
११३	१९	कोई	सोई
११९	७	विसराई	वहुराई
१२०	२३	श्री	सिया
१३१	९	सुतीय	सतीय
,,	१२	धाम	ध्यान
१३२	२५	तोषत	पोसत
१३५	११	अनुगमी	अनुगामी
१४७	१३	उपसकनि	उपासकनि
१६१	२४	भगवान्	भगवान
१६२	१२	एक तजि नहिं एकै	एकै तजि नहिं एक
१८७	२५	संस्कार बहु	संस्कार चहुँ
१९२	६	रामानंद	रामानँद
१९९	१४	छापति	छापत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४४	२०	कृपा	कृपाल
२४९	१९	सप्रीति	सुप्रीति
२५१	२२	अँग अँग	सँग अँग
२५२	२०	छूटै	छूटैं
२६४	२३	राजै	भ्राजै
२७३	२५	दसुहू	दसहू
२८२	९	को	कोउ
२९४	१७	वरनीं	बरनौं
२९६	६	एक	यक
२९८	८	करिं	करि
३००	११	करिंह	करहिं
,,	२४	को	की
३०५	११	ग्याननि	ग्यानिन
३१२	१७	सांचनि	साँचिन
३१३	१७	देत विवाह	देत विवाहि
३२१	१९	जन्मकी	जन्म कौ
३३२	२	को	कोउ
,,	८	इद्री	इंद्री
३३३	२०	अज्ञर	अक्षर
३३४	१२	मांते	मोते
३३७	२१	सुगुन	सगुन
३३८	४	तिहि	तेहि
३४०	२	एक	यक
३४२	१४	मत	मद
३४८	१७	राम राम	रामनाम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५०	१८	पती	पति
३५२	१४	भोदिहि	भेदिहि
३५२	१६	सनगुरु	सतगुरु
३५३	१६	त्यगी	त्यागी
,,	२२	अत्म	आत्म
,,	२५	बारति	बारत
३५५	६	रहहिं	रही
,,	७	मोंहि	मोहि
३५६	१३	रटे	रटैं
३५७	१५	नाई जाई	नाँई जाँई
३५८	७	तनमुख	तनसुख
,,	२०	धर्महि वर्महि	धर्महिं नर्महिं
३६१	५	कोइ	कोउ
,,	७	मोंहिं	मोहि
,,	८	मोंहि	मोहि
,,	१८	पढ़ैं सुनैं	पढ़ै सुनै
३६२	२१	तजै	तजैं
३७१	१	चतुर्दश	चौधर्मों
,,	३	पाहिं	पाँहि
,,	४	नसहिं	नसाँहिं
३७२	५	अदि	आदि
३७३	७	आपन	आपुहि
३७५	२४	तनको	तनकौ
३७६	२३	प्रगट्या	प्रगटेउ
३७७	१७	को	की

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३८३	१४	अँग	अङ्ग
३८५	१९	आय	आयू
३८७	६	पर्यो	परेउ
३९९	१०	कहेउँ	कहेउ
४०१	२	मति छुदृढ़सु	अतिदृढ़मति
४०३	२	करहिं	कहहिं
"	१०	करै	करैं
४०७	२२	ममन	मनन
४०८	२५	पापिनि	पापनि
४१४	१८	फछु	कछु
४१५	१	जनक	जन
४१९	१	दिंदा	निंदा
४२१	३	चिंचित	किंचित
४२२	५	सुकृत	सुकृतों
"	१३	स्त्रीं	स्त्री
"	१८	कर्मो	कर्मों
"	२०	कर्मो	कर्मों
"	२३	धोवनि	धोवन
४२७	१६	धरन	धारन
४३२	१५	का	के
४३३	११	सुखका	सुखकी
"	१६	सियाराम	सियारामनाम
४३४	२	भई	भईं
४४६	१८	अष्टम	खष्टम
४५२	१२	धन्वंतरि	धनंतरि
४५३	१	धास	घास

श्री ग्रन्थौ वाच ।

॥ चौपाई ॥

पलटहिं पाठ अर्थ विनु जानें ❀ ते मम द्रोही जीव अयानें ॥
पढ़ि सुनि हमहिं अधम अज्ञानी ❀ उलटे होत महा अभिमानी ॥
भूमि धरै विनु आसन कोई ❀ टोरि मरोरि विगारै जोई ॥
पढ़त न सुनत धरत गठियाई ❀ पलटहिं पत्रा थूक लगाई ॥
आदि अन्त लगि पढ़ि न विचारत❀ जहँ तहँ लखि अनरथ उरधारत॥
जो नहिं करत अदव सठ मोरा ❀ पावहिं ते दुख नरकनि घोरा ॥
गुरु विनु मन मुख जन मम रूपा ❀ लखहिं न परे भर्म तम कूपा ॥
पढ़त मोहि समुझत नहिं भेदा ❀ तेहि लगि तिन्ह कर नसत न खेदा॥

॥ दोहा ॥

भूषन तजि दूषन लखहिं,हम सव महँ जो कोय ।
ते न तरहिं भव जीव जड़, ग्रही विरत कोउ होय ॥

॥ इति ग्रन्थाज्ञा ॥

अथ विषयऽनुक्रमणिका ।

॥ इति अनुक्रमणिका ॥

श्री ग्रन्थकर्ता

जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि 'प्रचारक' श्री वैष्णव-धर्म्मावलम्बी परमहंस श्री सियालाल शरण जी महाराज उपनाम "श्री प्रेमलताजू"
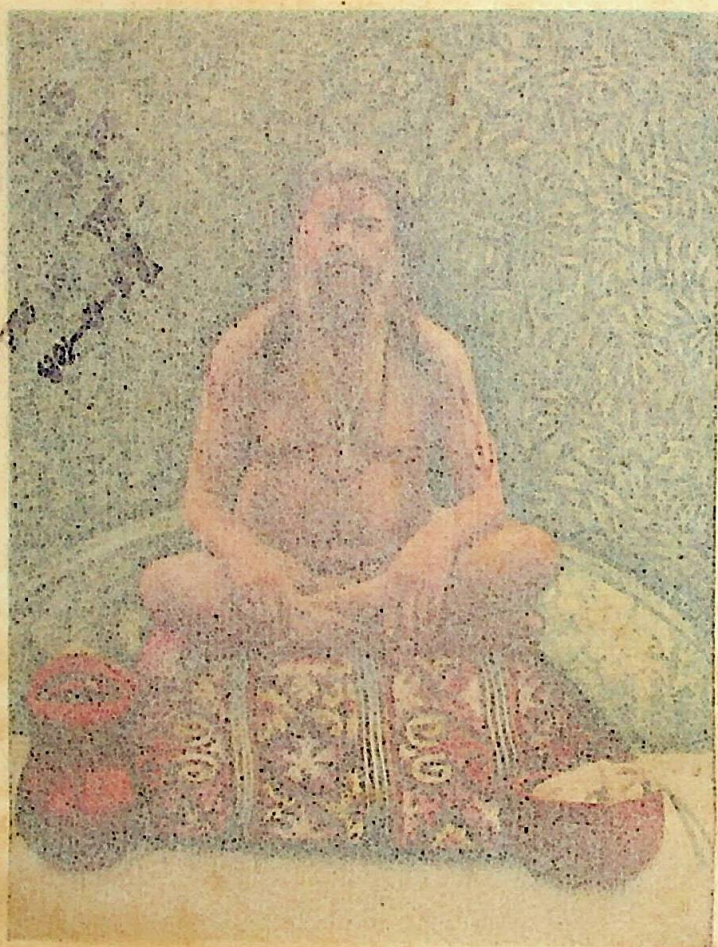
श्री वृहद् उपासना रहस्य प्रसंगावली ।

(श्री सतगुरु प्रसङ्ग १)

श्रीसतगुरवेनमः ॥ श्रीसीतारामनामाभ्यांनमः ॥ श्रीहनुमतेनमः ॥

दोहा ।

गिरिजा प्रति श्री संभु जिमि, कुंभज सिष्यनिपाँहिं ।
भाषेउ सतगुरु मोर प्रति, रहस अवधपुर माँहिं ॥१॥
बरनौं सोइ निज बोध हित, वैश्नव धर्म समेत ।
पढ़ि सुनि धारहिं जेसु उर, पावहिं ते साकेत ॥२॥
प्रभु के सकल उपासकनि, यह रहस्य सुखदाय ।
हुइहै सब बिधि वैश्नवनि, जीवन मूरि सहाय ॥३॥
सिरी संप्रदा केर जो, अवलंबी बुधिवंत ।
समुझहिं येहि कर भेद ते, ग्रही होइँ वा संत ॥४॥
गुरु प्रसंग भाखौं प्रथम, समुझहु तेहि मन लाय ।
जेहि विनु करगत वस्तु वर, भयेउ न जानी जाय ॥५॥
श्रीसतगुरु विनु द्रवत नहिं, श्रीसियराम न नाम ।
श्रीसियराम सु नाम विनु, लहहिं न जन विश्राम ॥६॥

तेहिं लगि गुरु हित बिलम जनि, करिजन सहहु क.लेश ।
अरपि अपन पौ शीघ्रतर, लीजै शुभ उपदेश ॥७॥
तन मन धन ते बचन ते, गुरुहिं करै सन्तुष्ट ।
सीखै युगल उपासना, सियाराम की पुष्ट ॥८॥
गुरु मूरति पूजै सदा, पीवै गुरु पद धोय ।
गुरु जूठनि भक्षण करै, तरै शिष्य भव सोय ॥९॥
जेहि विधि होयँ प्रसन्न गुरु, ततुबेत्ता शिषि सोय ।
करै भरै आनन्द उर, अकथनीय सुख होय ॥१०॥
गुरु महिमा कछु भाखहूं, प्रथम प्रसङ्ग सु माँहिं ।
जेहि बिनु सुर नर नाग मुनि, गति कोउ पावत नाँहिं ॥११॥

मनमुख कोटिन भाँति सुकर्मा ❀ करहिं कठिन व्रत भजन सुधर्मा ॥
गुरु बिनु मिटहिं न मोह अँधारा ❀ सूझ न आतम रूप उदारा ॥
बिनु शृँगपूँछ पशू की नाँईं ❀ गुरु बिनु जीवत जगत बृथाँईं ॥
को मैं को प्रभु सो नहिं ज्ञाना ❀ हम हम करत फिरत बौराना ॥
पञ्च तत्व की नश्वर काया ❀ तेहि महँ बैठि स्वरूप भुलाया ॥
जो तनु धरै बनें सोइ सोईं ❀ आतम निज चेतनता खोईं ॥
लख चौराशी योनिनि माँहीं ❀ भ्रमत मोह वश निशिदिन जाँहीं ॥
नीच संग करि गही निचाई ❀ आतम उत्तमता सु नशाई ॥
जो आतम निज रूप विचारै ❀ तौ न बहुरि नाना तनु धारै ॥
देह बुद्धि आतम उरधारी ❀ निज स्वरूप विसरेउ सुखकारी ॥

दो०—आतम शक्ति स्वरूप शुचि, देह अविद्या रूप ।
नारि वर्ग दोउ लखौ जन, खोलि सु नयन अनूप ॥१२

जड़ माया मय जावत देही ❀ भीतर चेतन शक्ति सु तेही ॥

भीतर बाहिर मायहि माया ❀ खेलि रही धरि रूप निकाया ॥
उपजय पलय बहुरि बिनशावै ❀ आपहि आप न कोउलखिपावै ॥
विधि हरिहर त्रय देव प्रधाना ❀ तेउ मायाकर भेद न जाना ॥
जीव[१]–आतमा[२]—विद्या[३]—माया[४] ❀ चेतन[५]–शक्ति[६] सु नाम निकाया ॥
येहि कर सखी अविद्या प्यारी ❀ सो अतिशय सुंदर गुनगारी ॥
तेहिसँगहिलिमिलि खेलतिखेला ❀ दिन बहु गयेउ भयेउ अतिमेला ॥
भोरी भई अविद्या साथा ❀ भूलि गई निज पति रघुनाथा ॥
विसरेउ नाम प्रताप सरूपा ❀ निज पर परि अँधार भ्रमकूपा ॥

दो०—देह बुद्धिधारी हिये, जड़ सँग मिलि चैतन्य ।
वरण जाति नानात्व में, फँसी मानि निज धन्य ॥१३॥

जो तनु धरै होइ तेहि रूपा ❀ करै चरित तेहि योग अनूपा ॥
जहँ लगि श्रृष्टि दृष्टि में आवत ❀ कछुअनुभवतसुकछु श्रुतिगावत ॥
सचर अचर जड़ चेतन जावत ❀ माया रूप सकल दरसावत ॥
उभय रूप धरि सोइ दोउ माया ❀ नाना विधि यह जग प्रगटाया ॥
एक वनें मिथ्या नर रूपा ❀ नारि एक सो स्वयं अनूपा ॥
एक तत्व दोउ तन महँ मीता ❀ कछु स्वभाव धारेउ बिपरीता ॥
लख चौरासी तन सोइ जामा ❀ पहिरि करै तेहि जोग सुकामा ॥
नर तनु धरि नरहीवत बोलति ❀ तेहि अनुरूप लाज तजि डोलति ॥
डाढ़ी मूँछ आदि आकारा ❀ नरतन ऊपर चिन्ह सु धारा ॥
तेहि नर तन ते करै प्रसंगा ❀ उपजावति जग निज तिय अंगा ॥

दो०—विविधि रूप विरचहिं सदा, करन शिद्धिजग काज ।
नारिवर्ग तिहुँ काल दोउ, माया सहित समाज ॥१४॥

नर नाटक यह लखहु विचारी ❀ नारिरूप जहँ लगि तनु धारी ॥
जिमिकोउविविधि स्वरूपबनाई ❀ लीला करहिं सु परम सुहाई ॥
करि निज कारज सिद्धि सचेता ❀ असली होयँ समाज समेता ॥

तिमि जानहु माया के खेला ❀ करै चरित धरि रूप नवेला ॥
प्रभु आज्ञा जेहिविधि सोइकाजा ❀ करहिं यथारथ सहित समाजा ॥
मसक आदि ब्रह्मा लगि रचना ❀ माया कृत कंहि सकै न बचना ॥
प्रभु माया के चरित सु गूढ़ा ❀ ज्ञानरङ्क किमि लखहिं बिमूढ़ा ॥
आतमग्यान गत रतजड़ भोगनि ❀ भक्ति भाव तजि साधत जोगनि ॥
प्रभु सेवा निज रूप भुलानी ❀ आतम देह बुद्धि उर आनी ॥

दो०—पुरुष भावना धारि उर, आतम गई भुलाय ।
अहंकार मद पी भई, प्रभुसन विमुख बजाय ॥१५॥

नासेउ विमल सु ग्यान विचारा ❀ समुझति नहिं कछु सार असारा ॥
पंच तत्व कर थूल शरीरा ❀ सबकर एक लखहु मति धीरा ॥
अस्थि चाम पर पुरुषाकारा ❀ लिङ्ग मूँछ डाढ़ी के बारा ॥
तेहि लखि पुरुष बनेउ अज्ञाता ❀ सहज स्वरूप न तिन्हैं दिखाता ॥
डाढ़ी मूँछ शिश्न नर नाँहीं ❀ आतम तिय स्वरूप हिय माँहीं ॥
ताहि लखौ करि विमल विचारा ❀ बाहिर भीतर जासु पसारा ॥
सर्व अङ्ग आकार सुहाये ❀ माया कारज हित प्रगटाये ॥
नरतनहूं महँ निज गुन माया ❀ बिरचेउ बिपुल न लखैं निकाया ॥
प्रथम लखहु हिय पर कुच दोऊ ❀ तिय लक्षण पुनि बरणौं सोऊ ॥

दो०—भय साहस अरु चपलता, पराधीनता लाज ।
अनृत अवलता मलिनता, इच्छित होइ न काज ॥१६॥

बाँधे जग भग भोगनि माँहीं ❀ अवलनि इव तउ पुरुष कहाँहीं ॥
इर्षाद्वेष जरनि कुटिलाई ❀ तर्क वितर्क लोभ ललचाई ॥
कपट दम्भ छल मोह अदाया ❀ मिथ्या सोच हँसी अधिकाया ॥
छण तुष्टा रुष्टा अविवेका ❀ नर तन महँ तिय भाव अनेका ॥
साँचे परम पुरुष यक सियवर ❀ सबके पति तिय रूप चराचर ॥
ये सब लक्षण तिन्ह महँ नाँहीं ❀ जो असत्य पुरुषन के माँहीं ॥

मिथ्या बाशुदेव नृप नाँईं ❀ पुरुष बने तजि राम गुसाँईं ॥
पुरुष कहाँइँ कौशवत नाँचैं ❀ माया बश बहु आँचनि आँचैं ॥
जड़ चेतन माया के चेरे ❀ झूठे पुरुष कहाँयँ घनेरे ॥
जिमि मृण दारु खिलौना नाना ❀ तिमि माया कृत तन मरदाना ॥

दो०—कारण माया कार्य सब, रचना विविधि प्रकार ।
समुझब यहि कर अगम अति, मन गुन बानी पार ॥१७॥

निज बुधि बल माया कर ग्याना ❀ जान चहहिं ते जीव अयाना ॥
माया पति प्रभु राम कृपाला ❀ द्रवैं लखै तब मायिक ख्याला ॥
अणू सहसवाँ भाग सरूपा ❀ चेतन कर श्रुति कहत अनूपा ॥
सर्व अङ्ग युत तेज अपारा ❀ अजर अमर अनवद्य उदारा ॥
सियबर शक्तिरूप सोइ माया ❀ जेहिकर चरित अगमश्रुतिगाया ॥
घट घट बीच सु जासु प्रकाशा ❀ छाइ रह्यो बुध लखहिं तमाशा ॥
लख चौराशी जोंनि बखानी ❀ तन अपार कहि सकै न बानी ॥
अस्थावर जंगम दुइ भाँती ❀ जाति अनेक न सो कहि जाती ॥
सब महँ चेतन शक्ति प्रतापी ❀ व्यापी जानहिं नाम सुजापी ॥
अग्यानी जन तन अभिमानी ❀ देंहहि कहँ जानहिं सुखदानी ॥

दो०—निकसि जाइ जेहि देहते, चेतन शक्ति प्रकाश ।
जड़ जंगम नरनारि कोउ, होइ सुपावहिं नाश ॥१८॥

तेहि चेतन कहँ बिसरि विमूढ़ा ❀ नश्वर तन महँ भयेउ अरूढ़ा ॥
हांड़ चाम कर तनु अस्थूला ❀ जड़ मायिक जिमि सेमर फूला ॥
उपजत विनशत परम अपावन ❀ रोगनिग्रशितअवम अतिनरतन ॥
तामें बैठि न हम हम कीजै ❀ निज स्वरूपतजि अयश न लीजै ॥
तू आतम सियबर की प्यारी ❀ विमुख भई जड़ नरता धारी ॥
नश्वर नरतन तू नहिं चेतन ❀ भूलो फिरै अविद्या के बन ॥

नाना तनु धरि धरि बौरानी ❀ बनी नारि ते पुरुष अयानी ॥
बाहिर निरखि पुरुष आकारा ❀ बनि बैठी सोइ बिनु सु बिचारा ॥
प्रभु सेवा महँ जो प्रदशूला ❀ सो तू धारि भई प्रतिकूला ॥
आत्मज्ञान तजि तन अभिमानी ❀ भई कहाँ तब बुद्धि हिरानी ॥

दो०—विद्या[1] जाति[2] महत्व[3] अरु, योवन[4] रूप[5] सुपाँच ।
भक्तिकाँट लखि तजहिं बुध, गर्हहिं अबुध मतिकाँच ॥१६॥

पाँचौ ये अभिमान मलीना ❀ त्यागहिं राम सुभक्त प्रवीना ॥
सो तू चेतन ज्ञान निधाना ❀ नर तनु पाइ बनी मरदाना ॥
तनक बिचारहु तौ मनमांहीं ❀ आतम नस्वर नर तनु नांहीं ॥
देह बुद्धि जिनके उर रहहीं ❀ तिन्हकहँ अबुधवेदबुध कहहीं ॥
आतम दरशी कोउ तनु पावहिं ❀ देह बुद्धि मनमें नहिं लावहिं ॥
नर तनहूँ धरि आतम ज्ञानी ❀ तियस्वभाव नहिं तजत सयानी ॥
देखौ खोलि हिये के नयना ❀ सुनौ आत्मज्ञातनि के बयना ॥
हनूमान शङ्कर अविनाशी ❀ नर बानर बपु लहि सुखरासी ॥
तेहि तनु कर अभिमान बिहाई ❀ सखी भाव उर रहत सदाई ॥

दो०—चारुशिला हनुमान पुनि, शम्भु सुशीला आलि ।
दोउ तनते सियराम पद, सेवहिं आयसु पालि ॥२०॥

संसय जोग बात कछु नांहीं ❀ सर्व सक्ति आचार्यनि मांहीं ॥
चन्द्रकला श्रीभरत सुजाना ❀ सुभगा रिपुसूदनहिं बखाना ॥
लक्ष्मण श्री लक्ष्मणा सुआली ❀ सेवहिं सियसियवर रुचि पाली ॥
नदी रूप इन्हकर एक रहहीं ❀ सीतामढ़ी निकट नित बहहीं ॥
पातक महा नशावनि हारी ❀ जनकलली कहँ प्राण सुप्यारी ॥
जनक नगर बासी नर नारी ❀ आत्मज्ञान के सब अधिकारी ॥
दूलह वेष राम कर देखी ❀ बिसरेउ जड़ तन ज्ञान बिशेखी ॥

सुर नर मुनि पाताल निवासी ❀ देखहिं प्रभुहिं भाव धरिदासी ॥
दण्डकबन बासी ऋषि भारी ❀ तजेउ पुरुष पन प्रभुहिं निहारी ॥
कर्म जोग ग्यानादिक गाथा ❀ तजि सब पति मानेउ रघुनाथा ॥
नखसिख अङ्ग अनूप बिलोकी ❀ मुनिनि केरि मति रुकी न रोकी ॥

दो०—सारीं पहिरि सुनारि बनि, घेरेउ प्रभु कहँ आय ।
रास विहार सु करिय पिय,हम सब सँग सुखदाय ॥२१॥

हम सब प्रभु की सखीं अनूपा ❀ तिन्हि सँग आजु रमहु सुरभूपा ॥
डाढ़ी मूँछ पुरुष आकारा ❀ विसरेउ सब बहिरङ्ग बिचारा ॥
नाँचहिं गावहिं भाव बतावहिं ❀ पतिपत्नी सम प्रभुहिं रिझावहिं ॥
लखि गति प्रेम लच्छणा केरी ❀ बोले प्रभु हंसि सब तन हेरी ॥
तुम्ह सब परम धन्य सुखरासी ❀ भजहु मोहि धरि भाव सुदासी ॥
पुरिहौं सब मनकाम तुम्हारे ❀ प्राण सरिस तुम सब मम प्यारे ॥
भक्ति मोरि अतिशय प्रियदासी ❀ सो तुम सबके हृदय प्रकासी ॥
प्रेमभक्ति जब लगि नहिं आवति ❀ तव लगि आतम मोहि न पावति ॥
पुरुष भाव उर आतम धारी ❀ ताते भोगति दुख संसारी ॥
मधुर स्वरूप भाव अति मीठा ❀ त्यागि पुरुषपन धारेउ सीठा ॥

दो०-तिय स्वरूप शुचि आतमा,अति प्रिय मम जिमि प्रान ।
कवनिउँ धारे देह पर, तजै न निज तन ज्ञान ॥२२॥

सोइ मम सेवा सब सुख खानी ❀ पावै आतम मुनि विज्ञानी ॥
बाहिर भीतर आतम ग्यानी ❀ रहत येक रस मन क्रम बानी ॥
नर तनहूँ पर भक्ति सुभूषण ❀ धारहिं चेतन जीव अदूषण ॥
कण्ठी तिलक समुद्रा सुन्दर ❀ धारिभजहिंमोंहिभक्त सुमुनिवर ॥
वाहर भीतर रहहिं सभाऊ ❀ भक्त भजयँ मोंहिं डरैं न काऊ ॥
सखी भाव बिनु भक्ति न होई ❀ भक्ति हींन मोंहि पाव न कोई ॥

आत्मज्ञान बिनु यह सखिभावा ❀ दुर्लभ बेद पुराणनि गावा ॥
तेहि बिनु होइ न आत्म निवेदन ❀ आत्म दिये बिनु नाशत खेदन ॥
पति पत्नी सम्बन्ध अनादी ❀ मम चेतन कर लखहिं न बादी ॥
सकल भाव तिय भाव विहीना ❀ निरस जानिजिय तजत प्रवीना ॥
सखी भाव तुमरे उर आवा ❀ सब सुख धाम मोंहि अति भावा ॥

दो०—पुरुष एक मैं भोग्यता, भोग सकल संसार।
जड़ चेतन तिय रूप सब, जानहिं बुध न गँवार ॥२३॥

नारि रूप जग भोग हमारा ❀ प्रगटायेउ सब सिय सुख सारा ॥
मोरे वचन अन्यथा नांही ❀ सुनि गुनि धारहु जनमन मांहीं ॥
अब तुम सकल धारि विस्वासा ❀ सेवहु मम पद तजि सब आसा ॥
द्वापर महा रास मैं करिहौं ❀ तब तुम्हरे मन मोदनि भरिहौं ॥
रहहु सदा यहि भाव भरे बन ❀ अभयभजहुमोंहिवचनकर्म मन ॥
बहु प्रकार प्रभु ऋषिन बुझाई ❀ पञ्चवटी पुनि निवसेउ जाई ॥
सूपनखा आदिक निशिचारी ❀ प्रभुहिं देखि तन दशा बिसारी ॥
भयेउ लीन पति भाव समेता ❀ आतम अरपि गयेउ साकेता ॥
सवरी गीध बालि वनवासी ❀ भयेउ सकल पति भाव उपासी ॥
सुग्रीवादि सकल कपि भालू ❀ पति पहिचाने राम कृपालू ॥
विपिन निवासी चेतन झारी ❀ भयेउ सुद्ध सब प्रभुहिं निहारी ॥

दो०—दास सखा बहिरंग ते, अन्तर पतनी भाव।
आत्म समर्पी भक्ति करि, मिले प्रभुहिं सहचाव ॥२४॥

अन्तर बाहिर की सिवकाई ❀ दासि दास बनि करहिं सदाई ॥
रावण आदि निशाचर वामी ❀ अरपेउ आतमलखि निजस्वामी ॥
पति पहिचानि विभीषण आयेउ ❀ अचल राज लंकाकर पायेउ ॥
प्रभुहिं निरखि जड़ जंगम झारी ❀ आत्मज्ञान लहि भयेउ सुखारी ॥

अगस्त्यादि ऋषि भयेउ अपारा ❀ सखीभाव जिन्हि जग विस्तारा ॥
आत्म समर्पी चहुँयुग माँहीं ❀ भयेउ विपुल कहि जात सुनाँहीं ॥
रामानन्द आदि अवतारा ❀ प्रगटेउ कलि पति भाव सु धारा ॥
राजत तिन्हिकर बहु परिवारा ❀ आतम दरशी भक्त अपारा ॥
कोउ भीतर कोउ भीतर बाहिर ❀ सखी भाव जग करहिं सुजाहिर ॥
श्री वैशनव कुल विमल सुमाँहीं ❀ मधुर भाव यक दूसर नाँहीं ॥

दो०—मिलेउ जिन्हैं आचार्य जस, तस तिन्हि पायेउ भेद ।
पति पतनी सम्बन्ध धरि, सेवहिं प्रभुहिं अखेद ॥२५॥

चेतन सक्तिहि पुरुष बखानहिं ❀ आत्मस्वरूपन ते जन जानहिं ॥
राम कबीर आदि सुचि संता ❀ मानेउ जिन्हि निजपति भगवंता ॥
चेतन नहिं प्राकृत नर नारी ❀ कहहिंसोअज्ञअबुध अविचारी ॥
नहिं अस्थूल न सूक्षम कारण ❀ तिहुँ तन पार मोह मद मारन ॥
सकल बिकार रहित सुख राशी ❀ चेतन शक्ति अमल अविनाशी ॥
जड़पुतरिनि उर बैठि नचावति ❀ आपु न नाना रूप बनावति ॥
फूलत फरत झरत अस्थावर ❀ जेहि प्रभाव चैतन्य चराचर ॥
जड़ माया के रूप अपारा ❀ चेतन के वस सकल पसारा ॥
सो चेतन निज रूप भुलानी ❀ मैं मैं करिउर जड़ बुधि आनी ॥
सोइ प्राकृत नश्वर नर नारी ❀ बनी विपुल बिपता शिरधारी ॥
बोलन लगी अटपटी वानी ❀ लोभ मोह ममता मद सानी ॥
पढ़त ग्रंथ बहु सूझ न सारा ❀ नाशेउ निर्मल ज्ञान विचारा ॥

दो०—जड़ता लीनी जकड़ि मति, चेतनता गइ दूरि ।
भई नीचते नीच अति, करि २ करनी कूरि ॥२६॥

झूठनि के सँग मिलि भइ झूठी ❀ आत्म सत्य निजपति सन रूठी ॥
जड़ माया कृत जो नर काया ❀ बनिसोइ चेतन प्रभुहिं भुलाया ॥
पुरुषारथ बिनु पुरुष बखाने ❀ आपुहि प्रबल सकल ते जाने ॥

करतब हींन बकै बहु कैसे ❀ फागुन अबुध बाल सब जैसे ॥
आत्मज्ञान बिनुकथनि सुकरनी ❀ व्यर्थ सकल जिमिपाहन तरनी ॥
आत्मबोध बिनु ज्ञान बिचारा ❀ व्यर्थ भजन पूजन बिस्तारा ॥
नश्वर तनकर तजि अभिमाना ❀ आतम बोध सु करहु सुजाना ॥
आत्मज्ञान बिनु कवनिहुँ कर्मा ❀ हुइहैं शिद्धि न नाशहिं भर्मा ॥
भर्म पर्म दुख रूप अँधेरो ❀ नाशेउ आतम रूप उजेरो ॥
अस बिचारि तजि मनमुखताई ❀ आतम बोध करहु निज भाई ॥
सतगुरु बिनु सो आतम ज्ञाना ❀ दुर्लभजिमि अमलिनि भगवाना ॥
सतगुरु खोजहु आतम दरशी ❀ नाम उपासक मन आकरषी ॥
वैश्नव परम धर्म कर ज्ञाता ❀ मन वच क्रम सियवर पदराता ॥

दो०—नकली गुरुआ फिरत बहु, साजि सुवैश्नव साज ।
ग्रामनि २ दाम हित, वंचक परिहरि लाज ॥ २७ ॥

नाना वेष बनाय सुढंगा ❀ द्रव्य बटोरहिं गुरुआ वंगा ॥
पढ़ि पुरान इतिहास अनेका ❀ भाषहिं बहु विधि ब्रह्म विवेका ॥
वाक्य ज्ञान महँ अधिक प्रवीना ❀ बकजिमि रहत भजन लवलीना ॥
छापहिं छाप तिलक दै भाला ❀ पहिरि गरे बहु कंठी माला ॥
पूजा करहिं विधान समेता ❀ बड़े उपासक मनहुँ सचेता ॥
दिव्य वसन आचरन शरीरा ❀ पंडित वाद मझार सुधीरा ॥
ग्याता कर्मकांड के भारी ❀ कहहिं कथाबहु भाँति प्रचारी ॥
सुचि संतनि की कछनी काछी ❀ ठगत जगत कथि कथनी आछी ॥
कपट दंभ उर लोभ प्रचंडा ❀ नाँचत तिन्हि वस नाँच अखंडा ॥
गतिमतिभगतिप्रीति तिन्हिकेरी ❀ जानहु सब निज स्वारथ चेरी ॥

दो०—करत शिष्य बनि साधुसुचि, त्यागी जाति दुराय ।
धन हित लखतनछोट बड़, मूँड़त जूठि खवाय ॥२८॥

छल करि चेलनि केर सुधर्मा ❀ नासत गुरुआ कुटिल कुकर्मा ॥

नकली गुरुआ अति दुखदाई ❀ तिन्हिके कपट न परत लखाई ॥
पहिरि जनेऊ द्विज के बालक ❀ बनत मंदमति श्रुतिपथ घालक ॥
त्यागी गुरु बनि सबके काना ❀ फूंकत ते सहिहहिं दुख नाना ॥
असली नकली लखि चतुराई ❀ समुझि बूझि गुरु कीजै भाई ॥
भीतर बाहिर कर सब भेदा ❀ बूझि करिय गुरु हर भव खेदा ॥
क्षत्री गुरू होय जो कोई ❀ सिष्यकरै तिहुँ बरनहिं सोई ॥
वैश्य होय गुरुतो दुइ बरनहिं ❀ करै सिष्य सियवर के सरनहिं ॥
सूद्र होय जो गुरू सयाना ❀ शूद्र कुलहिं उपदेसै ज्ञाना ॥

दो०—विप्र सुगुरु चहुँवरन कर, उपदेशक कह वेद ।
यहि विधि करहिं जो सिष्यगुरु, तौ न होय उरखेद ॥२९॥

नीति सहित गुरु शिष्य सँयोगू ❀ होय कहहिं तौ भल सब लोगू ॥
नकली गुरुअनिके सिषि जोई ❀ वेश्या सुत सम जानहु सोई ॥
लघु बरनी गुरु साधु वेष धरि ❀ उत्तम बरनिहिं लेत सिष्य करि ॥
छल करि अथवा कवनिहुँ भाँती ❀ मूंडत ऊँचनि गुरुलघु जाती ॥
करत अनीति दंड अधिकारी ❀ हुइहैं सो गुरु अवसि अनारी ॥
नीति विचारि न जे गुरुकरहीं ❀ तेसिषिगुरु दोउभवनिधि परहीं ॥
अस विचारि गुरुनीति सुचेला ❀ करैं होय जेहि पुनि न झमेला ॥
करहु परस्पर उभय परीक्षा ❀ गुरु सिषि लेहु देहु तव दीक्षा ॥
होय अवैश्नव अथवा गेही ❀ कोउ कुल कर गुरु तजियेतेही ॥
सब गुन धाम विप्र किन होई ❀ गुरू अवैश्नव करिय न कोई ॥

दो०—जाति बुद्धि गुरु विच नहीं, जो निज उर सुचि होय ।
वैश्नव धर्म विहीन पै, गुरू न करिये कोय ॥ ३० ॥

वैश्नव धर्म विहीननि केरे ❀ व्यर्थ सकल गुन ज्ञान घनेरे ॥
कंठी तिलक हीन गुरु गेही ❀ विधि सम होय न कीजै तेही ॥

*गेही गुरुकरि भवनिधि पारा ❀ जान चहहिं सो सिष्य गँवारा ॥
गेही गुरु वैश्नव किन होई ❀ तबहुँ न करिय बँधौलखि सोई ॥
ग्रह ममता बंधन गुरु जोई ❀ बाँधे तिन्हिते का हित होई ॥
पशू समान जानि तिन्हि त्यागी ❀ करिय सुवैश्नव गुरु वैरागी ॥
भीतर बाहर येक सुरंगा ❀ रँगे रटहिं सियराम अभंगा ॥
दंभ कपट उर मान न मोहा ❀ मद मत्सर छल काम न कोहा ॥
समदरसी सुचि अचल अचाही ❀ नाम रसिक गुरु कीजिय ताही ॥
अभय अरोष मान मद हीना ❀ प्रभु भरोस दृढ़ परम प्रवीना ॥

दो०—सेवहु मन वच कर्म तेहि, तजि जग ममता काम ।
आतम बोध कराइहैं, रटि रटाय सियराम ॥ ३१ ॥

नामानन्य गुरू बिनु कीन्हें ❀ आतम रूप परत नहिं चीन्हें ॥
श्रीसियराम नाम अबिरोधा ❀ रटत होय उर आतम बोधा ॥
जोग यज्ञ पूजन ते ज्ञाना ❀ होत रह्यो तिहुँ युगनि बखाना ॥
सतयुग श्री प्रह्लाद प्रधाना ❀ भयेउ आत्म दरशी वलवाना ॥
त्रेता श्री जनकादि बखाने ❀ द्वापर गोपी ग्वाल सयाने ॥
कलियुग केवल नाम उचारी ❀ आतम बोध लहहिं नरनारी ॥
नामरटत जेहि आतम ज्ञाना ❀ भयो होइ सोइ गुरू सुजाना ॥
प्रेमभक्ति रटि नाम सु पाई ❀ तिय स्वरूप निज लखै सदाई ॥
देहादिक जो दृश्य पदारथ ❀ जड़ मायिक स्वारथ परमारथ ॥

* उन्ह ग्रहस्त वैश्नव ब्राह्मण गुरुओं का शिष्य होना मना किया है. जो पात्रा पात्र का विचार न करके केवल लोभ वश शिष्यों के मनानुकूल भक्षा भक्ष माँस मदिरादि खाने पीने वाले तामसी मंत्र दे नष्ट करि डालते हैं, प्रभु विमुखी बनाय जीवों को नर्क की राह पर चढ़ाय देते हैं, जिनके उपदेश का उत्तम प्रभाव शिष्यों के हृदय मन वचन कर्म पर लेस मात्र भी नहीं झलकता ऐसे गुरुअनि से तौ वेगुरू का ही रहना भला है। जब तक की बढ़ियाँ गुरू न मिले। इति

जहँ लगि साधन सिद्धि बखानी ❀ त्रिनसम जानहिं आतम ग्यानी ॥
ये सब राम भगति के बाधक ❀ गहहिं न सपनेंउँ प्रभु आराधक ॥
दो०—दान मान ब्रत तीर्थ जप, कर्म धर्म तप ध्यान ।
योग ज्ञान बैराग तजि, पतिपद अरपेउ प्रान ॥ ३२ ॥
परम अनन्य धारि ब्रत येका ❀ रँगे इष्ट रँग सहित विवेका ॥
सब साधन कर फल यक नामा ❀ जानि धरेउ दृढ़ जन अभिरामा ॥
परम अनन्य न चलहिं चलाये ❀ प्रीतम नाम रटहिं लयलाये ॥
नश्वर तन कर करत निबाहू ❀ जेनकेन विधि भजि सिय नाहू ॥
इष्टधाम तिय भाव समेता ❀ निवसहिं रटि सियराम सचेता ॥
देश प्रदेश न वागत डोलहिं ❀ निरसबचन श्रुतिसुनहिंनबोलहिं ॥
भूलि न करत विजातिनि संगा ❀ चाहत रँगन सबहिं निज रंगा ॥
कहहिं यथार्थ बचन रसराते ❀ जगत प्रपंच न तिन्हैं सुहाते ॥
करहिं मानसिक निजप्रभु सेवा ❀ रटहिं नाम मुख सब सुखदेवा ॥
भवन वसै तन अथवा बनमें ❀ सियबर मूर्ति रमें जो मनमें ॥
व्यापहिं तिन्हें न जग जंजाला ❀ जिन्हि के प्रभु सियराम कृपाला ॥
सत गुरु राम रूप ते भाई ❀ प्रगटहिं जग जीवनि हित आई ॥
दो०—तनसुख धनसुख धामसुख, धरणि पुत्र परिवार ।
परि हरि सब सियराम पद, पागेउ सहित विचार ॥ ३३ ॥
तन मन बचन बिकार विहाई ❀ सेवहिं सादर सिय रघुराई ॥
अस गुरु करि लीजै उपदेशा ❀ नाशहिं संश्रृति आतम कलेशा ॥
विलम किये अति होत सुहानी ❀ छण छण आयू जात सिरानी ॥
आतम दरशी गुरु विनु प्रानीं ❀ सहत कलेश कठिन हैरानी ॥
पग पग ब्रह्म बधादिक पापा ❀ गुरुबिनु लगत जरत तिहुँ तापा ॥
कामी कामिनि के हित लागी ❀ व्याकुल तिमिगुरु बिनुबड़ भागी ॥
गये धनहिं खोजत लोभी जन ❀ तिमिगुरु खोजहिं भक्त बिमलमन ॥

खोजतमाल फिरहिं जिमि चोरा ❀ हेरहु तिमि गुरु बन्दी छोरा ॥
मणिविनु विकलरहैजिमिव्यालू ❀ तिमि खोजहु गुरुदेव दयालू ॥
अमली खोजहिं अमल अपावन ❀ तिमि खोजहुगुरु शोक नसावन ॥
श्री वैश्नव सत गुरु के सरना ❀ जाउ चहहु जो भवनिधि तरना ॥
सत गुरु विनु तनु नर्क सरूपा ❀ मरि परिहहु चौरासी कूपा ॥
दो०—जितने पग धारैं धरणि, निगुरा सतगुरु हीन ।
तितने गोवध अघ छितिहिं लागत लखहु प्रवीन ॥३४॥
अस विचारि गुरु कीजै भाई ❀ वैश्नव वेगि विलम्ब विहाई ॥
गुरुहित विलम लगावत जोई ❀ तेहि सम जग मूरख नहिं कोई ॥
आजुकालि जो गुरुहित करता ❀ सोमरि अवसि नरक महँ परता ॥
पाप कहावहिं गुरू न कीजै ❀ विषय भोग सुख भोगि सुलीजै ॥
यहि तनु कर फल भोग विलाशा ❀ भोगु न सोइ गुरु देहहिं त्राशा ॥
अबहिं भोगि सुख भरि तरुणाई ❀ करि लीजै गुरु पाइ बुढ़ाई ॥
गुरु करिहौ तौ हमहिं कलेशा ❀ हुइहै जब सुनिहौ उपदेशा ॥
हम तुम्हते अति प्रेम पुराना ❀ नशिहै सो सुमिरत भगवाना ॥
जबगुरु कण्ठी तिलक लगैहैं ❀ येहि तनते तब हमहिं भगैहैं ॥
राममंत्र जब गुरु उर भरिहैं ❀ तब हम सकल मौत विनुमरिहैं ॥
तुमहूं कइं दुख देहहिं भारी ❀ तारक मंत्र सुनाय अघारी ॥
दो०—खान पियन मद मांस अरु, मिथ्या पर तिय गौन ।
छुड़वैहैं गुरु सकल सुख, कहहु लाभ है कौन ॥३५॥
जो हमार उपदेस न सुनिहौ ❀ तौ वैश्नव गुरु करि सिर धुनिहौ ॥
पापिनि पाप सिखावहिं ग्याना ❀ भीतर बैठि अनेक विधाना ॥
चोरि चोरि तुम्ह हमहिं उपायेउ ❀ अतिप्रियलखिनिजउरनिदुरायेउ ॥
अधिक प्रेम नित हम पर करहू ❀ केहि कारन अब प्रियपरिहरहू ॥
नासहु निज कर अपन कमाई ❀ साधु संग करि मति बौराई ॥

सुनहु न भजन भाव की बाता ❀ भजन करत नहिं कोउ सुखपाता ॥
ध्रुव प्रहलाद विभीषन आदी ❀ नारदादि मुनि आतम वादी ॥
भजन करत नाना दुख पाये ❀ लाभ कहा प्रभु गुन गन गाये ॥
माँगत भीख फिरत वैरागी ❀ भजन फंद परि घर सुखत्यागी ॥
शिविदधीचि बलि नृप हरिचंदा ❀ धर्म करत पायेउ दुख मंदा ॥
अति सय अबल धर्म सुभ कर्मा ❀ तिन्हैं धारि कोउ लहेउ न नर्मा ॥

दो०—तिलक दाम धारी जिते, ग्रही विरत धर्मग्य ।
भरत कष्ट सहि सहि सकल, असुभ्र अभागी अग्य ॥३६॥

हम सब पाप पुष्ट दिन राती ❀ रहत दुष्ट सुकृतनि के घाती ॥
धर्म कर्म व्रत सुभ आचरना ❀ सब असमर्थ लेत तिन्हि सरना ॥
करि करि संजम नेम अपारा ❀ देत सुखाय सरीर गँमारा ॥
सुन्दर नारि विषय सुख त्यागी ❀ करत कष्ट बहु बनि बैरागी ॥
कहत अंत मिलिहहिं परलोका ❀ तेहिलगिभजनकरियसहिशोका ॥
ये सब धोखे दाइक बातें ❀ सुनहु न जो चाहहु कुशिलातें ॥
वैश्नव धर्म धारि सिर जगसुख ❀ करिहहु नाश भोगिहौ बहुदुख ॥
प्रभु कहँ जो अरपे विनु खैहौ ❀ भोजन तौ मरि नरकनि जैहौ ॥
कठिन २ व्रत भजन सुधर्मा ❀ वैश्नव कर जनि भूलहु भर्मा ॥
धारन करि तेहि जो परि हरिहौ ❀ तौ पुनि पुनि नरकनि महँपरिहौ ॥

दो०—सुन्दर नर तन पाय यह, कीजै भोग विलास ।
वैश्नव धर्महिं धारि सिर, सहिहहु नाना त्रास ॥३७॥

यह हमार उपदेस अनूपा ❀ मनिहहु तौ न परब दुखकूपा ॥
गुरुहि करन की जो उरलागी ❀ करहु आन गुरु वैश्नव त्यागी ॥
जती उदासी जंगम जोगी ❀ ब्रह्मचारी पंडित संयोगी ॥
सैव साक्त जग गुरू अनेका ❀ करि लीजै कोउ जो उर टेका ॥
ये सब सुन्दर गुरू सु कीजै ❀ घरहि बुलाय मंत्र सुनि लीजै ॥

खात पियत जो गुरुमद मासा ❀ करत सकल सुख भोगबिलासा ॥
जगसुखप्रियजेहिसोइगुरुकरिये ❀ वैरागिनि के फंद न परिये ॥
ऊर्द्ध पुंड वैश्नव के देखी ❀ हम सब उर भय होत विसेखी ॥
तिलक छाप कंठी गर माला ❀ तुलसी की हम कहँ जिमिकाला ॥
वैश्नव केर आचरन पावन ❀ दुखद हमार सुकुलहि नसावन ॥

दो०—सैव साक्त गुरु कोटि किन, करहु न हम कहँ हाँनि ।
वैश्नव वेष निहारि उर कंपत रिपु पहिचाँनि ॥३८॥

वैश्नव कुल हम सब ते भाई ❀ लगी रहत नित घोर लराई ॥
वैश्नवहूँ महँ राम उपासक ❀ हमसबकुल केसबविधिनाशक ॥
रामानंदी वैश्नव हेरी ❀ फाटति छाती हम सब केरी ॥
रामानन्दी तिलक निहारी ❀ हम सब कहँ भय लागत भारी ॥
रामानंदी संत विलोकी ❀ भागत धैर्य रहत नहिं रोकी ॥
तिन्हहूँ महँ सियराम सुनामू ❀ रटत रटावत जो वसुजामू ॥
तिन्हिके सनमुख हम जो परहीं ❀ अवसि तूलइव छनमहँ जरहीं ॥
श्री सियराम नामके जापी ❀ हम सब कुल के नासक पापी ॥
दरश परस संभाषन सेवा ❀ तिन्हिं सबकर हमकहं दुखदेवा ॥
नाम जापकनि जो गुरु करहीं ❀ तिन्हिके उर हम सब परिहरहीं ॥

दो०—अपर वैश्नवनि ते न हम, डरपत इतने भाय ।
नाम जापकनि नामसुनि, अधिक हृदय घबराय ॥३९॥

चरचा नाम जापकनि केरी ❀ दायक बिपता हमहिं घनेरी ॥
जद्यपि सब वैश्नव दुख दाई ❀ हम सब कुलके संतत भाई ॥
पैसियराम नाम के जापक ❀ वैश्नव अति हमसबकुलतापक ॥
तेहि लगि तिन्हिते मंत्र न लीजै ❀ सतसंग सेवा टहलन कीजै ॥
जहं सियरामनाम धुनि होई ❀ तँह न जात हम भूलिहु कोई ॥

नाम जापकनि कर जो ध्याना ❀ करत न तेहिउर हमरठिकाना ॥
नाम जापकनि के प्रिय जोई ❀ तिन्हैं निरखि हमकहँ भयहोई ॥
हम सबकी जो चाहहु छेमा ❀ तौ तिन्हिते जनि कीजै प्रेमा ॥
चरनोदक तिन्हिकर सुप्रसादा ❀ लेहु न हमकहँ होत विषादा ॥
पूजा अस्तुति प्रेम बड़ाई ❀ तिन्हिकी पाप विध्वंसक भाई ॥

दोहा–विनती हम तुम्हसन करत, पुनि २ निज प्रियजोय ।
वैश्नव नाम सुजापकनि, गुरू न करिये कोय ॥४०॥

हम सब ऊपर दयासु कीजै ❀ गुरू करन की हठ तजि दीजै ॥
पापनि के उपदेश अनेका ❀ मानहिं जिन्हकरमलिनविवेका ॥
पापी गुरुमुख होन न पावहिं ❀ सोइविधिपापिनिपापसिखावहिं ॥
असविचारितजिबिलम सचेतन ❀ करहिं वेगि गुरु राम भक्तजन ॥
वैश्नव धर्म खास प्रभु केरा ❀ आवन देत न अघ तेहि नेरा ॥
पापी मनकी सुनिय न बाता ❀ करिय वेगि गुरु आतम ज्ञाता ॥
पतिविनुजिमितियतरुणसुक्वारी❀ होइ अधर्मिनि जियै दुखारी ॥
सतगुरुविनुतिमि आतमजानहु ❀ करिय वेगि गुरु हठजनि ठानहु ॥
गुरु उपदेश बिना शुभ तेरे ❀ नाशत बाढ़हिं पाप घनेरे ॥
भीतर मंत्र तिलक तुलसी तन ❀ गुरुसन धारण वेगि करहु जन ॥
लाज शरम तजि वैश्नव बाना ❀ गुरुसन धारि भजहु भगवाना ॥
प्रभुकी वस्तु प्रभुहिं करि अरपन ❀ गुरु द्वारा जग लेउ सुयस जन ॥

दोहा–जड़ चेतनमय बिरचि बहु, वस्तु सुविविध प्रकार ।
प्रभु अर्पण हित माया, भरि राखेउ महि थार ॥४१॥

सकल पदारथ प्रभु के भोगा ❀ अपने करिजनि जानहु लोगा ॥
अस्थावर यक जंगम एका ❀ रचना उभय प्रकार अनेका ॥
नाना रूप अनूप बनाये ❀ विपुल पदारथ जात न गाये ॥
मनुष आदि जंगम जो बोलत ❀ खात पियत जहँतहँ महिडोलत ॥

दूसर अस्थावर विधि नाना ❀ विरचेउ माया गुननि निधाना ॥
अमितसुऔषधि भोजन भूषन ❀ वासन बसन सुजोग्य अदूषन ॥
दृस्य अदृस्य अनेक प्रकारा ❀ विरचि भरेउ माया महिथारा ॥
प्रभु प्रसन्नता हित सब रचना ❀ अकथ अनूप न कहिसकवचना ॥
अर्पन जोग पदारथ जेते ❀ प्रभु हित भक्तनि सौंपेउ तेते ॥
अनुपम पाय पदारथ नाना ❀ मायक लायक लखि भगवाना ॥

दोहा—भक्तनि आतम सहित निज, वैश्नव गुरुनि सुहाथ ।
अर्पेउ सकल पदार्थ करि, विनय नाय पदमाथ ॥४२॥

भगतनि सहित पदारथ सगरे ❀ पाय सुवैश्नव गुरुगुन अगरे ॥
भक्ति सहित सुचि संसकार करि ❀ अरपेउप्रभुहिंतुलसिकाधरिधरि ॥
तुलसिसहितप्रभु निरखिपदारथ ❀ करहिंग्रहननिजजाति जथारथ ॥
तुलसी रहित पदारथ नाना ❀ करहिं न ग्रहन कबहुँ भगवाना ॥
तुलसी तिलक हीन जो प्रानी ❀ करियनतेहि गुरु नरकी जानी ॥
संसकार वैश्नवी विहीना ❀ नर्करूप तेहि लखहु प्रवीना ॥
वैश्नव धर्म हीन लघु वरनी ❀ ये सब गुरुआ पाहन तरनी ॥
तिन्हिके सरन होत जो कोई ❀ वंस सहित भव बूड़हिं सोई ॥
द्विज क्षत्रिनि के बालक जेते ❀ होत विरक्त त्यागि ग्रह तेते ॥
सिखा सूत्र त्यागी गुरु करहीं ❀ कबहुँ न ते भवसागर तरहीं ॥
सिखा सूत्र धारन करि जोई ❀ त्यागत बहुरि पतित सो होई ॥
वैश्नव धर्म हीन कुल वीचा ❀ सिष्य होय पद पावहिं नीचा ॥

दोहा—वर्ण धर्म प्रभु भक्ति रति, तजि भये विमुख बजाय ।
तिन्हि कहँ करियन भूलिगुरु,सुनहु ग्रही चितलाय ॥४३॥

जो न मानिहौ सीख सु मेरी ❀ सहिहौ यमपुर विपति घनेरी ॥
पतितनि करि गुरु ग्रही नसावत ❀ भक्ति भावप्रभुपद विमुखावत ॥
पतित गुरू तिमि पतितहु चेला ❀ होत नर्क महँ ठेलम ठेला ॥

शिखा सूत्र श्री वैश्नव धर्मा ❀ हीन गुरू करि फोरहिं कर्मा ॥
वैश्नव धर्म वेष प्रभु प्यारा ❀ धारहु सज्जन करि सु विचारा ॥
बिनु तुलसी गुरु भक्ति समेता ❀ अरपै छुवत न कृपा निकेता ॥
तुलसी रहित गुरुनि के हाथा ❀ करहिं न वस्तु ग्रहण रघुनाथा ॥
ऊर्धपुण्ड कंठी गर नाँहीं ❀ ते गुरु सिष्य नरकमहँ जाँहीं ॥
कंठी तिलक हिंन गुरु चेला ❀ करहिं भजन बहु नित्त नवेला ॥
लहहिं न राम भगति सुखदाई ❀ जेहिविनुद्रवत न सियरघुराई ॥

दोहा—नामांकित छापा सहित, तिलक न उर्द्ध लिलार।
कंठी कंठ न मंत्र उर, ते जग पापागार ॥४४॥

बिनु समझे जो अस गुरु करहीं ❀ अबुधअवैश्नवसोकिभितरहीं ॥
शूद्र अवैश्नव अथवा गेही ❀ भक्ति हीन पर नारि सनेही ॥
उपरोहित अरु जती उदासी ❀ सियाराम तजि आन उपासी ॥
आपहि ब्रह्म बखानत जोई ❀ भूलिहु तेहि गुरु करिय न कोई ॥
अमली असुचि अबोध असंगी ❀ वकवादी भ्रामी बहुरंगी ॥
धन विद्या जाती अभिमानी ❀ करनी कथनि कपट छलसानी ॥
स्वारथ साधक परधन हारी ❀ लोभी लंपट ठग अपकारी ॥
जगत निंदकी मिथ्यावादी ❀ चेटक नेटक निरत प्रमादी ॥
अस गुरुअनि के फंद न परिये ❀ समुझि बूझि उर सोदा करिये ॥
धोखे में अथवा अविचारे ❀ करिहु लेहु अस गुरुवा प्यारे ॥
तजिये तिन्हे ग्यान जब होई ❀ श्रुति सिद्धांत न दूषन कोई ॥

दोहा—गुरु मूरति अनुकूल जो, होय बसै हिय बीच।
तरै शिष्य भव नाम रटि, परै न माया कीच ॥४५॥

गड़बड़िया गुरुअनि के ग्याना ❀ हरत न हृदय केर मद माना ॥
इत के भये न उत के रहेऊ ❀ गड़बड़ गुरुआ करि उर दहेऊ ॥
अबुध गुरुनि के सिष्य सुखारी ❀ होत न जथा नपुंसक नारी ॥

हृदय सील संतोष न भयेऊ ❀ संका सोच विकार न गयेऊ ॥
नासी दुखद न झंका झंकी ❀ मिटेउ न मन की संका संकी ॥
गुरुअनि ते फुकवायेउ काना ❀ होय कहाँ ते आतम ग्याना ॥
खुलेउ न उर के कपट किवारा ❀ चीन्हेउ आतम रूप न सारा ॥
राम मिलन कर पंथ न जाना ❀ तौ गुरु करि का सीखेउ ग्याना ॥
देह बुद्धि मनमुख आचरना ❀ त्यागे बिना कठिन भव तरना ॥
सो सतगुरु बिनु कवन नसावै ❀ कवन निजातम रूप लखावै ॥
अस विचारि तजि मन मुख संका ❀ सतगुरु दूसर कीजिय बंका ॥

दोहा—श्री सियराम उपासक, रसिक विरक्त सचेत ।
तेहि सन लीजिय मंत्र पुनि, युगल विधान समेत ॥४६॥

कंठी तिलक धारि सिय रामा ❀ रटत लहहिं ते जन प्रभु धामा ॥
तुलसी तिलक मंत्र जो धारैं ❀ आतम ग्याता नाम उचारैं ॥
तेहि सतगुरु की सरन सुलीजै ❀ छीजै वयस बिलंब न कीजै ॥
रटिय नाम प्रति स्वास नेम करि ❀ गुरुमुखसुनि सखिभाव हियधरि ॥
लीजै सुभ संबन्ध रिझाई ❀ श्रीसतगुरुहिं सु करि सिवकाई ॥
गुरु पूजत सिवकाई भाई ❀ कोटिनि सुरतरु सम सुखदाई ॥
साष्टांग करि जोरि सु पानी ❀ गुरु अस्तुति नित करिय सुबानी ॥
गुरु पूजन अस्तुति हरखाई ❀ करहिं तरहिं भवलोग लुगाई ॥
गाय बजाय सुनाँचि मुदित मन ❀ सतगुरु अस्तुति करहिं सुजनजन ॥
श्रीसतगुरु की अस्तुति येहा ❀ करत नसहिं सब सोच सँदेहा ॥

॥ श्रीसतगुरु अस्तुति प्रारम्भ ॥

छन्द—जय जयति श्रीगुरुदेव स्वामी हरन अघ रक्षक खरे ।
जय सरन पाल दयाल प्रभु बहु पातकी पावन करे ॥
हम जीव जड़ अज्ञान बस पद कमल तजि भवनिधि परे ।
तेहि लागि दारुन सहहिं दुख जग भ्रमहिं नित अवगुनभरे ॥१॥

अपराध छमि अवलोकिये प्रभु पाहि जन सुख दायकम् ।
तजि दोष करुना सिंधु राखहु शरन तुम्ह सब लायकम् ॥
जय दीनबन्धु दयाल आनँदकन्द सुर मुनि नायकम ।
प्रभु कहँ न रच्छा कीन्ह जनकी धाय धरि धनु सायकम् ॥२॥

महिमा अपार उदार बरनत वेद पार न पावहीं ।
शिव सेस सारद दिवस निसि तव विमल गुन गन गावहीं ॥
रिषि नारदादि मुनीस सुक सनकादि पद रज ध्यावहीं ।
मन मुदित बिचरहिं अवनि जपि गुरु नाम हरष बढ़ावहीं ॥३॥

अति दीन जन मति हीन आरत जानि बिनय सुनीजिये ।
अवलंब चाहत नाथ केवल कृपा कोर पतीजिये ॥
सुचि संत संग निवास सादर नाम रटना दीजिये ।
सियलाल सरनहिं चरन रति दृढ़ होय सोइ प्रभु कीजिये ॥४॥

दोहा—श्रीगुरु अस्तुति हरन अघ, प्रगटावन पर प्रेम ।
पढ़ैं सुनैं सज्जन सदा, गुरुमुख जन करि नेम ॥४७॥

जय जय गुरु स्वामी चरन नमामी अन्तरयामी सुधि लीजै ।
करुना सुखसागर सब गुन आगर मति नागर पदरति दीजै ॥
जय सगुन सरूपा ब्रह्म अनूपा हरु भव धूपा तनु छीजै ।
हम जीव अनारी भगति बिसारी प्रभु अघहारी हित कीजै ॥१॥

जय सबघट वासी चरित प्रकाशी मंगल रासी व्रतधारी ।
सरनागत पालक कलिमल घालक खल उर शालक अवतारी ॥
निसि दिन रस एका बिमल विवेका दृढ़ इक टेका शुभकारी ।
अति पावन पावन जनमन भावन शोक नसावन भय हारी ॥ २ ॥

सुर नर मुनि नायक सुजन सहायक सब विधि लायक गति दाई ।
जय स्ववस बिहारी मोद सुकारी नीति सुप्यारी मन भाई ॥

जय जय जग त्राता जय पितु माता रिधि सिधि दाता अधिकाई।
जय जयति सुजाना वेद पुराना करहिं वखाना प्रभुताई ॥ ३ ॥
जड़ जीवनि लागी प्रगट अदागी प्रभु वड़ भागी परधामी।
धरि विविध शरीरा जन मन पीरा हरहु सु धीरा हति वामी ॥
जानहिं अधिकारी महिमा भारी विमल विचारी कोउ नामी।
प्रभु परम सचेतू जग भव सेतू आरत हेतू निष्कामी ॥ ४ ॥
जय जय दुख टारन अधम उधारन त्रिविधि निवारन जिय जोई।
शरनागत आई तजि चतुराई लोक सगाई पति खोई ॥
प्रभु पंकज लोचन सोच विमोचन मो सम पोच न जग कोई।
छमि चूक निकाया करहु सुदाया हरहु कुमाया मद दोई ॥ ५ ॥

दोहा-सतगुरु दीन दयाल प्रभु, छमि कुचाल वर देहु।
संत संग तव चरन रति, युगल नाम असनेहु ॥४८॥
जय गुरु देव कृपाल की, बार बार बलिहार।
संसकार करि दीन सिख, नाश्यो मोह अँधार ॥४९॥
दरशेउ आतम रूप उर, छूटेउ तन अभिमान।
जेहिवश भोगेउ अमित दुख, तजि निज पतिभगवान॥५०॥
सतगुरु जूठनि खाइये, सुनिये सतगुरु बैन।
चरण धोइ पीजै सुनित, अवसि खुलैं हिय नैन ॥५१॥
गार मार गुरु की भली, बुरी जगत की प्रीति।
जग बाँधै छोरै गुरू, शिषहिं सिखाइ सुनीति ॥५२॥
गुरु की महिमा कहत श्रुति, सकुचैं शारद शेष।
रटैं रटावैं नाम जो, तजि ममता मद द्वेष ॥५३॥

झलकत भीतर बाहिरौ, जिन्हि के आतम रूप।
नश्वर तन अभिमान तजि, रटहिं सुनाम अनूप ॥५४॥
राम रूप तिन्हि कहं लखै, पति सम भाव बढ़ाइ।
सेवै सिष्य सु कपट तजि, गुरु स्वरूप होइ जाइ ॥५५॥
गुरुहिं समर्पै आतमा, रञ्च न राखै भेद।
रटै नाम सेवै सदा, होइ सुशिष्य अखेद ॥५६॥
तनमन धन गुरु देव कहँ, अरपन करै सप्रेम।
पूजै गुरु मूरति सदा, पावै सिष्य सुच्चेम ॥५७॥
तन मन धन सत गुरुहिं जो, अरपि न पूजत मूढ़।
सो न सिष्य गति पावहीं, लहहिं न भेद निगूढ़ ॥५८॥
दम्भी गुरू न कीजिये, जगत पूज्य जो होय।
सावधान रहिये सदा, कोटि कहै जो कोय ॥५९॥
धन सुत लालच हेतहू, गुरू न करियो कोय।
उलटे परिहो नरक में, कबहुँ न निकसब होय ॥६०॥
आत्म बोध प्रभु भजन अरु, छूटन हित संसार।
साँचे सतगुरु कीजिये, वैश्नव विमल विचार ॥६१॥
थोरे में समुझहिं सुजन, गुरु प्रसङ्ग की बात।
मन वानी ते अगम यह, गुरु महिमा सु लखात ॥६२॥
आतम सखी स्वरूप सुनि, संशय करिय न भाय।
देह बुद्धि पट फटय तब, आतम रूप लखाय ॥६३॥

देह बुद्धि पट उर जड़े, बल करि दूरि न होत।
सतगुरु साँचे मिलहिं जब, खोलैं होय उजोत ॥६४॥
श्री सियराम सुनाम कर, महत्त कहौं कछु गाय।
देखौ द्वितीय प्रसङ्ग महँ, सुजन संत चितलाय ॥६५॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि
प्रचारक श्रीवैश्नव-धर्मावलम्वी परमहंस
श्री १०८ श्रीसियालाल शरणजी महाराज
उपनाम "श्रीप्रेमलताजू" कृत श्रीगुरु-
महत्व वर्णनो नाम प्रथमोप्रसङ्ग
समाप्त शुभम् ॥ १ ॥

—oo%o%oo—

जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम

अथ

श्री सियाराम नाम प्रसंग २

श्रीसतगुरवेनमः ॥ श्रीसीताराम नामाभ्यां नमः श्रीहनुमते नमः ॥

❀ दोहा ❀

नाम प्रसङ्गसु अकथ अति, केहि विधि वर्णों जाय ।
कहौं कछुक निज बोध हित, सुनहिं सुजन चितलाय ॥१॥
युगल नाम जापकनिके, चरण कमल शिरनाय ।
नाम प्रसङ्ग सु लिखहुँ यह, सुनि गुनि भर्म नशाय ॥२॥

प्रभु के सुन्दर नाम अपारा ❀ अधिक एक ते एक उदारा ॥
प्रगटे जगत करन कल्याना ❀ प्रभु के कर्म गुणनि ते नाना ॥
सब नामनि में राम सुनामा ❀ सबविधि बड़े सकल गुणधामा ॥
एक अखण्ड अनादि अमाया ❀ त्रिगुणा तीता तीत सु गाया ॥
जितने नाम रूप प्रभु केरे ❀ राम नाम ते होइँ घनेरे ॥
सब नामनि बिच तेज प्रभावा ❀ लखहु राम नामहिं कर छावा ॥
सात करोर मंत्र श्रुति गाये ❀ सर्व सिद्धि नामहिं रटि पाये ॥
देखत छोट प्रताप सुभारी ❀ राम नाम कर जान पुरारी ॥
भये अहहिं हुइहैं प्रभु प्यारे ❀ नामहिं रटि जन जगत सुखारे ॥

दो०—राम नामहीं रटि लही, चहुँयुग शिधि सब कोय ।
गावत सन्त पुराण श्रुति, प्रगट प्रभाव न गोय ॥३॥

देखउ खोलि हिये के लोचन ❀ राम नाम विनु को दुखमोचन ॥
अगनित नाम रूप प्रभु केरे ❀ सब सियराम नाम के चेरे ॥
सतचित आनँद रूप अनूपा ❀ राम सु नाम हरण भव धूपा ॥

सकल मंत्र नामनि के माँहीं ❀ शक्ति सुराम नाम सम नाँहीं ॥
अपर नाम उमराव वजीरा ❀ राम नाम नृप न्यायी धीरा ॥
अपर नाम उडगण सुख कन्दा ❀ राम नाम पूनम के चन्दा ॥
अपर नाम वहु प्रवल प्रकाशा ❀ राम नाम रवि तेज निवासा ॥
अपर नाम मुक्ता मणि नाना ❀ राम नाम चिन्ता मणि आना ॥
अपर नाम सब सुभग बराती ❀ राम नाम दूलह अघ घाती ॥
अपर नाम सब द्विज बुधिवन्ता ❀ राम नाम जग त्यागी सन्ता ॥

दोहा—अपर नाम सब विबुध गण, रामनाम सुरराज ।
जापक उर अमरावती, राजत सहित समाज ॥४॥

अपर लोक प्रभु के बहु नामा ❀ राम नाम साकेत सु धामा ॥
अपर नाम षटरस सु मिठाई ❀ राम नाम अमृत सुखदाई ॥
अपर नाम सब गुण सुअनेका ❀ राम नाम अविकार विवेका ॥
अपर नाम सब अङ्ग अनूपा ❀ राम नाम चैतन्य स्वरूपा ॥
अपर नाम सब वीर अशङ्का ❀ राम नाम हनुमत भट वङ्का ॥
अपर नाम वहु ग्रन्थ सुहाये ❀ राम नाम श्रुति सार सु गाये ॥
अपर नाम नाना विधि फूला ❀ राम नाम सुन्दर फल मूला ॥
अपर नाम सुचि साधु सचेता ❀ राम नाम गुरु कृपा निकेता ॥
अपर नाम प्रभु भक्त अडोला ❀ राम नाम सङ्कर बम्भोला ॥
अपर नाम अघ सस कहँपाला ❀ राम नाम कालहु के काला ॥

दोहा-अपर नाम अवतार सब, राम नाम सिय राम ।
जापक उर श्रीजनकपुर, विहरहिं जहँ वशुयाम ॥५॥

कोटिन माघ प्रयाग नहाई ❀ राम नाम बारक रटु भाई ॥
कोटिन व्रत एकादशि कीजै ❀ राम नाम मुख बारक लीजै ॥
कोटिन विप्र सु न्यौति जिमावै ❀ राम नाम बारक मुख गावै ॥
कोटिन भांति करै प्रभु सेवा ❀ राम नाम सम नहिं सुख देवा ॥

कोटिन बिधि सेवै शुचि सन्ता ❀ राम नाम एक वार कहन्ता ॥
कोटिन मातु पिता सेवकाई ❀ राम नाम सम सुखद न भाई ॥
कोटिन गो रच्छा जो करई ❀ राम नाम बारक उच्चरई ॥
कोटिन भांति देइ बहु दाना ❀ राम नाम बारक न समाना ॥
कोटिन साधन ज्ञान विवेका ❀ राम नाम सम सुखद न येका ॥

दोहा—कोटिन सर वापी कुआँ, खनैं लगावै बाग।
राम नाम के सम नहीं, रटु तेहि सह अनुराग ॥६॥

कोटिन किरिया कर्म विरागा ❀ करै नाम विन जगत न भागा ॥
कोटिन मख जप तप कोउ ठाने ❀ राम नाम इक वार बखाने ॥
कोटिन सन्ध्या बन्दन करहू ❀ राम नाम बारक उच्चरहू ॥
कोटिन रचै धर्म गौशाला ❀ राम नाम बारक जन पाला ॥
कोटिन पढ़ै पुराण सु बेदा ❀ राम नाम बारक हर खेदा ॥
कोटिन विधि गायत्री जापै ❀ राम नाम यक बार अलापै ॥
कोटिन रचै चेत्र सुर देवल ❀ राम नाम रटु बारक ही भल ॥
कोटिन पूजा पाठ करीजै ❀ राम नाम बारकहि भनीजै ॥
कोटिन ब्रह्मचर्य शुभ कर्मा ❀ राम नाम सम तुलै न धर्मा ॥

दोहा—कोटिन साधन साधिये, कोटिनि जन्म सुधारि।
राम नाम की रटन सम,सुखद न कहत पुरारि ॥७॥

अस विचारि जो चहहु भलाई ❀ रटहु रटावहु नामहिं भाई ॥
विद्यारथी रटै जो नामहिं ❀ पावहिं विद्या बिनुश्रम सामहिं ॥
धन हित रटन करै जो कोई ❀ मिलै विपुल कहुँ घटै न सोई ॥
उभय लोक महँ जो चह जीती ❀ रटै रटावै नाम सप्रीती ॥
जो चह कोउ सुन्दर सुत नारी ❀ रटै नाम नित होय सुखारी ॥
नारि चहहिं जो सुत पति भूषण ❀ पावहिं सो रटि नाम अदूषण ॥
रोगी जो चह रोग नशावन ❀ रटै नाम लय लाय सुपावन ॥

कोढ़ी चह जो निर्मल काया ❀ रटैं नाम सियराम सुहाया ॥

दोहा—रुजगारी रुजिगार में, लाभ चहहिं जो कोय ।
रटैं रटावैं नाम नित, कबहुँ न हानी होय ॥८॥

भयदायक अस्थलनि मसाना ❀ रटत जाव सियराम सुजाना ॥
राजभवन जङ्गल जल माँहीं ❀ प्रविसहु नाम रटत भय नाँहीं ॥
कालहु की गति नाहिन तहँवाँ ❀ होत उचारन नाम सु जहँवाँ ॥
दुखप्रद जे सिंहादिक नाना ❀ सुनत पराहिं नाम धुनि काना ॥
जे ग्रह ग्राम परै बीमारी ❀ हैजा प्लेग बुखार तिजारी ॥
जयसियराम नाम धुनि कीजै ❀ मिलि सुपरस्पर सबदुख छीजै ॥
जेहि ग्रह ग्राम सु प्रेत विराजै ❀ सुनि सियराम नाम धुनिभाजै ॥
जो सीखन चह गुण चतुराई ❀ सो सियराम रटै मनलाई ॥
जोग जुगति जो चाहहिं जोगी ❀ रटैं नाम सियराम निरोगी ॥

दोहा—कहत सुनत गावत सुजन, राम कथादि पुराण ।
आदि अन्त श्री नामधुनि, कीजै हित कल्याण ॥९॥

नाम सु कीर्तन गाय बजाई ❀ करहु करावहु हिलिमिलि भाई ॥
आरम्भौ जो कवनिहु काजा ❀ करिय नामधुनि सहित समाजा ॥
जो चह सिद्धि करन सबकामा ❀ करिय नाम धुनि प्रद बिश्रामा ॥
चाहहु जो सब सुख अनुकूला ❀ करहु नाम धुनि मंगल मूला ॥
हनुमन्तहि जो चहहु रिझाई ❀ तौ रटि नाम सुनावहु भाई ॥
'सकल बासना करिहैं पूरी ❀ सुनि सियराम नाम धुनि रूरी ॥
जो चह प्रभुपद पंकज प्रेमा ❀ करै नाम धुनि दायक छेमा ॥
सबविधि कुशल चहहु सबठामा ❀ रटहु सदा सियराम सु नामा ॥
आकर्षण मारण मोहन मन ❀ अस्तम्भन वश करन उचाटन ॥
जप तप योग विराग सुदाना ❀ पूजन पाठ होम व्रत ध्याना ॥

दोहा—अनुष्ठान शिधि होयँ सब, आदि सु षष्ट प्रयोग।
रटै नाम हनुमान ढिग, वैठि सुतजि तिय भोग॥१०॥

यहि विधि श्रीहनुमानहिं जोई ❀ नाम सुनावै तौ सिधि होई॥
नारि संग तजि श्री सियरामा ❀ रटै अखंड पुलकि वसु यामा॥
करिसुअचलमन सुचिसबअङ्गा ❀ बैठे सनमुख तजि सब संगा॥
सूक्ष्म शुद्ध असन एक बारा ❀ पावै लघु दिन में सविचारा॥
अपर बात तजि लाख सुबारा ❀ रटै नाम सिय राम उदारा॥
मध्यम स्वर ते करै उचारन ❀ षष्ट मास करि नेम सुधारन॥
विघन होय तौ मन न डुलावै ❀ अधिक नेम में प्रेम बढ़ावै॥
बिलम होय बरु नेम न त्यागै ❀ दिन दिन नाम रटन में पागै॥
अपर आस भय नींद विहाई ❀ केवलि नाम रटै लय लाई॥
उर दृढ़ता लखि श्रीहनुमाना ❀ सकलकाजसिधिकरहिं सुजाना॥
कहेउँ न कछु विधि युगतियनाई ❀ यह सब बात मोर अजमाई॥
नाम रटत मोपर हनुमाना ❀ जेहिविधिद्रवेउसोसुनहुसुजाना॥

दोहा—गुरु प्रभाव श्री नाम यश, सूचक यह इतिहास।
वरणों नहिं अभिमान कछु, सुजन करहिं विश्वास॥११॥

सम्वत् उनइस सत सुभखासा ❀ साल उन्हत्तरि कार्तिक मासा॥
सित एकादशि दिवस सुजाना ❀ यवन अवध महँ गोवध ठाना॥
संत भक्त वैशनव बहु तेरे ❀ होत अनर्थ अवध महँ हेरे॥
मिलि सबप्रथम सुसम्मत कीना ❀ धर्म लागि तन तजिय प्रवीना॥
कसि २ कटि सब गोहित कारन ❀ यवननि जहँतहँ गयेउ निवारन॥
बातहि बातनि रिस चढ़ि आई ❀ लगी परस्पर होन लराई॥
लाठी ईंट मुष्टिका लाता ❀ करहिं एक एकनि के घाता॥
अल्ला तोवा यवन पुकारहिं ❀ जय सियराम सुभक्त उचारहिं॥
घायल भये मरे 'बहु प्रानी ❀ धर्म हेत हारेउ जिन्दगानी॥

धर्म हेतु जो तन परिहरहीं ❀ विनुप्रयाससोभव निधितरहीं ॥

दोहा—गऊ छुड़ायेउ मारि वहु, यवन कीन मैदान ।
विजय भई ब्रह्माण्ड महँ, बाजेउ धर्म निसान ॥१२॥

पाछे भूपति कीन्ह सहाई ❀ यवन दशालखि गयेउ रिसाई ॥
पकरि २ भक्तनि वरि आई ❀ कारागृह वहु दीन पठाई ॥
मम गुरुदेव धर्म हितकारी ❀ लखियहअनरथहृदय विचारी ॥
यहि कौतुकमहँ मिलिकछुकाला ❀ भक्तबंदिनाशउँ करि ख्याला ॥
अवध धाम ते देउँ उठाई ❀ गो वध जो प्रभु करैं सहाई ॥
अवध वास कर दृढ़ प्रण मोरा ❀ तजि हरिहों भक्तनि दुख घोरा ॥
बाराणसी सिष्य के गेहा ❀ जैहों येहि मिस नहिं संदेहा ॥
सिय मोहिनी सरण बहु बारा ❀ कहेउ चलहु मम गेह मझारा ॥
तासु मनोरथ पूरन करिहौं ❀ सब विधि तेहि मनमोदनिभरिहौं ॥

दोहा—मिलेउ सु अवसर नीक यह, येक पंथ दुइ काम ।
करिहों आय बहोरि सुख, बसिहों अवध सु धाम ॥१३॥

परहित लागि सन्त की देहा ❀ प्रगटेउ जग नहिं कछु संदेहा ॥
अस विचारि भूपति उर प्रेरा ❀ निर अपराध आय सो घेरा ॥
सजा सात संम्वत् कहि दयेऊ ❀ पठयेउ जहँ गुरु चाहत भयेऊ ॥
निज सेवकनि संग ग्रह कारा ❀ काशी कीन्ह निवास उदारा ॥
सिय मोहिनी सरण सुख देवा ❀ कोन तहाँ नाना विधि सेवा ॥
काराग्रहउ माँहिं बहु चेला ❀ कीन्ह जाय करि चरित नवेला ॥
सब के बंधन गुरू निवारहिं ❀ तिन्हिकहँ काराग्रह को डारहिं ॥
परहित रत गुरु संत सुजाना ❀ तिन्हिकेचरितन लखहिंअयाना ॥
तेहि अवसर मोहि देंन बड़ाई ❀ आयसु दीन्ह जेल ते भाई ॥
सिया मोहिनी सरन सु द्वारा ❀ पठयेउ प्रभु संदेस उदारा ॥

दोहा—खष्ट मास हनुमान जो, संकट मोचन नाम ।
तिन्हैं सुनावहु जायतुम्ह, निशि दिनरटि सियराम ॥१४॥

सनमुख बैठि त्यागि सब कामहिं ❀ रटौ निरंतर केवलि नामहिं ॥
छठे महीना मिलि हों आई ❀ करि यह लीला साधु छुड़ाई ॥
सुनि सतगुरु की सत्य सुबानी ❀ हनुमत ढिग बैठेउँ हठ ठानी ॥
विपुल कष्ट करिमुख सियरामा ❀ रटों अखंड बैठि वसु जामा ॥
जग सुख ते मन भयेउ उदाशा ❀ गुरु दरशन की लागी आसा ॥
निशि दिन नामहिं नाम उचारों ❀ काहुइकी नहिं ओर निहारों ॥
साढ़े पाँच सु महिना बीते ❀ नाम उचारन करत सप्रीते ॥
स्वप्न माँहि तब श्री हनुमंता ❀ हुइ प्रसन्न बोलेउ वलवंता ॥
येहि विधि सदा सुनायेउ नामू ❀ मिलहिं तोर तब गुरु सुखधामू ॥
प्रियन मोहि कछु नाम समाना ❀ पूजा पाठ सु साधन ध्याना ॥

दोहा—कौल कीन्ह करि विनय मैं, सुनि बोलेउ हनुमंत ।
छठे दिवस छूटहिं सकल, बंधन ते गुरु संत ॥१५॥

यहि विधि देखि सपन सुखदाई ❀ जागि भयेउ अति आनँद भाई ॥
कही भई सो सत्य सु बानी ❀ छूटे छठे दिवस सब प्रानी ॥
मिलेउआयमोहिं सहितसमाजा ❀ श्रीगुरु पूरए करि सब काजा ॥
संकट मोचन ढिग तेहि कारन ❀ अजहुँ होत सियराम उचारन ॥
छूटेउ सब के बंधन भारी ❀ नाम प्रभाव लखहु नर नारी ॥
येहि प्रसंग महँ नाम बड़ाई ❀ भाखेउँ मैं निज बीती भाई ॥
जो हनुमानहिं नाम सुनावैं ❀ रटिरटि सो जन सब सुख पावैं ॥
सियाराम सियराम सु नामू ❀ रटै बैठि श्री हनुमत सामू ॥
सर्द्धा सहित स्पष्ट नेम करि ❀ रटें जाय विश्वास हृदय धरि ॥
अपर उपाय समूल विसारै ❀ केवलि नामहिं नाम उचारै ॥

दो०—मुख में वानी वेखरी, तेहि सन नहिं उर माँहिं।
पावहु गे तव सकल सुख, भीतर सुमिरे नाँहिं ॥१६॥

अजमाई यह मोर सुवाता ❀ भाखौं सत्य सोंहँ करि साता॥
वारह वर्ष पुकारि पुकारी ❀ रटै वेखरी सन प्रणधारी॥
तव उर करहिं सु नाम प्रवेसा ❀ नाशहिं आवागमन कलेसा॥
नशै मोह तम होय प्रकासा ❀ दरसै आतम रूप सुखासा॥
स्वास स्वास प्रति तव वशुजामू ❀ विनु श्रमनिकसहिं आपहिनामू॥
सिद्ध अवस्था येहि कहँ कहहीं ❀ रटत २ नामहिं जन लहहीं॥
प्रथम रटन जो भीतर नामू ❀ कहहिंतजियतिन्हिंलखिदुखधामू॥
रटत २ मुखते चहुँ बानी ❀ मिलति एक एकनि ते आनी॥
अस विचारि बुध मुखते रटहीं ❀ कोटिनि विघन होयनहिं हटहीं॥
विघन विध्वंसक नाम कृपाला ❀ जन रक्षक प्रभु दीन दयाला॥

दो०—दुर्लभते दुर्लभ सुलभ, होत सिद्धि सब काम।
साँचे मनते रटत मुख, श्री सियराम सु नाम ॥१७॥

अनहोनी हूं परे लखाई ❀ श्रीसियराम रटत लयलाई॥
दूरि देश पर मन के हालहिं ❀ जानहुगे रटि नाम कृपालहिं॥
अखिल लोक के सकल पदारथ ❀ मिलत आय अनयास जथारथ॥
जो न होय काहुइ ते कामा ❀ पुरवहिं सो सियराम सुनामा॥
माया ब्रह्मरु आपन रूपा ❀ जानहु गे रटि नाम अनूपा॥
प्रभु के गुप्त रहस्य अनेका ❀ जनिहौ रटि सियराम सटेका॥
विनुश्रम जगवन्धन सब कटिहैं ❀ तिन्हिके जे सियराम सुरटिहैं॥
खुलिहहिं अनुभव केर किवारा ❀ श्रीसियराम रटत यकतारा॥
बचन सिद्धि आदिक सिद्धाई ❀ होत रटत सियरामहिं भाई॥
जो स्वासनि प्रति नाम पुरावहिं ❀ सो सदेह प्रभुधाम सिधावहिं॥
जीवन मुक्त कहावहिं तेई ❀ रटहिं नाम प्रतिस्वास सु जेई॥

दोहा—सहस पचीस सु देहते, निकसहिं प्रविसहिं स्वास ।
आठ पहरमें कहत मुनि, श्रुतिपुराण इतिहास ॥१८॥

उतनेहिं नाम पचीस हजारा ❀ रटै नित्य तब होय उबारा ॥
कीन्ह करार गर्भ के मांहीं ❀ रटिहौं नाम कह्यो प्रभु पांहीं ॥
स्वास स्वास प्रति श्रीसियरामा ❀ रटिहौं सत्य कहौं सुखधामा ॥
गर्भवास को शोक निवारहु ❀ येहिते बाहिर बेगि निकारहु ॥
हलन चलन बोलन नहिं पावहुँ ❀ गर्भ कलेश कहाँलगि गावहुँ ॥
बँधे नशनि ते सकल शरीरा ❀ परवश परेउ सहत अतिपीरा ॥
ऊर्द्ध चरण शिर मल थल माँहीं ❀ सोचतही निशि दिवस सिराँहीं ॥
नहिं कोउ मोर सहायक स्वामी ❀ तुम्हबिनु हे प्रभु अन्तरयामी ॥
येहि अवसर मम विनय सुनीजै ❀ नाथ गर्भ ते बाहिर कीजै ॥
बारबार यहि भांति निहोरी ❀ विनवत प्रभुहिं जीव करजोरी ॥

दोहा—रटिहौं निशि दिन नाम तव, तजि ग्रह शोकागार ।
सत्य कहौं प्रभुपद सपथ,येहि विधि कीन्ह करार ॥१६॥

अति आरत हुइ विविध प्रकारा ❀ विनय कीन्ह प्रभुते बहु बारा ॥
तव बोले प्रभु परम उदारा ❀ बिसरेउ जनि यह गर्भ करारा ॥
रटेउ सदा प्रति स्वास सुनामा ❀ बहुरि न परव गर्भ दुखधामा ॥
हरण नाम मम सर्व कलेशा ❀ तजेउ न ताहि सु यह उपदेशा ॥
रहिहौं मैं यहि विधि तव पासा ❀ रटिहौ नामहिं जो प्रतिस्वासा ॥
कोटिनि विष्णू संभु विधाता ❀ नाम समान न कोउ जन त्राता ॥
सकल काम पूरक मम नामा ❀ रटेउ रटायेउ तेहि बशुयामा ॥
जो प्रति स्वासहि नाम न ररिहौ ❀ फिरिफिरितोइन्हि गर्भनिपरिहौ ॥
बाहिर देखि प्रपञ्च अपारा ❀ विसरि जात मम नाम उदारा ॥
गर्भ करार न भूलेहु कवहूं ❀ कोटिनि होंयँ परीक्षा तबहूं ॥
माया कृत दुख-सुख सम जानी ❀ रटेउ नाम मम सब सुख दानी ॥

बारंबार सिखावहुँ तोही ❀ रटेउ नाम भूलेउ जनि मोही ॥

दोहा—यहि विधि दृढ़ करि गर्भते, बाहिर कीन्ह कृपाल ।
बिसरि गयेउ वह कौल सठ, फँसि अब माया जाल ॥२०॥

लगेउ करन कारज विपरीता ❀ बिसरेउ प्रभु करि जग सनप्रीता ॥
बाहिर निकरि अनेक प्रपञ्चा ❀ सीखि जरै त्रय तापनि अञ्चा ॥
रटत न नाम काम रस पागा ❀ गर्भ कौल तजि दीन्ह अभागा ॥
अबहुँ चेति पच्चीस हजारहि ❀ रटि सियराम सुनाम उदारहि ॥
गये जाँयँ जो स्वास वृथाहीं ❀ अब न नशाउ सोचि मनमाहीं ॥
चढ़त शीश ऋण स्वासनि केरा ❀ दिन दिन रटु सियराम सबेरा ॥
पुरवहु अब तुम गर्भ करारा ❀ रटि सियराम पचीस हजारा ॥
आजहिं ते दृढ़ नेम सु कीजै ❀ नित्यमुक्त जीवन पद लीजै ॥
जागहु मोह नींद ते भाई ❀ करहु वेगि सियराम रटाई ॥

दोहा—गये स्वास जो आजु लगि, तिन्हिकर जोरि हिसाब ।
पुरइदेइ रटि नाम तव, नित्य मुक्त पद पाव ॥२१॥

वर्ष सवा सौ के दिन केते ❀ जोरहु दिन प्रति स्वासा जेते ॥
स्वास स्वास प्रति नाम सु जोरी ❀ चारि भाग तेहि करै बहोरी ॥
प्रथम भाग जब रटि सु पुरैहौ ❀ कर्म मुक्त गति तेहि दिन पैहौ ॥
त्रगुन मुक्त गति दूसर भागा ❀ पैहौ रटि मुख सह अनुरागा ॥
तीसर भाग रटत लय लाई ❀ नित्य मुक्त गति होत सुहाई ॥
जीवन मुक्त सुगति सुखदाई ❀ चौथ भाग रटि पैहौ भाई ॥
अव्याहत गति इच्छित कामा ❀ पैहौ रटि चहुँ भाग सुनामा ॥
स्वासनि प्रतिपुरिहहिं सबनामा ❀ हुइहहु तब सबगुन सुखधामा ॥
नाम रटत परलोक लोक के ❀ मिलतसकलसुखहरनसोकके ॥

दोहा—देवनि सम नर देह यह, भासहिं तेजागार ।
अकथ अटर आनंद उर, भरिहहिं आय अपार ॥२२॥

सियवर दर्शन आदि अमितसुख ❀ पैहौ विनशहिं जन्म मरन दुख ॥
जो सब स्वास जन्म भरि करे ❀ जोरि नाम प्रति स्वास सबेरे ॥
रटिहहिं ते सब सुख की ढेरी ❀ हुइहहिं अवसि कहौं मैं टेरी ॥
कलियुग वयस सवा सौ वर्षा ❀ जोरि स्वास रटु नाम सहर्षा ॥
करि वैश्नव गुरु बूझहु भेदा ❀ नाम रटन कर नाशन खेदा ॥
निज हठितजि गुरु आयसु मानी ❀ रटै नाम प्रति स्वास सुवानी ॥
यहिविधि जो रटि नाम पुरावत ❀ परमधाम सो जन सुख पावत ॥
सहज स्वरूप धारि प्रभु संगा ❀ पावहिं आनँद अकथ अभंगा ॥
कर्मी धर्मी ज्ञान गुमानी ❀ लहहिंन यहगति सबसुखखानी ॥
जो प्रतिस्वास नामरटि पावहिं ❀ नामरसिकजनप्रभुमन भावहिं ॥
रिधिसिधिभगतिग्यान गतिप्रेमा ❀ नाम रटत पावहिं प्रद चेमा ॥

दोहा—वर्ष सवासौ दिननि के, गनि स्वासा प्रति स्वास ।
रटि पुरवहिं सियराभते, रामरूप जग खास ॥२३॥

यह विधि थोरे नाम न होई ❀ रटै खूब शिधि पावहिं सोई ॥
यह साधन अति सुलभ ललामा ❀ नहिंकछुविधिविधान करकामा ॥
केवल युगल नाम लय लाई ❀ रटै वैठि सब संग विहाई ॥
राम नाम सियनाम विहीना ❀ रटहिं न जे प्रभु भक्त प्रवीना ॥
सिय विहीन चहैं रामहिं साधी ❀ उलटे होयँ महा अपराधी ॥
कोउ सुनि भाइहु करहु न शंका ❀ यह उपासना भेद सु बंका ॥
प्रभुहिभजहिंसबमति अनुसारा ❀ पढ़िसुनिपोथिनि के सुविचारा ॥
कवनिउँ भाव प्रभुहिंजो ध्यावहिं ❀ पूजनीय सो धन्य कहावहिं ॥
जेहि उपासना रसकर ज्ञाना ❀ तेहिकर भेद भाव कछु आना ॥
रसिक अनन्य उपासक भेदा ❀ जानत नहिं पुरान बुध वेदा ॥
गूँगा खाय पदारथ नाना ❀ तेहिकर सुख को करै बखाना ॥

दोहा—सतयुग त्रेता आदि के, जीव रहे सज्ञान ।

भजत रहे केहि भावते, प्रभुहि भेद को जान ॥२४॥

राम राम संकर वहु काला ❀ रटेउ न रीझे राम कृपाला ॥
रामहि जब सिय भेद बतावा ❀ तब सिव जानकि अस्तवगावा ॥
सिया सरूप हृदय धरि संकर ❀ लगेउ रटन पुनि राम नामवर ॥
वसेउ राम तवते सिव हीया ❀ रीझि अखंड समेत सु सीया ॥
अब सिव राम नाम यक तारा ❀ रटत सहित घरनी परिवारा ॥
तिन्हि सवनाम रटइ अनि कीगति ❀ काजानहिंकलि जीवकुटिलमति॥
असविचारिसियसहित सुरामहिं ❀ भजहिंसंत तजितर्क निकामहीं ॥
सियसु राम ग्रह राम सुगेही ❀ राम प्राण सिय सिया सुदेही ॥
यक विनु एक अर्ध जिय जानी ❀ रटहिं न एकै आतम ज्ञानी ॥
सिय ते राम न सिया राम ते ❀ बिलगत नहिं जिमि भानुघामते ॥
यद्यपि सिय के नाम अपारा ❀ सिया नाम सब ते प्रभु प्यारा ॥
जपत निरन्तर सिय सिय नामा ❀ श्री रघुनन्दन सब सुख धामा ॥

दोहा–वैदेही श्री जानकी, सीता महिजा सीय ।
रामप्रिया के नाम बहु, सकल सुभद कमनीय ॥२५॥

सीता नाम सुमंत्र खड़ाखर ❀ जपत देत ऐश्वर्य महाभर ॥
राम नाम सँग चलत न आतुर ❀ यहिकर भाव सुजानहिं चातुर ॥
बाढ़ै भूख नाम की जबहीं ❀ रटत शीघ्र बहु होंन सुतबहीं ॥
सीता सो सित सित होइ जावै ❀ राम नाम रम रम बहिरावै ॥
थोर रटे सन्तोष न होई ❀ नाम नेम बड़ पुरै न सोई ॥
विनु बहु रटे स्वास प्रति नामा ❀ पुरहिं न हृदय होय विश्रामा ॥
दिन प्रति कर ऋण सहस पचीशा ❀ पुरए बिनु न द्रवहिं जगदीशा ॥
विनु प्रभुद्रवे न नशहिं जनन दुख ❀ बिनुदुख नशे न होत परमसुख ॥
जन्मत मरत रटे विनु नामहिं ❀ मननथिरातलखै किमिरामहिं ॥
नाम रटन विनु जनन प्रयासा ❀ लहत न आतम निज सुखवासा ॥

दोहा-निज सुख विनु नहिं थीर मन, मन थिर विनु प्रभु रूप।
दरशत नहिं जेहि विनु विमुख, जीव परेउ भव कूप ॥२६॥

साधन साधत कोटिनि जनमा ❀ वीतेउ अस्थिर भयेउ न मनमा ॥
अस विचारि तजि सकलअशंका ❀ करहु नामकर नेम सुवंका ॥
सवा लाख वा लाख सुवारा ❀ रटहु नाम नित तजि मद मारा ॥
जो कोइ विमुखी विमुख करावै ❀ तेहिकर सीख हृदय नहिं लावै ॥
स्वाशनि कर ऋण पुरइ पछारी ❀ करियसु जो रुचि होय तुम्हारी ॥
यह ऋण पुरए बिनु शुभ कर्मा ❀ करत होत सो सकल अधर्मा ॥
ऋण हत्या यह अति दुखदाई ❀ नाम रटे विनु छूट न भाई ॥
नरतन महँु जो यह ऋण राखा ❀ परिहौ फिर चौरासी लाखा ॥
जिन्हि पुरयो यह गर्भ करारा ❀ तिन्हिकर यश छायेउ संसारा ॥
नाम जापकनिके गुन नामहिं ❀ गावत जन पावत विश्रामहिं ॥
नाम सुजापक नाम स्वरूपा ❀ रटत २ होइ जात अनूपा ॥

दोहा-हनुमत शिव प्रह्लाद ध्रुव, बालमीकि ऋषिराज।
कलि तुलसीदासादि बहु, भयेउ सन्त सिरताज ॥२७॥

युगल अनन्य सरन अभिरामी ❀ भयेउ अवधमहँ जापक नामी ॥
केवल नामहिं रटि लय लाई ❀ कियेस्ववशजिन्हिसियरघुराई ॥
अपर बात जे कहहिं बनाई ❀ तिन्हिकर संग न कीजै भाई ॥
करहु खूब नामहिं की रटना ❀ मन क्रम बचन न पाछे हटना ॥
प्रथमकहीतेहिबिधिहि बिचारहु ❀ आन बात कछुजनि उर धारहु ॥
सोइ जानकी सिया सोइ सीता ❀ भेद कहहिं ते अवुध पतीता ॥
सकल सिद्धि दायक सब नामू ❀ रटत सबहिं जन पावत रामू ॥
सीता राम जानकी रामा ❀ शीघ्र न रटत बने बसु यामा ॥
दीर्घ नाम जो करत उचारन ❀ थकत बदन लह नेमहु पारन ॥

दीर्घ नेम बिनु स्वासनि केरे ❀ पुरत न अधिक सुनाम †सवेरे ॥
दोहा--सीताराम उचारन, करै शुद्ध जो कोय ।
सात पहर महँ लाख यक, कठिनाई ते होय ॥२८॥
सिथिल होय मन श्रद्धा त्यागै ❀ थके जीभ व्रत बोझा लागै ॥
सवा लाख नित नेम जुधारै ❀ कवनिउ विधि तौ लगै न पारै ॥
तन करहू कृत जो न करै जन ❀ तौ किमि निबहै नित्य नेम पन ॥
रटहिं स्वास प्रति जो जन नामा ❀ ते जानहिं यह भेद ललामा ॥
योंतो नामहिं सबहिं उचारत ❀ कठिन नेम कोउ २ जन धारत ॥
जानहिं ते सब नाम रटन विधि ❀ युगलनामरटि पाईजिन्हिशिधि ॥
एकै भांति नाम श्री सीता ❀ रटे जाँयँ नहिं. दूसर रीता ॥
श्रीसिय नाम सुविविध प्रकारा ❀ होत उचारण प्रभुहिं सुप्यारा ॥
सी जू सिया सीय सिय सीया ❀ जपहिंरामयेहिविधिनिजहीया ॥
श्री रघुवर के ये सिय नामा ❀ प्राणाधार जपहिं बसु यामा ॥
दोहा--सीता मंत्र प्रताप मय, तिन्हि सँग राम सु नाम ।
रहत सकोचित द्रवत नहिं, जस सिय सँग अभिराम ॥२९
राम नाम सँग सिय के नामा ❀ कवनिउँ होयँ युगल ते कामा ॥
श्रीसियनाम सुसरस सरलअति ❀ रटत राम सँग होत बिमल मति ॥
राम नाम सिय नाम सु संगा ❀ रटत देत सब सुख सु अभंगा ॥
गूढ़ अर्थ निज नाम प्रतापू ❀ सिय सँग रटत लखावत आपू ॥
सियसँग बिनुश्रम होतउचारण ❀ राम नाम भव बन्ध निवारण ॥
रसमय होइ बैखरी बानी ❀ रटि सियरामनाम सुख खानी ॥
सिय सँग राम रटत यक तारा ❀ उघरहिं लोचन ज्ञान विचारा ॥
व्यापहिं विघन न टूटहिं नेमा ❀ सिय युत राम रटत प्रद छेमा ॥
अनुभव प्रेम प्रवाह बढ़ावन ❀ श्रीसियनाम राम मन भावन ॥

† शीघ्र ।

रटत सुगम मन हटत न कबहूँ ❀ रटै अखंड दिवस निशि तबहूँ ॥

दोहा—नेमिनि कहँ अति सुलभ सिय, राम नाम सुखदाय ।
बिनुश्रम पाँचहिं पहर महँ, सवालाख पुरि जाय ॥३०॥

नेम पुराय नाम मधुराई ❀ चाखत रहै न त्यागै भाई ॥
साँचे नाम उपासक कोई ❀ नाम रहस्य सु जानहिं सोई ॥
रटत नाम बहु रहित विचारा ❀ लालच लोभ सहित मद मारा ॥
ते सिय राम नाम कर स्वादा ❀ लहहिं न बकत बृथा बकवादा ॥
सिय सीता नामनि महँ शङ्का ❀ करत अबुध अति जड़मति रङ्का ॥
सिय सुनाम प्रभुउर सुखकन्दा ❀ करत निवास लखहिं किमि मन्दा ॥
जग जंजालनि मति अरुझानी ❀ सिय महिमा किमि जानहिं प्रानी ॥
प्रभुहिं करैं जब कृपा अहेतू ❀ देत नाम सिय प्रेम निकेतू ॥
मोहि दीन हनुमत गुरु देवा ❀ यह सिय राम रटन प्रभु सेवा ॥
सुलभ सुखद निरुपधि गतिदाई ❀ नाम रटन सम अपर न भाई ॥

दोहा—राम नाम सिय नाम सँग, जबते धारण कीन्ह ।
तबते प्रभु अपनाय मोहि, अकथ अमित सुखदीन्ह ।३१।

नामहुँ मम सिय लाल सु सरना ❀ धरेउ सु सतगुरु भव भय हरना ॥
सिया नाम सँग राम सु नामा ❀ रटि पायेउँ मैं अति विश्रामा ॥
मोर बचन सुनि करि विश्वासा ❀ रटहु नाम सिय राम सु स्वासा ॥
जो जन गर्भ करार पुरावन ❀ चहहिं जान प्रभु धाम सुपावन ॥
यहाँ उहाँ चह सब सुख ढेरी ❀ तिन्हि सबते यह विनती मेरी ॥
रटहु नाम सियराम अखण्डा ❀ उपजहिं उर विज्ञान प्रचण्डा ॥
निज बीती मैं भाखी भाई ❀ रटहु सु नाम प्रतीत दृढ़ाई ॥
अर्ध जन्म की स्वासनि केरे ❀ पुरहिं नाम जब प्रभु बिनु टेरे ॥
आय करहिं रक्षा बशुयामा ❀ जिमि बालक की मातु ललामा ॥
सिय सह सुनि निज नामउचारण ❀ रक्षहिं करि धनु बाण सुधारण ॥

श्री सियराम जापकनि साथा ❀ रहहिं सपरिकर सिय रघुनाथा ॥
करहिं सुरा सुर सब अवतारा ❀ नाम जापकनि की सु सँभारा ॥

दोहा—सिय सह राम सुनाम नित, रटहु तर्क सब त्यागि ।
पुरवहु गर्भ करार ऋण, महा मोह निशि जागि ॥३२॥

बकहु न बाय चेत उर कीजै ❀ छन २ यह तन आयू छीजै ॥
बहु दिन बीतेउ सोवत भाई ❀ बिसरेउ नाम परम सुख दाई ॥
सेवत अगम सुगम सबहीते ❀ नाम प्रभाव लखहु जन जीते ॥
केवल नाम अनन्यहिं जाने ❀ लखहिं न जे भव भोगनि साने ॥
जो जानहिं ते फिरैं दिमानें ❀ रटत रटावत नाम सयानें ॥
कतहुँ बैठि सियराम उचरहीं ❀ पुलकि २ लोचन जल भरहीं ॥
कतहुँ सजातिनि लेइँ बटोरी ❀ कर गहि गहि झांझनि की जोरी ॥
नाँचहिं गावहिं जय सियरामा ❀ लोक लाज परि हरि दुखधामा ॥
यह धुनि जहाँ करैं जो कोई ❀ तहाँ कछू उतपात न होई ॥
कोटिन विघन नशैं यह धुनि सुनि ❀ करहु करावहु सुजन हृदय गुनि ॥

दोहा—श्री सियरामहिं रटत कै, यह धुनि गाय बजाय ।
करहिं करावहिं जहँ तहाँ, सुनि अघ ओघ नसाय ॥३३॥

राम नाम धुनि सु निश्चय नासा ❀ होत जथा तम भानु प्रकासा ॥
नाम जापकनि की सिवकाई ❀ हरत सकल दुःख अघ समुदाई ॥
तिमि सियराम नाम धुनि भाई ❀ जन्म मरन दुख देति नशाई ॥
तजि सियराम नाम धुनि धारा ❀ मज्जहिं साधन गढ़नि गँमारा ॥
ते न लहहिं सुख कलियुग भाई ❀ अबुध कुटुम्बी जिमि समुदाई ॥
सुचि संतनि के संग विहीना ❀ जथा ग्रहिनि के कर्म मलीना ॥
खर कूकर सूकर सम जीवत ❀ जे नहिं नाम रसामृत पीवत ॥
अमलिनि की गति नर्कनि जाई ❀ पैहहिं नाम रटे विनु भाई ॥
मदिरा माँस तमाकू धूआँ ❀ भक्षि परहिं जे जिमि भव कूआँ ॥

नाम रटे विनु तिमि वैतरनी ❀ बूड़हिं जन करि मनमुख करनी ॥

दोहा—भक्ति विमुख नरदेह धरि, विषय भोग लवलीन ।
रहत लहत जे मलिन गति, सोइ श्रीनाम विहीन ॥३४॥

विद्यापढ़ि द्विज ब्रह्म न जाना ❀ करत विवाद फिरत बउराना ॥
सरल शुद्ध संतनि की वानी ❀ दूषहिं तेहि विद्या अभिमानी ॥
पावहिं ते जिमि दादुर जोनी ❀ सोइ सिय राम रटेविनु होनी ॥
प्रभु कर अंश होय यह जीवा ❀ करत जगतसन प्रीति अतीवा ॥
तेहिलगिसहिदुखपुनिजमधामहिं ❀ जात रटेविनुजिमि जननामहिं ॥
तजि श्री वैश्नव संत प्रवीना ❀ करहिंजे गुरु प्रभुभक्त विहीना ॥
भजि भूतनि प्रेतनि की काया ❀ पावहिं जिमिजिन्हि नामनगाया ॥
वैश्नव गुरु करि वैश्नव वाना ❀ धारन करिपुनि तजहिं अयाना ॥
घोर नर्क महँ ते जिमि परहीं ❀ तेहिविधि सो जो नाम न ररहीं ॥
निंदा भजना नंदनि केरी ❀ करत दिखावहिं नयन तरेरी ॥

दो०—पैहहिं जो दुख दुष्ट ते, सोइ दुख तिन्ह कहँ होय ।
करत न जो सियराम धुनि, सब बिधि सुख प्रद जोय ॥३५॥

जय सियराम नाम धुनि भाई ❀ गावहु पावहु गति सुखदाई ॥
जय सियराम नाम धुनिप्यारी ❀ करहु करावहु मिलि नर नारी ॥
जय सियराम नाम धुनि नीकी ❀ पुरवहिं सकल बासना जी की ॥
जय सियराम नाम धुनि तारण ❀ सकल कलेशनि करत निवारण ॥
जय सियराम नाम धुनि पावन ❀ दुख दरिद्र तिहुँ ताप नशावन ॥
जय सियराम नाम धुनि कीजै ❀ मानुष तनु लहि यह यश लीजै ॥
जय सियराम नाम धुनि करहीं ❀ ते न बहुरि भव सागर परहीं ॥
जय सियराम नाम धुनि मीठी ❀ करहु वासना तजि लखि सीठी ॥
जय सियराम नाम धुनि नेमा ❀ करहु सु निज २ थलनि सप्रेमा ॥
जय सियराम नाम धुनि रामू ❀ सुनि पूरत सब के मन कामू ॥

दोहा—जयसिय राम सुनाम धुनि, सकल सुखनि की खानि ।
करहु करावहु तरहु भव, विनय मोर उर आनि ॥३६॥

जय सियराम नाम धुनि काना ❀ सुनि रीझत अति श्री हनुमाना ॥
जय सियराम नाम धुनि नाई ❀ वैठि तरहु भवसागर भाई ॥
जय सियराम नाम धुनि भाना ❀ हरै मोहनिशि के दुखनाना ॥
जय सियराम नाम धुनि चंदा ❀ त्रिविध ताप नाशत दुख मंदा ॥
जय सियराम नाम धुनि कामद ❀ सेवत देति सकल सुख श्रुतिवद ॥
जय सियराम नाम धुनि गंगा ❀ मज्जहिं सज्जन तजि जग संगा ॥
जय सियराम नाम धुनि सरजू ❀ सकल पाप नासक यम डरजू ॥
जय सियराम नाम धुनि माता ❀ शिशुइव सकल जनन सुखदाता ॥

दोहा—जय सियराम सुनाम धुनि, मिथिला अवध सुधाम ।
निवसहिं जहँ सियराम नित, जन परि पूरन काम ॥३७॥

जय सियराम नाम धुनि पूजा ❀ सियवर की सुचि हरभव रूजा ॥
जय सियराम नाम धुनि ध्याना ❀ जय सियराम नाम धुनि ग्याना ॥
जय सियराम नाम धुनि कर्मा ❀ जय सियराम नाम धुनि धर्मा ॥
जय सियराम नाम धुनि जोगा ❀ जय सियराम नाम धुनि भोगा ॥
जय सियराम नाम धुनि जागा ❀ जय सियराम नाम धुनि भागा ॥
जय सियराम नाम धुनि प्रेमा ❀ जय सियराम नाम धुनि छेमा ॥
जय सियराम नाम धुनि तोषा ❀ जय सियराम नाम धुनि कोषा ॥
जय सियराम नाम धुनि भ्राता ❀ जय सियराम नाम धुनि त्राता ॥
जय सियराम नाम धुनि माला ❀ जय सियराम नाम धुनि ढाला ॥

दोहा—जय सियराम सुनाम धुनि, गावत श्री सियराम ।
पावहिं श्रम विनु जीव कलि, आनँद आठौ याम ॥३८॥

जय सिय राम नाम धुनि साधू ❀ महिमा तुम्हरी अकथ अगाधू ॥

जय सियराम नाम धुनि जीकी ❀ बोलहु सबसुख प्रद सुमतीकी ॥
जय सियराम नाम धुनि केरी ❀ सबविधि प्रान सजीवनि मेरी ॥
जय सियराम नाम धुनि कारन ❀ सकल सुखनिकी भवभ्रमटारन ॥
जय सियराम नाम धुनि दादी ❀ सब साधन की आदि अनादी ॥
जय सियराम नाम महराजा ❀ बाजत तुम्हरे यश के बाजा ॥
जय सियराम नाम अवतारी ❀ जन्म मरन दुख नाशहु भारी ॥
जय सियराम नाम मम स्वामी ❀ बसहु मोर उर अन्तर यामी ॥
जय सियराम नाम अभिरामू ❀ होउ नाथ सब कहँ सुख धामू ॥
जय सियराम नाम परतम तर ❀ जय सियराम नाम सुन्दर बर ॥

दोहा—जय सियराम सुनाम की, बार बार बलिहार ।
जय निरहेतु कृपाल की, जय २ जय जय कार ॥३६॥

बाहिर नाम उचारन केरी ❀ महिमा सकल सुखनि की ढेरी ॥
केतिक भीतर नाम सुजापा ❀ करत न होइ हृदय निस्पापा ॥
भीतर मंत्र जपत अघ दहहीं ❀ विधिवत अस श्रुति संतसु कहहीं ॥
नामहिं बाहिर रटत रटावत ❀ विधिविनुश्रमसबसिधिजनपावत ॥
गावत रटत उचारत गाजत ❀ पुलकि २ नामहिं अघ भाजत ॥
द्वादश लाभ उचारन माँहीं ❀ भीतर जापी जानत नाँहीं ॥
तेहिलगितिन्हिकहँ सुखनहिंहोई ❀ भीतर जपहिं नाम कहँ जोई ॥
द्वादस भेद कहौं सुखदाई ❀ नाम सुजापक जानहु भाई ॥
प्रथम मनुष तनु विटप समाना ❀ पाप पुन्य पत्ती विधि नाना ॥
पाप पुन्य दोउ तन तरु बासी ❀ तजत न कबहुँ उभय दुखरासी ॥

दोहा—बैठत पुनि २ आयसो, तन तरु पर तेहि लागि ।
श्री सियराम सुनाम धुनि, सुनत जाँइ सब भागि ॥४०॥

छुन २ नाम उचारत जोई ❀ तेहि तन पाप रहत नहिं कोई ॥
दूजे नाम उचारन काना ❀ सुनि तरिहहिं भवपापी नाना ॥

तीजे विधिबस पायकुसङ्गहि ❀ भूलहिंसुजनभजन निज अङ्गहि ॥
जय सियराम नाम सुनि काना ❀ होइ सचेत भजहिं भगवाना ॥
चौथे करत सुनाम उचारा ❀ सुनि न परत जग शब्द अपारा ॥
पंचम रटत सश्रद्धा नामू ❀ आवत नींद न अति दुखधामू ॥
खष्टम रिधि सिधि गुन कल्याना ❀ आवत सुनि सुनाम धुनि काना ॥
सप्तम भूत प्रेत यम काला ❀ सुनत नाम धुनि होत विहाला ॥
अष्टम इन्द्री मन लय होई ❀ करहिं नामधुनि जेहि छन कोई ॥
को मैं को तू रहत न ज्ञाना ❀ नशत नामधुनि सुनि मद माना ॥

दोहा—नवम रटत सियराम मुख, लय लगाइ इकतार ।
रुकहिं साँस आयू बढ़ै, कहहिं सन्त सविचार ॥४१॥

विधि के लिखे अङ्कहू भाई ❀ मिटत करत सियराम रटाई ॥
दशम नाम धुनि गाय बजाई ❀ करत नशहिं दुख सुख सरसाई ॥
एकादश सु सुभासुभ कर्मा ❀ रटत नाम छूटहिं सब भर्मा ॥
द्वादश बोध स्वआतम केरा ❀ होत रटत सियराम घनेरा ॥
बिनु जाने ये बारह भेदा ❀ जपत नाम उर नशत न खेदा ॥
भली भांति इन्हि लेहु विचारी ❀ रटहु नाम सियराम पुकारी ॥
अन्तर जपत सुनामहिं जोई ❀ तिन्हिते नहिं जगहित कछुहोई ॥
जो सियराम सुनाम उचारैं ❀ आपु तरैं औरनि कहँ तारैं ॥
कथनी कथुआ ग्यान प्रमादी ❀ अन्तर रटन कहत बकवादी ॥
अन्तर बादी करनी हीना ❀ भरेउ विपुल जग जीव मलीना ॥

दोहा—आपु गये अरु आनहीं, घालहिं कहि बहु भेद ।
तिन्हि पापिनि के वचन तजि, रटहु सुनाम अखेद ॥४२॥
ज्ञानी पडित साधु कवि, सिद्ध साहु कोउ होय ।
रटहिं न नाम पुकारिजो, तजिये तिन्हिसब कोय ॥४३॥

भाखेउ यह सु प्रसंग में, नाम रटैया संत ।
सुनि समुझहिं सियराम रटि, पावहिं मोद अनंत ॥४४॥
रटैं नाम श्रीनाम की, अस्तुति गाय बजाय ।
करैं सुजापक नाम के, पावैं मोद अघाय ॥४५॥

❀ अथ श्रीनाम स्तुति ❀

॥ छन्द १ ॥

जय जयति श्री सियराम नाम अकाम जन मन रंजनम् ॥
जय जयति सब सुख धाम पूरन काम भव भय भंजनम् ॥
जय जयति अशरन शरन अभरन भरन अघदल गंजनम् ।
जय जयति मानस मळिन के प्रभु अमल अनुपम मंजनम् ॥१॥
जय जयति तारन तरन कलिमळ हरन मोद बढ़ावनम् ।
जय जयति ब्रह्म परेश परतम सेव्य अग जग पावनम् ॥
जय जयति आनँद कंद मतिभ्रम फंद द्वन्द नशावनम् ।
जय जयति जन गुन प्रगट कर अपराध अवगुन दावनम् ॥२॥
जय जयति श्री महराज साहब नाम सब विधि लायकम् ।
जय जयति वारक जपत जीवनि सकल अभिमत दायकम् ॥
जय जयति रवि शशि अनळ कारन कार्य पर निर्मायकम् ।
जय जयति ईश्वर ब्रह्म निर्गुन सगुन सुर मुनि नायकम् ॥३॥
जय जयति अचल प्रताप चहुँ युग काल तिहुँ कल राजतम् ।
जय जयति नाम निशान निर्भय सकल दिशि नित बाजतम् ॥
जय जयति जापक नाम के जिन्हि निरखि यम गन भाजतम् ।
जय जयति तिन्हि सिय लाल नाम सु शरन होत न लाजतम् ॥४॥

दोहा—जय करुना कर प्रनत हित, समरथ स्वामीनाम ।
जय उदार रट देहु निज, प्रेमलतहिं वशुयाम ॥४६॥

❀ छन्द ❀

जय नाम नमामी सरल अकामी समरथ स्वामी परधामी ।
जय परम प्रतापी त्रिभुवन व्यापी अगम अलापी गति नामी ॥
जय सद्गुन सागर सब बिधि नागर मति आगर अन्तरयामी ।
जय अधम उधारन भवभय टारन पावहिं पार न नर वामी ॥१॥
जय ब्रह्म शिरोमनि महिमा धनि २ गावत भनि २ मुनि झारी ।
जय जन सुखदाई प्रभु प्रभुताई अमिट बड़ाई विस्तारी ॥
सियराम सु नामी तव अनुगामी अग जग स्वामी अवतारी ।
जय अद्भुत करनी कृत अघ हरनी जाय न बरनी मुदकारी ॥२॥
जय संश्रृति नासक सुयश प्रकाशक खलदल त्रासक बलवाना ।
जय नाम कृपाला दीन दयाला हरु जग जाला मद माना ॥
जय रिधिसिधि दाता गुरु पितु माता तुम्ह सम त्राता नहिंआना ।
जय असुभ सुझावन प्रद पद पावन अमिट मिटावन दुखनाना ॥३॥
जय जय निरहेतू हित भवसेतू धर्म निकेतू वरदानी ।
जय जय सब भांती सुलभ सँघाती सुहृद सजाती विज्ञानी ॥
जय करुना कंदा निर्मल चन्दा लहत अनंदा लखि ध्यानी ।
प्रभु प्रेमलता के नाम सु साके वरणत थाके कवि मानी ॥४॥

दोहा—विधि हरिहर गणपति गिरा, शेषादिक कवि वृन्द ।
प्रेमलता श्रीनाम यश, कहत थके रघुनन्द ॥४७॥
श्री सियराम सुनाम की महिमा अकथ अपार ।
प्रेमलता को कहि सकै, हारेउ जब करतार ॥४८॥

सोरठा ।

सिय सुनाम सहराम, रटत रटावत ललित अति ।
प्रभु प्रिय प्रद मन काम, श्रमबिनु जीवनि देत गति ॥

श्रीसियराम सुनाम, सब नामनि के भूप दोउ ।
कोटिनि मंत्र ललाम, इन्ह समान नहिं सुखद कोउ ॥
जग पालन संहार, उतपति करहिं सुकोटि विधि ।
रटत प्रमोद अपार, देत जनन ,रिधि सिधि सुनिधि ॥
वेद वाक्य जो चारि, ओंकार आदिक अपर ।
राम नाम के झारि, सेवक सब सुख रूप बर ॥
राम सुनाम प्रताप, जानत श्री हनुमान हर ।
करत दिवस निशि जाप, तजि सब साधन मंत्रवर ॥
श्री सिय नाम समेत, राम सुनामहिं रटत नित ।
प्रभु प्रसन्नता हेत, विधि हरि हर अवतार सब ॥
करिय न शंसय भाय, राम नाम सिय नाम सँग ।
रटि रटाय लय लाय,होउ सुखी तजि सकल रँग ॥
सिय बिनु केवल राम, रटिय न भूलिहु नेम करि ।
होत न उर विश्राम, रटिये कोटिन वर्ष वरु ॥
सियबिनु राम सुनाम, रटत विमुखता लहहिं जन ।
युगल नाम अभिराम, रटहु रटावहु ठानि पन ।
सत्य वचन सब जानि, तर्क वितर्क न करिय कोउ ।
नाम प्रसंग बखानि, कहेउ यथामति सुमिरि दोउ ॥

नाम[१] प्रताप[२] प्रभाव[३], महिमा[४] करतब[५] रीति[६] गति ।
पद[७] गुण[८] पावन[९] ताव, शील[१०] सनेह[११] स्वभाव[१२] रति[१३] ॥

१४ १५ १६
गरुता प्रभुता प्रीति, षोड़स भेद विचारि उर।
धरै होय जग जीति, छूटै आवागमन फुर॥
जे सियराम सुनाम, रटहिं रटावहिं नेम करि।
तिन्हिके चरण ललाम, बन्दौ मैं शिर धरणि धरि॥
दोहा—श्रीसियराम स्वरूप पर, अवतारिनि पति जानि।
भाखौं त्रितिय प्रसंग महँ, महिमा कछुक बखानि॥

———

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि-
प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस
श्री १०८ श्री सियालाल शरणजी
महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू
कृते श्री नाम प्रसङ्ग वर्ण-
नोनाम समाप्तम्
शुभम्॥२॥

———

जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियराम
जय सियराम जय जय सियरांम
जय सियराम जय जय सियराम

अथ श्रीरूप प्रसंग प्रारम्भः॥३॥

दोहा—यद्यपि जग अवतार बहु, भये होत प्रभु केर।
राखहिं श्रुति मर्याद सब, धरि धरि तन बहु तेर॥१॥
सकल सु पूज्य प्रधान सब, परमातमा सरूप।
धर्म हेतु अवतरहिं जग, करहिं चरित्र अनूप॥२॥

तद्यपि सियाराम अवतारा ❀ भयेउ बिलच्छण करहु बिचारा॥
देखहु इन्हके चरित सु भ्राता ❀ पच्छपात की नहिं कछु बाता॥
लिखिलिखिबहुकबिजनप्रगटाये ❀ गावहिं सब तिहुँ लोकनि छाये॥
सत करोर ऋषि राजहिं गाये ❀ सहस अठासी पृथक बनाये॥
सबकोउ जानत इन्हकी करणी ❀ मैं कछु कहउँ यथा मति बरणी॥
जेहि कारण साकेत विहारी ❀ अवतारनि पति पर अवतारी॥
बेदहु जान न जिन्हि कर भेदा ❀ प्रगटेउ सोइ नाशन जन खेदा॥
श्रीसिय सहित रामअखिलेश्वर ❀ प्रगटि किये सब सुखी चराचर॥
जेहिविधिदोउ प्रगटहिंमहिआई ❀ कहौं सुनहु सोइ गाथा गाई॥
सावधान मन करि यह लीला ❀ सुनिसमझहिंजनसुमतिसुसीला॥

दोहा—एक बार ऋषिनारद, श्री साकेत सुधाम।
गयेउ दुखी सब लोक लखि, रटत नाम सियराम॥३॥

परम पूज्य तिय रूप ललामा ❀ धारन किये सकल गुनधामा॥
पर उपकारी मुनि मति धीरा ❀ विमल वचन मन आत्मशरीरा॥
कनक भवन महँ प्रविसेउ जाई ❀ रचना तहँकी अकथ सुहाई॥
कल्पवृत्त तर रतन सिंहासन ❀ बैठे जहँ सियराम मुदित मन॥
सेवा साज लिये चहुँ ओरी ❀ ठाढ़ीं अमित मनोहर गोरी॥

पुरुष भावना जो उर धारी ❀ ते न जाँइँ तहँ कहत पुरारी ॥
विहरहिं दम्पति जहाँ यकंता ❀ तहँ न जात नर कहहिं सुसंता ॥
आतम दरशी मुनि श्री नारद ❀ जिन्हिकीमतिनिर्मलजिमिसारद ॥
आवत देखि हरष अति हीया ❀ उठीं सहित पति सादर सीया ॥
चरण लागि गुरु के गृह आनी ❀ बैठारेउ आसन सनमानी ॥
पद पखारि सबविधि करि पूजा ❀ बिनती करि बैठीं ढिग भू❀जा ॥

दोहा—बोलीं बैन मनोहर, प्रभु आये केहि काम।
कहहु करौं सोइ शीसधरि, सहित सु पति सुखधाम ॥४॥

दर्शन करि मम हृदय जुड़ाना ❀ पुन्य प्रभाव न जात बखाना ॥
आजु धन्य तिथि घरीसु वारा ❀ धन्य भवन जहँ प्रभु पगुधारा ॥
धन्य भाग मम अलिनि समेता ❀ दर्श दीन गुरु कृपा निकेता ॥
धन्य धन्य सो ग्रह बड़भागी ❀ आवहिं जहँ गुरु वैश्नव त्यागी ॥
धन्य ग्रही जो गुरु हित लागी ❀ अरपहिं तन मन धन बड़ भागी ॥
प्रभु से गुरु वैश्नव जिन्हि केरे ❀ तिन्हि के सब विधि भाग बड़ेरे ॥
आतम दरशी दया निधाना ❀ नाम निरत वैश्नव गत माना ॥
अस गुरु ग्रही भाग ते पावहिं ❀ जन्म मरनदुख दुसह नशावहिं ॥
पाप पुन्य दोउ बंधन भारी ❀ स्वर्ग नर्क दाता दुखकारी ॥

दोहा—भक्ति मोरि बंधन रहित, गुनातीत सुखधाम।
सतगुरु बिनु पावत नहीं, विमुख जीव रतकाम ॥५॥

कर्म धर्म साधन सिधि दाता ❀ तिन्हिमहँअरुभिन्नजन सुखपाता ॥
भरमत डोलहिं लख चौरासी ❀ गुरु विनु होत न कबहुँ सुपासी ॥
वैश्नव भक्तिवंत गुरु देवा ❀ मिलैं हरहिं तव सब अवरेवा ॥
नाम रटाय हिये के लोचन ❀ खोलि लखावहिं प्रभुदुखमोचन ॥
जों न करहिं गुरु वैश्नव त्यागी ❀ ते न तरहिं भव जोव अभागी ॥

बँधे सुभासुभ बंधन माँहीं ❀ म्रही गुरू करि दुख न नशाँहीं ॥
मोरे भाग जाँहिं नहिं गाये ❀ संत शिरोमनि सत गुरु पाये ॥
अस गुरु सबकर होइँ विधाता ❀ जस मम अखिल लोक विख्याता ॥
पर्माचारज सिय सब केरी ❀ मुनिहिं दीन आदर बनि चेरी ॥
समरथ की गति समरथ जानैं ❀ केहि कारन सिय मुनि सनमानैं ॥

दोहा—प्रनवों पद धरि धरनि शिर, नाथ जोरि युग पानि ।
आयसु देत न सकुचिये, किंकरि आपन जानि ॥ ६ ॥

सुनि नारद सिय वचन सुहाये ❀ प्रेम वारि लोचन भरि आये ॥
आसिष दै धरि धीरज बोले ❀ परहित साने वचन अमोले ॥
हेतु रहित हित जनक दुलारी ❀ विरद तोर श्रुति कहत पुकारी ॥
शृष्टि सकल तव भृकुटि बिलाशा ❀ हरहु कृपा करि तेहि कर त्राशा ॥
सकल जीव दुख सहहिं अपारा ❀ हरहु जाइ करि चरित उदारा ॥
सुलभ होउ सब कहँ यहि तनते ❀ विनती यह मम सुनि सिय मनते ॥
अस्तु भाषि सियपद शिर नाये ❀ विदा होइ नारद चलि आये ॥
यहि तनते केहि विधि महिभारा ❀ हरौं जाय सिय हृदय विचारा ॥
एकबार इकन्त सिय रघुबर ❀ बैठेउ प्रमुदित सुखद सेजपर ॥
खात खवावत पान परस्पर ❀ जिनिकर नाम हरत संश्रृतिडर ॥

दोहा—प्रभुकी तेहि च्छण दोउ भुजा, फरकि उठी अनयास ।
घोर युद्ध सूचक समुझि, बोले सहित हुलास ॥७॥

सिय मुख निरखि मंद मुसुकाई ❀ करधरि चिबुक कहत रघुराई ॥
फरकहिं प्यारी दोउ भुज मोरी ❀ कहहु साँच सब का रुचि तोरी ॥
पिय तुम्हार देखब संग्रामा ❀ कह प्रभु मोसम को बलधामा ॥
तेहि अवसर एक आली आयेउ ❀ भानुप्रभा तेहि नाम सु गायेउ ॥
करि प्रणाम ठाढ़ी करजोरी ❀ तेहि सन हँसि बोलीं सियगोरी ॥
सुनु चतुरी मम परम सु प्यारी ❀ मैं तोहि कबहूँ करेउँ न न्यारी ॥

पिय भुज फरकहिं हित संग्रामा ❀ हमहुँ लखब यह चरित ललामा ॥
तेहिलगितुम्हनिजसहितसमाजा ❀ नरतनु धरि प्रगटहु मम काजा ॥
भानुप्रताप नाम महिपाला ❀ होउ प्रथम बलवान विशाला ॥
धर्म सीलता सहित समाजू ❀ करिहहु बहुदिन भूमि सु राजू ॥

दोहा—मम इच्छा पुनि रातिचर, हुइहौ सहित समाज ।
रावण नाम सु बीर बर, करिहहु तिहुँ पुर राज ॥८॥

तब मैं तुम्हसन मिलिहौं आई ❀ लखन तोर पिय केरि लराई ॥
एक रूप मम तव उर माँहीं ❀ बसहिं सदा कछु संशय नाँहीं ॥
तेहि बलतुम पिय सन संग्रामा ❀ करिहौ घोर मोर अभिरामा ॥
मोहिं तृप्ति करि पुनि येहि लोका ❀ बसिहहु आय सु सदा विशोका ॥
सुनि सिय वचनचरणशिरनायेउ ❀ आशिरबाद सु आज्ञा पायेउ ॥
प्रिय तन चितइ मन्द मुसुकाई ❀ सहित सहाय अवनि चलि आई ॥
सिय आयसु जेहि बिधि बिस्तारा ❀ लगेउ करन सोइ चरित अपारा ॥
भानुप्रताप चरित सब कोई ❀ जानत जेहि बिधि निश्चर होई ॥
रावण नाम विस्व सिरताजा ❀ भानुप्रभा भइ सहित समाजा ॥
प्रगटेउ आय अवनि सियरामा ❀ अब सोइ कारन सुनहु ललामा ॥

दोहा—कछुक काल साकेत करि, श्री सियराम बिहार ।
मनु तप द्वारा अवतरेउ, अवनि युगल सरकार ॥९॥

मनु सतरूपा अति तप कीन्हा ❀ तिन्हि मिसअवनिजन्मदोउलीन्हा॥
जेहि बिधि अवतारनि परिपाटी ❀ तेहि विधि प्रगटेउ लीक न काटी ॥
नारद बचन मानि जीवनि हित ❀ सुलभ भयेउ सुखधाम आइइत ॥
अवतारिनि पति ईश शिरोमनि ❀ छिपिप्रगटे दोउ करनजननधनि ॥
अवध राम मिथिलापुर सीया ❀ प्रगटे दोउ जानत नर तीया ॥
नित्य विभूति नित्य दोउ धामा ❀ विहरहिं जहाँ आय सियरामा ॥
मिथिला अवधसु सोइ साकेता ❀ यह महिमा समुझहिं चितचेता ॥

यहाँ उहाँ सब ठामनि पूरन ❀ सिय रघुबर यह जानत कूर न ॥
जिन्हि कर कबहुँ वियोग न होई ❀ लीला करत विविध विधि सोई ॥
सकल ठाम पूरन दोउ साथा ❀ देत जनन सुख सिय रघुनाथा ॥

दोहा–श्री सियराम चरित्र जन, निरखउ नयन उघारि ।
सर्व धर्म उपदेश हित, लीला कीन सुझारि ॥१०॥

जेहि कहँ निरगुन भाषहिं ज्ञानी ❀ भक्त कहहिं तेहि सगुन बखानी ॥
सगुन ब्रह्म तन केर प्रकासा ❀ निराकार निर्गुन सोइ भासा ॥
मूरति कर जो तेज लखावत ❀ निरगुन ब्रह्म ताहि श्रुति गावत ॥
सोइ निर्गुन सोइ सगुन सरूपा ❀ नाम रूप दोउ एक अनूपा ॥
निर्गुन राम सगुन सिय जोऊ ❀ बाहिर भीतर व्यापेउ दोऊ ॥
इनहीं ते जग हित अवतारा ❀ प्रगटहिं बिपुल हरण महि भारा ॥
ते सब श्री सियराम सरूपा ❀ कृष्णादिक अवतार अनूपा ॥
नाम रूप करणी में भेदा ❀ तत्व एक भाषहिं बुध वेदा ॥
प्रति त्रेता श्रीराम सुलीला ❀ करहिं विष्णु नारायण शीला ॥
जेहि विधि जेहि सियराम रजाई ❀ तेहि विधि करहिं सकल मनलाई ॥
नारद बचन लागि मनु वानी ❀ प्रगटहिं स्वयं राम सिय आनी ॥

दोहा–जेहि विधि गावहिं वेद बुध, राम चरित्र पुरान ।
तेहि विधि लीला करहिं सब, श्री सियराम सुजान ॥११॥

झलकति कछुक विलक्षण ताई ❀ मर्यादउ ते बाहिर भाई ॥
निरखहिं ते जिन्हि पर प्रभु दाया ❀ यह प्रभुता नहिं लखहिं निकाया ॥
जो सियराम नाम लय लाई ❀ रटहिं लखहिं ते प्रभु प्रभुताई ॥
नाम रटे विनु कोटिनहूँ विधि ❀ लखि न परैं प्रभु चरित मोदनिधि ॥
एकै निराकार साकारा ❀ विलग कहहिं ते अबुध गमारा ॥
निराकार निर्गुण विनु हेरे ❀ लोचन हीन कहहिं बहुतेरे ॥
जिन्हैं दिखात न रूप अनूपा ❀ कहहिं ते निरगुन अलख अरूपा ॥

देखहिं भक्त सदा साकारा ❀ गुणागार प्रभु रूप उदारा ॥
बहुतक अबुध अग्य अविचारी ❀ जानत सिय रामहिं नरनारी ॥
भोगहिं ते खल बहु त्रिधि नर्का ❀ सिया राम महँ करहिं जे तर्का ॥
फँसेउ मूढ़ माया के जारा ❀ जानहिं ते का सार असारा ॥

दोहा-शक्ति शिरोमणि जानि सिय, ब्रह्म परात्पर राम ।
प्राकृत नरनारी नहीं, निरखौ चरित ललाम ॥१२॥

भयेउ अनेक ब्रह्म अवतारा ❀ अस न कीन्ह कोउ चरित उदारा ॥
लरिकाईं श्रीराम जाय बन ❀ ऋषि सँग हते अजय निश्चर घन ॥
पद रज ते सु अहिल्या तारी ❀ अस्तुति करि पतिलोक सिधारी ॥
जनक नगर महँ शिवधनु भञ्जा ❀ विनु श्रम जो सब कर मद गञ्जा ॥
जग विजई भृगुपति अति कोही ❀ तिन्हकी मति महिमा लखि मोही ॥
दूलह वेष देखि सब सुर गन ❀ विष्णु आदि मोहे मनहीं मन ॥
सिय महिमा ब्रह्मादिक देखी ❀ मिटि गइ निज करनीकी शेषी ॥
सियविभूतिलखिस्वपचनिगेहा ❀ सुरपति धनदहु होत बिदेहा ॥
खेलहि शिशुपन धनुष उठायेउ ❀ वाम हाथ सिय बल अजमायेउ ॥
तेहिसियकहँजड़मतिअविचारी ❀ कहहिं अभागी प्राकृत नारी ॥

दोहा—ब्याह महोत्सव बिदित जग, कहहुँ न तेहि लगि गाय ।
त्रिभुवन महँ तिहुँ काल कोउ, करि न सकै अस भाय ॥१३॥

व्याह महोत्सव सबहिं दिखावा ❀ अकथ अनूपम जाय न गावा ॥
त्रिणसमतजि पुनि अवध सुराजू ❀ बसे जाइ वन परहित काजू ॥
चित्रकूट गिरि कीन्ह निवासू ❀ द्वादश वर्ष करेउ तहँ रासू ॥
सिय निज अङ्गनि ते प्रगटाई ❀ अमित विभूति वरणि नहिंजाई ॥
अलिगण बिपुल भोग बहुधामा ❀ विविध भांति विहारकी सामा ॥
सब प्रकार पिय मनके कामा ❀ पूरे सिय सुख प्रगटि ललामा ॥
तेहि लगि परेउ सुकामद नामू ❀ गुप्त विहार कोन सियरामू ॥

पञ्चवटी पुनि कीन निवासा ❀ खरदूषण कर कीनेउ नासा ॥
हिलिमिलिकीन्ह सुखीबनवासी ❀ दण्डक कीन हरित सुखरासी ॥
सूपनखा की काटेउ नासा ❀ करेउ सुखीमुनि गन हरित्रासा ॥

दोहा–मृग मिश सिय यक रूपते, रावण सङ्ग निशङ्क ।
देखन हित संग्राम पिय, जाय विराजीं लङ्क ॥ १४ ॥

चरित चारु सिय रघुवर केरे ❀ समझहिं नर न काम के चेरे ॥
तिय वियोग दुख विषई जीवनि ❀ उपदेशेउ प्रभु परम कृपाधनि ॥
सब जानत प्रभु नरवत खेला ❀ चले करत सँग लखन अकेला ॥
निन्दहिं मूढ़ जानि प्राकृत नर ❀ कालदण्ड करजिन्हिनाहिनडर ॥
देखउ गीधहिं विष्णु बनाई ❀ पुर वैकुण्ठहिं दीन्ह पठाई ॥
ये सब जीवनि कहँ उपदेशा ❀ करत फिरत प्रभु परम परेशा ॥
निरखौ हियके नयन उघारी ❀ प्रभु भक्तनि की महिमा भारी ॥
कर्म ज्ञानरत तजि मुनि झारी ❀ सवरी गेह सु गयेउ खरारी ॥
कर्म ज्ञान अभिमान समेता ❀ आए मुनि जहँ कृपा निकेता ॥
कहेउ सकल प्रभु चरण पखारहु ❀ पंपासर कर नीर सुधारहु ॥

दोहा--बहुदिन वीते सहत दुख, विमल नीर विनु नाथ ।
लखि न परत केहि लागि यह, भ्रष्ट भयेउ सर पाथ ॥१५॥

सुनि बोले प्रभु सारँग पानी ❀ सवरी सन भाखहु मुनि ज्ञानी ॥
ऋषि मतंग मम भक्ति सुलीना ❀ रहेउ तासु सेवा यह कीना ॥
गुरु प्रसाद सवरी अनुरागी ❀ भई परम पावन बड़भागी ॥
दुखई सोइ तेहि लगि सर नीरा ❀ रुधिर समान भयेउ मुनि धीरा ॥
जो मम भक्तनि कर अपमाना ❀ करत सहहिं ते जनदुख नाना ॥
भक्त होय भक्तनि की सेवा ❀ करत तिन्हें पूजें सब देवा ॥
वेद पुरान कथित जो धर्मा ❀ जोग यग्य जप तप व्रत कर्मा ॥
विद्या जाति महत्वनि माँहीं ❀ अरुझेउ ते मोंहिं पावत नाँहीं ॥

भक्तिवंत नीचहु किन होई ❀ सुगम पंथ मोहिं पावहिं सोई ॥
मन वच कर्म भजै जो मोहीं ❀ निंदहिं तेहि ते मेरे द्रोही ॥

दोहा—वैश्नव वेष सुधारि अँग, भक्ति करै जो कोय ।
सोइ मम प्रीतम मिलहिं मोहि, ऊँच नीच कोउ होय ॥१६॥

भक्त होत मोहिं भजि मम देहा ❀ भाखौं सत्य न कछु सन्देहा ॥
जो मम भक्तनि नीच बखानें ❀ स्वान योनि ते लहहिं अयानें ॥
जो वैश्नव मम नाम सुजापी ❀ निंदहिं तिन्हि कहँते बड़ पापी ॥
गुरु सन वैश्नव वेष सु धारी ❀ तजि जग आश त्राश भयकारी ॥
नाते नेह सुभासुभ कर्मा ❀ त्यागि रटै मम नाम अभर्मा ॥
तेहि पर कोटिनि साधन ग्याना ❀ जोग यग्य जप तप व्रत दाना ॥
कर्म धर्म वैराग बिचारा ❀ वारिय सब लखि हृदय असारा ॥
भक्त महातम सब विधि भारी ❀ गुरु बिनु किमि जानहिं नरनारी ॥
अस विचारि सवरी कहँ नीचा ❀ जानि परहु जनिमुनिभवकीचा ॥
कर्म ग्यान विद्या अभिमानी ❀ भक्ति हींन मोहिं लहहिंनप्रानी ॥

दोहा—सवरी मोर स्वरूप सुचि, तेहि लगि जूठे बेर ।
लोक लाजकुल कानि तजि, खायेउँ मैं यहि केर ॥१७॥

असकहिप्रभु सवरीमुनि भीरा ❀ आये सकल सरोवर तीरा ॥
मुनिनि सहितप्रभु चरण पखारे ❀ भयेउ न नीर विमल हिय हारे ॥
तब प्रभु प्रेरित सबरी पदरज ❀ डारेउभयो विमल निकसी कज ॥
अस्तुति करत देव मुनि लाजे ❀ भक्ति विजय लखि बाजन बाजे ॥
सबरिहिं पुनि पठयेउ गुरुधामा ❀ कहहु तो ये मनुजन के कामा ॥
सवरिहि दीनेउ अमित बड़ाई ❀ भक्ति सु महिमा प्रगट दिखाई ॥
ग्यान गुमान मुनिन कर नासा ❀ दिखरायेउ निज भक्ति तमासा ॥
किष्किन्धा कहँ पुनि पगु धारा ❀ मिलि सुग्रीवहिं बालिहिं मारा ॥
ब्रानर भालु सैन लै साथा ❀ सिन्धु बँधाएउ हाथहिं हाथा ॥

हनूमान शंकर अवतारा ❀ प्रथमहिं जाइ लंक गढ़ जारा ॥
जिन्हि के जन हनुमत भट वंका ❀ तिन्हें मनुष भाषहिं मति रंका ॥

दोहा--आयेउ शरण त्रिभीषण, राखेउ प्रभु बल धाम ॥
अङ्गद द्वारा पाय सुधि, होन लग्यो संग्राम ॥ १८ ॥

विधि हरि हर सुरसिद्ध मुनीशा ❀ कौतुक लखहिं लरहिं जगदीशा ॥
सेन अपार गने को सोई ❀ यक एकनि मारत सब कोई ॥
सिय अशोक तर बैठि निहारैं ❀ होत राम रावण की मारैं ॥
अद्भुत अकथ सु होत लराई ❀ देखत बने बरणि नहिं जाई ॥
सिय मूरति रावण उर धारी ❀ करै समर महँ प्रभु सन रारी ॥
विविध भांति लरिसबहिं थकाये ❀ हारै हटै न मरै मराये ॥
रावण राम घोर संग्रामा ❀ बिदित सबहिं तिहुँलोक तमामा ॥
प्रभुहिंश्रमितलखिसियमनमाँहीं ❀ खैंची तेहि उर ते निज छाँहीं ॥
मरत न रहेउ जासु बल रावन ❀ निकसि गई सो मूरति पावन ॥

दोहा--तब प्रभु एकै बाण तेहि, भूमि गिरायेउ मारि ।
आत्म शक्ति परधाम निज, गई सुसियहिं जुहारि ॥१६॥

लङ्का राज विभीषण पायेउ ❀ मिलिसियरामअवधचलिआयेउ ॥
करि बनचरित स्व भक्तनि पीरा ❀ हरेउ कृपानिधि सिय रघुवीरा ॥
भानुप्रभा जिमि, रावण भयेउ ❀ सियहिं दिखाय समर पुनि गयेउ ॥
सो सब गुप्त कथा मैं गाई ❀ कोउ सुनि अचरज करै न भाई ॥
अब सिय चरित राम रुख पाई ❀ बरनहुँ कछुक सुनहु मनलाई ॥
श्री सियराम चरित अतिगूढ़ा ❀ लखहिं नाम रटि जन न विमूढ़ा ॥
जेहि विधिसुखीरहैंसियश्यामा ❀ प्रमुदित राम करत सोइ कामा ॥
राम प्रान की प्रान सुसीया ❀ तेहि विनु भव न तरत नर तीया ॥
आदिशक्ति सियसब सुखखानी ❀ जग कारण रघुपति पट रानी ॥
सुनहु एक अति गूढ़ कहानी ❀ सियमहिमा कछु कहउँ बखानी ॥

अगउं अमित रवि छणहिंनशावै ❀ सिय माया जो सबहिं नचावै ॥
तेहि सिय कर को जानहिं भेदा ❀ नेति नेति जेहि गावहिं वेदा ॥
दोहा-द्रष्टा द्रष्ट सु ब्रह्म सुर, ❀अवतारी अवतार ।
सब कर प्रेरक कारणसिय श्रष्टा मृष्टि अधार ॥२०॥
अवतारी अवतार अनेका ❀ सिय आयसु सिरधरि सविवेका ॥
करहिं काज सबसियरुख जोई ❀ करै अवज्ञा अस नहिं कोई ॥
जग कर्ता भर्ता संहरता ❀ केवलसिया समुझि अस परता ॥
सिय महिमा मैं कहँलगि गाऊँ ❀ सुनहु एक इतिहास सुनाऊँ ॥
विधिहरिहरनिजसतिनिसमेता ❀ मिलेउ परस्पर कतहुँ सचेता ॥
बैठि विटपतर निज निज ज्ञाना ❀ अहं सहित तिहुँ देव बखाना ॥
उतपति पालन अरु संहारा ❀ हम विनु को करिहै संसारा ॥
विहँसीं तिहुँ शक्ती सुनि बानी ❀ बूझा तब तिन्हि कहेउ बखानी ॥
आदिशक्ति सिय प्रेरित कर्मा ❀ करहिं सकल तुम्ह भूलेहु भर्मा ॥
हमसब सियअन्शनिकी अन्सा❀ करहिं काज सब रहित प्रशंसा ॥

❀ यहां अवतारी कहिये श्रीमान् भौमा नारायनादि महाविष्णु विराट भगवान इन्हीं सबसे समय २ पर प्रयोजनानुकूल अवतार कहिये मच्छ, कच्छ, नृसिंहादि भया करते हैं, जो कि, देवता औ ब्रह्म कहावते हैं। कोई दृष्टि मान कोई अदृष्टिमान होते हैं। पुनः शृष्टि कहिये संसार, श्रष्टा कहिये शृष्टि कर्ता, इन्ह सब कोई के महाकारन परम प्रेरक अपनी आज्ञामें बरतावने वारे सर्वेश्वर पर तम तर महा अवतारी श्रीसाकेतविहारी त्रिपाद्यादि विभूति के उत्तम नायक श्रीसीतारामजी महाराजको जानों। ये दोनों रवि,प्रभा,जल, बीची, देह, देही, गिरा अर्थ की न्याय अभिन्न हैं। अवतारी अवतार देव ब्रह्मादि सबसे पार हैं। 'तरकि न सकहि सकल अनुमानी' श्रीसीताजी तथा श्रीरामजी, एकहु की महिमा कहने से दोनों की विभूति बरनन हो जाती हैं। प्रथम इस प्रसंग में श्रीरघुनाथजी की महिमा बरनन हो आई है। और हो हीरही है । इहां प्रकरनानुकूल श्रीजानकीजी की प्रधानता समुझि उन्हीं को सबका कारन तथा प्रेरक कहा। इति—

सिया शक्ति तुम्हरे उर व्यापी ❀ तेहि बल तुम्हतिहुँअहहु प्रतापी॥
दोहा—हम तुम कछु करता नहीं, करता धरता सीय।
भजहु तिन्हैं अभिमान तजि, अस विचारि उर पीय॥२१॥
हरिता विधिता शिवता सोया ❀ दीन्ह तुमहिं अस जानहु हीया॥
तिन्हके वचन न हृदय समाने ❀ सिय माया महिमा को जाने॥
सिय इच्छा तिहुँ अन्तर धाना ❀ भई तुरत नाशन अभिमाना॥
शक्ति हींन तिहुँ देव निकामा ❀ भयेउ विकल अति छूटेउ धामा॥
चलै न एकौ करतब ज्ञाना ❀ बैठे तरुतर तिहुँ मैदाना॥
केवल तन में अटकी स्वासा ❀ बोलि न सकैं सहहिं अतित्राशा॥
चितवहिं चकित एक यकओरा ❀ भयेउ शिथिल तनु नाशेउ जोरा॥
जस के तसं बैठे रहि गयेऊ ❀ तीनहुँ उर अति अचरज भयेऊ॥
डोलत नहिं कर पद कोउ अङ्गा ❀ जबते शक्तिनि त्यागेउ सङ्गा॥
प्राकृत जीवनि केर समाना ❀ भोगन लगेउ कष्ट तिहुँ नाना॥
जीवत ही भये मृतक समाना ❀ रहे कहावत ब्रह्म प्रधाना॥
दोहा—भूख प्यास आतप पवन, वर्षादिक बहु क्लेश।
परवश बैठे सहत तिहुँ, सोचत रहहिं हमेश॥२२॥
करेउ जो सक्तिनि कर अपमाना ❀ तेहिकर फल यह लखहु सुजाना॥
काटहिं मशक दीमका देहा ❀ टारि न सकहिं भई गति एहा॥
सब विधि रहत दुखी नित हीते ❀ दिव्य सहस दस सम्वत बीते॥
बिनवहिं नित मनहीं मन माँहीं ❀ सिय पद कमल द्रवहु हम पाँहीं॥
छमहु सकल अपराध हमारे ❀ सर्वेश्वरी हरहु दुख भारे॥
हम तव शक्तिनि कर अपमाना ❀ कीन सहेउ तेहिलगि दुखनाना॥
येहिविधि मन महँ करत गलानी ❀ भइ अकाश बानी सुख सानी॥
उठहु वत्स परिहरि सब शोका ❀ खोजहुसतिनिमिलहिंसमलोका॥
लोकालोक गिरिनि के पारा ❀ राजत शक्ति लोक अविकारा॥

मिलहिं प्रथम भौमा भगवाना ❀ तिन सन पइहौ मर्म सुजाना ॥
जो कछु कहैं सत्य सब वचना ❀ मानि करेउ तिहुँ तब तस रचना ॥

दोहा—सुनत गिरा भइ शक्ति अँग, डोलन लगेउ शरीर ।
उठेउ सुहर्षि प्रणाम करि, नाश भई सब पीर ॥२३॥

अस्तुति करि पुनि २ सिर नावा ❀ नभ बानिहिं तिहुँ सुर सुख पावा ॥
मज्जन कीन मूल फल खायेउ ❀ मिलेउ परस्पर अति सुख पायेउ ॥
सुमिरत श्री सियराम सुनामा ❀ उत्तर दिशि तिहुँ चले सकामा ॥
कहत सुनत महिमा सिय केरी ❀ पहुँचे लोकाऽलोक सु नेरी ॥
मिले जाय भौमा भगवानहिं ❀ जिन्हिकर चरित पुरान बखानहिं ॥
स्याम गौर जिन्हि कं दुइ बारा ❀ भयेउ कृष्ण अर्जुन अवतारा ॥
तिन्हिकी अस्तुति कीन्ह सुहाई ❀ सिय महिमा सो कछुक सुनाई ॥
+सकल लोक अवतार सुहाये ❀ हमहिं आदि सबसिय उपजाये ॥
❀जन्म मरन पालन सियहाथा ❀ विबस रहत जेहि श्री रघुनाथा ॥
परतम तर साकेता धीसा ❀ ध्यावहिं जेहि सुर नर मुनि ईसा ॥

दोहा—अवतारिनि पति पुरुष पर, सगुन राम तेहि नाम ।
जासु चरित गावहिं सकल, श्रुति पुरान बसु याम ॥२४॥

सिय सनेह रजु बाँधे रहहीं ❀ जदपि विस्व नायक प्रभु अहहीं ॥
एक पुरुष सोइ जग सब नारी ❀ जहँ लगि दृष्टि परै तनु धारी ॥
सब महँ करै रमन सोइ रामा ❀ आतम राम पर्‌यो तेहि नामा ॥

+ श्री हनुमत संहितायाँ—तुरीय जानकी प्रोक्ता तुरीयो रघुनन्दनः । उभयोरन्याजा सर्वे चावतारास्त्व संख्यकाः ॥ पुनः सदाशिव संहितायां महाशंभुरुवाच, जननी सर्वभूतानां योगिनामपि मोहिनी । स्वयमात्मा द्विधा भूत्वा परानन्द स्वरूपिणी ॥ १ ॥ परमानन्द संमोहा ज्ञानानन्द सुविग्रहा । रामात्सर्वेऽपिजायन्ते ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा ॥ २ ॥

❀ मानसरामायणे—उद्भवस्थिति संहार कारिणीं क्लेशहारिणीम् । सर्व श्रेयस्करीं सीतां नतोहं राम वल्लभाम् ॥ १ ॥

हम सब सियकी शक्ति स्वरूपा ॐ सब के पति सोइ राम अनूपा ॥
मिथ्या पुरुष सकल हम भाई ॐ भीतर सियकी शक्ति समाई ॥
यह विवेक जिन्हिके उर होई ॐ आतम ज्ञानी जानहु सोई ॥
देह बुद्धि जिन्हिके उरमाँही ॐ ते जन सिय पद पावत नाँहीं ॥
सुनि यह कथा पुरुष अभिमाना ॐ गयो भयो उर आतम ज्ञाना ॥
नाइ शीस पुनि पुनि तिहुँ देवा ॐ बूझेउ शक्ति लोक कर भेवा ॥
सुनि भौमा बोलेउ मुसुकाई ॐ सुनहु कछुक पुर की प्रभुताई ॥
आनँदहू कर आनँद दानी ॐ यह सिय देस सकल सुखखानी ॥

दोहा—नित्यधाम सिय केर यह, सिय इच्छा अनुकूल ।
सिकुरत बिकसत कमल सम, सिय रुख लखि सुखमूल ॥२५॥

सत चित आनँद गुन बहुतेरे ॐ उपजत बसत सिया जेहि खेरे ॥
काल करम रबि ससि गम नाँहीं ॐ माया कृत गुन नहिं येहि माँहीं ॥
सदा प्रकास रूप रस येका ॐ राजहिं अलिगन यूथ अनेका ॥
उमा रमा ते अधिक प्रभाऊ ॐ सिय बल ते न गिनें कछु काऊ ॥
सिय सँग सब मन मानें भोगा ॐ करहिं सुअलिगन बिनुजपयोगा ॥
यक एकनि के सुख लखि भाई ॐ सारद सचि बहु जात लजाई ॥
निवसहिं सदा अभय सियलोका ॐ सपनेउँ नहिंतहँतिन्हिकछुसोका ॥
साठिहजार सरित सुचि वहहीं ॐ दरस परस जिन्हिकरअघदहहीं ॥
मैदाननि सर सोह सुहाये ॐ घाट मनोहर जात न गाये ॥
मनि मय जटित ललित सोपाना ॐ मज्जहिंनिरभय अलिगननाना ॥

दोहा—विकसेउ पंकज रङ्ग वहु, गुंजत मधुप अपार ।
लता भवन सोहहिं विपुल, अलि गन करहिं विहार ॥२६॥

सकल काम दायक यह लोका ॐ त्रिगुना तीता तीत असोका ॥
अखिल लोक वैकुंठनि केरा ॐ नायक यह सियस्वामिनि खेरा ॥
सेस गनेस वेद बुध बानी ॐ यहि कर महत न सकहिं बखानी ॥

श्री–भू–लीला–तिहुँ के धामा ❀ सोभित ये आगे अभिरामा ॥
जेहि कहँ कहहिं विभूति त्रिपादा ❀ जानहिं ग्यानी जन अविखादा ॥
तेहि त्रिपाद ते सिय पुर पारा ❀ उभय मध्य विरजा की धारा ॥
तेहि महँ मज्जन करि निज रूपा ❀ पावहिं आतम अमल अनूपा ॥
सखी रूप निज लहि सिय देसा ❀ मुदित जीव तव करै प्रवेशा ॥
बिनु त्यागे तिहुँ तन अभिमाना ❀ सियपुरनहिंकोउ जात सुजाना ॥
विरजा पार होत अनयासा ❀ सखी रूप पावत जन खासा ॥

दोहा–कोटिन-भू-लीला सिरी, महारमा ब्रह्मानि ।
सेवहिं सिय पद कमल नित, अखिलेस्वरि जियजानि ॥२७॥

अखिल लोक लोकप प्रगटावै ❀ ईश्वर ब्रह्म अनेक बनावै ॥
आपहि ब्रह्म आपही माया ❀ बनें एक ते रूप निकाया ॥
लक्ष अलक्ष अचल चल सोई ❀ सिय कर भेद न जानें कोई ॥
रोंम रोंम ते ब्रह्म अंपारा ❀ उपजावति पुनि करति सँघारा ॥
कबहूँ करै विश्व विस्तारा ❀ कबहुं बटोरति सकल पसारा ॥
जो रुचि होय करै सो सोई ❀ रोकनहार न तेहि कहँ कोई ॥
सकल प्रभुनि की प्रभुता माया ❀ देखहु सुनहु गुनहु अधिकाया ॥
सो सिय एक रोम ते भाई ❀ प्रगटै प्रभुनि सहित रुखपाई ॥
सिय महिमा सिय धाम प्रभावा ❀ सबबिधि अकथ जाइनहिंगावा ॥
सिय रघुवीर सु गुप्त विहारा ❀ होत इते मन गुन ते पारा ॥

दोहा—द्वारपाल सिय केंर मैं, निरखउ यह सिय देस ।
सत्तरि जोजन कोटि महि, तेहि महँ करहु प्रवेस ॥२८॥

यह महि शेष शीस पर नाँहीं ❀ सिय माया समुझो मन माँहीं ॥
यहि विधि बहु समुझाइबुझाई ❀ पठये तेसु चले शिरनाई ॥
निरखतही वह देश अनूपा ❀ भयेउ तुरत तिहुँ नारि सरूपा ॥
लखिसरूपविहिअचरजभयेउ ❀ सिय महिमा कहइ आगे गयेऊ ॥

पीत बरण नभ जल थल रचना ❀ अद्भुत अकथनकहिसकवचना ॥
सरित तड़ाग सुभग बहु बागा ❀ देखत उपजत उर अनुरागा ॥
मारग सरल स्वच्छ बहु तेरे ❀ दोउ दिशिसुन्दर बिटप घनेरे ॥
सब तरु हरे फरे महि परसत ❀ तिहुँ देवन के मन आकर्षत ॥
रचना सब तहँ अदभुत देखी ❀ मिटिगइ तिहुँ देवनि की सेखी ॥
कोटिनि भानु सरिस परकासा ❀ उमगत परमानँद चहुँ पासा ॥
सब तरु कामद रूप सदाई ❀ घूमहिं कोटिनि कामद गाई ॥
गुप्त प्रगट जहँ तहँ बिहार थल ❀ शोभितविपुलअकथअनुपमभल ॥

दोहा–कंचनके कोटिनि भवन, विलग विलग चहुँ ओर ।
बनें सुभग राजहिं तहाँ अलिगण अमित करोर॥२६॥

कोटिनि ललना चढ़ीं विमाननि ❀ बिहरहिंनभचहुँदिशिचौगाननि ॥
कोटिनि भूलहिं सुभगहिंडोरनि ❀ गावहिं सियगुणविमलकरोरनि ॥
शीतल मंद सुगन्धित ब्यारी ❀ बहहिं सदासब विधिसुखकारी ॥
प्रमुदित अलिगन गावहिं गीता ❀ लय सियनाम जानकी सीता ॥
जय सियराम नाम ध्वनिप्यारी ❀ करहिं बजाय भांझ डफ तारी ॥
केतिक निज निज जूथबनाई ❀ करहिं रास लीला सुखदाई ॥
सकल अङ्ग शुचि सुन्दरसोहत ❀ भूषन बसन पीत मन मोहत ॥
तिलक सभूषणसुभगलिलारनि ❀ अतर सुहावन शोभित बारनि ॥
चंद्र वदनि सब सब मृग नयनी ❀ आनँदहू की आनँद दयनी ॥

दोहा–सिया अलिनि के को कहै, सुख सुहाग अनुराग ।
विधि हरि हर लखि थकि रहे, जानिछोटनिजभाग॥३०॥

प्राकृत जीव अबुध अविचारा ❀ तेकि लखहिं यहसुख श्रुतिपारा ॥
एक सखीतिन्हकर गहिपानी ❀ प्रेम सहित बोली मृदुबानी ॥
को तुम्ह अहहु नई सी लागहु ❀ केहिलगियहाँ चकितसी बागहु ॥
तब तिंन्हि आपन भेद बतायेउ ❀ सुनि वह यूथेश्वरिहिं सुनायेउ ॥

यथेश्वरि सुनि निकट बुलायेउ ❀ आदर करि समीप बैठायेउ ॥
सुनि तिन्हको पुनि कथासुहाई ❀ यूयेश्वरी कहेउ मुसुकाई ॥
तुम्हरे मन्त्र न तिलक लिलारा ❀ कण्ठी कण्ठ न छाप उदारा ॥
संसकार ये पञ्च कहावत ❀ इन्हि बिनुजीवन सियपदपावत ॥
तब बोले तिहुं सुर मृदुबानी ❀ संसकार कीजै सुखदानी ॥
आपन हेरि हमहिं सोइ कीजै ❀ जेहिविधिसियपदलखिदुखछीजै॥

दोहा–तब श्री युगल विहारिणी, नाम सु प्रिय सिय केरि ।
❀संसकार तिहुँके किये, विधिवत शिर कर फेरि ॥३१॥

यह सुनि संसय करिहहिं सोई ❀ जिन्हि सियमहिमाविंदितनहोई॥
संसकार करि चली लिवाई ❀ कनकभवन जहँसिय सुखदाई ॥
चढ़ि सुविमाननिभ पथमाँही ❀ भूमि सुदेश विलोकति जाँहीं ॥
चंद्र प्रभा श्री विमला आलीं ❀ कहति कथा तिहुँकहँ लयचालीं ॥
अवलोकहु पूरब दिशि बामा ❀ लोकालोक सुगिरि अभिरामा ॥
अति उतंग नहिं जात बखाना ❀ निवसहिं जहँ भौमा भगवाना ॥
द्वारपाल सो सिय जू केरे ❀ उपजहिं जिन्हि ते ब्रह्म घनेरे ॥
सिय रुख राखिकरहिंसबकाजा ❀ भौमा ब्रह्म समेत समाजा ॥
जिन्हिते मिलि तुम्हभेदसुपावा ❀ सिय सिय पुर कर सुनेउ प्रभावा ॥
देखहु सो सखिभरि २ लोचन ❀ यह सुदेश त्रय ताप विमोचन ॥

दोहा–बहुरि त्रिपाद विभूति ये, श्री, भू, लीला धाम ।
अवलोकहु रमनीक अति अति विस्तरित ललाम ३२॥

बरन २ बहु रंगनि केरे ❀ सोभित महल ललाम घनेरे ॥
विपुल विभूति भोग सुखनाना ❀ इनहिं दीन सिय सुनहु सुजाना ॥
श्री–भू–लीला तीनहुं देवी ❀ करहिं काज जग सियपद सेवी ॥

❀ ये संसकार इन्के इहां सखी सरूप के किये गये हैं, अभिमान होने से संसकार हीन हो गये रहे, इसवास्ते ।

निरखहु अब सखि दच्छिनमाँहीं ❀ रमा आदि वैकुण्ठ लखाँहीं ॥
धवल धाम झलकत अति दूरी ❀ रचना अकथ अनूपम रूरी ॥
विभुनिविभूतिसहित छविधामा ❀ राजहिं महा रमादिक वामा ॥
सदा एक रस तिन्हि के भोगा ❀ कबहुँ न व्यापहिं रोग वियोगा ॥
सिय प्रसाद सब सबसुख करहीं ❀ सियपद सेइ मोद मन भरहीं ॥
ब्रह्मलोक अमरावति माँहीं ❀ सियआलिनि समसुख कहुँ नाँहीं ॥
जो सियराम नाम वसु जामा ❀ रटहिं लहहिंते यहसिय धामा ॥

दोहा—विश्वविलास निकुंज अब, अवलोकहु यहि ओर ।
नाटक होत जथार्थ जहँ, अति विचित्र चितचोर ॥३३॥

येहि नाटक मँह उभय प्रधाना ❀ सिय कृत माया परम सुजाना ॥
तुम्हहूं तिन्हिकी लखि चतुराई ❀ भूलि विसारेउ सिय सुखदाई ॥
विद्या अपर अविद्या नामा ❀ विरचहिं छनमहँ लोक तमामा ॥
लघु ते लघु भारी ते भारी ❀ रचहिं पेखनें मुनि मन हारी ॥
अदभुत रचना वरनि न जाई ❀ रचहिं उभय श्री सिय रुखपाई ॥
सत जोजन यह जो मयदाना ❀ तेहिमहँ रचहिं खेल विधि नाना ॥
अण्ड समान अमित ब्रह्मण्डा ❀ रचि प्रगटहिं दोउ परम प्रचंडा ॥
लोक चतुर्दस यक यक माँहीं ❀ प्रति ब्रह्मांडनि प्रगट लखाँहीं ॥
प्रति लोकनि चौरासी लच्छा ❀ योनि लखावहिं रचि परतच्छा ॥
काल कर्म वस दुख सुख दोऊ ❀ भोगत देखि परत सब कोऊ ॥

दोहा—नित्या नित्य पसार बहु, नूतन छन छन मांझ ।
उपजत विनसत लखिपरै, जिमि जग भोरसु सांझ ।३४।

विद्या माया सिय वल राखै ❀ निज वल-बुद्धि अविद्या भाखै ॥
दोउ माया सिय निज प्रगटाई ❀ लीला हेतु प्रकृति विलगाई ॥
निज २ दल दोउ विरचि सुमाया ❀ करहिं चरित बहु जात न गाया ॥
नराकार यक तन इक नारी ❀ वनी उभय दोउ दलनि मझारी ॥

लीला हित आपहि दुइ रूपा ❀ बनी नारि यक पुरुष अनूपा ॥
सो जड़ माया पुरुष न नारी ❀ प्राकृत जो नाना तन धारी ॥
तेहि जड़ तन महँ विद्या माया ❀ पैठि बनीं सोइ निजहि भुलाया ॥
जड़ महँ बैठि सुजड़नि निहारी ❀ मोही चेतन सक्ति बिचारी ॥
सनमुख रही विमुख भइ सोई ❀ जड़ सँग मिलि चेतनता खोई ॥
ऊपर की सुन्दरता हेरी ❀ जड़ की वनि गइ चेतन चेरी ॥

दोहा—हम हम करि दुख सहत अति, विवस मोह मद मार।
भोगहिं निज कृत कर्म फल, फँसि जड़ माया जार ॥३५॥

विद्या माया कर दल जोई ❀ सियहिं भजत सब सनमुख होई ॥
विमुख अविद्या दल दुख रूपा ❀ भयेउ त्यागि सियचरन अनूपा ॥
चढ़हिं स्वर्ग कहुँ नरकनि परहीं ❀ सियपदविमुखविपुलतनधरहीं ॥
यह रहस्य जेहि विधि इत होई ❀ जानहु तिमि सबलोकनि सोई ॥
जग नाटक येहि कर यक नामा ❀ सबविधि अकथ अनूप ललामा ॥
येहि कर भेद न जानत कोई ❀ केहि कारन यह नाटक होई ॥
सिय कर भेद सियाही जानें ❀ अस विचारितेहि भजहिंसयानें ॥
पंडित वनि बहु वेद पुरानहिं ❀ पढ़हिं न भेद सिया कर जानहिं ॥
परे अविद्या छल महँ जोई ❀ सियकर भेद लखहिं किमि सोई ॥
जग पेखन सिय खेल अनूपा ❀ लखि न सकहि कोउ तासु सरूपा ॥

दोहा—अवलोकहु अब दुर्ग वह, सिय स्वामिनि जू केर।
अति प्रकासमय खण्ड दस, कोट जासु चहुँ फेर ॥३६॥

कोटनि ऊपर कलस कँगूरा ❀ लसत प्रकास दसहु दिसि पूरा ॥
गावहिं कोटिनि कोकिल वैनी ❀ सिय कीरति नित नव सुखदैनी ॥
इन्हिं सम भागवंत कोउ नाँहीं ❀ निवसहिं सियढिगसियपुरमाँहीं ॥
कर्म धर्म नर तन अभिमानी ❀ आवत ते न इहाँ अग्यानी ॥
रटहिं नाम सिय पद उर लाई ❀ ते येहि देश बसहिं जन आई ॥

यहि विधि कहत परस्पर बचना ❀ जाँहिं विलोकत अनुपम रचना ॥
पहुँचेउ सिय महलनि के नेरे ❀ सोरह कोट जासु चहुँ फेरे ॥
कोटिनि भानु सु सरिस प्रकाशा ❀ कोटनि कर फैलेउ चहुँ पासा ॥
फहरहिं केतु वजहिं वहु बाजा ❀ चारिउ दिशिन चारि दरवाजा ॥
चहुँ फल भुक्ति मुक्ति के दानी ❀ फाटक चारिउ लखहु सयानीं ॥

दोहा—यक यक फाटक पर सखी, तैंतिस तैंतिस लाख।
उमा रमासी राजहीं, वदलहिं यक यक पाख ॥३७॥

सिया अलिनि की संख्या नाँहीं ❀ वसें सुखी सब सिय भुज छाँहीं ॥
यक यक योजन पर परकोटा ❀ तेहिके भीतर महल निखोटा ॥
विधिहरिहरतिहुँ निरखिनिकेता ❀ मन वच कर्म सु भयेउ अचेता ॥
धरि धीरज सिय महलनिहारहिं ❀ अद्भुतता निजमन सुविचारहिं ॥
गये जहाँ भीतर सियराजैं ❀ चहुँदिसि अलिंवड़भागिनिभ्राजैं ॥
पद्माकार सिंहासन चारू ❀ लखि लाजैं जेहि कोटिनि मारू ॥
तेहिपरसखिनिसहित सियसोहैं ❀ बरनें छवि अस कवि जग कोहैं ॥
सीस चंद्रिका भाल सु टीका ❀ श्रवननि कनक फूल अतिनीका ॥
नासामनि नथ भौंहँ विसाला ❀ जुगवत जिन्हैं रहहिं दिगपाला ॥
बदन प्रसन्न अधर सुख दाई ❀ चिवुक सविंदु महा छवि छाई ॥

दोहा—कंठ कंठिका माल मनि, ललित हमेल सु हार।
रतन जटित भुज वाजुबर, लखि रति लजहिं अपार ॥३८॥

करनि सु मेहँदी कंकन चुरियाँ ❀ पहुँची मधुर मनहुँ मुद पुरियाँ ॥
कटि किंकिनि अनमोल सुहाई ❀ चीर जरकसी बरनि न जाई ॥
पायजेब पग पद्मनि राजैं ❀ मधुर मधुर धुनि नूपुर बाजैं ॥
सहज अरुन तल जावक दीन्हा ❀ आलिनि जन्म लाभ भल लीन्हा ॥
नख सिख अङ्ग अनूप सुसारी ❀ ओढ़ैं मोतिनि जड़ी किनारी ॥
पीत रंग तन कंचुकि धारी ❀ तेहि पर लट लटकहिं जुगकारी ॥

यहिविधिसियस्वामिनिछविदेखी ❀ हरखेउ उर तिहुं देव विसेखी ॥
परेउ पुलकि चरननि तिहुँ देवा ❀ लागेउ करन बचन की सेवा ॥
कमलासन पर सियहिं निहारी ❀ वैठीं सुख सेवहिं वहु नारीं ॥
जोरिपानि तिहुँ अस्तुति करहीं ❀ प्रेम प्रवाह लोचननि ढरहीं ॥
जय सिय स्वामिनि जगदा धारा ❀ जय मन बुद्धि ज्ञान गुन पारा ॥
जयति सकल ईशनि कर कारन ❀ जय भ्रम सागर पार उतारन ॥

दोहा—जयति जयति सर्वेश्वरी, जन रक्षक सुखदानि ।
जय समर्थ अहलादिनी, सक्ति सील गुन खानि ।३६।

जयति अनंदहु आनँद दैनो ❀ जय मितभासिनि सुचि मृदुबैनी ॥
जयति स्वतंत्रसकल घट वासिनि ❀ जयतिसुमुखिअवलोकहुदासिनि ॥
जयति नाम तव सव सुखदाता ❀ जन्म मरन नासन दुख त्राता ॥
जयति परम परमारथ रूपा ❀ जयतिचरित तवअकथअनूपा ॥
छमहु देवि अपराध हमारे ❀ कीन्ह मोह वस जो अघ भारे ॥
अव करु कृपा स्वामिनी सोई ❀ कवहूं हमरे मोह न होई ॥
जयति परम पावन सुख मूला ❀ जयति हरन संश्रृति भ्रम सूला ॥
जय सरनागत वत्सल भामिनि ❀ विश्व रूप चेतन बहु नामिनि ॥
राम ब्रह्म की प्रान अधारा ❀ जय जन पालक हरन बिकारा ॥
जय बुधिवल सुन्दरता सागर ❀ छमा दया करुना गुन आगर ॥

दोहा—जयति शान्ति सुखमा सदन, धर्म सील सर्वज्ञ ।
जयति भक्ति प्रद शक्तिपर, सरल स्वभाव कृतज्ञ ॥४०॥

जयति प्रीतिपालक मृग लोचनि ❀ हेतु रहित हित सोच विमोचनि ॥
जयति सखीगन मध्य विहारिनि ❀ जयति सुकीरति जगविस्तारिनि ॥
जय मद मोह कोह भ्रम हरनी ❀ असरन सरन दरन जन जरनी ॥
पुरुष भाव उर धरि अग्याता ❀ विसरेउँ हम तव पद जलजाता ॥
जग करता पालक संहरता ❀ बने रहे हमइँ धरि नरता ॥

अब करि कृपा सरूप लखावा ❀ जानेउँ अकथ अनूप प्रभावा ॥
यह छबि बसै सदा हमरे मन ❀ असकहिपरेचरन पुनि तिहुँजन ॥
परम कृपालय सिय मुसिकानी ❀ बोलीं सरल मनोहर बानी ॥
तुम्ह अतिशय प्रिय तिहुँजनमोरे ❀ मम महिमा जनि भूलेउ भोरे ॥
जो कछु भौमा तुमहिं सुनाई ❀ जानेउ सत्य सु बात सदाई ॥

दोहा—अब तुम्ह जायसु भजहु मोहि, लागहु निज २ काम ।
यह सुध्यान उर राखि नित, रटत रहेउ मुख नाम ॥४१॥

अखिल लोक लोकप जड़ चेतन ❀ मम माया कृत यह जानेउ मन ॥
उतपति पालन अरु संहारा ❀ यह सब जानेउ खेल हमारा ॥
सनमुख विमुखसु उभय प्रकारा ❀ अखिल श्रृष्टि रचना विस्तारा ॥
सनमुख मम विमुखी मायाकर ❀ मम इच्छा दोउ लरत परस्पर ॥
बिमुखी पुरुष भावना वारे ❀ निज कर्ता बनि मोहिं बिसारे ॥
मम माया के ते सब चेरे ❀ फिरहिं सदा ममता मद घेरे ॥
सनमुख जो पावहिं कवनिउ तन ❀ भजहिंमोहिंधरि सखी भावमन ॥
मम भूषण चंद्रिका अनूपा ❀ धारहिं ते सब मोर सरूपा ॥
विंदु चंद्रिका मुद्रा धारी ❀ पावहिं मोहिं निश्चय नर नारी ॥

दोहा—राम पुरुष यक वाम सब, रमण करैं सब संग ।
मोर निकट निवसत सुजिमि, विम्ब श्याम शुचि रंग ॥४२॥

यह प्रसंग अति गूढ़ गूढ़ तर ❀ मैं उन्ह ते कै मो ते रघुबर ॥
मोहि भजहिं ते विनुश्रम रामहिं ❀ पावहिं जन पूरक मन कामहिं ॥
छनहुँ न तजत मोहि मैं तेही ❀ उभय एक जिमि छाया देही ॥
जहां देह तहँ छाया रहही ❀ देह विना छायहि को लहही ॥
परम पुरुष जिन्हिकर श्रीरामू ❀ नाम काम प्रद सब सुख धामू ॥
सो मम पति प्रानहुँ ते प्यारे ❀ रहत सदा आधीन हमारे ॥
करोंचरित तिन्हिसँग मिलिनाना ❀ भक्तनि हित आँनंद निधाना ॥

लीला ललित सगुन सुखकारी ❀ पढ़िसुनिपावहिंजनमोहिभारी ॥
सगुन उपासक युगल सरूपा ❀ ध्यावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥
सदा रहत हम दोउ साकारा ❀ रमत परस्पर रुचि अनुसारा ॥
यह वर भेद न लखहिं निकाया ❀ जानहिंसोइजिन्हिपरममदाया ॥

दोहा—निराकार गुन रहित जो, ब्रह्म बिंब सो मोर ।
ध्यावहिं तेहि अज्ञान तजि, सगुन रूप चितचोर ॥४३॥

निराकार निरगुन जगदीसा ❀ जानहिं जेहि सुर नर मुनि ईसा ॥
रोंम रोंम जग व्यापेउ जोई ❀ सगुन रूप की छाया सोई ॥
सगुन ब्रह्म विलसहिं मम संगा ❀ निराकार रँग सब जग रंगा ॥
उभय रूप पय नाम सु एका ❀ राम देत जो विमल विवेका ॥
रहत सदा दोउ मम आधीना ❀ जलाधार जिमि मीन प्रवीना ॥
निरगुनादि जो ब्रह्म सरूपा ❀ सबके कारन राम अनूपा ॥
स्याम सरीर द्विभुज साकारा ❀ मम सँग सो नित करहिं विहारा ॥
अवराधहिं जेहितजि मोहिकोई ❀ पावहिं ताहि न सपनेउँ सोई ॥
कोटिनि जन्म भजै किन तेही ❀ मिलहिं न मो बिनु राम सनेही ॥
जलहि मीन तजि छाया देही ❀ होत न विलग विदित जग एही ॥
मोहिभजहिंजो तिन्हिसोइ रामू ❀ अनायास मिलिहहिं सुखधामू ॥

दोहा—मोर कृपा ते भेद यह, जानहिं रसिक सुजान ।
कोउ कोउ सोउ भगरहिं अपर, पढ़िपढ़िवेद पुरान ॥४४॥

मम पद प्रीति न आतम ज्ञाना ❀ पावहिं ते न सुगति भगवाना ॥
मोहि तजि जो रामहिं अनुरागै ❀ ब्रह्म ❀ बधादि पाप तेहि लागै ॥

❀ शरीर आत्मा की नाईं, श्रीसीताराम जी अभिन्न हैं, इसी कारण भिन्न २ आराधना करने वालों को अथवा विपरीत, जैसे—रामसीता, कृष्ण राधा, कहने वालों को, ब्रह्म बधादि दोष का भागी होना ग्रन्थों में कहा है। यथा—श्रीगोपाल सहस्रनाम श्रीशिव वाक्यं शिवांप्रति, गौर तेजो विना

यह उपदेश सदा उर धरहू ❀ जाय सु निज २ कारज करहू ॥
मूँदहु लोचन करि मम ध्याना ❀ अब न तुम्हैं व्यापहि अज्ञाना ॥
सुनि सियवचन परमसुखपायेउ ❀ नयन मूंदि चरननि सिरनायेउ ॥
नावत शिर तिहुँ सतिनिसमेता ❀ पहुंचे निज निज जाइ निकेता ॥
यह सब चरित स्वप्न समभयेऊ ❀ बारबार सिय चरणनि नयेऊ ॥
सुनि समुझहिं जे यह इतिहासा ❀ पावहिं ते सिय लोक निवासा ॥
जिन्हके उर नहिं सियपद प्रेमा ❀ पावहिं ते जन कतहुँ न क्षेमा ॥
पूजा पाठ भजन बहु करई ❀ सियपद सेये विनु न उबरई ॥

दोहा—सेवत जो सिय पद कमल, धरि उर दृढ़ विश्वास ।
राम भ्रमर निवसहिं अवसि, निशि दिन तिन्ह के पास ।४५

परम कृपाल सिया सुखदाई ❀ भजहु तासु पद तजि कुटिलाई ॥
भक्तनिहितसियविविधि देह धरि ❀ हतिखलगणसुखदेतिचरितकरि ॥

यस्तु श्याम तेजः समर्चयेत् । जपेद्वाध्यायतो वापि स भवेत्पातकी शिवे ॥ १७ ॥ स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पञ्चमः । येते दोषै बिलिप्येत तेजो भेदान्महेश्वरी ॥ १८ ॥ ब्रह्मवैवर्ते श्रीनारायण वाक्यं श्रीनारदं प्रति—आदौ सीता समुच्चार्य पश्चाद्रामं वदेद्बुधः । व्यतिक्रमे ब्रह्म हत्यां लभते नात्र संशयः ॥ १ ॥ जगन्माता च प्रकृति पुरुषश्च जगत्पिता । गरीयसी त्रिजगतां माता शत गुणैः पितुः ॥ २ ॥ इत्यादि ये दो श्लोक कहीं २ राधा कृष्ण के नाम से भी सुने जाते हैं। तो भी कोई हानि नहीं दोनों एक ही हैं। श्रीआनन्दरामायण और रामस्तवराज देखौ । कहोकि श्रीशिवादितौ रामराम ही रटते हैं, सो ठीक है। परन्तु वे किस भावना से रटते हैं। सो तो अस्मदादि जीव पाप ग्रसित नहीं जानते। केवल राम राम रटने का अधिकार तो श्रीजानकी जी का ही है। या उनके अनुरूप हो जाय सो रटै, इस भेद के जाने बिना बड़ों की होड़ करना व्यर्थ है। दूसरे—विशिष्टाद्वैत मतावलम्बियों का एक को आराधना करने का सिद्धान्त भी नहीं है। रहा अद्वैतवादी ज्ञानियों की तो बात ही भिन्न है। यहाँ तो जेकर मड़वा तेकर गीत। इति—

असुर मूलिकादिक भट भारे ❀ सहित सहाय समर सिय मारे ॥
भयेउ महारावण यक भारी ❀ हारेउ तेहि सन सदल खरारी ॥
काली तनु धरि तेहि सिय मारेउ ❀ दुर्गा बपु धरि शुम्भ सँहारेउ ॥
भृकुटी फेरत जग लय होई ❀ तेहि को समता करै कि कोई ॥
ये सब सिय के खेल खिलौना ❀ समुझहिं कोउ सुचि सन्त सलौना ॥
जन सुख लागि सु चरित अनूपा ❀ करहिं नवल सिय धरि बहुरूपा ॥
समुझहिं जड़ न मोह मद माते ❀ फुरमानेउ जिन्हि जग सुख नाते ॥
देखत के द्वै रघुबर सीता ❀ अहहिं एक यह भेद पुनीता ॥

दोहा—अति दुर्लभ सोइ जनन हित, भयेउ सुलभ जग आय ।
सिय रघुबीर कृपाल दोउ, नारद बचन सहाय ॥४६॥
मिथिला अवध सु जन्म थल, नित्य विहार विचारि ।
सेवहिं सज्जन लाय मन, भव भ्रम भेद निवारि ॥४७॥
नाम रूप गुण धाम सब, नित्य बिभूति प्रताप ।
लखहिं न जिन्हिके मलिन उर, अज्ञ अन्ध रतपाप ॥४८॥
बरणेउँ रूप प्रसंग यह, कछु निज मति अनुसार ।
प्रभु चरित्र अतिगूढ़ तर, वेद न पावहिं पार ॥४९॥
सक्ति सिरोमनि जानकी, ब्रह्मनि पति श्रीराम ।
भक्तनि हित अवतरहिं दोउ, प्रभु परिपूरन काम ॥५०॥

पद—स्वामी श्रीराम चन्द्र स्वामिनी सिया जू । वेद ब्रह्म करत गान, सुर नर मुनि धरत ध्यान, स्याम गौर छवि महान पारना लिया जू ॥ १ ॥ करत चरित चारु सार, विरद लागि बार बार, दीन बंधु अति उदार, परन जो किया जू ॥ २ ॥ अवध धाम राम जाय, जनक नगर सीय आय, लेत जन्म वेद गाय, छीर सो पिया जू ॥ ३ ॥ परम सक्ति सहित [illegible] [illegible] [illegible] लोक त्रात,

भक्त हेतु चरित व्रात. करि सुसुख दिया जू ॥ ४ ॥ खलनि मारि सुगति दई, जयति सकल भुवन भई, परसि चरन धाम गई, विप्रकी तिया जू ॥ ५ ॥ देव दनुज लोक नाथ, संभु सेष नाय माथ, बरनत सियराम गाथ, नाम लै जिया जू ॥ ६ ॥ जनक सोक संत ताप, विप्र गर्व नृपनि दाप, दूरि कीन भंजि चाप, लाज राखिया जू ॥ ७ ॥ सुरनि सुमन वृष्टि करी, प्रेमलता विपति टरी रामचन्द्र सीयवरी, मुदित भो हिया जू ॥ ८ ॥

दशरथ सुत राम सिया जनक की दुलारी ॥

नख सिख सोभा अपार, लाजत लखि कोटि मार, वरनत छबि बार बार-सारदाउ हारी ॥ १ ॥ भूषण मनि जाल माल, लसत विविध जटित लाल, नैनकंज ललित भाल, तिलक मोदकारी ॥२॥ गौर वरन सिया राम, सुभग अङ्ग मेघ श्याम, पीतवसन उत ललाम इत सुनील सारी ॥ ३ ॥ राजत सुख गुननिधाम, सेवति पद विपुल वाम, सीता कर कमल राम, घनुष बान धारी ॥ ४ ॥ सुर नर मुनि धरत ध्यान, कीरति कल करत गान, प्रान के सुप्रान ब्रह्म ब्रह्म के अधारी ॥ ५ ॥ सरनपाल अति उदार, हरन हेतु भूमिभार, करत चरित विविध सार, वदत वेद चारी ॥ ६ ॥ प्रेमलता सोच त्यागि, युगल चरन कमल पागि, जपिसु नाम जीह जागि, :दमन दोष भारी ॥ ७ ॥ जय सियराम जय जय सियराम ।

दोहा—चौथे चारु प्रसंग महँ, लीला भेद बखानि ।
कहहुँ कछुक सुनिहहिं सुजन, समुझि हृदय सुखमानि ।५१।

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम प्रचारक श्रीवैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्रीसिया लाल शरणजी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत श्रीसियाराम रूप प्रसंग वर्णनो नाम त्रितीय प्रसंग सुभम् ॥३॥

अथ श्रीलीला प्रसंगारम्भः ॥४॥

❀ श्रीसतगुरवे नमः ❀ श्रीहनुमते नमः ❀

दोहा—कहत सुनत गावत करत, प्रभु लीला सब कोय।
समुझत कोउ यक लाख महँ, पर पद पावत सोय ॥१॥
तन सुख सानी बुद्धि मन, विषय बासना लीन।
स्वारथ साधक जीव यह, समुझै कोउ मति झीन ।२।

नाम रूप लीला प्रभु धामा ❀ चारिउ अगम रटे विनु नामा ॥
दैव कृपा यहिं विधि संयोगा ❀ बने कबहुँतौ समुझैं लोगा ॥
जो गुरु मिलै सुझावन हारा ❀ उघरैं नयनं सु ज्ञान विचारा ॥
सुनैं गुनैं तजि माया भोगनि ❀ धारै उर कथि कहै न लोगनि ॥
अमर होय तन सिधि समुदाई ❀ घेरे रहैं करैं सेवकाई ॥
गहहिंनसोतिन्हिकहँलखिबाधक ❀ राम तत्व पावहिं ते साधक ॥
राम चरित मानस उपदेशा ❀ है सबही कहँ हरण कलेशा ॥
वेद पुराण शास्त्र सुर मुनि जत ❀ वर्णाश्रम नृप नीति सन्त मत ॥
विष्णु[१] शक्ति[२] शिव[३] रवि[४] गणनायक[५] ❀ पांचहु के भक्तनि सुखदायक ॥
श्री वैष्णव सन्याशी ज्ञानी ❀ रामचरित सब कहँ सुखदानी ॥

दोहा—बातसल्य[१] श्रृङ्गार[२] पुनि, शान्ति[३] सख्य[४] अरु दास[५]।
पाँचहु रस रसिकनि सुखद, राम चरित्र प्रकास ॥३॥

राम चरित सबके गुरु स्वामी ❀ समुझे बिनु भटकहिं नर वामी ॥
सर्व उपास्य राम श्री सियबर ❀ तेहिविधितिन्हिकेचरितसर्वपर ॥
नारायण श्री कृष्ण उपासी ❀ रामचरित सबकहँ सुखरासी ॥

रामायन उपदेश निधाना ❀ समुझो तौ नासैं मद माना ॥
देखहु खोलि हिये की आँखैं ❀ राम कहा केहि केहि सन भाखैं ॥
पुनि सियकी बतकही बिचारहु ❀ पढ़िगुनिसुनि उरमांहिसुधारहु ॥
कौशल्या दशरथ की बानी ❀ तनक बिचारहु तो गुनि ग्यानी ॥
लखनहिं कहा सुमित्रा बाता ❀ कही बिचारहु ताहि सुभ्राता ॥
कुबरिहि कहा कह्यो कैकेई ❀ प्रथमहिं हृदय बिचारहु तेई ॥
लखन भरत अङ्गद हनुमाना ❀ कही कहा सो गुनहु सुजाना ॥
प्रश्नोत्तर जहँ जहँ संवादा ❀ पढ़त गुनत अपहरत विषादा ॥

दोहा—विस्वामित्र बशिष्ठ गुरु, जनक सुनयना रानि ।
जहँ तहँ का भाखे वचन, समुझउ प्रिय उर आनि ॥४॥

मिथिला अवध निवासिनि वानी ❀ प्रीति प्रतीति लखहु उरआनी ॥
कहा कही सुर मुनि ऋषिनारी ❀ राम चरित महँ गुनहु बिचारी ॥
गुह निषाद केवट वन चारी ❀ कही कहा सो लेहु निहारी ॥
वालमीकि कुम्भज का भाखी ❀ समुझहु सो बानी उर राखी ॥
अनुसूय्या अत्री के बयना ❀ समुझत होंत हृदय अति चयना ॥
राम लखन सम्बाद सुहावन ❀ समुझहु सकल कलेश नशावन ॥
सबरी गीध भगति गति भाई ❀ अवलोकहु उर मन मति लाई ॥
तारा बालि बिमल सम्बादा ❀ सुनहु लाय मन हरण विषादा ॥
प्रभु सन कहा कही सुग्रीवा ❀ तेहि उर तनक बिचारहु जीवा ॥

दोहा—बरषाऋतु बर्णन सुनौ, गुनौ हिये चितलाय ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य उर, बढ़ै मोह भ्रम जाय ॥ ५ ॥

वर्षा ऋतु सु प्रसंग अनूपा ❀ समुझौ तौ न परो भव कूपा ॥
प्रभु नारद मुनि कर सु बतकही ❀ समुझत नशै सकल दुख सही ॥
मिलत त्रिभीषण जो प्रभु कहेऊ ❀ गुनत सुसुख उपजत नित नयेऊ ॥
अङ्गद हनुमत रावण बातें ❀ समझहिं तिन्हैं सदा कुशिलातें ॥

रावण प्रति मन्दोदरि शिक्षा ❀ समझहु उर माँगौं मैं भिक्षा ॥
राम कहेउ रथ रूपक जोई ❀ समुझत हृदय ज्ञान अति होई ॥
विजय अन्त सुर अस्तुति कीना ❀ सुनत होय मन प्रभु पद लीना ॥
कपिन कहा प्रभु ग्यान सुदीना ❀ ते सब केहिविधि विनतीकीना ॥
राम राज अस्तुति चहुँ वेदा ❀ कीन्ह गुनहु सो हर भव खेदा ॥
भरतादिक पुरजनन निदेशू ❀ दीन्ह बिचारहु जो अवधेशू ॥

दोहा—प्रभु प्रभु भक्तनि के चरित, कहनि रहनि गुण ज्ञान ।
सुनि गुनि उर धरि करिय सोइ, चाहहु जो कल्यान॥६॥

उत्तर काण्ड पढ़हु मन लाई ❀ धारहु उर गुनि गाथा भाई ॥
प्रभु प्रताप रबिराज सुबर्णन ❀ समुझत होय परम आनँदमन ॥
ज्ञानदीप मणि भक्ति प्रसंगा ❀ गुणत होय दारुण दुख भंगा ॥
प्रभु भुसुन्डि सम्बाद अनूपा ❀ पुनि विभूति वर्णन सुख रूपा ॥
अष्ट प्रश्न उत्तर कलि गाथा ❀ कहेउ भुसुन्डि सुनेउ खगनाथा ॥
मानस रुज भुसुन्डि अनुमाना ❀ समुझत हृदय होइ दृढ़ ज्ञाना ॥
पारवती तप सतीं सँदेहू ❀ भली भाँति समुझौ दोउ एहू ॥
पारवती शंकर प्रश्नोत्तर ❀ समुझत होइ प्रबोध सु उरवर ॥
नाम प्रसंग गुनौ पुनि भाई ❀ नाम जापकनि को मनुसाई ॥
सप्त कांड रामायण केरे ❀ जिन्हि महँ भरे निदेस घनेरे ॥

दोहा—कर्म सु ज्ञान उपासना, रोचक भयद यथार्थ ।
तीनि कांड किरियाँ सुत्रय, समुझहु भेद सु अर्थ ॥७॥

जो जथार्थ अर्थनि उपदेसनि ❀ धारहु तौ न तपहु भव क्लेसनि ॥
लक्ष्मण गुह सम्बाद विचारहु ❀ भरत भाव करनी उर धारहु ॥
औरउ जहँ तहँ जो उपदेशा ❀ खोजि गुनहु सब हरण कलेशा ॥
बहु शिद्धान्त सु मानस माँहीं ❀ समुझौ कोउ भेदी गुरु पाँहीं ॥
पढ़ि पढ़ि कैं फारीं बहु पोथीं ❀ कथैं दिवस निशि कथनी थोथीं ॥

करि करि अर्थ अनर्थ कमावत ❀ तुलसीकृत कर भेद न पावत ॥
अर्थ वाद महँ पंडित भारी ❀ लरहिं परस्पर व्यर्थ अनारी ॥
अर्थ सीखि उपजेउ अभिमाना ❀ नाशेउ निर्मल आतम ज्ञाना ॥
कथा भाग कर केवल ग्याना ❀ नहिं उपदेश भाग पर ध्याना ॥
सुद्धा सुद्ध विचार नवीनें ❀ करत रहत उपदेस नचीनें ॥
मन मुख पाठ बनाय विगारेउ ❀ सुद्ध अर्थ अनरथ करि धारेउ ॥

दोहा—पूजत करि करि आरती, पोथिनि भोग लगाय।
कहत सुनत गावत गरजि, ढोलक झाँझ बजाय ॥८॥

मासिक पाठ नवाह सु करहीं ❀ लिखेउ कहा तेहि हृदय न धरहीं ॥
एक एक उपदेश अनूपा ❀ समुझैं तौ न परैं भव कूपा ॥
प्राकृत पंडित वेद पुराना ❀ पढ़हिं न राम चरित कर ज्ञाना ॥
पलटहिं पाठ भेद बिनु जाने ❀ पंडित बनि बनि झगरा ठाने ॥
हनूमान सिव सिवा भवानी ❀ गरुड़ भुसुण्डी नारद ज्ञानी ॥
वालमीकि कुम्भज सनकादी ❀ जाग बलिक मुनि आतम वादी ॥
बिस्वामित्र वशिष्ठ महाना ❀ अत्रि आदि मुनि जनक सुजाना ॥
ध्रुव प्रहलाद वालि वलि भूपा ❀ जानहिं राम चरित्र अनूपा ॥
ऋषि मतङ्ग सवरी सु जटाई ❀ जामवन्त अङ्गद कपिराई ॥
भक्त बिभीषण भरत निषादू ❀ जानहिं राम चरित कर स्वादू ॥

दोहा—तुलसिदास प्रभु चरित रस, पाय कीन्ह बिस्तार।
पढ़ि गुनि गहहु सुसार शुचि, परिहरि पोथिन भार ॥९॥

सारग्रही पोथिनि के भारा ❀ ढोये फिरत न करहु बिचारा ॥
सुनि गुनि राम चरित उपदेशा ❀ तजि जग सुमिरहिं नाम रसेशा ॥
पढ़ौ सुनौ पूजौ अरु गावहु ❀ कहि कहि कथा सबहिं समुझावहु ॥
आपु न जब लगि करिहहु धारन ❀ तबलगि पैहहु प्रभु सुखसार न ॥
पढ़हु पढ़ावहु यक २ अङ्का ❀ होत न बोध उराय न सङ्का ॥

समुझौ तौ यक यक चौपाई ❀ रामायन की गति प्रद भाई ॥
यक यक अक्षर मानस केरे ❀ नासक पाप प्रपंच घनेरे ॥
तुम तिन्हिकेर न महिमा जानी ❀ राम चरित पढ़ि मति बौरानी ॥
पोथी बाँधि पीठि पर डोलत ❀ कपट गाँठि उरकी नहिं खोलत ॥
जिमि अबोध चिंतामनि पाई ❀ जाने बिनु न दरिद्र नसाई ॥
दोहा—चहुँफल के दातार जो, राम चरित सुख धाम ।
लोभ विवस तिन्हि जहँतहाँ, बाँचि बटोरत दाम ॥१०॥
महिमा राम कथा की भारी ❀ जानहिं किमि विषयी नर नारी ॥
जौन कथा सिव सतिहि न भाखी ❀ सरवसु जानि गुप्त करि राखी ॥
गरुड़ भुसुंडी की करि सेवा ❀ पायेउ राम चरित सुखदेवा ॥
भरद्वाज तन मन मुनि हाथा ❀ अरपेउ तव पाई यह गाथा ॥
गोस्वामी श्री तुलसीदासा ❀ पायेउ गुरु सन करि जिज्ञासा ॥
सोइ चरित्र अब घर २ भाई ❀ लिये फिरत पंडित समुदाई ॥
बरिआँई लोगनि कहँ घेरी ❀ कहहिं सुनहु रामायन मेरी ॥
जो चरित्र अधिकारिनि हीना ❀ कहत न रहे मुनीस प्रवीना ॥
अन अधिकारिनि जो यह गाथा ❀ कहत चढ़त पातक तेहि माथा ॥
दोहा—राम चरित ते जीविका, जो कोउ करिकें खाँयँ ।
❀पसु घातक कर पाप तिन्हि, लगै नर्क महँ जाँयँ ॥११॥
जेहि लीला लगि तरसत देवा ❀ चाहहिं लखन सरूपनि सेवा ॥
नारदादिमुनि विधि हरिहर चित ❀ जेहि लीला कर ध्यानधरत नित ॥
सोइ लीला अब लीला धारी ❀ घर २ करत फिरत अविचारी ॥
दुइ २ सेर अन्न हित लागी ❀ लीला करत लोभ मति पागी ॥
रिझवहिं लोगनि तजि मरियादा ❀ ग्यानिन उर लखि होत विखादा ॥
भाव भगति गत रत मद माया ❀ विमल बिचार विवेक न दाया ॥

❀ वृहद विष्णु पुराणे, लीलोपजीवी पशू हाश्च द्विमेकं नरकं व्रजेत् ।

व्यास बने उर धन की आसा ❀ करत कहाँयँ सुसिय बर दासा ॥
भरहिं पेट जिन्हि कर लय नामा ❀ करि नर नाट्य वटोरहिं दामा ॥
साजि सिंहासन करिशृंगारा ❀ वैठारहिं जिन्हि सहित बिचारा ॥
श्री सिय राम भरत लखनादी ❀ ध्यावहिं जिन्हि नित आतम वादी ॥

दोहा–तिन्हि ते पाँव दबावहीं, मारि करावहिं काम।
नाना रूप वनाय निज, कारज साधहिं वाम ॥१२॥

कहहु कवन सुख प्रभु कहँ दयेऊ ❀ लीला करि सिर अपयश लयेऊ॥
जानेउ नहिं लीला कर भावा ❀ उर अति लोभ अँधेरा छावा ॥
लालच लोभ सहित भय जोई ❀ लीला करत परत भव सोई ॥
सनकादिक नारद मुनि ग्यानी ❀ देखन राम चरितं सुखदानी ॥
ब्रह्मलोक ते अवधहिं आई ❀ देखत सदा विरति बिसराई ॥
सोइ स्वरूप सोइ चरित रामकर ❀ धनहित लोभी बेचत घर घर ॥
कहत करहिं जीवनि भव पारा ❀ येहि विधि करि लीला विस्तारा ॥
आपन दाम काम के चेरे ❀ फिरत सदा माया मद घेरे ॥
मोह नदी विच गोता खावत ❀ वातनि ते भवसिंधु थहावत ॥

दोहा–जिमि कोउ गाँठि सुवाँधि मनि, माँगत भीख रिरात।
मनि प्रभाव जानें विना, कहहु दरिद्र कि जात ॥१३॥

तिमि जाने बिनु चरित प्रभाऊ ❀ मिलत न सुखसिंधि सुभ गति काऊ॥
जो चरित्र भव भय भ्रम मोचन ❀ पढ़त सुनत सोइ नासत सोचन ॥
जो लीला लखि आतम ग्याना ❀ होत नसाँहिं मोह मद माना ॥
उदर भरन हित लीला सोई ❀ करत विपुल उर बोध नं होई ॥
जेहिविधि रीझहिं जग नर नारी ❀ तेहि विधि करहिं 'सुलीलाधारी ॥
रूप कुरूप न जाति विचारहिं ❀ क्रीट चंद्रिका सजि सिर धारहिं ॥
धन हित लै लरिकनि ते कामा ❀ बहुरि कहाँ सिय लछिमन रामा ॥
प्रभु जानत सब अन्तर जामी ❀ छलन चहहिं तिन्हि बंचक वामी ॥

होइहहिंकहहुकवनगतितिन्हिकी ❀ अस कुचालिमतिकरनीजिन्हि की ॥

दोहा–लोभ लागि लीला करत, बाँचत चरित अनूप ।
तेहि लगि सुगति न पावहीं, उलटि परैं भव कूप ॥१४॥

जानहु तुम्ह जो पोथिनि माँहीं ❀ लिखेउ करहुसोइतजिछलछाँहीं ॥
तब पैहहु प्रभु चरितनि स्वादा ❀ नित नवउर बढ़िहहि अहलादा ॥
प्रभु अनुकूल भये विनु भाई ❀ कहहु लही को गति सुखदाई ॥
लोकहु महँ यह विदित सुवाता ❀ प्रभु प्रतिकूल न लह कुसिलाता ॥
जिमिकोउ नृप करसुहृद प्रधाना ❀ जाय विदेश खरीदन याना ॥
लिखि भेजेउ उपदेस बहोरी ❀ द्रव्य सहित नृप दया न थोरी ॥
पाय सु धन वह पत्र प्रधाना ❀ लगेउ करन कारज मन माना ॥
प्रान समान पत्र की सेवा ❀ करै मूँढ़ नहिं जानत भेवा ॥
पढ़ै गुनें हिय नयन लगाई ❀ पूजै नित आसन पधराई ॥
करै प्रनाम माथ महि लाई ❀ परिकर्मा अस्तुति बहुताई ॥

दोहा–बाँचि सुनावत सबहिं पुनि, करि करि अर्थ अनूप ।
करत न कारज आपु वह, जो लिखि भेजेउ भूप ॥१५॥

खायेउ धन सब समय वितायेउ ❀ गयेउ खरीदन सो विसरायेउ ॥
पुनि पुनि नृप बहु पत्र पठावत ❀ पढ़ि सप्रेम यह सबहिं सुनावत ॥
पठवत नहिं जो मागत राजा ❀ पत्र पढ़े का सरिहहिं काजा ॥
तब नृप पठयेउ दूत प्रचण्डा ❀ लै गये पकरि बजावत दण्डा ॥
काराग्रह पुनि बन्द करायेउ ❀ कहहु पत्र पढ़ि का सुख पायेउ ॥
राज अवज्ञा कर फल दीन्हा ❀ भोगत भयेउ कर्म जो कीन्हा ॥
जगत हाट तिमि जीव सुजाना ❀ करि करार पठयेउ भगवाना ॥
समय,आयु,धन, यह नर काया ❀ इन्द्री गुण गण दीन्ह सहाया ॥
सौदा भजन सु ताहि भुलावत ❀ तब प्रभु तेहि हित पत्र पठावत ॥

अर्थ बाद बहु ते नहिं करहीं ❀ सार वचनगहि उर दृढ़ धरहीं ॥
पढ़िपढ़ि बहुत न जन्म नशावहिं ❀ रटि सियराम नाम प्रभु पावहिं ॥
सब पोथिनि कर यह उपदेशा ❀ भजहु सर्व तजि सिय अवधेशा ॥
भजन बिना बहु पोथीं पाना ❀ पढ़ि २ मरिय न उपजहिं ग्याना ॥
भजन करत पोथिनि के भेदा ❀ जानहिं बिनु श्रम जन हर खेदा ॥

दोहा—भजन विपुल पर भजन यह, रटन नाम सियराम ।
यहि सम भजन न भक्ति बर, सरल सुलभ सुखधाम ॥१८॥

अपर भजन साधन कलि माँहीं ❀ करहिं निरूपन ते बुध नाँहीं ॥
नाम रटत साधन समुदाई ❀ सिद्धि होत सब श्रम बिनुआई ॥
कर्म ग्यान योगादिक गाथा ❀ श्रमदायक कछु लगहिं न हाथा ॥
पढ़ि पढ़ि पण्डित बाद बढ़ावहिं ❀ भजन हींन प्रभु पद नहिं पावहिं ॥
लालच लोभ सहित सद ग्रन्था ❀ पढ़त चढ़त नहिं प्रभु प्रिय पन्था ॥
चलनी मति उर अति दुखदाई ❀ सूप ज्ञान गत मद अधिकाई ॥
पोथिनि के झूठे सब भंटा ❀ पण्डित कहहिं परेउ उर अंटा ॥
यहिविधिसिधि नहिंपावहिं प्रानी ❀ पढ़ि २ ग्रन्थ सु बयस सिरानी ॥
पढ़ब सुनब सब बिनु बिश्वासा ❀ व्यर्थ भयेउ ध्रु व श्रम न बिनाशा ॥
पढ़ि सुनि तरेउ बिपुल बड़ पापी ❀ जिन्हि पोथिनिमहिंमाजगव्यापी ॥

दोहा—अमर भयेउ शङ्कर सिवा, गुरुड़ भुशुण्डी आदि ।
जो पोथी पढ़ि सुनि लखहु, तुम्ह समुझहु तिन्हि बादि ॥१९॥

बालमीकि सनकादिक योगी ❀ पढ़ि सुनि भयेउ ब्रह्म सुख भोगी ॥
कुम्भजादि मुनि भारद्वाजा ❀ पढ़ि सुनि सोइ पायेउ रघुराजा ॥
काग भुसुन्डि गरुड़ गुन रासी ❀भयेउ वाँ चि सुनि चरित सुपासी ॥
सूत सौनकादिक ऋषि भारी ❀ भयेउ सिद्ध प्रभु चरित बिचारी ॥
तुलसिदास पढ़ि मृतक जिवायो ❀ कियेउ नारि ते पुरुष सुहायो ॥
रामप्रशादादिक सुख लूटे ❀ राम चरित पढ़ि जग ते छूटे ॥

निज गुरु की किमि करौं बड़ाई ❀ राम चरित के रूप सदाई ॥
राम चरित के भेदी जे जन ❀ बन्दौं तिन्हि पद बचन कर्म मन ॥
राम चरित लखिबे कहँ लोचन ❀ जय सिय राम नाम भ्रम मोचन ॥
श्री सिय राम नाम आचारज ❀ करत विमल उर नासि कपट कज ॥

दोहा—सवालाख सियराम नित, रटन करै जो कोय ।
राम चरित कर मर्म तब, पावै सब बिधि सोय ॥२०॥

राम अयन कर भेद गूढ़ तर ❀ बरनहिंअगम वेद विधि हरि हर॥
नाम रटे बिनु जानि न जाई ❀ रामचरित गति अति सुखदाई ॥
नाम रटत उघरहिं हिय नयना ❀ सूझहिं तब प्रभु चरित सुखैना ॥
चर्म नयन सन सूझत नाँहीं ❀ बरणन जो रामायण माँहीं ॥
राम चरित के जे जन ज्ञाता ❀ भयेउ नाम रटि जग विख्याता॥
रामायण मंत्रन की खानी ❀ लखत न नाम रटे बिनु प्रानी ॥
नाम रूप धामक प्रभुताई ❀ रामायन सब देत लखाई ॥
आतम रूप सु अनुभव जागै ❀ रामायन पढ़ि भव भ्रमभागै ॥
रामायण उपदेश निधाना ❀ समुझै तब उर उपजै ग्याना ॥
राम चरित की महिमा भारी ❀ समुझे बिनु दुखिया नर नारी ॥
राम चरित साँचे गति दाई ❀ नाम रटौ तब बूझौ भाई ॥

पद—

जय जय सिय राम चरित पाप ताप हारी ॥

यक यक अक्षर उदार, हरत घोर कुअघभार, करत जगत सिंधु पार, बदत वेद चारी ॥ १ ॥ मन सुलाय त्यागि काम, पढ़त चढ़त जन सुधाम, पावत प्रभु सीय राम, होत अति सुखारी ॥ २ ॥ नाम रूप धाम ग्यान, लहत तुम्हैं पढ़ि सुजान, नासत छल कपट मान, लोभ मोह धारी ॥ ३ ॥ भक्तनि हित कल्प वृन्द, रिद्धि सिद्धि

देत स्वच्छ, गुनत खुलत हीय अच्छ, विमल मोद कारी ॥ ४ ॥ लौकिक परलोक नीति, हानि लाभ हारि जीति, सूझि परत प्रीति रीति, सुनत बात सारी ॥ ५ ॥ राम चरित सम न आन, सुखद जननि ग्यान ध्यान, गावत महिमा महान, साधु संत भारी ॥ ७ ॥ खट प्रयोग अनुष्ठान- सिद्धि होत करत गान, राम अयन गुन निधान, लखहु नर सु नारी ॥ ७ ॥ सत गुरु सन मर्म पाय, प्रेमलता नाम गाय, सेउ राम चरित भाय, भर्म कर्म टारी ॥ ८ ॥

दो०-भव बंधन ते छूटहीं, सब विधि अछत शरीर ।
मानस के उपदेस जो, उर धारहिं मति धीर ॥२१॥

मानस के उपदेश सब, खोजि बिचारै खूब ।
रटै नाम लय लाय तेहि, मिलैं राम महबूब ॥२२॥

कथनी में अरुझै नहीं, कहनि रहनि उर धारि ।
प्रभु भक्तनि की तरहिभव, मुख सियराम उचारि ॥२३॥

प्रगटावन निज चतुरता, अंकनि में नव अर्थ ।
टोवत रहत प्रवोधहित, उर धरि लालच व्यर्थ ॥२४॥

निज उर जो धारण किये, मानस के उपदेश ।
तिन्हिकी वानी सुनत ही, नाशें सकल कलेस ॥२५॥

लोभी वक्ता वकत बहु, करि करि अर्थ अनूप ।
सुनत बिपुल छूटत नहीं, मोह पास दुख रूप ॥२६॥

अस बिचारि तजि लोभ भ्रम, रटि सियराम सुनाम ।
राम चरित उपदेश निधि, मनन करिय बशुयाम॥२७॥

❀ अथ ❀

श्रीधाम प्रसंग प्रारम्भः ॥५॥

धाम प्रसंग अनूप अति, मम मति अति अज्ञान ।
तेहि अनुसार सु कहहुँ कछु, छमिहहिं चूक सुजान ॥१॥

नामरूप प्रभु चरित जस, तस अनुपम तिहुँ धाम ।
चित्रकूट मिथिला अवध, जन मन पूरण काम ॥२॥

यद्यपि धाम विपुल जग अहहीं ❀ महिमा श्रुति पुराण मुनिकहहीं ॥
पूजनीयँ सब दरशन योगू ❀ सेवत देत सुकृत सुख भोगू ॥
निज निज इष्टनि कर जो धामा ❀ तिन्हिकहँ सोइसबभाँति ललामा॥
तदपि कहहिं श्रुति सन्त पुराना ❀ सबके इष्ट राम भगवाना ॥
राम अंग अगणित जगदीशा ❀ उपजहिं पुजहिं कहावहिं ईशा ॥
राम ईश ईशनि के कारन ❀ जानहिं बुध श्रुति सन्त गमारन ॥
सब ईश्वर सियरामहिं मानत ❀ बिनु समुझे जन झगरा ठानत ॥
चक्रवर्ति जिमि एक भुआला ❀ लघु लघु होत विपुल महिपाला ॥

दोहा-निज निज भूपनि प्रजागण, मानहिं यद्यपि ईश ।
चक्रवर्ति कर हुकुम पै, राजत सबके शीश ॥ ३ ॥

सब नृप डरत तासु डर भाई ❀ अपर प्रजन की कहा चलाई ॥
सेवत सब नृप सडर सनेहा ❀ लै लै भेट जात तेहि गेहा ॥
तेहि रुचि राखि करहिं सब राजा ❀ निज निज राज छोट बड़ काजा॥
तिमि सब ईश राम पुर जाई ❀ सेवहिं चरण सदा सुखदाई ॥
प्रभुरुचि पालिकरहिं जग कामनि ❀ निवसहिंसुखसबनिजरधामनि ॥
ते सब ईशनि धाम कहाहीं ❀ तिन्हिके भगत तहाँ तहँ जाहीं ॥

परमधाम जहँ राम बिराजैं ❀ घर घर आनँद नौवत बाजैं ॥
विष्णु विराट आदि ×अवतारी ❀ करहिं सु तेहि पर चौकी दारी ॥
राम ईस सब ईसनि केरे ❀ प्रगटहिं तिन्हि ते ब्रह्म घनेरे ॥
तिन्हिकर तिमि श्रीधाम अनूपा ❀ सेवहिं जेहि ईश्वर सुर भूपा ॥
श्री साकेत नाम तेहि केरा ❀ गावहिं श्रुति जेहि सुयश घनेरा ॥
खासे राम उपासक कोई ❀ जात तहाँ फिरि जन्म न होई ॥

दोहा—गऊलोक के मध्य सो, अति विस्तरित ललाम ।
निवसि जहाँ बिहरत सदा, अलिनि सहित सियराम ॥४॥

नहिं तहँ कर्म धर्म दम ध्याना ❀ जोग जग्य नहिं जप तप ग्याना ॥
पूजा पाठ न जादू टोना ❀ तीरथ वर्त न साधन मोना ॥
जनम मरन नहिं रोग वियोगा ❀ नहिं तहँ पाप पुण्य कर भोगा ॥
अहंकार कामादि विकारा ❀ नहिं तहँ प्राकृत विषय विहारा ॥
हठ सठता अविचार न रोषू ❀ कपट दंभ पाखंड न दोषू ॥
नाना मत न संप्रदा वेषू ❀ राग विराग न ईर्षा द्वेषू ॥
जाति वर्न नहिं आश्रम चारी ❀ वेद पुरान न इंदु तमारी ॥
पंच तत्व उरमिनि खटमंदा ❀ अष्ट प्रकृति नहिं कोउ दुखद्वन्दा ॥
सकल विकार रहित सो धामू ❀ सब लोकनि ते पार ललामू ॥
तेहि महँ केवलि केलि प्रधाना ❀ सियसियवरकरकहहिंसुजाना ॥

दोहा—अवलोकहिं बड़ भागिनी, ललना गन समुदाय ।
निवसि संग वसु जाम सुख, तिन्हिकर बरनि न जाय ॥५॥

आँनँद अकथ अनूप निकाई ❀ धाम प्रभाव बरनि नहिं जाई ॥
कोटिनि भवन विसाल सुहाये ❀ जगमगात नहिं जात सुगाये ॥
राजहिं ललना गन तिन्हि माँही ❀ बृन्दबृन्द सियकी भुज छाँहीं ॥

×अवतारियों में श्रीरामजी महाराज को न समुझें ये अवतारियों के कारन हैं ।

जब जब करत चरित प्रभु नाना ❀ भक्तनि हित सियराम सुजाना ॥
तब तब ते धरि रूप अनूपा ❀ प्रगटहिं संग सुरुचि अनुरूपा ॥
गुरु पितु मातु बन्धु परिवारा ❀ बनहिं सखा दासादि अपारा ॥
लीला करहिं अमित तन धारी ❀ ललनासियपियसुरुचिनिहारी ॥
खग मृग भूषन बसन सुवासन ❀ हय गज धेनु रथादि सुखासन॥
भवन भँडार सुपलँग-बिछौना ❀ चमर छत्र मनि मानिक सौंना ॥
अमित रूप धरि अलि सियपियकी❀जुगवतिरहहिं सदारुचि जियकी॥

दोहा—लीला केरि विभूति जो, सब सिय परिकर रूप ।
सत चेतन आँनन्द मय, त्रिगुनातीत अनूप ॥ ६ ॥

आवत जात संग प्रभु केरे ❀ रहहिं जगत थिर लीला खेरे ॥
जहँ जहँ करहिं चरित सिय रामा ❀ बनें रहत जग तहँ तहँ ठामा ॥
प्रभु के धाम कहावत सोई ❀ जग महँ प्रगट जान सब कोई ॥
भक्त निवसि तहँ भजि सियरामहिं ❀ पावहिं अन्त प्रभुहिं परधामहिं ॥
नाम[१] रूप[२] लीला[३] प्रभु धामहिं[४] ❀ सेइ भक्त पावत सिय रामहिं ॥
मृत्यु लोक महँ चारि निसानी ❀ छोड़ि जात प्रभुजन सुखदानी ॥
बोहित ये चहुँ भव निधि केरे ❀ बैठि जाउ जन प्रभु के नेरे ॥
अपर विभूति संग जो आवै ❀ सो सब प्रभुके साथ सिधावै ॥
लीला भरि बहुरूप बनाई ❀ ललना सेवहिं सिय रघुराई ॥
अन्त जाँयँ जब प्रभु परधामा ❀ नाना रूप तजें तब वामा ॥

दोहा—निज निज रूप सुधारि सब, दंपति चरन सचेत ।
सेवहिं मन वच कर्मअलि, निवसहिं सुख साकेत ॥७॥

परम चतुर सब सब गुन खानी ❀ सब सिय सिय वर रूप सयानी ॥
जेहिविधि रहहिं मुदित सियरामा ❀ सोइसबअलिगनकरहिंसुकामा ॥
सियपिय कृपा अलिनिके वीचा ❀ सकल समर्थ न जानहिं नीचा ॥
जहँ जस योग तहाँ तस रूपा ❀ धरि साधहिं प्रभु काज अनूपा ॥

करि कारज पुनि आलिनि अङ्गा ❀ धरि विहरहिं सुख दम्पतिसंगा ॥
पुरुष एक जहँ केवल रामू ❀ अपर सकल तिय गनगुनधामू ॥
नित्य बिभूति धाम साकेता ❀ नित्य विहार न लखहिं अचेता ॥
विहरहिं जहाँ संग सिय रामा ❀ तहँ नहिं अपर पुरुष करकामा ॥
भूषन बसन सेज सुख सामा ❀ सब चेतन अलि रूप ललामा ॥
विविध रूपधरि श्रीसिय आलीं ❀ सेवहिं प्रभुहिं प्रेम प्रतिपालीं ॥

दोहा—यह सिद्धान्त न लखहिं सब, मन गुन बानी पार ।
जानहिं कोउ कोउ विमल मति, कृपापात्र सविचार ॥८॥

नित्य धाम साकेत बखाना ❀ विरिजा पार न तेहि सम आना ॥
जन हित धरि बहु तन भगवाना ❀ करहिं जदपि लीला जग जाना ॥
तदपि न श्री साकेत विहारा ❀ तजत कबहुँ सियराम उदारा ॥
वेद पुरान न जहँ कर मर्मा ❀ जानहिं पंडित भूलेउ भर्मा ॥
चन्द्र सूर्य की गति जहँ नाँहीं ❀ विहरहिं सियपियजेहि पुरमाँही ॥
जानहिं संत उपासक भेदा ❀ झगरहिं अपर अज्ञ प्रदखेदा ॥
प्राकृत घर की बात न जानत ❀ परम धाम की कथा बखानत ॥
कर्म ग्यान जोगादिक धर्मा ❀ रते लखहिं ते किमि प्रभु मर्मा ॥
जहँ न जाँयँ मन मुनि जन केरे ❀ तेहि किमि लखैं विषय के चेरे ॥
सिय सियवर ग्रह केर सुभेदा ❀ अतिसय अगम बखानहिं वेदा ॥

दोहा—भू-भुव-स्व-मह-जन सु पत, सत्यादिक जो लोक ।
सबते पर गोलोक तहँ, श्रीसाकेत असोक ॥ ९ ॥

परम प्रकास रूप बसु जामा ❀ श्री साकेत सुधाम ललामा ॥
गऊ लोक के सिरो भाग पर ❀ राजत तेहि साकेत नाम बर ॥
सब पर राजत केतु समाना ❀ तेहि लगि श्रुति साकेत बखाना ॥
कोटिन ध्वजा पताक उताना ❀ फहरहिं गरुड़ उड़हिं जनुनाना ॥
कलस कँगूरा जनु ससि भाना ❀ करहिं प्रकास सु तनें विताना ॥

घुरहिं निसान बाजने बाजहिं ❀ सुभगगोपुरनि सुनिघनलाजहिं ॥
गावहिं ललना यूथ बनाई ❀ सियपिय कीरति नवल सुहाई ॥
झुंड २ मिलि कौतुक केलीं ❀ करहिंविविधविधिनारिनवेलीं ॥
रधिसिधि निधिलखि तिनके रागा ❀ सकुचहिंजानिछोट निजभागा ॥
आलिनिकर आनंद अपारनि ❀ कहि न सकहिंश्रुतिसेसहजारनि॥

दोहा–कामधेनु चिंतामनी, घर घर सुरतरु राज ।
सुर दुर्लभ सुख करहिं अलि, पुरहिं सकल मन काज॥१०॥

रहित विकार विरुज सबके मन ❀दम्पति पद अरपेउ जिनि तन धन॥
विहरहिं वीथिनि सुभग बजारनि ❀ प्रमुदित ललना यूथ हजारनि ॥
ठाम ठाम जल जंत्र फुहारा ❀ चलत समय अनुकूल अपारा ॥
मारग विमल सुगंध सिचाये ❀ दोउ दिसि वेलें बिटप सुहाये ॥
कंचन भवन जटित मनि सोहत ❀ चित्रामनिलखिमुनिमन मोहत ॥
द्वार द्वार प्रति ललित किवारा ❀ वंदनवार बँधे प्रतिद्वारा ॥
मनिमय जाल झरोखनि भ्राजहिं ❀ रचना देखि सु रतिपति लाजहिं ॥
नगर मध्य मनि जटित सुहावा ❀ दम्पति महल जाय नहिं गावा ॥
अति विसाल किमि कहौं उँचाई ❀ अद्भुत रचना वरनि न जाई ॥
ब्रह्मरूप सो चेतन चारू ❀ लाजहिं लखि तेहि बहु रतिमारू॥

दोहा–कनक भवन विख्यात जग, राजहिं जहँ सियराम ।
तेहि की उपमा योग नहिं, अखिल लोक सुरधाम॥११॥

दम्पति प्रेम पवित्र विहारा ❀ होत न तहँ दूसर व्योपारा ॥
अलिनि सहित सियराम कृपाला ❀ करत चरित तेहि माँहिं रसाला॥
महल मध्य सुंदर सर सोहत ❀ निर्मल नीर घाट मन मोहत ॥
सावकास चहुँदिसि फुलवारी ❀ लगी ललित बहु भांति सम्हारी ॥
विपुल कुञ्ज सुख पुञ्जनि पूरे ❀ मनि दीपक बहु राजत रूरे ॥

बिछे पलँग बहु घले हिंडोरे ❀ कुञ्ज २ प्रति मोद न थोरे ॥
मनि मय चित्र विचित्र अपारा ❀शोभित भाँतिनि बिविधिप्रकारा॥
जेहि महलनि सियराम निवासा ❀ अकथ तहाँ कर भोग विलासा ॥
सेवहिं चरन अमित वर वामा ❀ कहौं प्रधाननि केर सु नामा ॥
श्रुति कीरति मांडवि उरमीला ❀ कौसिकि-कमलाविमलासीला ॥

दोहा—चंद्रकला-श्री लछिमना, चारुसिला—ससिभाल ।
हेमा-छेमा–जाम्रुनी, मदनकला–रस माल ॥ १२ ॥

प्रीतिलता श्रीयुगलविहारिनि ❀ दुग्धवती-सुभगा-सुखकारिनि ॥
ग्यानकला–कोबिदा—कृपानी ❀ सगुना–सरस्वती–मुददानी ॥
विस्वमोहिनी – मथुरा मीरा ❀ प्रेमप्रभा सु द्वारिका—धीरा ॥
पद्मादिक गुन रूप निधाना ❀ सिय स्वामिनिकीअलीं सुजाना॥
ये सब जूथेस्वरीं सयानी ❀ सेवहिं दम्पति पद प्रन ठानी ॥
कनक भवन के चहुँदिसि घेरे ❀ इन्ह के सदन सुशोभित नेरे ॥
सबके भवननि सुख अनुकूले ❀ भरेउ बिपुल प्रद मोद अतूले ॥
कुञ्ज कुञ्ज प्रति अलीं अपारनि ❀ जूथेस्वरीं सु जूथ हजारनि ॥
राजहिं गाजहिं पुर चहुँ फेरे ❀ कञ्चन भवन बने सब केरे ॥
सन्तानिक आदिक बन नाना ❀ सोहत सुभग न जात बखाना ॥
फूले फरे हरे लहराहीं ❀ विहरहिंललनागनतिन्हिमांहीं ॥

दोहा—अष्टादश साकेत के, चहुँदिशि राजहिं कोट ।
अति उतंग पटु तेज मय, सब विधि अमल अखोट ॥१३॥

कोट कँगूरादिक सब साजा ❀ सत चित आँनँद रूप समाजा ॥
सावकास सब बिधि चहुँ ओरी ❀ सुभग द्वार तहँ राजहिं गोरी ॥
प्रथम कोट कर तेज निहारी ❀ लखि भूले बहु ब्रह्म बिचारी ॥
सन्यासी जोगी मुनि ग्यानी ❀ सबकी मति ते हिम अरुझानी ॥

कोट प्रकासहि ब्रह्म बखानत ❀ निराकार❀ निरगुन करिमानत ॥
सो वह धोखा ब्रह्म सरूपा ❀ परकोटनि कर तेज अनूपा ॥
तेहि तुम्ह समुझेउ ब्रह्म सुपूरा ❀ तजेउ राम सरगुन सुख मूरा ॥
श्री सियराम ब्रह्म साकारा ❀ राजहिं पुर साकेत मझारा ॥
तिन्हहीं कर अति परम प्रकासा ❀ व्यापेउ अखिल लोकचहुँपासा ॥
निराकार सोइ ब्रह्म अनूपा ❀ श्री सियवर कर तेज सरूपा ॥
जिमि रवि रवि की प्रभा प्रचंडा ❀ तिमि प्रभुतेज सु ब्रह्म अखंडा ॥

दोहा—तेजहि मानि सु ब्रह्म वर, अटकि रहे तेहि मांहिं ।
सगुन मूर्ति सियराम की, जन सो पावत नांहिं ॥१४॥

नारायण भौमा भगवाना ❀ वासुदेव वैराट सुजाना ॥
महा विष्णु आदिक प्रभु रूपा ❀ जग कारन ये ब्रह्म अनूपा ॥
इन्हते होंइँ अमित अवतारा ❀ विरचहिं ते ब्रह्मांड अपारा ॥
तेउ न जानहिं श्री सियवर के ❀ चरित अपार जाँयँ नहि तरके ॥
निज निज वैकुन्ठनि सुख वासा ❀ सक्तिनिसहितकरहिंसबखासा ॥
सब के कारन श्री सियरामा ❀ राजहिं निज साकेत सुधामा ॥
जो साकेत अयोध्या सोई ❀ नाम भेद नहिं कारन कोई ॥
भोगस्थल साकेत ललामा ❀ लीला थल श्री अवध सुधामा ॥
उभय धाम प्रिय श्रीसियरामहिं ❀ विहरहिं दोउन विच वसुयामहिं॥
अवध धाम तनु तजि नर वामा ❀ पावहिं पर साकेत सु धामा ॥

दोहा—नाम रूप लीला ललित, धाम परात्पर चारि ।
सियवर के श्रुति संत बद, शेषादिक त्रिपुरारि॥१५॥

अवतारी अवतार अपारा ❀ सियवर सबके प्रान अधारा ॥

❀ यहाँ प्रभु श्री सीताराम और इन्ह के रूप तथा धाम तेजादि गुन छाया में अभेदता समुझना चाहिए । इसीसे कहीं उन्हके तेज, कहीं छाया को कहीं धाम के कोट के प्रकास को निराकार ब्रह्म का स्वरूप कहा ।

सब सियबर की सेवा करहीं ❀ मन वच क्रम आयसु अनुसरहीं ॥
तेहि सियवर कर रूप अनूपा ❀ लखहिं न जीव परे भ्रम कूपा ॥
निराकार जो प्रभुहिं बखानहिं ❀ सगुन रूप सो केहि विधि जानहिं॥
जिन्हिकर ब्रह्म सु कोट प्रकासा ❀ तिन्हैं कहाँ दरसन की आसा ॥
लखहिं न ते रूपहिं प्रभु धामहिं ❀ जानहिंकिमि सबभांतिललामहिं ॥
अहं भाव नासे बिनु भाई ❀ परत न प्रभु पर धाम लखाई ॥
ग्यान कर्म कथनी के जारा ❀ अरुझि तजे सिय राम उदारा ॥
सगुन ब्रह्म की बिनु उपासना ❀ करहु जीव परधाम आस ना ॥
सकल काम प्रद प्रभु परधामा ❀ गुनाऽतीत साकेत सुनामा ॥

दोहा—शेष महेश न सकहिं कहि, महिमा प्रभु पुर केरि ।
बरणो किमि मैं मलिन मन, बुद्धि विषय की चेरि ॥१६॥

कही कछुक मैं पुर रचनाई ❀ वाहिर चहुँदिशि अति छविछाई॥
वन उपवन सर सरित सुहावन ❀ अमल अनूप सोह बहु पावन ॥
अमित बिहार सुथल प्रभु केरे ❀ परि पूरित ऐश्वर्य घनेरे ॥
समयसमयके विलगविलगथल ❀ बनेउअनूपम पुरचहुँदिशि भल ॥
सबके मध्य सहर साकेता ❀ राजहिं जहँ सियराम समेता ॥
बरनि न जाय नगर विस्तारा ❀ रचना अनुपम विविध प्रकारा ॥
सरयू आदि सरित शुचि बहहीं ❀ जासु दरस पातक सब दहहीं ॥
परम सुकृति जनकरहिंनिवासा ❀ सेवहिं सिय पद तजिसब आशा ॥
सख्य दास रस रसिक सुजाना ❀ मंगल मोद सत्य विग्याना ॥
धैर्य सील संतोष विवेका ❀ ग्यान विराग विचार अनेका ॥

दोहा—सुभ गुन सब नर देह धरि, निवसहिं पुर चहुँओर ।
परम प्रतापी वीर वर, सेवहिं युगल किशोर ॥१७॥

विमल पारषद देव समाना ❀ राजहिं पुर दरवाजिन नाना ॥
प्रभु प्रसन्नता जुगवत रहहीं ❀ दरस परस जिन्हिके अघदहहीं ॥

जब प्रभु खेलन खेल सुनाना ❀ निकसहिं महलनि ते मयदाना ॥
तब सब सखा पारषद दासा ❀ विहरहिं प्रभुसँग सहित हुलासा ॥
राम रूप सब धाम निवासी ❀ सखा पारषद दास सुदासी ॥
सेवहिं प्रभु इच्छा अनुसारा ❀ जेहिकरजहँलगिजस अधिकारा ॥
जोगी जपी तपी सन्यासी ❀ ग्यानी ध्यानी कर्म उपासी ॥
तीरथ ब्रत आचार अनेका ❀ करहिं दान धर्मादि सटेका ॥
मतवादी बहु झगरनि हारे ❀ जाँहिंन तेहि पुर विमुख विचारे ॥
निरगुन निराकर जो ध्यावहिं ❀ सपनेउँ ते प्रभु धाम न पावहिं ॥

दोहा--तन मन धन सरवस्व जो, अरपि सु प्रभुकर देत ।
ते सज्जन सिय राम सँग, बिहरत सुख साकेत॥१८॥

श्री सियराम सुरूप उपासी ❀ रसिक अनन्य भाव दृढ़ दासी ॥
सब मत तजि सियराम सुनामा ❀ रटत लहहिं ते जन परधामा ॥
जिन्हि कहँ वैश्नवधर्म सुप्यारा ❀ जाँहिं सु ते तेहि लोकमझारा॥
वैश्नव धर्म नाम सिय रामा ❀ जिन्हैं न प्रिय ते लहहिं न धामा ॥
रसिक संत गुरु मिलैं सचेता ❀ जो सिय रामहिं भजैं सहेता ॥
भाविक भक्त अनन्य सबोधा ❀ विश्वासी दृढ़ मति अविरोधा ॥
तिन्हिके सरण होइ सियरामा ❀ रटै छाँड़ि छल बल मद कामा ॥
खुलें हिये के जब दोउ लोचन ❀ लखैधाम तब भव दुख मोचन ॥
जेहिकर रचना वचनअगोचर ❀ वरनौं किमि मैं मंद मंद तर ॥
वेद पुरान सास्त्र मुनि संता ❀ गावहिं धाम महत्व अनंता ॥

दोहा--सहर पना ते दूर कछु, पश्चिम दिशि रमनीय ।
राजत वृन्दावन सुभग, अनुपम अति कमनीय ॥१९॥

प्रभुलीला थल महल सुहाये ❀ कुञ्ज निकुञ्ज विपुल मन भाये ॥
विपुल जलाशय उपवन वागा ❀ गुपुत प्रगट कहुँ विमल विभागा ॥
भरे सकल सुख भोगनि धामा ❀ सुर दुर्लभ वर विभव ललामा ॥

विलग २ कदमादि विटप वट ❀ शोभित विपुल सुसर सरितनि तट॥
हरित भूमि सम अति चकलाई ❀ कोटिनि चरहिं जथारुचि गाई ॥
सकल कामदा गऊ अपारा ❀ बसहिं सुखेन सहित परिवारा ॥
इंद्रीगन सब धेनु सरूपा ❀ विहरहिंतिन्हिसँगप्रभुसुर भूपा ॥
तेहि कारन गो लोक सु नामा ❀ परेउ करैं गो गन विश्रामा ॥
बर्नी विशाल विपुल गोशाला ❀ विहरहिं जहँतहँललित मराला ॥
फूले कमल सु भ्रमर गुँजारहिं ❀ अगनित खग मृदु शब्द उचारहिं॥

दोहा–लीला देवी राधिका, अगनित अलिनि समेत ।
निवसि तहाँ श्रीकृष्ण सँग, विलसहिं सुख सु निकेत ॥२०॥

सियवर अन्स कृष्ण अवतारा ❀ सबकहँ विदित न गुप्त विचारा ॥
त्रेता महँ श्रीराम रूप पर ❀ मोहत जो नव जीव नारि नर ॥
प्रभु दरसन करि नासत पापा ❀ प्रगटत जिन्हि कर पुन्य प्रतापा ॥
आतम ग्यान सुहृदय प्रकासै ❀ देह बुद्धि दुखरूप विनासै ॥
आतम सक्ति सरूप सुखैना ❀ लखहिं खुलैं उर के दोउ नैना ॥
सखीरूप निज लहि ते प्रानी ❀ जानहिं प्रभुहिं स्वपति सुखदानी ॥
ते सब सुकृती जीव अपारा ❀ प्रभु सँग चाहहिं करन विहारा ॥
मुनि गन आदि नारि नर जेते ❀ प्रभु मृदु मूर्ति निहारि सु तेते ॥
बरिआँई घेरत सिय बरहीं ❀ हाव भाव करि प्रभु अँग धरहीं ॥
कहहिं करहु पति हम सँग रासा ❀ जानि सखीं निज पुरवहुआसा ॥
प्रेमविवसतिन्हि लखिकरुनाकर ❀ तोषत विहँसि देत सब कहँ वर ॥

दोहा–एकहि पत्नी वर्त मम, येहि अवतार सु माँहिं ।
द्वापर पूर्न मनोर्थ सब, करिहौं संशय नाँहिं ॥ २१ ॥

तेंहि कारन तिन्हि हित रघुराई ❀ प्रगटहिं द्वापर सिय रुखपाई ॥
सिया अन्श सखि सगुना नामा ❀ जो श्री लीला देवि ललामा ॥
द्वापर होय राधिका सोई ❀ यह प्रसंग जानत कोइ कोई ॥

कृपा खानि सिय जन सुखदाई ❀ तिमि करुनाकर श्री रघुराई ॥
सबहिं देत सुख दोउ कोमल चित ❀ सहिनिजदुखबहुकरतभक्तहित ॥
नाना तन धरि भक्तन हेता ❀ करत चरित दोउ कृपा निकेता ॥
कतहुँ स्वयम् कहुँ अन्स सरूपा ❀ प्रगटहिं प्रभु दोउ रूप अनूपा ॥
स्वयम् अन्स दोउ एकै जानहु ❀ भेद न रंचहु हठ जनि ठानहु ॥
अँग अङ्गीइव सब अवतारा ❀ श्री सिय रामहिं के सु अपारा ॥
समय २ प्रगटहिं जग आई ❀ खल दल दलन जननि सुखदाई ॥

दोहा—जेहि महँ जेहि कर मन रमे, सेवहु तेंहि सविचार ।
जानि सु सम अवतार सब, प्रभुके परम उदार ॥२२॥

आखिरसब मिळिहैंसियरामहिं ❀ जिमिसरिनीर सिंधुसुखधामहिं ॥
कवनिउँ भाव प्रथम उर धारी ❀ सेवै प्रभु पद कपट विसारी ॥
क्रम क्रम आतम बोध सु होई ❀ एका एकी लहत न कोई ॥
आत्म बोध जब उर सु प्रकासै ❀ तब प्रभु पावन लीला भासै ॥
अविरोधी मति होइ सुहाई ❀ पावहिं जन तब सिय रघुराई ॥
सिय द्वारा संबंध राम ते ❀ होत जाँयँ साकेत धाम ते ॥
धारि सखी तन स्वकिया भाऊ ❀ सेवहिं संतत सिय रघुराऊ ॥
अनब्याही जो त्रेता माँहीं ❀ सिय सँग वरीं राम गहि बाँहीं ॥
ते सब शक्ति सुकिया कहावहिं ❀ तत सुख भोगी प्रभु मनभावहिं ॥
ब्याहीं जो प्रभु रूप लुभानी ❀ भाव परकिया निज सुखदानी ॥
सोइ सब भईं गोपिका जाई ❀ द्वापर महँ वरदान सु पाई ॥
द्वापर युग के भाविक जेते ❀ भाव परकिया वारे तेते ॥

दोहा—कृष्ण रूप यक अंस ते, धरि सब तिन्हि के काम ।
पूरहिं प्रभु दोउ लोक महँ, सिय प्रेरित श्रीराम ॥२३॥

भक्त परकिया भाव सु वारे ❀ जो निज प्रभु हित तन मन हारे ॥
तिय तन पाय राधिका संगा ❀ विहरहिं लहि गो लोक अभंगा ॥

वरनेउँ जहाँ प्रथम बृन्दावन ❀ निवसि तहाँसब लहहिंमोदघन ॥
कृष्ण रूप ते प्रभु तिन्हि संगा ❀ करहिं सु सदा रास रस रंगा ॥
सबहिं मोद प्रद करुना सागर ❀ प्रिय सवही के प्रभु नवनागर ॥
यह रहस्य सत गुरु विनु कोई ❀ लहहिंनपढ़िविधि समकिनहोई ॥
नरता भाव नसै जब भाई ❀ तब यह भेद सु परहिं लखाई ॥
अस विचारि सतसंग सु कीजै ❀ रसिकनि अरपि हृदय निज दीजै ॥
तव उपासना कर कछु भेदा ❀ जानहुगे नासन भव खेदा ॥

दोहा- चित्रकूट यक ओर जहँ, रास स्थल सु अनूप ।
यूथ यूथ अलिगन तहाँ, निवसहिं सुकृत सरूप॥२४॥

मन्दाकिनी सरित सुख मूला ❀ वहहिं सदा नाशक सब शूला ॥
तीर २ विहार थल नाना ❀ बनै सुभग नहिं जात बखाना ॥
सर्व कामदा विपिन पहारा ❀ विहरहिं जहँ सियराम उदारा ॥
महारास तहँ नित प्रति होई ❀ कृपापात्र जन जानत कोई ॥
कोटिनि अमरावती बिलाशा ❀ प्रगटत जहँ सियराम निवासा ॥
चित्रकूट के थल अति पावन ❀ एक एक त्रयताप नशावन ॥
योजन तीनि तीनि चहुँ फेरे ❀ रचहिं सतीं बनहिं करि डेरे ॥
विमुखी जन ठहरन महिं पावत ❀ निवसहिंभक्तसुप्रभुपद ध्यावत ॥
जो सियराम नाम उच्चरहीं ❀ तिन्हिकी ते सब सेवा करही ॥
द्वादस वर्ष नेमकरि नामू ❀ रटै अखंड मिलैं सिय रामू ॥

दोहा–चित्रकूट महिमा महा, शेष न पावहिं पार ।
निवसहिं जहँ सियराम नित, करत विचित्र विहार ॥२५॥

श्री साकेत पूर्व दिशि मिथिला ❀ जो अवलोकि होत मन शिथिला ॥
गुप्त विहार थली सुखदाई ❀ विहरहिं जहँ नित सिय रघुराई ॥
यदपि अवध मिथिला कामद बन ❀ परम अभेद अखेद पार मन ॥
रहहिं जहाँ जेहि कर मन भावै ❀ रहित सँदेह राम सिय पावै ॥

तदपि कही प्रभु निज मुख बानी ❀ समुझहिं सन्त निजातम ग्यानी ॥
उत्तम दिशि विरजा सरि पारा ❀ मोर धाम तिहुँपुर उजियारा ॥
सियनिवासतेंहितेमोहि प्रियअति ❀ मोरकृपा जानहिं जन शुचिमति ॥
मम स्वरूप सब मिथिला बासी ❀ श्री सिय जानकि नाम उपासी ॥
ताते मिथिला मोहि अति प्यारी ❀ सिय सम कबहूं करौं न न्यारी ॥
कामिहिं तिय जिमि लोभिहिं दामा❀प्रियलागहितिमिमोहिसियधामा॥
दोहा-यह रहस्य अति गुप्ततर, नाते विनु न लखाय ।
मिथिला नित्य विहार मम,सब बिधि अति सुखदाय ॥२६॥
कोटिनि सुकृतिनि महँ कोउ प्रानी ❀ पावहिं मिथिला सब सुख दानी॥
नासहिं पाप उदय शुभ होई ❀ जीवनि केर सुकृत जो कोई ॥
तव चौरासी योनि विहाई ❀ नर सरीर पावैं सुखदाई ॥
तीनि जन्म तीरथ व्रत साधन ❀ करैं लगैं तव सुर आराधन ॥
सात जन्म तजि कारज दूजा ❀ करैं जथा विधि देवनि पूजा ॥
जन्म आठवाँ जब सो पावैं ❀ तेहि महँ मम अवतारनि ध्यावैं ॥
नवम जन्म जब तिन्हि कर होई ❀ मम सेवा तव पावैं सोई ॥
कवनिउँ भाव धारि मन मांहीं ❀ भजहिं मोहिं मम भक्त कहांहीं ॥
गुरु बिनु पढ़ि पोथिनि मम धर्मा ❀ धारहिं मन मुख करहिं सुकर्मा ॥
तेहि प्रभाव मरि दसवीं बारा ❀जन्मि करहिं गुरुसहितविचारा ॥
दोहा-गहि अनन्यब्रत भजहिं मोहि, रसिक भावना धारि ।
दास सख्य वात्सल्य वा, सांति शृँगार विचारि ॥२७॥
रटैं नाम मम करैं सुसंगा ❀ मनवचक्रमतजि कपट अभंगा ॥
उपजै तव उर आतम ग्याना ❀ छूटै जड़ नर तन अभिमाना ॥
देखि परै निज सहज सरूपा ❀ गुरु प्रसाद अति अकथअनूपा॥
पावहिं जग नर तिय तन कोई ❀ सखी भाव दृढ़ धारहिं सोई ॥
नसै देह सुधि बुधि वहि रंगा ❀ लगै न नीक विजातिन्हि संगा ॥

तव तनु त्यागि ग्यारवीं वारा ❀ तिय तन स्वयं लहहिं अविकारा॥
पति पत्नी संवंध दृढ़ाई ❀ मम ढिग वसैं सखी तन पाई॥
प्रान प्रिया मम सिय अनुकूला ❀ होय लखै लीला सुख मूला॥
सिय सेवा लहि सियपुर माँहीं ❀ वसैं वहुरि जग जन्में नाँहीं॥
मिथिला बासी सिय के प्यारे ❀ कर्म धर्म वन्धन ते न्यारे॥

दोहा–वरनित रूप प्रसंग महँ, पावन श्री सिय देस।
नित्य विहार सुमोर तहँ, नर न करहिं परवेस॥२८॥

सोइ श्री मिथिला नित्य बखानी ❀ जानहिं केवल आतम ज्ञानी॥
यद्यपि मम विहार थल नाना ❀ वसौं सदा सब महँ सब जाना॥
तदपि न मिथिला त्यागौं कवहूँ ❀ नाना रूप धरों जग तवहूँ॥
मिथिलासममोहि प्रियकछु नाँहीं ❀ बसहिं प्रान प्रिय सिय जेहि माँहीं॥
भक्तनि हित हम दोउ अवतरहीं ❀ करिवहु चरित भार महि हरहीं॥
मिथिला नित्य विहार विलासा ❀ तजहिं न जथा मीन जलवासा॥
प्रान प्रिया सिय कृपा विहीना ❀ यह वर भेद न लहहिं मलीना॥
कर्म धर्म जप जोग विरागा ❀ करहिं कठिन तप तीरथ जागा॥
भजहिं मोहि केवल जो कोई ❀ तिन्हि मम दरशन सुलभ न होई॥
सिय पद कमल न जेहि उर माँहीं ❀ सपनेउँ ते मोहि पावत नाँहीं॥

दोहा–सिय मूरति उर धारि तजि, जप तप साधन योग।
निवसहिं मिथिला नाम रटि, पावहिं मोहिं ते लोग॥२९॥

मिथिला मम प्रानहु ते प्यारी ❀ सत्य सत्य यह गिरा हमारी॥
मम दरसन की जेहि उर आसा ❀ सो मम वचन मानि विश्वासा॥
मिथिलाबसिनिरुपधिममनामहिं ❀ श्रीसियनाम सहितवसु जामहिं॥
रटै अखंड पुलकि लय लाई ❀ पावै मोहिं अवसि सो भाई॥
जय सियराम नाम धुनि कोऊ ❀ करत करावत प्रिय मोहिं सोऊ॥
यहि विधिमैं सुनि प्रभुकीबानी ❀ ग्रन्थन माँहिं परम सुखदानी॥

चित्रकूट ते मिथिला आयेउ ❀ देखि मनोहर महि सुख पायेउ ॥
❀सीता मढ़ी लक्ष्मणा तीरा ❀ रहेउ सन्त यक सिद्ध सु धीरा ॥
परम उपासक सिय पद केरे ❀ बसहिं सदा सिय जन्म सुखेरे ॥
नाम रूप लीला प्रभु धामा ❀ सेवहिं संत सदा निष्कामा ॥

दोहा—तिन्हते मैं पायेउँ विपुल, श्री मिथिला के भेद ।
पुनि देखेउँ सब जाय प्रभु, क्रीड़ा थलसु अखेद ॥३०॥

हरित भूमि चहुँ दिशि अमराई ❀ विमल तड़ाग सरित सुखदाई ॥
कौशिकि कमला विमला धारा ❀ विल्ववती जलाधिका सारा ॥
धूम्रा जमुनी अरु बन घोषा ❀ पथरा जिवछी रातो चेषा ॥
दुग्धवती की दोउ दिशि धारा ❀ मध्यपुरी मिथिला मन पारा ॥
अपर गेरुका गर्व निवारिनि ❀ अधो उबारा भव भय हारिनि ॥
सीतामढ़ी लक्ष्मणा बहहीं ❀ तेहि की महिमा को कविकहहीं ॥
व्याघ्रवती शुभ शालिग्रामी ❀ अपर विपुल सरिता बहु नामी ॥
अकुसी आदि मण्डना धारा ❀ तीरथ मिथिला साठि हजारा ॥
गुप्त प्रकट वहु नदी तलावा ❀ बापी कूप अनूप बनावा ॥
मिथिला पुरी सुहावन देसा ❀ सेवत नाशहिं सकल कलेसा ॥

दोहा—हिमगिरि उत्तर दक्षिण, भागीरथी सिमान ।
पूरब कौशिकि पश्चिम, गण्डकि वेद बखान ॥३१॥

जो गोलोक मध्य प्रभु केरे ❀ लीला अस्थल सोइ इत खेरे ॥
+सतयोजन महँ तिरहुत देशू ❀ अधिपति जहँ श्री जनक नरेशू ॥

❀ श्रीसीतामढ़ी नगरी श्रीलक्ष्मणा गंगतट बसी है, श्री जानकीजी की जन्मस्थली यही है इहां से तीनि योजन श्रीजनकपुर है ।

+ परधाम में जो श्रीमिथिलाजी हैं। उन्हीं का यह देश तिरहुत तथा श्रीमिथिलाजी एक अङ्ग हैं। अभेद ही हैं। उहां विस्तार से हैं। इहां प्रयोजनानुकूल हैं ॥

मध्य देश मिथिला पुर भ्राजै ❀ विभव देखि अमरावति लाजै ॥
पुर पश्चिम दिशि कुण्डविहारा ❀ देखत हरै अखिल अघ भारा ॥
कञ्चन महल बने तहँ भारी ❀ छाय रहीं चहुंदिशि उजियारी ॥
नवखंडा सु वहत्तरि कुञ्जा ❀ रमत राम सिय सहअलि पुञ्जा ॥
वजत निशान केतु फहराहीं ❀ गर्जहिं घन जनु गरुड़ उड़ाहीं ॥
झलकहिं कलश कँगूरनि नाना ❀ प्रातकाल के जनु वहु भाना ॥
नाचहिं अलिगण गावहिं गीता ❀ लै लै नाम राम सिय सीता ॥
मृग नैनी कल कोकिल वैनी ❀ विधुवदनी सब सब गुन ऐनी॥

दोहा--राग रागिनी विपुल जनु, धरि धरि सखिन सरूप।
रिझवहिं श्री सिय पियहिं नित, करिकरिकलाअनूप॥३२॥

परम सुधन्य पूज्य जग सोई ❀ सेवहिं सिय पिय पद हित जोई ॥
बहु विधि विपुल वाजने बाजैं ❀ देव वधू सुनि सुनि रव लाजैं ॥
नितनव आनँद अकथअपारनि ❀ कहिनसकहिं श्रुतिशेष हजारनि॥
चहुँदिशि महलमध्य सर सोहत ❀ हेम घाट मणिमय मन मोहत ॥
थाह अथाह होत रुचि जानी ❀ नितनव निरमल रुचिर सु पानी ॥
जानकि हृदय विहार सु कुण्डा ❀ नाम लेत नाशहिं अघझुण्डा ॥
जल क्रीड़ा जेहि महँ सियरामू ❀ अलिनिसंग नित करहिं ललामू॥
तेहि सर महँ मज्जन जो करहीं ❀ सहित कोटिकुलभवनिधितरहीं ॥
दरश परश पय पान किये ते ❀ निकसहिं कोटिन पाप हिये ते ॥
अस कोउ पाप प्रबल जग नाहीं ❀ जो न नसाहिं न्हात तेहिमाँहीं ॥

दोहा--नाम मंत्र जप तप करै, देइ सुपात्रनि दान।
पावे फल संख्या रहित, गावत वेद पुरान॥ ३३ ॥

सुमन वाटिका सुखद सुहाई ❀ चहुँ दिशि ललित सोहअमराई ॥
कल्पतरुनि की लगीं कतारैं ❀ फूलित फलित झुकी महि डारैं ॥
बोलहिं कीर भ्रमर गुञ्जारहिं ❀ नचहिं मोर सिय सिया उचारहिं॥

कुंड विहार सदा सुख दायक ❀ विहरहिं जहँ सियसहरघुनायक ॥
सर पश्चिम दिशि निकट अनूपा ❀ शोभित विद्या ज्ञान सु कूपा ॥
जनक सभा अस्थल कर नामा ❀ सेवत जन पावहिं मन कामा ॥
उभय कूप की मध्य भूमि पर ❀ रटै बैठि सियराम मनोहर।
संयम सहित त्यागि व्यवहारा ❀ दरशै महल प्रकाश अपारा ॥
ज्ञान कूप सेवै रटि नामहिं ❀ अवसि करै सो वश सिय रामहिं ॥

दोहा—उभय कूप के मध्य जो, करै सुकृत कोउ दान ।
अक्षय बाढ़ै पुन्य तेहि, राखैं सिय पिय मान ॥३४॥

विद्या ग्यान कूप के बीचा ❀ निवसै तौ न परै भव कीचा ॥
उभय कूप सिय के बरदानी ❀ तुमहिं सेइ मोहिं पावहिं प्रानी ॥
जो कोउ पियहिं तुम्हार सुनीरा ❀ जन्म मरन नाशहि भव भीरा ॥
बारह वर्ष करहिं जो सेवन ❀ उभय कूप रटि नाम मोर जन ॥
बिना पढ़े उर ब्रह्म सु ज्ञाना ❀ उपजहिं अनुभव विद्या नाना ॥
उभय कूप सम त्रिभुवन माँही ❀ दूसर क्षेत्र सुखद कोउ नाँहीं ॥
ज्ञान कूप पश्चिम दिशि नेरे ❀ दुग्धवती बह महलनि घेरे ॥
सर्व काम दायक सो अहहीं ❀ अमिय समान नीर नित बहहीं ॥
तीर तीर मुनि सन्त निवासा ❀ करहिंनाम रटि तजि जगआशा ॥
परम हंस पावन मन वानी ❀ युगल उपासक आतम ग्यानी ॥

दोहा—बाढ़हिं सुकृत सुकोटि गुण, पाप होयँ सब नाश ।
दुग्धवतिहिं सेवन करत, द्रवहिं राम सिय खास ॥३५॥

सिय मुखते प्रगटी सुखदाई ❀ उभय धार सो भयेउ सुहाई ॥
उभय धार बिच महल अनूपा ❀ बिहरहिं जहँसिय पिय सुरभूपा ॥
चहुँ दिशि शहर जनक पुर सोहहिं ❀ मध्य विहार कुण्ड मन मोहहिं ॥
अगिनि कुण्ड उत्तर दिशि माहीं ❀ मज्जत जेहि महँ पाप जराहीं ॥
तेहि के निकट रतन सागर वर ❀ दरश परश जेहिकरमतिमलहर॥

पूरब कमलादिक बहु सरिता ❀ बहहिं मनोहर जिन्हिके चरिता ॥
सखी रूप धरि सिय पद सेवा ❀ करहिं सकलजेहि चाहहिं देवा ॥
नदी रूप धरि पुरबासिन सुख ❀देहिं विलोकतिरहहिं सुसियरुख॥
तिन्हि की महिमा अकथ अपारा ❀ संतचित आनँद रूप उदारा ॥
कमलादिक सरिता सुखदाई ❀ मज्जत कोटिनि पाप नसाई ॥

दोहा—सब के तटनि विहार थल, बनें विपुल सुख दैन ।
विहरहिं जहँ सियराम दोउ, सखिनि संग गुण ऐन ॥३६॥

निर्भय नदी सुखद सब काहू ❀ सेवत हरै सकल दुख दाहू ॥
सब सरिता सिय कहँ अति प्यारी ❀ होहिं न कबहुँ चरण तजिन्यारी ॥
कोटिन तीर्थ क्षेत्र जग जेते ❀ तिन्हि की सरवर करहिं न तेते॥
मिथिलापुर के नदी तलावनि ❀ सेवहिं सुर मुनिमानि परमधनि॥
देत सकल सुख हरि दुख दावा ❀ मिथिलापुर के सरित तलावा ॥
भरे विमल जल सुधा समाना ❀ ठौर ठौर नहिं जात बखाना ॥
जल थल फल कन्दा दधि चूरा ❀ मिथिला सम नाहिन कहुँरूरा ॥
मण्डप धनुष सुथल सरि सागर ❀ त्रेता के राजत सु उजागर ॥
कञ्चन वन महँ कञ्चन खानी ❀ बहति गेरुका सरि सुख दानी ॥
परम सुहावन पावन ठामू ❀ कंचन बन मन हरन ललामू ॥

दोहा—झूलन होरी रास तहँ, सखिन सहित सियराम ।
करत सदा निरखत सु सोइ, जो सेवत रटिनाम ॥३७॥

मिथिला भूमि सकल सुखदाई ❀ जहँ देखौ तहँ परम सुहाई ॥
सिय जननी किमि कहौं बखानी ❀ मिथिला महि सबमहिकीरानी ॥
राम मातु पर धाम सिधाई ❀ अवध बहुरि विक्रमा बसाई ॥
सिय जननी महि मिथिला सोई ❀ राजहिं अबहुँ जान सब कोई ॥
मिथिलापुरी विश्वते न्यारी ❀ नित्य विहार थली सुख कारी ॥
जो साकेत धाम परलोका ❀ सोइश्रीमिथिलाअवधअशोका ॥

रंचहु भेद न जानहु भाई ❀ सेवहु रटि सियराम सदाई ॥
मृत्यु लोक राजहिं ये धामा ❀ प्रभु के लीला थल अभिरामा ॥
सब लोकनि महँ करत विहारा ❀ श्री सियराम अखण्ड उदारा ॥
सब लोकनि परलोक विभूती ❀ राजत प्रभु की अमल अकूती ॥

दोहा—नित्यधाम मिथिला अवध, नित्य विभूति विहार ।
मृत्यु लोक राजत सदा, माया मन गुन पार ॥३८॥

यह रहस्य सिय रघुवर केरा ❀ जानहिं कोउ रटि नाम घनेरा ॥
इहाँ उहाँ की परि हरि शङ्का ❀ बसहु अवधमिथिलानिकलङ्का ॥
जिन्हिकरजहँजेहिविधिमन मानें ❀ सेवहिं मिथिला अबध सयानें ॥
आवा गमन रहित दोउ धामा ❀ मिथिला अवधनित्यप्रदकामा ॥
अवध बास विनु द्रवत न रामू ❀ कोटिनि कष्ट करै वशु यामू ॥
राम कृपा विनु मिथिला माँहीं ❀ करत प्रवेश जीव कोउ नाँहीं ॥
विरजा पार सु नित्य विहारा ❀ सोइमिथिलाश्री पुरप्रभु प्यारा ॥
जेहि पर कृपा रामकी होई ❀ निवसहिंनिरुपधिसियपुरसोई ॥
खोलैं जब प्रभु हृदय किवारा ❀ सूझै तब मिथिला सुख सारा ॥
धन विद्या वल प्रभु प्रभुताई ❀ जानि न जाय कहहिं बुध गाई ॥

दोहा—अतुलित कृपा सु कीन्हप्रभु, मोपर कही न जाय ।
दिखराई मिथिलासु निज, चित्रकूट ते लाय ॥३९॥

अमरनि हूं दुर्लभ जो ठामा ❀ दिखरायेउप्रभुसोइ निज धामा ॥
ग्यान कूप ढिग दीन निवासा ❀ नाम रटाय हरी सब त्रासा ॥
ग्यान कूप पर जो सुख पायो ❀ प्रभु प्रेरित सो जात न गायो ॥
रटै नाम सिय राम अनूपा ❀ सेवै मिथिला ग्यान सु कूपा ॥
जय सिय राम जय जयसिय रामा ❀ करै करावै धुनि सु ललामा ॥
सहित भाव सिय पिय पद प्रीती ❀ राखै उर नहिं करै अनीती ॥
माँगिखाय जहँ तहँ निरुपाधी ❀ रटै नाम दृढ़ नेम सु साधी ॥

उघरैं जब उरके दोउ नयना ❀ देखि परै मिथिला सुख दयना ॥
प्रभुकी कृपा सिद्धि सब काजा ❀ होय अवश्य मोर अन्दाजा ॥
मिथिला की महिमा प्रभुताई ❀ प्रगट लोक तिहुँ जात न गाई ॥

दोहा—त्रेता केर बिभूति सब, धरि उर सिकुरेउ धाम ।
पंकज जिमि सम्पुटहिं निशि, बिकशहिं लखि रबिघाम ॥४०॥

जेहि विधि छिपी राख महँ आगी ❀ सम्पुट माँहिं सु रतन अदागी ॥
घटै बढ़ै शशि जिमि दोउ पाखहिं ❀ तिमि प्रभु युग मर्यादा राखहिं ॥
समय विलोकि विभूति सुहाई ❀ घटै बढ़ै प्रगटै दुरि जाई ॥
त्रेता महँ सब निज प्रभु ताई ❀ प्रगटहिं धाम राम रुख पाई ॥
प्रभु के भेद भेदियहि जानें ❀ करि कुतर्क झगरहीं अयानें ॥
अग्यानिनि की सुनिय न बाता ❀ प्रभु कहँ भजिय लगाय सुनाता॥
नाम रूप प्रभु के गुण धामा ❀ ये सब संशय रहित ललामा ॥
इन्ह की महिमा जानहिं जोई ❀ सपनेउँ नहिं संशय उर होई ॥
जब लगि हृदय अँधेरी छाई ❀ तब लगि लखत न प्रभु प्रभुताई॥
धाम महातम अगम अपारा ❀ कहेउ कछुकनिजमतिअनुसारा॥

पद—

जय जय सियराम धाम सर्व काम दाता ॥
राजत गोलोक माथ, ध्यावत सब लोक नाथ,
गावत श्रुति संभु गाथ, बिष्णु औ विधाता ॥ १ ॥
संतानिक बन विशाल, विविधि बिटप बेलि जाल,
विहरत जहँ सिय सुलाल, जगत पिता माता ॥ २ ॥
अष्टादस सुभग कोट, सोभित चहुँदिसि निखोट,
लेत जौन जन सु ओट, नसत क्लेश व्राता ॥ ३ ॥
कोटनिकर अति प्रकास, ग्यानिन सो ब्रह्म भास,
निराकार निगुन खास, ध्याइ ध्यान लाता ॥ ४ ॥

अष्टादस कोट पार, कंचन मयपुर उदार,
सियाराम नित बिहार, नर न तहाँ जाता ॥ ५ ॥
सुंदर साकेत नाम, रचना अनुपम ललाम,
काल कर्म रहित ठाम, अखिल लोक ख्याता ॥ ६ ॥
नगर मध्य कनक भौन, बरने अस कवि सुकौन,
राजत जहँ सीय रौन, भक्त जननि त्राता ॥ ७ ॥
सेवति वर विपुल वाम, प्रेमलता रटि सुनाम,
निवसि संग आठ जाम, त्यागि लोक नाता ॥ ८ ॥

श्री मिथिला जी का महत्व वर्णन, यथा—

जय जय मिथिलेशपुरी मिथिला सुखदाई ॥

सप्तपुरीं तीर्थ धाम, सकल सुभद पुन्यठाम,
सेइ तव सुपद ललाम, सर्व सिद्धि पाई ॥ १ ॥
तीनि लोक तीनि काल, तो समान तू दयाल,
देखि राम भे निहाल, सहित लखन भाई ॥ २ ॥
अमर संत सिद्ध भूप, सेवत तोहि लखि अनूप,
पावत सिय राम रूप, कहत वेद गाई ॥ ३ ॥
निवसि तव सुअङ्क लोग, करत विविध जोग भोग,
व्यापत नहिं रोग सोग, तोर दया माई ॥ ४ ॥
अनुपम थल तीर्थ बाग, विपुल विमल सरि तड़ाग,
जागत अनुराग भाग, हेरि कें निकाई ॥ ५ ॥
जगत मातु सीय आय, जनमि तोय कीन माय,
हारेउ कवि गाय गाय, कीर्ति तव सुहाई ॥ ६ ॥
बीत राग सीय राम, रटत अटत महि अकाम,
सेवत तोहि आठ जाम, मुदित माँगि खाई ॥ ७ ॥

मिथिला सब विधि सुखयन, प्रेमलता जो न नयन,
निरखी सो जिउ न चयन, लहत कहूं जाई ॥ ८ ॥

दोहा—जगत जलधि तिरहुति कमल, जनक सुपुर मकरन्द ।
प्रेमलता सिय गन्ध सुचि, भँमर सु रघुकुल नन्द ॥४१॥
प्रभु गुरु कृपा सु होय जब, उपजै आतम ग्यान ।
दरसै गुप्त विभूति तब, नसै मोह मद मान ॥ ४२ ॥
धाम प्रसंग सु अगम अति; मम मन मती मलीन ।
कहेउ कछुक सो ढीठ पन, छमिहहिं सन्त प्रवीन ॥४३॥
नाम रूप गुण धाम चहुँ, प्रभु के अकथ अनूप ।
तदपि सुजन निज बोध हित, कहहिं स्वमति अनुरूप ।४४।
तेहिमगु मम मति बाल अति, चाहति चलन अयान ।
सन्त सयाने देहु बर; करौं नाम गुण गान ॥ ४५ ॥
आगें छठे प्रसंग महँ, अवलोकहु चितलाय ।
सज्जन कहहुँ उपासना, भेद भाव कछु गाय ॥४६॥

इति श्री जयसियराम जय जय सियराम नाम धुनि प्रचारक
श्रीवैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्रीसियालाल
शरणजी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत
श्रीधाम पञ्चम प्रसंग वर्णनम् सुभम् ॥५॥

श्रीउपासना प्रसंगारम्भः ॥ ६ ॥

दोहा ।

तीनि काण्ड चहुँ वेद के, कर्म, उपासन, ज्ञान ।
कृया तीनि रोचक प्रथम, अपर यथार्थ, भयान, ॥ १ ॥
रोचक कृया सु ज्ञानकी, कर्म भयानक जानि ।
तीसर काण्ड उपासना, कृया यथार्थ बखानि ॥ २ ॥
कहहुँ यथार्थ उपासना, तेहि महँ तीनि प्रकार ।
प्रथम विशिष्टा द्वैत पुनि, द्वैताद्वैत बिचार ॥ ३ ॥

त्रय उपासना केर सु भेदा ❀ समुझौ तौ न होय उर खेदा ॥
विलग विलग तिन्हिके सुविधाना ❀ कहौं यथा मति सुनहु सुजाना ॥
अन्तरयामी रहित अकारा ❀ व्यापेउ घट घट श्रृष्टि मझारा ॥
जन्मत मरत सुसदा एक रस ❀ परमस्वतंत्रविदितदशदिशिजस ॥
इच्छा रहित अनन्त अदोसा ❀ एक अखण्ड अनादि अरोषा ॥
खात न पियत हँसै नहिं रोवै ❀ बैठे चलै न जागे सोवै ॥
देइ न लेइ सुनै नहिं बोलै ❀ माया रहित सकल घट डोलै ॥
माय न बाप पुत्र नहिं नारी ❀ शिष्य न गुरू एक अबिकारी ॥
इन्द्री हीन रमै सब साथा ❀ कर्म शुभाशुभ करै न हाथा ॥
पाप पुन्य अपमान सु माना ❀ हर्ष सोक भय कर नहिं ग्याना ॥

दोहा—यह अद्वैत उपासना, रोचक ज्ञानिनि केरि ।
अगम पन्थ निबहब कठिन, बुद्धि विषय की चेरि ॥४॥

एकै ब्रह्म सकल में जानत ❀ वैर विरोध कवन ते ठानत ॥
भगिनी मातु नारि सम देखें ❀ भोग करें फिर कवने लेखें ॥
हित अनहित मानत केहि लागे ❀ माया मोह कोह मद पागे ॥
विनु साकार न होत निवाहा ❀ ताहि कहहिं खल सरगुन काहा ॥
सगुन रूप की सुख प्रद सेवा ❀ जानें का ग्यानी जन बेवा ॥
ग्रसत रोग तब वैद्य बुलावत ❀ खात सु औषध हाथ दिखावत॥
जो कोउ रञ्चौ करै बुराई ❀ करत कोप तेहि पर अधिकाई ॥
कुटिल कर्म करि लेत बुराई ❀ कहत न आनहिं निज अधमाई ॥
रूपादिक जाती अभिमाना ❀ राखत कहाँ ब्रह्म पहिचाना ॥
हर्ष विषाद काम कुटिलाई ❀ भरी उरनि तेहि देखउ भाई ॥
वातिनि ते नहिं ब्रह्म सुग्याना ❀ होत कहहिं श्रुति संत पुराना ॥

दोहा—माया देवी उर वसी, ब्रह्म ग्यान मुख माँहिं ।
यह अद्वैत उपासना, सुजन विचारहु नाँहिं ॥ ५ ॥

माया देवी के आधीना ❀ ब्रह्म जीव सुर असुर प्रवीना ॥
देखहु करि निज हृदय विचारा ❀ माया बिनु नहिं सुख संसारा ॥
लोकी अरु परलोकी कारज ❀ सिधि न होत समुझौ उरआरज ॥
व्याह सराध जनेऊ गोंना ❀ होत न कछु विनु चाँदी सोंना ॥
असन बसन बासन ग्रह भोगा ❀ माया बिनु कहँ पावहिं लोगा ॥
जिन्हि बिनु जीव ब्रह्म छन एका ❀ रहि न कसहि समुझउ तजिटेका॥
द्वैता द्वैत ब्रह्म के ग्याता ❀ मायाधीन जगत विख्याता ॥
देहादिक जो सकल पदारथ ❀ माया कृत स्वारथ परमारथ ॥
तिन्हिते कहहु जगत को बाँचा ❀ नाँचहिं सब माया हित नाँचा ॥
ग्रही विरत ग्यानी अग्यानी ❀ माया धीन लखहु सब प्रानी ॥

दोहा—माया केर सरूप बहु, सब महँ उभय प्रधान ।
कंचन कामिनि प्रबल अति, गावत वेद पुरान ॥६॥

निरगुन निराकार जो कोई ❀ ब्रह्म कहाय सगुन सोइ होई ॥
राम कृष्ण अवतारनि माँहीं ❀ परम प्रसिद्ध प्रधान कहाँहीं ॥
दधि माखन हित गोपिनि केरे ❀ बनेउ कृष्ण मन वच क्रम चेरे ॥
मानादिक लीलनि सु निकाया ❀ नाँच नचायेउ ब्रह्महिं माया ॥
राम जनक पुर सिय कृत रचना ❀ देखि थकेउ सह मन क्रम बचना ॥
पुर विभूति सिय की छबि देखी ❀ मोहेउ राम सु ब्रह्म विसेखी ॥
माया के दोउ रूप निहारी ❀ भूलेउ सगुन ब्रह्म अवतारी ॥
लीला देवी रुचि अनुसारा ❀ वरतहिं सकल ब्रह्म अवतारा ॥
माया सक्ति सहित सब लीला ❀ करहिं ब्रह्म अवतार सुसीला ॥
माया सक्ति विहीन ब्रह्म वर ❀ सोभित जिमि बिनु गेह लुञ्जनर ॥

दोहा—तेहि लगि कहत प्रधान बुध, माया सक्ति ललाम ।
जेहि सहाय बिनु ब्रह्म सो, करि न सकत कछु काम ॥७॥

प्रथम सु सीता नाम उचारी ❀ पाछे कहत राम नर नारी ॥
को प्रधान को गोंन विचारहु ❀ आन बात जनि गुनि उर धारहु ॥
अर्चा ब्रह्मनिहूं के हेता ❀ मठ मंदिर जो बनत निकेता ॥
उतसव भोग सु राग निकाया ❀ आनँद होत सु जानहु माया ॥
चमतकार सब माया केरा ❀ तेहि के भीतर ब्रह्म बसेरा ॥
ब्रह्म नाम भरि सुनहिं सु काना ❀ मायहि देखत प्रगट प्रधाना ॥
चीनहिं मायहि सब्र नर नारी ❀ सब्र कहँ लागहि माया प्यारी ॥
दाम वाम दोउ नयन निहारत ❀ डोलत ब्रह्म न धीरज धारत ॥
ग्रही विरक्त सु ब्रह्म विचारी ❀ पंडित मूढ़ सकल तनु धारी ॥
दाम वाम बस सब लखि परहीं ❀ तिन्हिं हित विपुल उपाय सु करहीं ॥
माया रूप भयेउ जो कोई ❀ ते न विमोहेउ मायहि जोई ॥

दोहा—सिव विरंचि सनकादि मुनि, नारद गरुड़ सुजान ।
नाँचेउ नाना नाँच परि, माया फंद प्रधान ॥ ८ ॥

तेहि मायहि तजि ब्रह्म प्रधाना ❀ करहु कहहु सो कवनें ग्याना ॥
कवनिहुँ कारज माया हीना ❀ होत सिद्धि सो कहहु प्रवीना ॥
तन विनु होय न ब्रह्म विचारा ❀ सो तनु माया कर तुम्ह धारा ॥
भीतर चेतन शक्ति सु जेही ❀ वैठि लखावति ब्रह्महिं तेही ॥
तन इन्द्री मन माया रूपा ❀ खेलत तिन्हि सँग ब्रह्म अनूपा ॥
माया रहित सु ब्रह्म अकेला ❀ व्यर्थ होत छिमि कञ्चन्न ढेला ॥
भूषण रूप होइ सब धारैं ❀ ढेलहिं लै खंदक महँ डारैं ॥
वरफ गले विनु काम न आवै ❀ कमल खिलै तव सवहिं सुहावै ॥
तेहि विधि निर्गुण ब्रह्म निकामा ❀ ताहि भजे का लाभ ललामा ॥
जो तुम आपहि वने विधाता ❀ जोरेउ केहि लगि जगते नाता ॥
मातु पिता भ्राता सुत नारी ❀ विछुरे केहि लगि होहु दुखारी ॥

दोहा—निराकार निर्गुण वनो, ब्रह्म रूप जो भाइ ।
तौ तनु धरि गुण दोष जग, केहि लगि देखउ आइ ॥९॥

माया लागि उपाय अनेका ❀ करहु कि नहीं कहहु तजि टेका ॥
माया हित नाचहु दिनराती ❀ तेहि विनु मिले जरै अति छाती ॥
तन मन धन इन्द्री सुख गेहा ❀ पट अशनादि सु माया एहा ॥
गृही विरक्त मनुज तनु धारी ❀ सब कहँ प्रिय कंचन अरु नारी ॥
जेहि विनु होइ न तनु निरवाहा ❀ तेहि कहँ कहहिंकिमायाकाहा ॥
भूख प्यास भय नींद विहारा ❀ हर्ष शोक कामादि विकारा ॥
इनके वश निशि दिन तनुधारी ❀ ब्रह्म वने केहि ज्ञान विचारी ॥
वहुविधि हृदय कल्पना होई ❀ होत न काज विचारहु सोई ॥
यह जीवत्व होय नहिं नाशा ❀ करहु न ब्रह्म होंन की आशा ॥
विन्दु सिंधु कर समता जोगू ❀ होत विचारहु तौ उर लोगू ॥

दोहा—माया ब्रह्म स्वरूप दोउ, जवलगि भजत न जीव ।
सेवक भाव सुहृदय धरि, तव लगि मिलत न पीव ॥१०॥

करहु हृदय निज ब्रह्म विचारा ❀ देखहु पुनि आचरन तुम्हारा ॥
ब्रह्म विस्व कर पालन करता ❀ तुम्हते पेट न आपन भरता ॥
ब्रह्म सुतंत्र समर्थ प्रतापी ❀ सवते भिन्न सकल घटव्यापी ॥
तुम्ह परतंत्र सामरथ हीना ❀ रोगनि ग्रसित सरीर मलीना ॥
अन्तरंग वहिरङ्ग एक रस ❀ ब्रह्म वदहिं श्रुति साम्र अष्टदश ॥
जीव दुरंगे ताते सिअरे ❀ होत वसहिं वहु अवगुन हिअरे ॥
इच्छा रहित ब्रह्म पूरन पर ❀ जीव सकाम अपूर्न अवुधतर ॥
ब्रह्म अखिल लोकनि कर नायक ❀ सिव ब्रह्मादि पूज्य सब लायक ॥
धन हित जीव अपूज्यनि भाई ❀ पूजहिं मन वच क्रम चितलाई ॥
ब्रह्म सकल जीवनि पहिचानत ❀ जीव न आपन उरकी जानत ॥

दोहा—ब्रह्म ब्रह्म तेहि कहहिं सब, जीव न भाषै कोय ।
जीव नाम जेहि परेउ सो, ब्रह्म कवन विधि होय ॥११॥

वातिनि ते बनि ब्रह्म सरूपा ❀ गिरहु न जीव घोर भव कूपा ॥
अस विचारि परिहरि हठ भाई ❀ सेवहु सियवर भाव वढ़ाई ॥
एक ब्रह्म की नहिं उपासना ❀ होत सहहु करि कठिन त्राशना ॥
ज्ञानमान सोइ जो वशुयामहिं ❀ सेवत सगुन रूप सियरामहिं ॥
निर्गुण निराकार जो कोई ❀ सगुन ब्रह्म की छाया सोई ॥
तेहि सेवत कछु सुख नहिं सरसै ❀ रम्यो सही सब महँ नहिं दरसै ॥
माया ब्रह्म सु युगल सरूपा ❀ भजत होइ सुख हृदय अनूपा ॥
यह उपासना द्वैत कहावै ❀ माया ब्रह्महिं सेइ रिझावै ॥
राधा कृष्ण रमा नारायन ❀ ये सब ब्रह्म रूप सुख दायन ॥
सियवर के अन्सज अवतारा ❀ शक्ति ब्रह्म ये सकल उदारा ॥

दोहा—उमा शिवादिक इष्ट निज, सेवहिं सतिनि समेत ।
पावहिं ते जन परम सुख, भाषहिं सन्त सचेत ॥१२॥

समदरशी गुरु ते सब भेदा ❀ पढ़ि उपासना करै अखेदा ॥

आपन आतम रूप विचारै ❀ सखी भावना उर दृढ़ धारै ॥
नर नारी कौनहु तनु पावै ❀ पुरुष भाव मन में नहिं लावै ॥
पुरुष भाव धारहिं जे लोगू ❀ ते नहिं दम्पति सेवा योगू ॥
निज आतम स्वरूप तिन्हिनाँहीं ❀ लख्यो भुलाने जड़ तन माँहीं ॥
चेतन शक्ति सु घट २ व्यापी ❀ सखी स्वरूपाकार प्रतापी ॥
सो सरूप निज जानि उपासक ❀ सेवहिं निज निज इष्टविलाशक ॥
राधा कृष्ण उपासक जेते ❀ श्री गोलोक निवासी ते ते ॥
गोपी चन्दन बंशी कारा ❀ श्याम विन्दु सहकरहिंलिलारा ॥
भाव परकिया रस शृंगारा ❀ धरि दृढ़ सेवहिं इष्ट उदारा ॥
गोवर्धन गोकुल वृन्दावन ❀ विहरहिं जमुना तीर मुदितमन ॥

दोहा—दधि माखन के रसिक अति, रास केलि कल ध्यान ।
श्यामल गौर सु द्विभुज,छबि,निरखि करैं गुण गान॥१३॥

द्वापर यह अवतार सु होई ❀ गोप बंस जानत सब कोई ॥
वैश्नव रामानुजी प्रवीना ❀ तिलक देत पै कंठी हीना ॥
रमा रमापति के सु उपासी ❀ ये सब श्री वैकुण्ठ निवासी ॥
ऊर्ध पुण्ड पादाकृत श्वेता ❀ करहिं मध्य श्री पीत समेता ॥
संखादिक आयुध सु प्रधाना ❀ धारण करहिं चतुर्भुज ध्याना ॥
इन्ह के वड़ आचार विचारा ❀ प्रगट सु जानत सब संसारा ॥
आचारी वैष्णव सब कोई ❀ कहहिं इन्हें जानहु सब कोई ॥
उमा सम्भुके जे सु उपासी ❀ तिन्हि जानहु कैलाश बिलासी ॥
ऊर्द्ध सुपुण्ड त्रिपुण्ड समेता ❀ धारहिं सहित विचार सहेता ॥
तुलसी अरु रुद्राक्ष सु माला ❀ पहिरि बजावहिं बं बं गाला ॥

दोहा—राम सु भक्त प्रधान सिव, रटहिं दिवस निशि नाम ।
गिरिजा गणनि समेत बसि, गिरि कैलाश अकाम॥१४॥

श्री सिय राम सुनाम सुनाई ❀ देत सबहिं गति शिव सुखदाई ॥

सम्भु भक्त सियराम सु नामा ❀ रटहिं जानि सर्वस वशुयामा ॥
जो सिय राम नाम नहिं गावत ❀ सो शिवभक्त शिवहिंनहिंभावत॥
अस विचारि जो शंभु उपासक ❀ रटहिं नाम मुख प्रेम प्रकाशक ॥
नारायण सिव कृष्ण उपासी ❀ राम नाम सब कहँ सुखराशी ॥
रटत नाम सियराम सु नामी ❀ द्रवहिं सबनि पर सबके स्वामी ॥
राम नाम सब सतिनि उदारा ❀ रटत सकल ईश्वर अवतारा ॥
कहनि रहनि निज इष्टनि केरी ❀ देखउ ग्रन्थनि माँहिं सु हेरी ॥
पच्छपात की बात गमारा ❀ करत रहित जो ज्ञान विचारा ॥
देखहु खोलि सुहिय की आँखें ❀ वेद पुरान सास्त्र का भाँखें ॥

दोहा–सकल ईश अवतार जग, धर्म सु रच्छन हेत ।
प्रगटहिं सियवर अंस ते, समुझहिं सुजन सचेत ॥१५

द्वैताऽद्वैत केर बहु कारन ❀ वेदहु पावत जेहि कर पार न ॥
नाना रूप धरहिं भक्तन हित ❀ सियवर राम परम कोमल चित ॥
मीन कमठ नरहरि बलि वामन ❀ कृष्ण व्यास हरि हर मनभावन ॥
पृथु कल्की कपिलादिक हंसा ❀ जानहिं राम रूप प्रभु अन्सा ॥
परसुराम हयग्रीव सु बोधा ❀ जानहिं राम तत्व अबिरोधा ॥
बद्री पति विराट जगदीशा ❀ महाविष्णु नारायण ईशा ॥
हनुमदादि आचार्य विधाता ❀ ये सब राम तत्व के ज्ञाता ॥
राम कृपा पुनि जेहि पर होई ❀ जानहिं राम तत्व जन सोई ॥
राम तत्व तब जानहिं प्रानी ❀ जबगुरु मिलहिंरसिक सुखदानी॥

दोहा–गुरु बिनु भेद न पावहीं, राम तत्व अति गूढ़ ।
बिनु बूझे झगरहिं विपुल, मनमुख मत आरूढ़ ॥१६॥

वही द्वैत अद्वैतहु सोई ❀ सियवर राम कहावत जोई ॥
विविध रूप धरि खेल खिलारी ❀ खेलत बहु विधि इच्छा चारी ॥
जेहि पर कृपा करहिं सुखराशी ❀ ताहि जनावहिं लीला खासी ॥

सनमुख सगुन सरूप अनूपा ❀ त्यागि भजै को निरगुण रूपा ॥
राम रमैया सब घट माँहीं ❀ देखे बिना होत सुख नाँहीं ॥
श्याम गोर सुन्दर गरबाँहीं ❀ दियेलखहिं हँसि जब जेहि पाँहीं ॥
कोटिन निरगुन सुख ज्ञानादी ❀ तेहि सुख सन्मुख लागत बादी ॥
भक्तनि लगि प्रभु विविध शरीरा ❀ धरत कृपानिधि सिय रघुबीरा ॥
तिन्हैं भजे बिनु जन कल्याना ❀ लहहिं न सेवहिं ईश्वर नाना ॥

दोहा–द्वैताऽद्वैत उपासना, कही यथा मति गाय ।
सुनहु विशिष्टाद्वैत अब, भेद भाव मन लाय ॥१७॥

पक्षपात स्वारथ परमारथ ❀ द्वैताऽद्वैतहि रहित यथारथ ॥
माया ब्रह्म सु जीव सनातन ❀ त्रिधा रूप एकै आनँदघन ॥
श्री सिय राम लखन ये नामा ❀ निवसहिं पर साकेत सु धामा ॥
इस्त्री पुरुष नपुंसक लिंगा ❀ माया ब्रह्म सु जीव अडिङ्गा ॥
जीव नपुंसक इस्त्री माया ❀ पुरुष एक रामहिं श्रुति गाया ॥
माया के दुइ रूप प्रधाना ❀ जड़ चेतन अस कहत पुराना ॥
जड़ माया कृत सकल शरीरा ❀ तेहि के भीतर जीव सुधीरा ॥
जीव हृदय वह चेतन माया ❀ माया उर सु ब्रह्म रघुराया ॥
❀माया जीव सु संग विहारा ❀ करन ब्रह्म विरंचेउ संसारा ॥
यहि कर भेद भाव अतिवङ्का ❀ लखहिं न वक्रवादी मति रङ्का ॥

दोहा–परा शक्ति माया सिया, लखन लाड़िले जीव ।
तिन्हि के सँग बिहरहिं सदा, राम परात्पर सीव॥१८॥

लखन लाड़िले वहु तनु धरहीं ❀ लखि २ रुख सब सेवा करहीं ॥
विमल आतमा सखी सरूपा ❀ विरचि सदा सेवहिं सुर भूपा ॥
अगनित रूप धारि परधामहिं ❀ सेवति नित सप्रेम सिय रामहिं ॥

❀ वि० पु०—स्वयंहि बहवो भूत्वा रमणार्थं सहारसः ।
तयति रमयाः रेमे प्रियया बहु रूपया ॥ १ ॥

दोउन के मन लच्च बनाई ❀ जुगवत रहहिं सदा चित लाई ॥
तेहिते परेउ लछिमना नामा ❀ सोइ श्री लछिमन रूप ललामा ॥
चेतन—जीव—आतमा नाना ❀ सक्ति नाम बहु गुननि निधाना ॥
प्राणहुँ ते अति प्रिय सियरामहिं ❀ तेहि विधि तेउसेवतिवसुयामहिं ॥
जब दोउ यह नर नाटक करहीं ❀ धर्म हेतु जग महँ अवतरहीं ॥
प्राकृत नर वत चरित अपारा ❀ करन चहहिं सिय राम उदारा ॥

दोहा—त्रिगुन मई माया सु तव, सकल कला गुन धाम ।
प्रगटहिं सिय निज अंगते, अति सुन्दर अभिराम ॥१६॥

धरहिं अविद्या तेहिकर नामा ❀ कहहिं बनहु बहु रूप ललामा ॥
तेहि माया के उर बैठारी ❀ चेतन सक्ति सु निज वह प्यारी ॥
जीव आतमा जेहि कर नामा ❀ निवसहिं जो नित सँग परधामा ॥
तेहिसन कहेउ रचहु जग जाई ❀ बैठि अविद्या उर मन लाई ॥
मम प्रताप तुम्ह सवगुन धामा ❀ अहहु मोहि सुमिरेउ बसुयामा ॥
यह मम माया जड़ तन नाना ❀ धरिहहिं सुंदर तिय मरदाना ॥
विविधि पदारथ तव बल पाई ❀ प्रगटहि अनुपम बरनि न जाई ॥
तिन्हैं देखि विसरेउ जनि मोही ❀ बारम्बार चेतावहुँ तोही ॥
सुन्दरता सु अविद्या केरी ❀ लखि मोहेउ जनि यह सिख मेरी ॥
जड़ माया कृत कवनिउँ देही ❀ पाय न भूलेउ रूप सु एही ॥
निज कर्तव कर उर अभिमाना ❀ करेउ न तुम्ह दोउ भूलि सुजाना ॥

दोहा—धरि सु अनेकनि रूप दोउ, वर्तेउ तेहि अनुरूप ।
रीझैं प्रीतम देखि मम, रचना आय अनूप ॥२०॥

येहि विधि दोउ समुझाय बुझाई ❀ पठइ दीन जग सिय सुखदाई ॥
आय जगत तिन्हि बहु विस्तारा ❀ कीन्ह अनूपम अकथ अपारा ॥
चेतन सक्ति प्रथम जिमिधामहिं ❀ सेवति रही निवसि सियरामहिं ॥
तेहि विधि विपुल सरूप बनाई ❀ सेवति सदा सिया रघुराई ॥

एक अंश ते रूप अपारा ❀ धरि आई जड़ सँग संसारा ॥
आवहिं प्रभु जब करन विहारा ❀ नर नाटक देखन सु उदारा ॥
तब वह चेतन पुरुषाकारा ❀ धरि आवै प्रभु सँग सविचारा ॥
भीतर तिय बाहिर नर देही ❀ होय नपुंसक लिंग सु तेही ॥
लछिमन नाम राम सिय संगा ❀ रहि सेवहिं पद कमल अभंगा ॥
सोइ लछिमन धरि रूप अनेका ❀ सेवत सिय रामहिं सविवेका ॥

दोहा—लीला केरि विभूति जो, सब श्री लछिमन रूप ।
प्रभु रुचि लखि सेवत सदा, लखन चरित्र अनूप ॥२१॥

दासि दास सब साज समाजा ❀ बनि लछिमन साधहिं सब काजा ॥
जेहि विधि श्री साकेत मझारी ❀ तोषत प्रभुहिं विपुल तनधारी ॥
तिमि सोइ जग नर नाटक मांहीं ❀ सेवहिं सब विधि दूसर नांहीं ॥
सिय की सक्ति सचेतन माया ❀ धरि सरूप बहु करै सहाया ॥
एक सरूप अविद्या संगा ❀ मिलि विरचत जग नाना रंगा ॥
एक रूपते सिय पिय पासा ❀ रहत सदा बनि दासीं दासा ॥
जग नाटक विच तिमि साकेता ❀ परि पूरन प्रभु सक्ति सचेता ॥
नर नाटक कर भेद सु गूढ़ा ❀ वेगि न समुझहिं जीव विमूढ़ा ॥
केहि विधि केहि लगिनाटकहोई ❀ यह वर भेद न जानहिं कोई ॥
सुनि संसय जनि कीजै लोगू ❀ लखहु प्रभाव न तरकन जोगू ॥
सगुन चरित ये सिय वर केरे ❀ समुझहिं कोउ कोउ जन न घनेरे ॥

दोहा—प्रथम अविद्या संग जो, आयेउ जीव सरूप ।
बरणौं माया जार जिमि, उरझि परेउ भव कूप ॥२२॥

जड़ माया बहिरंग निहारी ❀ रचना विविधि मनोहर प्यारी ॥
जड़ जंगम दोइ रूप अनूपा ❀ कठिन अविद्या के दुख रूपा ॥
मोहेउ जीव स्वरूप भुलाना ❀ हम हम लगेउ करन विधि नाना ॥
परिहरि सो सुभ सिय उपदेसा ❀ लगेउ जीव बहु सहन कलेसा ॥

तजी एकता नाना रूपा ❀ भयेउ जीव जड़ परि भव कूपा ॥
विषई, बद्ध, विमुख, अविचारी ❀ भ्रमत जीव बनि जगत विकारी ॥
भयेउ एक ते अधिक अनेका ❀ बिलग बिलग सुभाव गुण टेका ॥
जो तनु धरै बनै सोइ सोई ❀ भीतर की चेतनता खोई ॥
इस्त्री पुरुष लिङ्ग सियरामा ❀ जीव नपुंसक लिङ्ग ललामा ॥
दोउन कर सेवा अधिकारी ❀ रहेउ जीव यह विमल बिचारी ॥

दोहा—सो जड़ माया फन्द परि, सहज स्वरूप बिसारि ।
भार उठाये शीस निज, जग कर बनि नर नारि ॥२३॥

जीव आतमा जग की करता ❀ आपहि बनी बिसरि सिय भरता ॥
जीव आतमा पुरुष न नारी ❀ कहहिं सो अज्ञ अबुध अबिचारी ॥
सिय सियवर की इच्छा रूपा ❀ रचै जगत धरि विविधि सरूपा ॥
सियवर प्रेरित रचना सारी ❀ करहि आतमा बनि नर नारी ॥
लख चौराशी योनिनि माँहीं ❀ खेलत एकै दूसर नाँहीं ॥
अचरज मय माया के खेला ❀ प्रगटै नाना रूप नवेला ॥
आतम माया की प्रभुताई ❀ अकथ अलौकिक बरनिन जाई ॥
सोइ आतम प्रेरक प्रभु भूला ❀ लगेउ करन कारज प्रतिकूला ॥
प्रेरक प्रभु यद्यपि उर बीचा ❀ बरजहिं बूझत जीव न नीचा ॥
जन पर अधिक सु सियकी दाया ❀ तेहि लगि कोपत नहिं रघुराया ॥

दोहा—सियहिं सुआतम परम प्रिय, निज माया बश जानि ।
करति न कोप कदापि उर, जगत जननि सुखखानि ॥२४॥

सिय सम कोमल चित जगमाँहीं ❀ भयेउ न है कोउ होनेउँ नाँहीं ॥
जब जिउ करन लगत मनमानी ❀ सुनत न सिय पिय सीख सुबानी ॥
वाहिर जो जड़ माया रूपा ❀ पैठेउ चेतन उर सु अनूपा ॥
जड़ माया की सुन्दरताई ❀ मोहेउ देखि सु चेतन भाई ॥
दिनप्रति विमुख होत अति जाई ❀ माया जार अरुझि अधिकाई ॥

नाशेउ आतम ज्ञान अनन्दा ❀ जेहि विधि कृष्णपक्ष करचन्दा ॥
बिसरेउसियसियवर सुखकन्दा ❀ परेउ कठिन माया के फन्दा ॥
मुदेउ हृदय के लोचन भाई ❀ भल अनभल नहिं परतलखाई ॥
एक रूप ते सिय पिय दोऊ ❀ बसत हृदय नहि जानत सोऊ ॥
देखत सबकी छिपि उर करनी ❀ कहनि रहनि समुझनि आचरनी॥
माया वश जेहि विधि नर नारी ❀ बनि सु जीव नाचत अबिकारी ॥
मोह वारुणी पी जड़ताई ❀ धारि सु उर चेतन बिसराई ॥

दोहा—असन बसन धन धाम सुख, सुत सुनारि जग जीव ।
करत उपाय अनेक विधि, परि हरि निज सिय पीव ॥२५॥

ग्रही विरत बनि जन जड़माया ❀ चाहत चेतन रूप भुलाया ॥
जब न मिलत तब प्रभु सन गारी ❀ देत लेत शिर अपयश भारी ॥
मिले दुखी अनमिले दुखारी ❀ सोइ चाहत जिउ बनि नरनारी ॥
भीतर बाहिर व्यापी माया ❀ नाचत जेहि बश जीव निकाया ॥
गृही बिरत वर्णाश्रम धारी ❀ माया बश नर नारि दुखारी ॥
बाहिर सुन्दर वेष बनायेउ ❀ भीतर माया मोह समायेउ ॥
बाहिर विमल आचरन करहीं ❀ भीतर मलिन ताप तिहुँ जरहीं ॥
बाहिर ते प्रेमी सुखदाई ❀ भासत हृदय भरी अधमाई ॥
बाहिर पंडित साधु सरूपा ❀ हृदय महा माया कर कूपा ॥
बाहिर ते सियबर अनुरागी ❀ भीतर बुद्धि विषय रस पागी ॥

दोहा—बाहिर कथनी कथहिं शुचि, भीतर दम्भ विशाल ।
सुकृत मेड़का खात नित, जिमि बाँबी कर व्याल ॥२६॥

बाहिर ते बहु वेद पुराना ❀ पढ़ैं सुनैं उर माया ध्याना ॥
बाहिर ते बहु साधन साधै ❀ भीतर मन माया आराधै ॥
बाहिर तें बहु करै सुकर्मा ❀ भीतर नखसिख भरेउ अधर्मा ॥
बाहिर वसन अङ्ग मलिधोवत ❀ हृदय मलिन अति त्राहि न जोवत ॥

बाहिर सान्ति रूप अति त्यागी ❀ मन क्रोधी माया अनुरागी ॥
बाहिर परम हंस की साजा ❀ साजें मन उर काग बिराजा ॥
बाहिर ते प्रिय बचन बनाई ❀ बोलत उर कुटिलाई छाई ॥
बाहिर ते बनि मुल्ला काजी ❀ पढ़ै निवाज हृदय मन पाजी ॥
बाहिर ते अति धीर लखावत ❀ मन माया हित चहुँ दिशि धावत ॥
बाहिर ते बगुला इव ध्याना ❀ धरै हृदय अग्यान समाना ॥

दोहा—निज सुभाव मैं कहेउँ कछु, अन्तरंग वहिरंग ।
तजि सियवर नाचत फिरौं, करि जड़ माया संग ॥२७॥

बाहिर और और उर माँहीं ❀ स्वारथ रत परमारथ नांहीं ॥
यहिविधि दुखीदेखि जिउझारी ❀ सिय उर उपजी करुणा भारी ॥
तब निज यक ❀सम्प्रदा उपाई ❀ सहित सनेह सु रमहिं पढ़ाई ॥
सोइ आचारज कीन्ह प्रधाना ❀ महा रमा जेहि वेद बखाना ॥

❀ जथार्थ में यह श्रीसम्प्रदा जीवों के कल्यानार्थ निहेंतु की कृपा करि दया मूर्ति श्रीजानकीजी ने ही प्रगट करी है। इसी कारन से श्रीसम्प्रदा धर्मावलम्बी, श्री सीता इष्ट अपना मानते हैं, इष्ट ही प्रधान गिने जाते हैं, श्रीजानकी मंत्र मानते हैं। श्रीहनूमानजी पारषद हैं, श्री कमला देवी हैं, जो श्रीमिथिलाजी के पूर्व भाग में नदीरूप से वर्तमान हैं। आचार्य्य श्रीमहालक्ष्मीजी श्रीजानकीजी की इच्छा से नियत करीं गई हैं। उन्हीं के (श्री) नाम से सम्प्रदा प्रसिद्ध की गई है। बड़े लोग अपने संबंधियों तथा कर्मचारियों के नाम से बड़े२ इस्टेट कारखाने खोलि देते हैं। जैसे जज्जी कलक्टरी मुन्सिफी, जज्ज कलट्टर मुन्सिफ के नाम से प्रसिद्ध होती है उन्ह कचहरियों को कोई राजाके नाम से बखान कर देइ तौ क्या अनुचित होगा? तैसे श्रीसम्प्रदा को श्री सम्प्रदा कहने में घटी क्या होगी। बल्कि श्री रामानंदी श्री वैश्नवों को तौ श्रीसिया सम्प्रदाय ही कहना चाहिये श्री सम्प्रदाय तौ श्रीरामानुजी वैश्नवों की है। जिन्हि के पारषद श्रीविस्वक सेन वैकुण्ठादि धामहैं। जो अभेद निर्विरोधिनी बुद्धि से विचारें, तौ सर्व वैश्नव एक ही हैं। जब वैश्नव एक हैं तौ श्रीजी में अरु, श्री सियाजी में, भेद लगाउना महा मूर्खताई है, जोई श्री सोई सिया, इति शुभम्।

संसकार तेहि निज कर कीन्हें ❀ आशिरबाद विपुल सिय दीन्हें ॥
ऊर्द्ध सुपुण्ड ललाटहिं पीरे ❀ युगल नाम छापेउ दोउ तीरे ॥
सहित विन्दु श्री अरुण सुहाई ❀ तेहि पर निज चंद्रिका जमाई ॥
दोउदिशिनयननिकटसुमुदरी ❀ छापेउ निजकर सियशुचि उदरी ॥
धनुष बाम भुज दाहिन वाना ❀ छापेउ सीतल केशर साना ॥
कंठी युगल तुलसि की माला ❀ युगल मंत्र श्रुति दीन्ह रसाला ॥
सकल रसनि कर बोध करावा ❀ भली भाँति सब धर्म दृढ़ावा ॥

दोहा—पीत तिलक तस पीत पट, दीन्ह सिखाइ स्वभेद ।
कहेउ जाउ सनमुख सु मम, जीवनि करहु अखेद ॥२८॥

जड़ माया के रूप विमोही ❀ चेतन तेहि लगि पठओं तोही ॥
संसकार करि आतम बोधा ❀ करहु जाइ जीवनि अविरोधा ॥
संसकार ये जो अँग धरिहैं ❀ विनु श्रम सो भवसागर तरिहैं ॥
मोर सम्प्रदा महँ जो अइहैं ❀ पुरुष भाव तजि सो मोहि पइहैं ॥
❀ पुरुष एक मम पति सब नारी ❀ जहँ लगि जीव सकल तनुधारी ॥
पुरुष भाव उर धरि विमुखानी ❀ आतम सहज स्वरूप भुलानी ॥
पुरुष भाव सब कर करि दूरी ❀ सखी भावना दीजै रूरी ॥
सखी भाव विनु मम अँग सेवा ❀ लहहिं न जीव होयँ वरु देवा ॥
मोर अन्श जीवातम नारी ❀ मिथ्या पुरुष वनी मतवारी ॥
मम आयसु तजि वहु मतवादी ❀ वनी सु आतम वादि प्रमादी ॥

दोहा—तेहिकहँ चेत कराय तुम्ह, सन्मुख करहु सु मोर ।
संसकार करि पंच ये, मम कृत बन्दी छोर ॥२९॥

विपुल काल ते भयेउ वियोगा ❀ करवावहु तुम्ह जाय सँयोगा ॥
सेइ मोर पद पियहिं समेता ❀ ऐहैं ममपुर जन साकेता ॥

❀ गोविन्द एव पुरुषो ब्रह्माद्याः स्त्रिय मेव च । पद्मे पातालखंडे ६४ अ०
और भी श्लोक हैं—

जीवातम, मम, मैं, पति मोरे ❀ ये तिहुँ नित्य लखहिं जन थोरे ॥
इन्हते प्रगटेउ अमित स्वरूपा ❀ विरचन विश्व सु खेल अनूपा ॥
सोइ जीवातम पति प्रति कूली ❀ भयेउ विश्व नाटक महँ भूली ॥
तुम्ह सब मोर अन्श अवतारा ❀ मम समान पठवहुँ संसारा ॥
तुमहिं न व्यापहि मोर सुमाया ❀ मोहेउ जेहि जग जीव निकाया ॥
ब्रह्म, जीव. मैं, ये तिहुँ रूपा ❀ एक अनादि अखंड अनूपा ॥
यही विशिष्टा द्वैत कहावत ❀ त्रिधा रूप नित सत श्रुति गावत ॥
द्वैताद्वैत अरूप बखानत ❀ ब्रह्महिं ते न यथारथ जानत ॥

दोहा—यह सु विशिष्टाद्वैत मत, मोर सम्प्रदा केर ।
सत्य सनातन जानि जिय, आराधहिं जन ढेर ॥३०॥

येहि विधि आशिष दीन सिख, सखि गन संग अपार ।
महारमा साकेत ते, पठयेउ सिय संसार ॥ ३१ ॥

जग जीवनि कल्याण हित, ते सब धरि बहु रूप ।
सियजू कृत श्री संप्रदा, कीन्ह प्रचार अनूप ॥ ३२ ॥

भयेउ अहहिं आचार्य्य बहु, सिय सु संप्रदा माँहिं ।
सखिनि के सु अवतार सब, नारि पुरुष जग आँहिं ।३३।

श्री सियराम उपास्य दोउ, जीव उपासक रूप ।
यहि कहँ कहत उपासना, अचल अनादि अनूप ॥३४॥

जबते श्री सियराम दोउ, तीसर जीव सुजान ।
तब ते यह सु उपासना, गावत बेद पुरान ॥३५॥

यह प्रसंग कर भाव अरु, औरहु भेद समेत ।
आगे केर प्रसंग महँ, समझौ सुजन सचेत ॥३६॥

जीवात्मास्वरूप वर्णन ।

पद ।

हम हम करति बिसरि निज भरता ॥ टेक ॥

भूत प्रेत पूजन में पागी, नाना मत साधै सुख लागी ।
एकै त्यागि विपुल सँग रागी, रही प्रथम पतिवरता ॥ १ ॥
झूठे पुरुष नपुंसक नारी, झूठा जग नाते संसारी ।
तिन्हिमें अरुझि भई दुखियारी,आतम बनि निज करता ॥ २ ॥
जड़ चेतन मय सकल पदारथ, तिन्हिमें चेतन सक्ति यथारथ ॥
व्यापेउ आइ करन पुरुषारथ, धारि हिये अनुचरता ॥ ३ ॥
भई अचेतन करि जड़ साथा, भूलि गई निज पति रघुनाथा ।
समुझति अब न सुनति सुचि गाथा,गहेउ कठिन उर नरता ॥४॥
हाड़ चाम की नस्वर काया, तामें बैठि सु प्रभु बिसराया ।
मिथ्या ममता मोह बढ़ाया, त्रिविधि ताप तनु जरता ॥ ५ ॥
बाहिर भीतर माया जानों, विद्या अपर अविद्यामानों ।
पुरुष एक श्री राम बखानों, जो न जनमता मरता ॥ ६ ॥
नारि वर्ग जहँ लगि तनुधारी, जड़ चेतन मय रचना सारी ।
प्रेरक पुरुष राम औतारी, जग पालक संहरता ॥ ७ ॥
जहँ लगि सृष्टि दृष्टि में आवै, माया सो प्रभु केरि कहावै ।
पुरुष रूप जो ताहि बतावै, सो नर कनि में परता ॥ ८ ॥
आत्म सक्ति तिय परम सयानी, देह अविद्या रूप बखानी ।
पुरुष कहहिं केहि कहँ अग्यानी, सो नहिं भेद उघरता ॥ ९ ॥
ममता मद पी भई दिमानी, आत्मसक्ति नर बनी अयानी ।
सबकी सब विधि मति बउरानी, विमल न ग्यान उछरता ॥१०॥
पिता पुत्र कोउ दास सखादी, बनि झगरहिं जग जन बहु बादी ।
आतम सक्ति सरूप अनादी, भूलेउ भरम न टरता ॥ ११ ॥

रटै सदा सियराम सुनामा, लखै स्व आतम रूप ललामा।
रीझैं तब प्रभु पूरन कामा, प्रेमलता फल फरता ॥ १२ ॥

आतम मेरो नाम मैं तौ राम की दुलहिया ॥ टेक ॥ ॥ २ ॥
मेरे पति की प्रीति अपारी, मोपै कबहूँ करत न न्यारी।
मैं तिन्हि त्यागि भई मतवारी, ओढ़ी कपट कुलहिया ॥ १ ॥
जब ते ये नरवर तन पाये, तब ते नाना नाम धराये।
झूठे नाते नेह बढ़ाये, प्रभुते मिटी सुलहिया ॥ २ ॥
जाति कर्म वर्णा श्रम धर्मा, धरेउ सीस आतम परि भर्मा।
ऐसी परी नीचता गर्मा, बनि गइ डोम जुलहिया ॥ ३ ॥
त्रिजग योनि धरि विविधि सरीरा, जनमति मरति स हति बहुपीरा।
बिसरेउ ग्यान सुपति रघुबीरा अहमित अधिक उलहिया ॥४॥
दई मोह बस प्रभु सन पीठी, मीठी रही भई सो सीठी।
को में हर्ता गई सो दीठी, फूँकन लगी चुलहिया ॥ ५ ॥
नरता धरि उर नरकनि जावै, आतम सोइ प्रभु विमुख कहावै।
प्रेमलता टुक चेत न आवै, भयेउ सुबुद्धि लुलहिया ॥ ६ ॥

आतम अनेक दुख पावै तजि बलमा ॥ टेक ॥ ३ ॥
पढ़ें सुनें नित वेद पुराना, को मैं प्रभु को सो नहिं जाना।
नरता धरि निजरूप भुलाना, परी अविद्या छलमा ॥ १ ॥
कारन अरु सूक्षम अस्थूला, नास मान तिहुँ तन दुख मूला।
तिन्हि बस परि भइ प्रभु प्रति कूला, फसी मोह दल दल मा॥२॥
त्रिगुना तीता तीत सरूपा, महा सक्ति सुख रूप अनूपा।
बिसरि परी जड़ सँग भव कूपा, सनी विषय मद मल मा॥३॥
जो तनु धरै बनें सोइ सोई, जड़ सँग मिलि चेतनता खोई।
बिपति वेलि निज हाथनि बोई, जरि रहि अहं अनल मा ॥ ४ ॥

जड़ चेतन की गाँठी भारी, परी कठिन नहिं छूटन हारी।
बनी नारि ते पुरुष अनारी, पाथर परे अकल मा ॥ ५ ॥
जस चेला तस गुरू गँमारा, आतम ज्ञान न विमल विचारा।
हम हम करत फसे संसारा, उभय मीन जिमि जल मा ॥ ६ ॥
रघुपति रूप मिलैं गुरु पूरा, करैं हिये को तम सब दूरा।
होइ प्रकाश लखै निज नूरा नसै पुरुष पन पल मा ॥ ७ ॥
प्रेमलता पूरे गुरु पाये, निज पर रूप सु नाम लखाये।
संशय शोक समूल नसाये, निवसि मोर उर थल मा ॥ ८ ॥

कुण्डलिया।

जागै आतम हृदय जब, पागै प्रभु पद प्रेम।
भागै सब जग वासना, रटै नाम दृढ़ नेम॥
रटै नाम दृढ़ नेम छेम तव सब विधि पावै।
युगल उपासक विमल मिलै गुरु भेद बतावै॥
दरसै उर सियराम रूप तेहिं महँ मन लागै।
प्रेमलता नर भाव नसै जड़ भव निशि जागै॥

दोहा—पुनि २ समुझै गुनै उर, वैठि यकंत सुठाम।
सतगुरु सन सु उपासना, रटि सिय राम ललाम॥३७॥
यह उपासना भेद तव, बूझहुगे कछुभाय।
जेहि बिनु जन पावत नहीं, प्रभु पद सद सुखदाय॥३८॥
श्री सियराम उपासना, जानहिं रसिक सुजान।
झगरहिं बादी विपुलजग, पढ़ि. पढ़ि बेद पुरान॥३९॥
यद्यपि अमित उपासना, अमित उपासक लोग।
पर सिय राम उपासना, नहिं कोउ तेहि के जोग॥४०॥

रटि सियराम सुनाम कछु, भाषेउ मति अनुसार ।
सुनि समुझहिं श्री रसिक जन, जिन्हि कर विमल विचार
सप्तम सुभग प्रसंग महँ, कहहुँ उपासक भेद ।
पढ़त सुनत समुझत हृदय, हुइहै अवसि अखेद ॥४२॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नामध्वनि प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्रीसियालाल शरण जी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत श्री उपासना षष्टम् प्रसंग वर्णनम् शुभम् ॥ ६ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

श्रीउपासकप्रसंगारम्भः ॥७॥

दोहा ।

सिय आयसु धरि शीस सब, रमा आदि जग आय ।
किये जीव सनमुख विपुल आचारज पद पाय ॥१॥
कारज हित नर तन धरेउ, सिया अलिनि जग माँहिं ।
अन्तर शक्ति सरूप निज, झल झल झल झल काँहिं ॥२॥
चहुँयुग प्रगटत आयेऊ, आचारज अलि रूप ।
शिव सनकादि अगस्त विधि, नारदादि मनु भूप ॥३॥
स्वयं रूपहू अवतरीं, जहँ तहँ शक्ति अपार ।
उपदेशहिं सु उपासना, जीवनि तजि संसार ॥४॥
सम्प्रदाय रक्षा करैं, चहुँ युग धरि बहु रूप ।
सिय प्रेरित आचार्य ये, सब विधि सकल अनूप ॥५॥

आचारजनि सम्प्रदा प्यारी ❀ सिय कृत तीनिहुँ लोक प्रचारी ॥
नारद शिव सनकादि अशोका ❀ विचरत फिरहिं सदा तिहुँ लोका ॥
संसकार करि आतम ज्ञाना ❀ उपदेशहिं जीवन विधि नाना ॥
बेद पुरान संहिता नाना ❀ रचि प्रगटेउ बहु ग्रन्थ सुजाना ॥
पढ़त सुनत समुझत समुझावत ❀ श्री सियराम तत्व जन पावत ॥
एकनि एक पढ़ावत आये ❀ आचारज युग युगनि सुहाये ॥
प्रथम युगनि जीवनि के ज्ञाना ❀ रहेउ विमल गत छल मद माना ॥
खोजि खोजि एकनि सन एका ❀ सुनत रहेउ प्रभु चरित अनेका ॥
कलि काली जन मनमुख भयेऊ ❀ तन सुखरत आतम सुख गयेऊ ॥

गुरू न करहिं बने गुरु आपू ❀ निसिदिन मूढ़ जरहिं त्रय तापू ॥
दोहा—सतयुग त्रेता द्वापर, एक ते एक अनूप ।
श्री सियराम उपासक, रहेउ विज्ञ प्रभुरूप ॥६॥
सतयुग सुद्ध सात्वकी लोगा ❀ होत रहेउ विनु जप तप जोगा ॥
प्रह्लादादि सु राम उपासक ❀ भयेउ प्रबल भव बन्धन नाशक ॥
दानव देव मनुज मुनि झारी ❀ भजहिं राम सिय सब नर नारी ॥
त्रेता सब सिय राम उपासी ❀ भयेउ जीव जग कीर्ति प्रकासी ॥
तनते दास सखादिक भाऊ ❀ मनते पति जानहिं रघुराऊ ॥
सियनिज स्वामिनि सब सुखदानी ❀ सेवहिं चरण कमल असजानी ॥
पुरुष शरीर आतमा नारी ❀ कहहिं उपासक विमल विचारी ॥
जीवातमा पुरुष नहिं होई ❀ सबके घट घट व्यापी जोई ॥
जब लगि आतम रूप न जाना ❀ तबलगि जीव न प्रभु पहिंचाना ॥
निज सरूप जब आतम जानें ❀ रस मय प्रभुहिं सु तब पहिचानें ॥

दोहा—श्री रसराज शृँङ्गार शुचि, वातसल्य अरु दास ।
सख्य, सान्ति, पाँचहु, सुरस, सियवर मूर्ति सुखास ॥७॥
पाँचहु रस रसिकनि सुखदाई ❀ निवसहिं प्रभु के अङ्गनि भाई ॥
चरण कमल आश्रित रस दासा ❀ बातसल्य रस उदर निवासा ॥
सख्य भुजा मुख श्री शृङ्गारा ❀ सान्ति सवनि महँ करत विहारा ॥
रस मय मूर्ति राम सुखरासी ❀ जानहिं रसिक अनन्य उपासी ॥
सब के राम उपास्य सु देवक ❀ सकल उपासक प्रभु पद सेवक ॥
विविधि रूप धरि आतम प्यारी ❀ सेवत प्रभु पद प्रीति अपारी ॥
जीवातमा लखन सिय अन्सा ❀ निर्मल हृदय ग्यान जिमि हंसा ॥
आत्म सक्ति सोइ अरु जड़ माया ❀ दोउ मिलि जग नाटक निर्माया ॥
जड़ माया नाना तन धरई ❀ चेतन तिन्हि महँ वास सुकरई ॥
जड़ चेतन दोउ माया रूपा ❀ सिय सियवर की सक्ति अनूपा ॥

दोहा-नारि वर्ग माया सु दोउ, जड़ चेतन गुन धाम।
नर तिय तनु धरि रचहिं जग, रिझवहिं प्रीतम राम॥८॥

सेवहिं पति व्रत पति प्रद कामहिं ❀ तिमि आतम निजप्रभु सुखधामहिं॥
नर तन केवलि कारज हेतू ❀ भीतर सक्ति सु बसै सचेतू॥
नर अथवा नारी तनु धरई ❀ आतम एक चरित बहु करई॥
आतम प्राकृत पुरुष न नारी ❀ नहिं कोउ आश्रम वर्ण मझारी॥
खट विकार त्रय गुण ते पारा ❀ जीवातम स्वरूप शुचि सारा॥
सर्व सक्ति जीवातम बीचा ❀ देह बुद्धि उर धरि भइ नीचा॥
कृपापात्र सिय रघुवर केरी ❀ भूलि भई जड़ माया चेरी॥
पंच तत्व की यह जड़ काया ❀ नर तिय कर दोउ विरचेउ माया॥
तेहि महँ राखेउ दस दरवाजे ❀ तिन्हि पर दश देवता विराजे॥
दशो द्वार दश इन्द्रीं सोई ❀ जड़ चेतन जानत सब कोई॥

दोहा-इन्द्रिनि के दश विषय पुनि, प्रकृति पचीस पसार।
अन्तष्करण चतुष्ट पुनि, मन बुधि चित अहँकार॥९॥

ये सब प्रबल अविद्या केरा ❀ दुख सुख प्रद परिवार घनेरा॥
नारी चक्कर कोठा बानी ❀ ठाम ठाम सोहत सुख दानी॥
नर तन की सुखमा रचनाई ❀ देखत बने बरणि नहिं जाई॥
काया गढ़ यहि कहँ सब कोई ❀ कहत रचेउ जड़ माया सोई॥
तेहि गढ़ महँ जीवातम वासा ❀ करै तजै तब होइ विनाशा॥
आतम अमर नाश गढ़ होई ❀ गढ़ ते भिन्न आतमा सोई॥
जिमिनृप सदनविरचि मन भाये ❀ वास करै कछु काल सुहाये॥
गढ़ महँ बैठि राज के काजा ❀ करै सहित निज सेन समाजा॥
आप विलग गढ़ते नृप सोई ❀ तजत गढ़हिं लखि कुसमय कोई॥
तिमि आतम नहिं यह जड़ काया ❀ नाशमान निरमायेउ माया॥
जो नृप बने आपही गेहा ❀ पावै दुख नहिं कछु संदेहा॥

दोहा—आतम विसरि सु रूप निज, धारेउ तन अभिमान ।
तेहि लगि सियवर ते भई, विमुख विवश अज्ञान ॥१०॥

नृप इव सदन बुद्धि उर आई ❀ आतम चेतनता सु नसाई ॥
हम हम करति होइ ग्रह रूपा ❀ सहन लगी दुख परि भव कूपा ॥
हृदय म्यान गत जड़ बुधि आनी ❀ आतम भइ नर तन अभिमानी ॥
नारिकेल फल सम यह देही ❀ भीतर गरी भरी रस तेही ॥
पुनि बदाम छिलका सम काया ❀ भीतर मिगी सुलच्छ दिखाया ॥
अगणित वस्तु खोखलनि माँहीं ❀ राखीं प्रभु जानत कोउ नाँहीं ॥
देह खोखला सम सब केरी ❀ भीतर शक्ति बसै प्रभु चेरी ॥
म्यान समान सकल तन भाई ❀ भीतर असि सम शक्ति समाई ॥
श्री सिय अन्श सु सखी सरूपा ❀ नाम सु जीवातमा अनूपा ॥
विसरि रूप सो यह जड़ देहा ❀ मान लीन आतम निज गेहा ॥

दोहा—आत्मज्ञान जबलगि न उर, तबलगि भगति सु भाव ।
श्रमप्रद जिमि भुस कूटिबो, लरिकन कैसो दाव ॥११॥

आतम सेवा की अधिकारिनि ❀ श्री सिय राम सु संग विहारिनि ॥
चतुर उपासक आतम ज्ञाना ❀ तजत न तन पायेउ मरदाना ॥
❀पुरुष एक अखंड श्री सियवर ❀ नारि वर्ग सब जीव चराचर ॥

❀ अथर्व संहितायाँ ४ कांडे २ सूक्ते ७ मंत्रे हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् । स द धार पृथ्वी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ १ ॥ पुरुष एक श्रीरामजी हैं । सर्व जीवात्मा उनकी सेविका हैं । प्रमाण-पद्मपुराणे पातालखण्डे ६४ अध्याय- श्री राम एव पुरुषो ब्रह्माद्या स्त्रिय मेव च । सर्वे देवाः प्राकृतिकः यावन्ती मूर्ति धारिणः ॥ १ ॥ अहमात्मा नित्य देही भक्त ध्याना नुरोधितः ॥ इससे भी एक परम पुरुष परमात्मा ही ठहरे, अपर सर्वात्मा उसकी सक्ति रूपा स्त्री हैं । विष्णु पुराणे स्वयंहि बहवो भूत्वा रमणार्थ सहास्रसः । तयति रमया रेमे प्रियया बहु रूपया ॥ अनेक रूप धारण करि प्रभु अपनी प्यारीं आत्मों के साथ रमण करते हैं । आत्मा

अस विचारजिन्हिके मनमाँहीं ❀ ते जन प्रभु प्रिय संशय नाँही ॥
तिय स्वरूप निज ठीक विचारै ❀ पुरुष भाव अज्ञान निवारै ॥
तव सु उपासक दम्पति सेवा ❀ पावै जो न लहहिं मुनि देवा ॥
आत्म ज्ञान बिनु भामिनि भाऊ ❀ पावहिं जीव न कोटि उपाऊ ॥
विनु तियभावसुसियअँगसोऊ ❀ परसि न सकत उपासक कोऊ ॥
सिय सेवा बिन राम न रीझत ❀ कोटिन भजन करै तउ खीझत ॥
प्रान सजीवन प्रभु की सीया ❀ बसत सिया उर सिय पिय हीया ॥

दोहा—सिय विनु द्रवत न राम तिमि, रघुपति बिनु नहिं सीय ।
अस विचारि सियराम जन, सेवहिं भाव सुतीय ॥१२॥

युगल उपासक जो सिय वर के ❀ मुकुट मनी सो सुर मुनि नर के ॥
युगलहि भजै उपासक सोई ❀ उर ते पुरुष भावना खोई ॥
युगल मंत्र गायत्री धामा ❀ युगल धाम युग नाम ललामा ॥
युगल भावना युग सरणागति ❀ युगल कृपा अभिलाष युगल नति ॥
युगल चरित्र सु प्रद अहलादा ❀ पढ़ै सुनै नित हरण बिषादा ॥
युगल प्रसाद पाय हरषावै ❀ युगल स्वरूप सु हृदय वसावै ॥
युगल अस्तुती युग परिकर्मा ❀ सेवहिं युगल स्वरूप सधर्मा ॥
युगल माधुरी के रस रंगा ❀ रँगे करिय तिन्हि केर सु संगा ॥

प्रभु में रमण करती हैं। रमन्ते योगिनः यस्मिन। आत्मा नाना रूप धारण करि प्रभुकी सम्पूर्ण लीलों में काम देती हैं। तथापि अपने खास शक्ति सखी स्वरूप से दम्पति श्री सीताराम जी महाराज की महली सेवा में आठो पहर अखण्ड उपस्थित रहकर युगल सरकार को परमानन्द दिया करती हैं। इस स्वरूप को भूल जाने परही अहं पुरुषः ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यः सूद्रोहं करि नानात्व में परि प्रभु सेवा से प्रतिकूल हो अनेक योनियों के दुखोंःका जन्मि २ अनुभव किया करतीं हैं। यही अज्ञान है। प्रभुहि कृपा करि आत्म ज्ञाता श्री सतगुरु मिलावें, तव ये संश्रुतिचक्र ते जीवात्मा छुटकारा पाय सुखी होय इति—

जिन्हि के उर सियराम सुहोई ❀ वसत उपासक साँचे सोई ।।
दोहा—युगल उपासक चरण की, जे सिर धारहिं धूरि ।
तिन्हि कहँ दशहू दिशि कुशल, नशहिं अमंगल भूरि।।१३।।
चितवनि हँसनि सु दंपति केरी ❀ लखहिं उपासक सब सुख ढेरी ।।
युगल उपासक आनँद रासी ❀ श्री सियराम स्वरूप बिलासी ।।
कर्म धर्म साधन सुखकारी ❀ करहिं युगल सम्बन्ध विचारी ।।
बहुमत बादी पंथनि बारे ❀ त्रिपुल भरे जग झगरन हारे ।।
युगळ उपासक दुर्लभ भाई ❀ जिन्हि उर निवसत सिय रघुराई ।।
युगल उपासक चरण सु सेवा ❀ कोटि काम धुक सम सुख देवा ।।
जिन्हि के मन दम्पति सियरामा ❀ बसहिं निरंतर सब सुखधामा ।।
तिन्हि कर संग रंग सेवकाई ❀ कोटि कल्प तरु सम सुखदाई ।।
त्रिगुणातीत बचन वर करणी ❀ युगल उपासक की श्रुति बरणी ।।
युगल उपासक कर उपदेशा ❀ जन्म मरण भ्रम हरण कलेशा ।।
युगल उपासक जो गुरु करहीं ❀ सोजनश्रमबिनुभवनिधि तरहीं ।।
दोहा—मन क्रम वचन विकार तजि, सेवहिं जे सिय राम ।
तिन्हि की सेवा करहिं जे, पावहिं ते मन काम ।।१४।।
युगल उपासक साँचे सोई ❀ जिनिके आन आस नहिं होई ।।
अगणित युगल उपासक वञ्चक ❀ बने फिरत उर भाव न रञ्चक ।।
कहनि रहनि चितवनि आचरणी ❀ कुटिल कठोर कपट मय करणी ।।
हृदय काग तन वेष मराला ❀ लालच लोभ ग्रसेउ तन पाला ।।
माँगहिं भीख बेचि प्रभु नामा ❀ जेहि तेहि भाँति बटोरहिं दामा ।।
परमारथ हित माँगहिं धाना ❀ घूमि घूमि घर घर कथि ज्ञाना ।।
बेचि सु अन्न करहिं व्यवहारा ❀ रचहिं भवन पालहिं परिवारा ।।
ब्याज कमाय बढ़ावत दामा ❀ सेवत नहिं प्रभु सन्त ललामा ।।
निज तन तोषत तजि यम त्राशा ❀ करत सदा जीवनि की आशा ।।

दोहा—विमल विचार विवेक बर, रहित शील संतोस।
बानो बाँधि सुबाघ को, करनी जिमि खरगोस ॥१५॥

पढ़ि सुनि जहँ तहँ कछु रस भेदा ❀ बनेउ रसिक बंचक प्रद खेदा ॥
शृङ्गारादि पंच रस रूपा ❀ सेवा भाव बिभेद अनूपा ॥
रङ्ग अवस्था रस अस्थाई ❀ रीति रहस अधिकार सहाई ॥
पाँचउ रसमय सिय बर अङ्गा ❀ जानहिं नकली यह न प्रसङ्गा ॥
कवन अङ्ग राजत रस केही ❀ बंचक जानत भेद न तेही ॥
पांचौ रस के रसिकनि सेवा ❀ कहा कहाँ लगि जान न भेवा ॥
जब प्रभु सैनागार सिधावत ❀ सखा दास तहँ जान न पावत ॥
पच्छपात नहिं हठ को कामा ❀ पुरुष न ज़ात रमत जहँ रामा ॥
महलनि महँ अधिकार सु एका ❀ आलिनि कर समुझौ तजि टेका ॥
सब रस रसिक सखी तन धारहिं ❀ प्रविसि तहाँ रसकेलि निहारहिं ॥
पति पतनी. सम्बन्ध प्रधाना ❀ तेहि महँ सब रस गौन बखाना ॥

दोहा—जानहिं हर हनुमान विधि, घटज नारद सनकादि।
स्वादी जे रसकेलि के, भाषहिं सब रस बादि ॥१६॥

जन्म दरिद्रिनि नृप सुख जैसे ❀ दुरलभ अबुधनि यह रस तैसे ॥
अनरस वादी जे हठ सीला ❀ लखि न सकहिं ते यह रस लीला ॥
रासकेलि दम्पति पिय प्यारी ❀ करत लखत केवल शृङ्गारी ॥
सब रस धरि धरि नारि सरूपा ❀ निरखहिं रास बिहार अनूपा ॥
येहिसुखविमुख रसिक सो नाँहीं ❀ कहेउ सम्भु कुम्भज रिषि पाँहीं ॥
दासनि सिव हनुमान प्रधाना ❀ सखनि मध्य विष्णू भगवाना ॥
वातसल्य रस के बिधि ज्ञाता ❀ शान्तिरसिक मुनिगण बिख्याता ॥
ते सब सुन्दर तिय तन धारी ❀ सेवहिं मन बच क्रम पिय प्यारी ॥
नर बपु धरि बाहिर के काजा ❀ करि सेवहिं सब सिय रघुराजा ॥
दास सखादि भाव तब धरहीं ❀ प्रभुरुख लखि सब कारज करहीं ॥

दोहा—अमित रूप धरि रस रसिक, सेवहिं समय विचारि ।
सिय रघुबरहिं सप्रेम सब, सखीभाव उरधारि ॥१७॥

आत्म ग्यान गत जड़ नर भावहिं ❀ धरियक निज सेवहु बिसरावहिं ॥
दम्पति सेवा सब सुख दाता ❀ नर वनि तजै आत्म अग्याता ॥
नर तिय भाव उभय धरि हीया ❀ सेवहिं चतुर रसिक सिय पीया ॥
सिय शृङ्गार मूर्ति श्रुति गाई ❀ तेहि के हृदय वसत रघुराई ॥
सिय में राम राम में सीया ❀ बसत एक एकनि के हीया ॥
राम रहत सिय के आधीना ❀ सिय न रहत कहुँ राम विहीना ॥
सिय के राम राम सिय प्राना ❀ छनहुँ न बिछुरत कहहिं सुजाना ॥
सब रस रसिक राम आधीना ❀ राम सियावशजिमिजल मीना ॥
सिय शृङ्गार सु मूरति माँहीं ❀ सब रसभरे लखत कोउ नाँहीं ॥
चतुर उपासक जे रस ज्ञाता ❀ नारिभाव रत तजि भ्रम त्राता ॥
सकल भावना सहित *सुनारी ❀ सेवति पतिहिं सु समय बिचारी ॥

दोहा—एकै साधि सु साधहीं, सकल रसन के धर्म ।
चतुर उपासक यतन करि, वंचक भूले भर्म ॥१८॥

सब रस मत लखि सेमर फूला ❀ तजहिं चतुर जो प्रभु अनुकूला ॥
सखी भाव लहि केलि निहारहिं ❀ तेहि सुख ऊपर सब सुख वारहिं ॥
बातसल्य सख्यादिक दासा ❀ पत्नी महँ सब करत निवासा ॥
जब तिय पतिहिं सुअशन पवावै ❀ निजकर परसि सु प्रेम बढ़ावै ॥
मृदुल बचन कहि पुनि २ परसै ❀ वातसल्य रस तेहि छण सरसै ॥
जब कछु करै साहिता नारी ❀ सख्य भाव प्रगटत सुखकारी ॥
सेवा समय सुखद रस दासा ❀ सयन समय शृङ्गार सु खासा ॥
येहिविधिसबरसकीअधिकारिनि❀ पतिहिं सुखद पतनी ब्रत धारिनि ॥

*कार्येषु मंत्री करणे षु दासी धर्मेषु पत्नी क्षमयाच धात्री ।
स्नेहेषु माता सयने षु भार्या रंगे सखी लक्षणा सा प्रियामे ॥ (नाटके)

नारि भाव शुचि सब रस खानी ❀ अस विचारि उर धारहिं ज्ञानी ॥
अर्धाङ्गिनि पति की तिय होई ❀ वरणत श्रुति जानत सब कोई ॥
सब रस खानि सुपत्नी भाई ❀ सब विधि सदा पतिहि सुखदाई ॥
दोहा—अपर रसनि महँ जात नहिं, यह तिय भाव सुखयन ।
मन क्रम वचन सुपतिहि जो, सब विधि सिधि सुख दयन ॥ १६ ॥
आत्म निवेदन करि शिर साथा ❀ मन बच कर्म बिकै पति हाथा ॥
सबविधिसुखदपतिहिंअतिप्यारी ❀ होत कबहुँ करि सकत न न्यारी ॥
प्रानहुँ ते अति प्रिय पति केरी ❀ होत सु पत्नी श्रुति कह टेरी ॥
गुरु पितु मातु सुजन सुत भाई ❀ तन धन दास सखा सुखदाई ॥
पत्नी सम प्रिय पतिहिं न कोई ❀ सब जानत यह बात न गोई ॥
गति अनन्य तियकी लखि स्वामी ❀ विकहितासु करसह अनुगामी ॥
प्रिय पत्नी की सुरुचि सप्रीती ❀ पालत पति सु विदित यह रीती ॥
सहित सखा दासादि सनेही ❀ पालहिं पति पत्नी रुचि जेही ॥
पत्निहिं प्रिय जे सखी सहेलीं ❀ धर्म शील सुचि रुचिर नवेलीं ॥
ऊँच नीच कैसिहु कोउ होई ❀ करत विचार न पति कछु सोई ॥
दोहा—तिन्हि के रहत अधीन नित, प्रिया सनेह निहारि ।
करहिं यदपि अपराध जो, तदपि सकत नहिं टारि ॥ २० ॥
पति पतिनिहिं निज अङ्ग समाना ❀ प्रिय लागहिं सब सखींसुजाना ॥
सकल अङ्ग सेवा सुख लेहीं ❀ पति पद अरपि अपन पौ देहीं ॥
उबटनादि मज्जन शृङ्गारा ❀ करहिं सकल निजकर व्योहारा ॥
पति पत्निहिं सम तिन्हिकर भाऊ ❀ सेवहिं सकल अङ्ग सहचाऊ ॥
कवनिहुँ अङ्ग दुरावत नाँहीं ❀ श्री सियराम सुआलिनि पाँहीं ॥
करहिं जहाँ दम्पति रस भोगा ❀ होतन तिन्हिकर तहँहुँ वियोगा ॥
आलिनि के सुख अकथ अनूपा ❀ सेवहिं सब विधि युगल सरूपा ॥
प्राकृत मिश भाखी पर गाथा ❀ येहिविधिविहरतसियरघुनाथा ॥

सखिनि सहित सियराम कृपाला ❀ करत चरित नित नवल रसाला ॥
बड़ भागिनि अलिमिलिसियसंगा ❀ निरखहिं दम्पति चरित अभंगा॥

दोहा-पुरुष एक श्रीराम तहँ, पतिनी सिय सविवेक ।
बिहरहिं सखिगन मध्यदोउ, करत सुचरित अनेक॥२१॥

सपनेउँ पुरुष भावना वारे ❀ करत न तहाँ प्रवेश विचारे ॥
पुरुष भाव उर धारि कठोरा ❀ लखिनसकहिंततसुखरसबोरा ॥
कनक भवन साकेत मझारी ❀ बन प्रमोद अनुपम फुलवारी ॥
करहिं विहार जहाँ पिय प्यारी ❀ सिय रघुनन्दन गर भुज डारी ॥
गुप्तस्थल वहु बने सुहाये ❀ अनुपम अकथ जात नहिंगाये ॥
गुप्त सु रहस अलिनि सुखदाई ❀ करत सदा जहँ सिय रघुराई ॥
अमरनि हूं की गति तहँ नाँहीं ❀ अपर जीव केहि लेखे माँहीं ॥
पुरुष भाव जिन्हि मन में धारा ❀ तिन्हिकहँ दुर्लभ युगलबिहारा ॥
कोटिन जन्म करैं जप तप किन ❀ लहहिंनयहसुखनारिभावविन ॥
पढ़हिं पुरान सास्त्र वरु बेदा ❀ पुरुष न पावहिं यह रस भेदा ॥

दो-अधिकारिनि तहँ की अलीं, रलीं युगल रसकेलि ।
लपटि रहीं दम्पति चरण, जिमि तरुवरनि सुबेलि॥२२॥

नवधा भक्ति सुखट शरणागति ❀ खट सम्पति वैराग ज्ञान रति ॥
दशधा प्रेमा परा योग सिधि ❀ःखटप्रयोगऋधिसिधिसेवाबिधि॥
हाव भाव नव खट रस भेदा ❀ अनुभवादि गुण अमल अखेदा ॥
उभय लोक गति श्रुति नृप नीती ❀ कर्म ज्ञान उपासना रीती ॥
सिया अलीं सब गुण गण आकर❀ तिन्हि के योग न जीव चराचर ॥
सब गुण प्रद आचारज आलीं ❀ दम्पति सुख सनेह प्रति पालीं ॥
सिया अलिनि के सेवत पद सद ❀ पावहिं सर्व सिद्धिजन श्रुतिबद ॥
सर्व शक्ति सिय आलिनि माँहीं ❀ःतिन्हिसमंप्रियरामहिंकोउनाँहीं॥
श्री सियराम सरिस प्रभुताई ❀ आलिनिकी कछु बरनि न जाई ॥

सरबस अरपन करि प्रभु हाथा ❀ बिहरहिं अभय सदा सब साथा॥

दोहा—आत्म समर्पी जीव सब, प्रभु प्रिय नारि सरूप।
धरि सेवहिं सियराम पद, लखि नित चरित अनूप॥२३॥

सिय स्वामिनि स्वामी रघुनाथा ❀ तिन्हें निवेदेउ आतम माथा॥
पति पतनी सम्बन्ध बिहाई ❀ आत्म निवेदन होत न भाई॥
अहँ भाव जब लगि न नशावै ❀ तब लगि जीव न प्रभुपद पावै॥
जबलगि यह आतम प्रभु प्यारी ❀ पुरुष भावना उर महँ धारी॥
तबलगि दम्पति अँग सिवकाई ❀ लहहि न कोटिनि करै उपाई॥
आत्म समर्पे विना यथारथ ❀ नशत न पुरुष भावना स्वारथ॥
पुरुष भावना स्वारथ सानी ❀ तेहि लगि ताहि तजहिं विज्ञानी॥
अहं सखा दासादि उचारत ❀ पुरुष भाव प्रथमहिं सो धारत॥
पुरुष भाव सह सिय अँगसेवा ❀ मिलै न जीवनि सब सुख देवा॥

दोहा—सिय सेवा विनु जनन पर, सपनेहुँ द्रवत न राम।
राम द्रवे विनु भाव सब, श्रम दायक दुख धाम॥२४॥

अस बिचारि बुध आतम अरपी ❀ मिलहिंप्रभुहिं जिमि दूधहिंसरपी॥
आतम निवेदन जब सु यथारथ ❀ होत लहहिं जन पर परमारथ॥
नारि भाव विनु आत्म समर्पन ❀ होइ न बिधिवत कहहिं सन्त जन॥
पुरुष भाव सब भावनि माँहीं ❀ परदा परेउ लखत कोउ नाँहीं॥
आत्म निवेदन केहि विधि होई ❀ अहं भाव बिनशे विनु सोई॥
नरता नारि भाव लहि नाशै ❀ तब निज आतम रूप प्रकाशै॥
निज स्वरूप जब परै लखाई ❀ अहं भाव नाशै दुख दाई॥
तब करि आतम प्रभुहिं समर्पन ❀ सेवहिं नारि भाव धरि निज मन॥
तहँ न लाज परदा कोउ रहहीं ❀ हुइ अनन्य सेवा सुख लहहीं॥
लज्जा पट जब लगि दुखदाई ❀ फटत न तबलगि सुख नहिं भाई॥

दोहा—तन मन बचन सुकर्म ते, अन्तर रहहि न कोय ।
सेवक सेव्य स्वरूप महँ, आत्म समर्पन सोय ॥२५॥

अति अनन्यता येहि कहँ कहहीं ❀ जेहि बिनु जीव न प्रभु पद लहहीं ॥
सेवक सेव्य सु एकाकारा ❀ होइ लखै तव युगल विहारा ॥
नारि भाव बिनु यह सुख दूरी ❀ साधि मरिय वरु साधन भूरी ॥
अमित भाव रस साधन धर्मा ❀ नारि भाव सम नहिं प्रद नर्मा ॥
दम्पति सेवा सुख अधिकारी ❀ होत न अन्य भाव उर धारी ॥
पक्षपात की बात न कोई ❀ युगलहिं भजै उपासक सोई ॥
जिमिकोउ दाहिन अङ्ग सिंगारा ❀ करै वाम अँग राखि उघारा ॥
तिमिसिय बिनुरघुपति सिवकाई ❀ सिय सेवा पुनि राम बिहाई ॥
दाहिन वाम अङ्ग सम दोऊ ❀ श्री सियराम एक लखि सोऊ ॥
तिन्हि महँ जे जानहि बपु भेदा ❀ सहहिं ते अज्ञ सदा भव खेदा ॥
सिय रामहिं महँ भेदीं भेदा ❀ मूढ़ निरूपि सहहिं भव खेदा ॥

दोहा—अर्ध अंग ते वैर अरु, अर्ध अंग पर प्रेम ।
करहिं कहावहिं अज्ञ ते, मूरख लहहिं न छेम ॥२६॥

सिय बिनु राम राम बिनु सीया ❀ रहिनसकत जिमिपतिबिनुतीया ॥
युगल रूप सुन्दर सुखदाई ❀ श्याम गौर नखशिख छविछाई ॥
युगल उपासक जो सज्ञाना ❀ सेवहिं दोउ दोउ अंग समाना ॥
तत्व एक सिय राम उदारा ❀ भक्तनि हित युग रूप सु धारा ॥
सदहिं नित्य सो युगल सरूपा ❀ सेवत नशत घोर भव कूपा ॥
सिय रघुवरजवजेहि अपनावहिं ❀ तेहि उर आतम रूप लखावहिं ॥
अहँ भाव नरता जड़ नाशा ❀ करैं होइ हिय कृपा प्रकाशा ॥
तब सूझै तिय रूप सु अपना ❀ विसरहिं सकल भावजिमिसपना॥
युगल रूप तव भाव बढ़ाई ❀ सेवत सकल विकार बिहाई ॥
निश्चय भयेउ आतमा केरा ❀ नासेउ नर तन अहं अँधेरा ॥

दोहा—पुरुष एक रघुपति अपर, जड़ चेतन सब जीव ।
नारि रूप यह ज्ञान दृढ़, भयेउ कृपा सिय पीव ॥२७॥

आतम ग्यान हृदय जब आवै ❀ तब न जीव सपनेउँ दुख पावै ॥
नर तन पाइहु आतम ज्ञाना ❀ तजहिं न सज्जन जीव सुजाना ॥
नारि पुरुष कवनिउँ तनु धरहीं ❀ तिय स्वरूप निज सो न बिसरहीं ॥
जिन्हि परकृपा करहिं भगवाना ❀ तिन्हैं लखावहिं आतम ज्ञाना ॥
युगल रूप सेवा अधिकारा ❀ पावहिं जिन्हि तिय भाव सुप्यारा ॥
युगल उपासक मन क्रम बयना ❀ सेवहिं चरण निरखि छबि अयना ॥
बरणों तिन्हिकेकछुक सुलक्षन ❀ सकज्ञ यथारथ कछु प्रतिपक्षन ॥
श्री सियराम युगल अनुरागी ❀ होत उपासक जन बड़भागी ॥
युगल भावना रस मन रंगा ❀ भूलि न करहिं बिजातिनि संगा ॥
युगल भाव वर्द्धक जो गाथा ❀ पढ़हिं सुनहिं भजि सिय रघुनाथा ॥

दोहा—युगल चरण की आस इक, युगल धाम महँ बास ।
रटहिं रटावहिं नाम नित, युगल हरण भव त्रास ॥२८॥

जग प्रपञ्च ते काम न राखत ❀ युगल रहस्य सुधा रस चाखत ॥
करहिं सजातिनि संग निचन्ता ❀ रटहिं बैठि नतु नाम इकन्ता ॥
ढोलक झाँझ बजाय वजाई ❀ करहिं नाम धुनि हिय हरषाई ॥
नांचहिं मगन रँगे प्रभु रंगा ❀ तजेउ बिजातिनि केर कुसंगा ॥
कामादिक मंद दम्भ बिकारा ❀ त्यागि भजहिं सियराम उदारा ॥
इष्ट स्वरूप नाम गुण धामा ❀ जानहिं सबके भेद ललामा ॥
युगल सुभाव ध्यान गुण गाना ❀ करहिं सदा उर आतम ज्ञाना ॥
आंठउ याम भरे अहलादा ❀ रहहिं पाय निज इष्ट प्रसादा ॥
जो कोउ करै सु प्रश्न उपासक ❀ युगल भाव सम्बन्ध प्रकाशक ॥
यथा शक्ति तेहि बोध करावहिं ❀ प्रभु प्रिय हेरि न तत्व दुरावहिं ॥

दोहा–पीत बसन कंठी युगल, पीत सु तिलक लिलार ।
बिन्दु चंद्रिका मुद्रिका, सहित नाम युग सार ॥२९॥

रसिकनि के मुख मंगल रूपा ❀ मधुर मनोहर सुभग अनूपा ॥
मन क्रम बचन मधुर सब करणी ❀ सवहिसुखदरसिकनिआचरणी॥
निशिदिन रहहिं युगल सुख राते ❀ फिरहिंन इत उतजग विललाते ॥
साहन साह बने मन माँहीं ❀ धनिकनि द्वार न याचन जाँहीं ॥
कोटिनि विघन होंइँ एक साथा ❀ तदपि न त्यागहिं सियरघुनाथा ॥
निन्दहिं विमुख जीव जग नाना ❀ करहिं न तिन्हि पर कोप सुजाना॥
प्रभु विमुखनि की दुख मय बानी ❀ धरत न हृदय सु आतम ज्ञानी ॥
नाँचहिं गावहिं निज प्रभु लीला ❀ भाविक भाव भरे सुख शीला ॥
युगल उपासक रशिक शृङ्गारी ❀ झूमत चलहिं सु डगरि मझारी ॥
जिमि गज हंस सिंह मतवारे ❀ चलत अभय तिमि प्रभुके प्यारे॥

दोहा–इष्ट नाम गुण रूप मद, छके रहित भव रोग ।
निरखि तिन्हैं जरि मरहिं खल, हरखहिं सज्जनलोग॥३०॥

कोटिनि करहिं उपाधि दुष्टजन ❀ तदपि न डिगत उपासकदृढ़मन॥
तजहिं न रेक टेक जो धारी ❀ भजन भावना रसिक विचारी ॥
राम सु रज कर रंग सुहावा ❀ प्रीति प्रवर्धक रसिकनि भावा ॥
तेहिरँग महँ रँगि बसन सुधरहीं ❀ उर्द्ध पुण्ड तेहि रज कर करहीं ॥
छापहिं तेहि रज सीतल छापा ❀ धनु वाणादि हरण भव तापा ॥
धरहिं इष्ट सम्बन्धी नामा ❀ शरणसहित तनकरअभिरामा ॥
अन्तर बाहिर युगल सरूपा ❀ सेवहिं भाव समेत अनूपा ॥
लोक वेद डरते नहिं डरहीं ❀ जेहिबिधिप्रभुरीझहिंसोइकरहीं॥
युगल उपासक प्रिय सियवर के ❀ तिन्हि के चरित जांइँनहिंतरके ॥
शेष गणेश न पावहिं पारा ❀ मैं किमि कहौं मलीन विचारा ॥
सर्वोपरि सिय राम उपासक ❀ रसिक सकलपरधामविलासक ॥

दोहा—सर्वोपरि सियराम तिमि, सर्व भाव सिर मौर।
पति पत्नी सम्बन्ध यह, सुखद न जानहिं बौर ॥३१॥
येहिसुख कर जेहि कहँनहिं स्वादा ❀ मिलेउनतिन्हिकरमिटतविखादा॥
मन गुण बाणी पर श्री धामा ❀ विहरहिं जहाँ नित्य सियरामा ॥
तेहि सुखके सु उपासक भोगी ❀ जाँइँ न जहाँ सिद्ध मुनि योगी ॥
पुरुष भावना जो हिय धारे ❀ दास सखादि जदपि प्रभु प्यारे ॥
गुप्त विहार न देखन पावहिं ❀ हठ वश परेउ दूरि पछितावहिं ॥
हनुमदादि शिव धरि अलिरूपा ❀ निरखहिं गुप्त रहस्य अनूपा ॥
अस विचारि जे चतुर उपासी ❀ हठ तजि धरहिं भाव उर दासी ॥
तन ते दास सखादिक भावा ❀ राखहिं उर तिय भाव सु छावा ॥
हनुमत सम नहिं कोउ प्रभु प्यारे ❀ दास सखादि भावना वारे ॥
तिमि सिव भरत लखन सुखरासी ❀ सेवहिं दम्पति पद बनि दासी ॥
दोहा—चारुशिला हनुमान सोइ, शिवसु सुशीला वाम।
चन्द्रकला श्रीभरत पुनि, लखन लछिमना नाम ॥३२॥
यहि विधि सबके द्वै द्वै रूपा ❀ रहत सदा यह भेद अनूपा ॥
नारदादि कुम्भज मुनि ज्ञानी ❀ सेवहिं प्रभु पद पति पहिचानी ॥
नारि सरूप जीव रघु नामा ❀ तेहिते रघुपति नाम ललामा ॥
देखउ ग्रन्थ खोजि सब भाई ❀ जीव मात्र तिय पति रघुराई ॥
सत गुरु बिनु नहिं सूझत सारा ❀ सार हीन झगरत संसारा ॥
विमल विचार हिये जब जागै ❀ निज सरूप तव आतम पागै ॥
तजि अस्थूल देह कर ज्ञाना ❀ आतम तत्व सुलखहिं सुजाना ॥
सोइ पावत प्रभु पद सिवकाई ❀ तजि अस्थूल ज्ञान दुखदाई ॥
जब प्रभु कृपा करैं सुखदानी ❀ मिलैं उपासक आतम ज्ञानी ॥
तिन्हि कर करै संग सिवकाई ❀ मन क्रम बचन छाँड़ि चतुराई ॥
दोहा—गुणातीत तिन्हि के बचन, सुनै सदा मन लाय।

उपजै अनुभव ज्ञान तब, आतम रूप लखाय ॥३३॥

विनु अनुभव निज आतमग्याना ❀ होय न कोटिनि पढ़ै पुराना ॥
आतम ज्ञान न मोल बिकाई ❀ खेतनि में उपजत नहिं भाई ॥
पोथिनि में यद्यपि कथि गावा ❀ समुझि न परै हृदय भ्रम छावा ॥
जबलगि देह बुद्धि नहिं नाशै ❀ तब लगि आतम रूप न भाशै ॥
पोथी पढ़ि पढ़ि जन्म नशावत ❀ लाखनि आत्म तत्व नहिं पावत ॥
आतम तत्व न पंडित जानें ❀ अर्थ बाद महँ जो अरुझानें ॥
आतम नर न सुजाति कुजाती ❀ पशु पत्ती न त्रिटप फल पाती ॥
आतम हाड़ चाम नहिं मासा ❀ अशन बसन नहिं भोग बिलासा
इन्द्रीं दाढ़ी मूछैं बार न ❀ आतम थूल न सूक्षम कारन ॥
पोथीं पढ़ि मनते तुम्ह जोई ❀ जानहु आतम रूप न सोई ॥

दोहा—ऊगै अनुभव भानु उर, ज्ञान विचार सु नयन ।
खुलैं लखै तब आतमा, रूप सकल सुख अयन ॥३४॥

अनुभव विद्या अति सुखदाई ❀ आत्म रूप जो देत लखाई ॥
द्वादश वर्ष नेम करि धारन ❀ करै नाम सियराम उचारन ॥
विधिवत बैठि बिराग मन लाई ❀ उपजै तब अनुभव सुखदाई ॥
नाम रटे विनु रहित बिकारा ❀ उपजत नहिं अनुभव सुख सारा ॥
जो अनुभव सत सँग ते होई ❀ मध्यम सदा रहत नहिं सोई ॥
नाम रटत जो आपहि आवै ❀ सो अनुभव कबहूं न नशावै ॥
अनुभव विनु न स्वआतम रूपा ❀ देखि परै सब भाँति अनूपा ॥
आत्मबोध बिनु भाव सु दासी ❀ होत न छूटति लख चौरासी ॥
दासी भाव विना नर नारी ❀ होत न प्रभु तत सुख अधिकारी ॥
दाम चाम ते मन अति लागा ❀ तत सुख जानहिं कहाअभागा ॥

दोहा—तत सुख विनु न उपासना, विनु उपासना जीव ।
बन्धनते छूटत नहीं, मिलत न श्री सिय पीव ॥३५॥

उपासना मारग अति बंका ❀ चलिन सकहिं तेहि पर मतिरंका ॥
लिखि पढ़ि गढ़ि बातें सु उपासी ❀ होत न साजि सु वेष उदासी ॥
श्री सिय राम उपासक कोई ❀ लाखन महँ दुइ एकै होई ॥
प्रभु उपासना कर अभिमाना ❀ करिय न कोउ विनु आतम ज्ञाना॥
वेष प्रताप सबहिं प्रभु प्यारे ❀ वैशनव सिया सम्प्रदा वारे ॥
कवनिउँ भाव धारि मन माँहीं ❀ भजैं प्रभुहिं सो धन्य कहाँहीं ॥
राजहिंजिमि निजप्रजा सुप्यारी ❀ तिमि प्रभु प्रिय सबही तनुधारी ॥
सब कर होइ न ज्ञान समाना ❀ अमित जीव जग भाव सु नाना ॥
सब न होइँ सेवा अधिकारी ❀ पावहिं गति निजमति अनुसारी ॥
जेहि के हृदय भाव जस होई ❀ तेहिं अनुकूल प्रभुहिं प्रिय सोई ॥

दोहा—पय दधि माखन छाछि घृत, अपनी अपनी ठौर ।
सबही प्रिय सु अहीर कहँ, सुनहु भेद कछु और ॥३६॥

दूध दही माखन घृत छाछी ❀ सबहिं सुखद प्रगटहिं रुचिआछी॥
कारण दूध कार्य दधि आदी ❀ कहहिं विचारि सु आतम बादी ॥
तिमि पाँचहु रस लखहु सुजाना ❀ कारण श्रुति शृङ्गार बखाना ॥
श्री शृङ्गार सु मूरति सीया ❀ सब रस सुखद बसत तेहिहीया ॥
सब रस की आचारज सीता ❀ भाषहिं बुध जन विज्ञ बिनीता ॥
सिय अनुकूल भये विनु भाई ❀ पावहिं जन न कबहुँ रघुराई ॥
सब रस भली भांति झलकांहीं ❀ श्री रसेश शृङ्गार सु मांहीं ॥
प्रभुहिं प्राप्ति सब रस सियद्वारा ❀ होत बखानहिं बुध सविचारा ॥
सिय विनु राम जगत के काला ❀ होत सु सियसह सोइ जन पाला ॥
देखउ राम चरित्रनि प्यारे ❀ सिय बिनु राम हतेउ खल भारे ॥

दोहा—सूपनखा रामहिं भजी, सियहिं त्यागि तेहि हेतु ।
नाक कान काटे लखन, करहु सुजन उर चेतु ॥३७॥

सियहि भजेउ रावन तजिरामहिं ❀ तेहिकी गतिजगविदित तमामहिं ॥
अस विचारि जे बुध रस ज्ञाता ❀ भजहिं सहित सिय प्रभु जन त्राता ॥

प्रभुहिं मिलन हित भाव सुनारी ❀ धरि उर सेइय जनक दुलारी ॥
तर्क वितर्क न यहि महँ कीजै ❀ युगल सरूप सेइ सुख लीजै ॥
पति पतनी कर भाव प्रधाना ❀ रस शृंगार केर सब जाना ॥
जो निज उर यह भाव सुधारहिं ❀ तन ते दास सखादि उचारहिं ॥
ते प्रभु प्रिय कछु संशय नाँहीं ❀ आवत जात सु महलनि माँहीं ॥
कारण करन सकल रस केरे ❀ रसाधीश शृंगार बड़ेरे ॥
तेहि लगि सब रस मिलि इन्हि साथा ❀ सेवहिं निज प्रभु सिय रघुनाथा ॥
यद्यपि प्रगट सु जगत शृङ्गारा ❀ पै न जान जन रहित विचारा ॥
कारन कहँ कारज करि जानहिं ❀ कारजही कहि कार्न बखानहिं ॥
दृष्टि भई वहिरँग सब केरी ❀ बकहिं परस्पर बाय घनेरी ॥

दोहा—देह बुद्धि जबते धसी, उर महँ कारी राति ।
तबते आत्म सरूप निज, बिसरि गही जड़ जाति ॥३८॥

वर्णाश्रम जातिक अभिमाना ❀ देह बुद्धि ये वहिरँग ग्याना ॥
देह बुद्धि अरु जाति विचारा ❀ धरि उर आतम रूप विसारा ॥
खात पियत बोलत व्यवहारा ❀ करत शुभाशुभ रहित विचारा ॥
पढ़त सुनत बहु वेद पुराना ❀ नशत न खेद भेद मद माना ॥
भजन भावना वेष विरागा ❀ जप तप तीरथ व्रत बहु यागा ॥
करत लाभ कछु पावत नाँहीं ❀ सोये सकल मोह निशि माँहीं ॥
हानि लाभ आपन नहिं सूझत ❀ हित की बात सुनत उठि जूझत ॥
श्री सियराम उपासक भाई ❀ चलिये सम्हरि समय दुखदाई ॥
कहनि रहनि सब स्वारथ सानी ❀ भई विलोकहु आतम ज्ञानी ॥
परमहंस पंडित कवि सन्ता ❀ व्यास उपासक जगत अनन्ता ॥
बहु मतवादी विपुल उपासक ❀ भरे भूमि गुन ग्यान प्रकाशक ॥

दोहा—आत्म तत्व ज्ञाता सुकोउ, कोटिनि महँ दश पाँच ।
अपर सकल माया विवश, नाँचि रहे बहु नाँच ॥३९॥

बोलहिं अटपट बैन प्रमादी ❀ पढ़ि सुनि कछुक ग्रन्थ बकवादी ॥
अमली आतम बोध विहीना ❀ करिय न तिन्हि कर संग प्रवीना ॥
जिन्हैं न प्रिय सिय राम कृपाला ❀ त्यागिय तिन्हैं जानि यम काला ॥
जिन्हि की युगल नाम रति नाँहीं ❀ सुनत न युगल चरित पुलकाँहीं ॥
वर्णाश्रमी देह अभिमानी ❀ तिन्हि कर संग सदा दुखदानी ॥
श्री रसराज निन्दकी जोई ❀ ताकी दिशि न ताकिये कोई ॥
पाँचहु रसके रसिक उपासक ❀ सुनहु विनय मम विघ्न विनाशक ॥
आन देव अवतार अपारा ❀ तजि सेइय सियराम उदारा ॥
बहु मत वादी वेष सु धारी ❀ राम विमुख लखि तजिय विचारी ॥
विमुखनि कर सँग भूलि न कीजै ❀ तिन्हि के संग आत्मसुख छीजै ॥
कैसहु होय सुहृद सुखदानी ❀ त्यागिय इष्ट विमुख जिय जानी ॥
आत्म ग्यान गत गुरु किन होई ❀ रामविमुख लखि त्यागिय सोई ॥

दोहा—सुखदाई श्री सम्प्रदा, राम देव सिय इष्ट ।
पति पतिनी सम्बन्ध शुचि, जेहि महँ पद सु अभिष्ट ॥३०॥

जो उपासना तत्व न जानहिं ❀ सो न उपासक वेद बखानहिं ॥
यह सिय केरि सम्प्रदा प्यारी ❀ सर्वोपरि महिमा अति भारी ॥
आचारज श्री रमा बखानी ❀ देवी श्री कमला महरानी ॥
यहि महँ जो शरणागत होई ❀ पुरुष भावना त्यागै सोई ॥
सखी भाव यहि महँ सु प्रधाना ❀ समुझौ हृदय विचारि सुजाना
भक्तिहि भजत भजत तेहि रूपा ❀ होत भगत नाशै भव कूपा ॥
बिनु तद रूप भये सुख स्वादा ❀ लहत न होय हृदय अहलादा ॥
अस विचारि तिय भाव समेता ❀ सेइ इष्ट सुख लहहिं सचेता ॥
साँचे संत उपासक सोई ❀ रँगे इष्ट रँग दुरमति खोई ॥
अपर वेष धारी बहु डोलहिं ❀ अरबरबचन विविधि बिधिबोलहिं ॥

दोहा—कोउ सुनि रोष न करिय उर, बूझिय सारा सार ।

रोषहि बस स्व सरूप तजि, जीव सहहिं दुखभार ॥३१॥

सत्य वचन सुनि जो जन रोषहिं ❀ तिन्हि के हृदय न कहुँ संतोषहिं ॥
चतुर उपासक आतम ग्यानी ❀ करहिं न रोष भखहिं अभिमानी ॥
बाहिर रचना दृष्टि निहारी ❀ मानि रहे फुर जो अविचारी ॥
समुझत नहीं झूठ का साँचा ❀ मोह विबस नांचत बहु नांचा ॥
ते सुनि यह प्रसंग बिनु बोधा ❀ करिहहिं हृदय अकारन क्रोधा ॥
हाड़ चाम की नस्वर काया ❀ जानहिं पुरुष हृदय भ्रम छाया ॥
देहहि जानहिं जो निज रूपा ❀ ते न लहहिं यह रहस अनूपा ॥
जिन्हिके उर नानात्व समाना ❀ करिहहिं ते पढ़ि संसय नाना ॥
जे वहिरंग पदार्थनि माँहीं ❀ अरुझेउ मन वच क्रम सुधि नांहीं ॥
पावहिं ते किमि यह रस स्वादा ❀ रते जगत सुख वाद विवादा ॥

दोहा—पढ़ि भाषा कछु संस्कृत, झगरत निसि दिन जाँहिं ।
दूषन खोजत फिरहिं जग, कपट दंभ मन माँहिं ॥३२॥

बोलहिं बचन कुतर्क समेता ❀ विवस मोह मद मान अचेता ॥
ते कि उपासक रहसहि जानें ❀ ग्रहासक्त तन सुख अरुझानें ॥
पढ़ि सुनि पोथिनि नाना धर्मा ❀ साधत करहिं सुभा सुभ कर्मा
प्रभु अनन्यता अनुभव हीना ❀ लखहिं न ते यह तत्व सु झीना ॥
लोक वेद मुनि मत के पारा ❀ यह उपासना रहस उदारा ॥
लाखनि में कोउ कोउ दुइ येका ❀ यह रहस्य जानहिं सविवेका ॥
प्रभु प्रसाद तिन्हि के उर माँहीं ❀ सपनेउँ होत मोह भ्रम नाँहीं ॥
जानत जे उपासना भेदा ❀ तिन्हि उर कवहुँ न उपजत खेदा ॥
अस प्रभुके सु उपासक जेते ❀ बन्दौं मन वच कर्म समेते ॥
कृपा करहु सव मिलि सुखरासी ❀ जानि मोहि निज पद रजदासी ॥

दोहा—यह प्रसंग कर भेद वर, समुझहिं संत सुजान ।
लखहिं न आतम ग्यान विनु, पंडित पढ़ि सु पुरान ॥३३॥

धनसुत तिय त्रय ईखना, तेहि वस परि जड़जीव ।
भयेउ मलिन ते लहहिं किमि, यह रहस्य सिय पीव ॥३४॥
सियवर बानों धारि अँग, आन आस विस्वास ।
करत लखहिं ते कवन विधि, यह रहस्य प्रभु खास ॥३५॥
श्री सियराम उपासक, सब मेरे सिरताज ।
बन्दौं पद पंकज सदा, द्रवौं सु सहित समाज ॥ ३६ ॥
भीतर बाहिर इष्ट रँग, रँगे त्यागि जग लाज ।
तिन्हके पद वन्दौं सदा, द्रवहु रसिक सिरताज ॥३७॥
श्रीसियराम सुनाम महँ, बाढ़ै प्रीति सु मोर ।
जन्म जन्म वर दीजिये, पुनि पुनि करौं निहोर ॥३८॥
बिगरी सबै बनाय मम, कीजै कृपा कृपाल ।
कृपा दृष्टि हेरत रहैं, आप सहित सियलाल ॥ ३९ ॥
दम्पति रसिक उपसकनि, प्रणवौं बारम्बार ।
जिन्हिकी कृपा सु पाय बहु, जीव भये भवपार ॥ ४० ॥
जब लगि द्रवत न जीव पर, युगल उपासक खास ।
तबलगि सपनेउँ सुखनहीं, नशत न भव भ्रम त्रास ॥४१॥

युगल उपासक परम प्रिय, सियवर प्राणाधार ।
तिन्हिकी महिमा अकथअति, वेद न पावहिं पार ॥४२॥
मैं मतिमन्द गमार अति, केहि विधि कहौं बखानि ।
लिखी कछुक निज बोध हित, छमहिं चूक अस मानि ॥४३॥

॥ पद ॥

उपासक सोइ जो नाम रटै ॥ टेक ॥
प्रथम तजै जग जाल जहाँ लगि, गुरु पद कमल सटै ।
कंठी तिलक मंत्र माला दृढ़, वैश्नव ठाट ठटै ॥ १ ॥
जो गुरु कहैं करै सोइ सोइ सिषि, सपनेउँ नाहिं नटै ।
करि सेवा संब्रंध लिखावै, प्रण करि गुरु ढिग डटै ॥२॥
सीखै भेद भाव वर नाना, जेहि फिर मन न हटै ।
श्री सियराम विहार भक्तिरस, तन मन बच लपटै ॥३॥
अनायास गुरु कृपा अनूपम, अनुभव सुख प्रगटै ।
होय अनन्य उपासक साँचौ, भ्रम तम तोंम फटै ॥४॥
ममता मोह कोह कामादिक, तेहि उर पुनि न खटै ।
परमानन्द रूप निसि बासर प्रमुदित अवनि अटै ॥५॥
दम्पति विमल विनोद पग्योनित, ततसुख द्रिगनि चटै ।
तारन तरन भयेउ तेहि सेवत, प्रेमलता दुख कटै ॥६॥
उपासक सोइ जो नाम रटै ॥

❀ श्रीसतगुरवे नमः ❀

एक प्रकार से श्रीपंच संसकार प्रगट तथा प्रचार होने की परिपाटी परम्परा इन्ह श्री आचार्यों के द्वारा इस क्रम से भी प्रसिद्ध है ।

यथा—

प्रथम श्रीसीतारामजू महाराज ! श्रीसाकेताधीश सर्वेश्वर ने निर्हेतुकी कृपा कर जीवों के निज प्राप्ति तथा उद्धारार्थ ये पञ्चसंसकार जो कि आचार्य्यावली के आगे प्रसंग में लिखे हैं। सो प्रगटाय स्वयं परस्पर दोनों प्रभु श्रीसीतारामजी आपही धारन किये, पुनः अपनी विमल बुद्धि ते श्रीजानकीजीने उभय सक्तीं प्रगटाय एक का

नाम श्रीचन्द्रकलाजी जो अनंत कोटि सखीगन की जूथेश्वरी प्रसिद्ध हैं, जिन्ह की कृपा कटाक्ष विना जीवात्मा प्रभु को प्राप्त हो नहीं सक्ती, अरु दूसरी का श्रीमहारमानाम धरा, तैसेही श्री सियाजू की सुरुचि पाय श्रीरघुनाथजी महाराज ने भी अपने अन्स ते युगल सक्ति उत्पन्न करि, एक का नाम श्रीचारुसीलाजी जो श्रीसीतारामजू महाराज की परम प्रियवर हैं, अरु दूसरी का श्रीविस्वमोहिनी नाम रक्खा जो अखिल ब्रह्मांड उत्पन्न करने वालीं बड़ी प्रतापवान हैं। बहुरि इन्ह चारिउ शक्तियों को श्रीजानकीजी ने अपना श्रीसीता मंत्र खड़ाक्षर औ मांग में ते लाल विन्दु-श्री सहित चंद्रिका-मुद्रिका की छाप युगल छर की कंठी कंठ में धारन कराया, तेहि विधि श्री रामजू महाराज ने क्रम ते ऊर्द्ध पुण्ड तिलक पीत सिंहासन समेत—अष्टोत्तरी श्री तुलसी काष्ठ की माला, दाहिने कान में अपना श्रीराम तारक खडक्षर मंत्र, धनुष, वाण, की छाप दै युगल निज गायत्री सरणागत मंत्र, युगल मंत्र, द्वै युगलनाम, रूप लीला, धाम, उपासना, श्री शृङ्गारादि पंच रसों का भली भाँति वोध कराय जीवों को निज प्राप्ति तथा संसार सागर से उद्धारार्थ पंच संस-कार प्रचार करने की आग्या दई, अपनी साहिता समेत, इस प्रकार श्रीयुगल सरकार का सुरुख पाय श्रद्धा भक्ति प्रेम पूर्वक चारिहू आलीं, आचार्य रूप पुरुषाकार से प्रगट भईं, अपने विमल आच-रणों से जग जीवों को प्रभु प्राप्ति की राह उपदेसार्थ प्रथम श्रीचंद्र-कलाजी से श्रीभरतजी महाराज, श्रीमहारमा जी से श्री विष्णुजी महाराज, श्रीचारुसीलाजी से महारुद्रावतार श्रीहनुमानजी महाराज श्रीविश्वमोहिनीजी से श्रीब्रह्माजी सृष्टि करता, औरहू इन्हके अन्सांसों से अनन्त ब्रह्माण्डों में अनन्त रसिकाचार्यों के सरूप श्रीवैशनव धर्म प्रचारक भये, अरु हो रहे हैं। अनन्त जीवों को प्रभु सेवा, सम्बन्धी, पंच संसकार युक्त करि करि कृतार्थ करि रहे हैं।

दूसरे दासादि पुरुष रूप धारन करि श्रीरामजू महाराज के संग रहि बाहिरी सेवा करते हैं। तीसरे अपने स्वयं सखी स्वरूप से सदैव अन्तःपुर में महली युगल विहारामृत पान किया करते हैं। ये तीनि रूप इन्ह के हमेस ही रहते हैं, जब जीवात्मा लोकाचार्यों से यथार्थ निजात्म बोध पाय स्थूळ सूक्षम कारनादि तीनों तन त्यागि परमधाम श्रीसाकेत को यात्रा करती है। तव प्रथम श्रीमहारमाजी से सखी सरूप धारन करि मिलती है, तव श्रीविश्वमोहिनीजी से भेट करि श्रीचारुसीलाजी के साथ श्रीचन्द्रकलाजीके पास प्राप्त होती है। उन्हकी कृपा से परम अगम महली सेवा सुख की भागी होती है, जो अस्थान पुरुष भाव वालों को वर्जित अगम तर है, जहां का भेद वेदादि भी नहीं जानते, पुनरागमन रहित है. केवल प्रभु के कृपा पात्र आत्मज्ञाता रसिकाचार्य ही जानते हैं, उन्हकी सेवा सतसंग कृपा दृष्टि विना जाति विद्या, महत्व, रूप, योवनादि नस्वर देहाभिमानियों को गुप्त विहार दम्पति महली सेवा दुर्लभ से भी दुर्लभतर है। भगवत भागवतों के चरित्र अतर्क्य हैं। विना कृपा जानने योग्य नहीं, जब जीते ही जी मरिजाय, संसार की ओर ते. औ खूब श्रीसिया-राम नाम रटै रटावै, भागवतों की सेवा संग करै, अनुकूल होय, तब कछु कालान्तर में आत्मज्ञान पाय अनुभव भानु उदय होय, हृदय कमल खिलै, उसमें ग्यान विचार नेत्रों से श्रीसीतारामजी की युगल छबि अवलोकन करि वङ्कनाल द्वारा ब्रह्मांड में चढ़ि, परम धाम जाय महली सेवा पावै, सुखी होय, आन भांति अगम-तर है। वकवादों में सार नहीं, अनन्त जन्म भूसा कूटते व्यतीत हो गये, केवल श्रम हीं हाथ लगा। विचारने योग्य समय है, बड़े भाग्य ते मनुष्य जन्म पायो है, पूर्वाचार्यों की परिपाटी अनुकूलाच-रन ग्रहन करनीयँ अवस्यक हैं, पुरुष सरीर पाय भी आत्मज्ञान निज सखी सरूप विस्मरन करने योग्य नहीं, दोनों रूपों से पूर्वाचार्य

प्रभु सेवा करते आये हैं। उन्हके ग्रन्थावलोकन करो, क्या लिखा है यथा रहस्य रामायणें—

श्लोक ॥ लक्ष्मणालक्ष्मनंप्रोक्ता भरतश्चन्द्रकला स्तथा। सत्रुघ्न सुभगा जाता चारुसीला मरुत्सुतम् ॥ १ ॥ सङ्करो प्रीतिसीला च सुसीला व्यास पुत्रकः। हेमरूपा च वैधात्री रूपांह् सतां सदः ॥२॥ गान सोला तथा व्यासः धर्म सोला हरिःस्वयम्। सुतीक्ष्णे श्रुतिसीलाच मंत्र सीला अगस्त्यवै ॥ ३ ॥ बाल्मीकि नाम सीलाच वामदेवो तथा रतिः। त्रिधा रूपेन वर्तन्ते महतां धर्म्म सालिनां ॥४॥ आचार्यत्वे ब्रह्मांड़े दास रूपेन सन्निधौ। राम स्यांतः पुरे तेवै सखी रूपा प्रिया नुगा ॥ अस्यार्थ जव ब्रह्मांड में जीवों के उद्धारार्थ आचार्य रूप से अरु श्री रघुनाथजी महाराज की वाहिरी सेवा में दास रूप से, पुनः अन्तः पुर महली सेवा में सखी रूप से आचार्यों का रहना निश्चय ठहरता है, तो तीनों सरूपों के नाम भी भिन्न २ होंना जरूरी वात है, जैसे आचार्यों के नाम आचार्य रूप के परंपरा में लिखे चले आउते हैं, तैसे सखी सखादि रूपों के भी नाम उन्हके सिष्य वर्गों को अपने २ भावानुकूल रस सम्बन्धी सख्य शृङ्गारादि के जानिवे जोग्य अवस्य हैं—जब संबंधों का प्रचार किया गया है, तव सम्बंधी नाम प्रचार करने में हानीहीं क्या है, कहौ की आत्म सम्बन्धी नाम गुप्त रखना चाहिये, तौ सख्य शृङ्गारादि के सम्बन्धों से गुप्त आत्म सम्बन्धी नाम नहीं हैं, सम्बन्धों को तौ विजाती उपासना हींनों को दिखाने की भी आज्ञा नहीं है, अरु आत्म सम्बन्धी नामों से तौ हजारनि सख्य शृङ्गार रसों के उपासक आचार्यों के पद वनाये वर्तमान हैं, सबके सामने गाये जाते हैं, जो गुप्त रखने जोग आत्म सम्बन्धी नाम होते, तौ आचार्य काहे पद पदार्थ उन्ह नामों से निर्मान करते, रसों के सम्बन्ध अष्टजामादि के रहस्य सबही गुप्त रखने जोग्य रहे? काहे प्रचार किये गये? भगवत भागवतोंके गुप्त

रहस्य न जानने से ही उपासनादि भावों करि वैश्नव हीन अटकरी बातें अरु स्वधर्म विरुद्धी आचरन करने लग गये उपासना के गुप्त भेद वूझौ तौ, लाठी चींमटा अरु कुवाक्यों से उत्तर देने लग जाते हैं, जानतेही नहीं,की सख्य श्रृङ्गारादि रसोंके क्या भेदभाव हैं, अरु हमारे पूर्वाचार्यों की रीति रहस्य क्या है, पूर्वाचार्यों नें तथा वर्तमान काली आचार्यों ने सख्य दास्य श्रृङ्गार रसादि के सम्वन्ध कृपापात्र ग्रहस्त तथा विरक्तों को दिये हैं अरु दे रहे हैं, वे लोग जो विद्वान २ हैं, सो वूझते हैं, की संवन्धो में आत्म संवन्धी नाम हम लोगों को दिये गये हैं, सखी सखादि भावोंके,सो ये नाम पूर्वाचार्यों के परम्परा से चले आते हैं, की नवीन चलाये गये हैं, यह जानना चाहते हैं, जो सनातनी संवंधी नाम हैं, तौ पूर्वा चार्यों की परम्परा नामावली में सरीर तथा आत्म सम्बन्धी दोनों नाम होना चाहिये नहीं तौ हम लोगों को भ्रम हो हो जाता है, की यह सब नवीन रचना है, यह प्रश्न वहुत लोगों से मैं सुना, जव देखा की कितने पूर्वाचार्यों के सत्य सनातनी सिद्धान्त में आक्षेप करने लग गये तब वड़े २ परीश्रम से . वूढ़े २ उपासक श्री वैश्नव संत श्री सीता मढ़ी निवासी श्री स्वामी श्री सिद्धादिकों से यह नामावली २—३ वर्ष में सेवा करि प्राप्त करी, उन्ह सबकी आग्यानुसार प्रेमियों का भ्रम निवार्नार्थ इस ग्रन्थ में प्रकासित करी गई, प्रथम सीधे साधे सती सेवक होते रहे, सहजही में श्री वैश्नव धर्म धारन करि लेते रहे, अब तिलक कंठी का नामहीं लेते डरि जाते हैं, अरु बड़े २ कठिन प्रस्न किया करते हैं. वेलोग जव संपूर्न भेद भाव ठीक २ जान लेते हैं, तव अपना सनातनीधर्म स्वीकार करते हैं उन्हीं लोगों के कल्यानार्थ छिपे हुये गुप्त २ रहस्य कुछ २ जोग्य समुझि आचार्यों की नामावली समेत प्रगट करि जनाय दिये गये हैं, जाते जीव भ्रम सागर में न परैं, भगवत भागवतौं के रहस्य समुझि

श्री वैश्नव सनातनी सुद्ध धर्म पथ पर आरूढ हो, अपना जन्म कर्म सफल करि प्रभु को प्राप्त होंयँ कृत कृत्य होंयँ, प्रभु के गुप्त प्रगट चरित्र आचार्य कृपापात्रों को उपदेस करते ही आये हैं— यह पुरानी परि पाटी है, नई नहीं अरु युगल २ नाम भी प्रथम हीं से प्रसिद्ध हैं—यथा—श्री वालानंद जी श्री वालअलीजी श्री हरियानन्द जी, श्री हरि सहचरी जी श्री अग्र दास जी श्री अग्र अली जी· श्री नारायन दासजी-श्री नाभाअलीजी इत्यादि भगवत भागवतों के अनन्त नाम रूपादि चरित्र हैं, जो जौनभाव से उन्हें भजै उन्हको वे वैसेही हैं, श्रुति वाक्य हैं श्रीप्रभु प्रति। यथा त्वं स्त्री त्वं पुमानसि त्वं कुमार उत वा कुमारी त्वं जीर्नो दंडेन वंच यसि त्वं जातो भवसि विस्व तो मुखः स्वेता स्वतरोपनिषदि ४ अ० ३ मंत्रे—भगवत भागवत स्व इच्छा चारी हैं, सामर्थवान हैं, यं यं वापि स्मरन्भावमिति)

जेहि विधि रहा जाहि जस भाऊ ❀ सो तस देखेउ कोसल राऊ॥

ऐसा विचारि जिग्यासू जनों के भ्रमनिवार्नार्थ प्रभु आचार्यों में अभेद समुझि यह युगल नामावली सज्जनों की सेवा में समर्पन की गई, कालांतर पाय कर नामादि बदलते रहते हैं, संका करने योग्य नहीं, इति सुभम् भूयात्—

जय सियराम जय जय सियराम॥
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम॥
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम॥

अथ श्री सिया❀ सम्प्रदायक श्रीराम मंत्रादि पंच संसकार परम्परा प्रचारक पूर्वाचार्यों की युगल नामावली यथा।

स्थूल शरीर सम्वन्धी नाम।	आत्म सम्बन्धी नाम
सर्वेश्वर साकेताधीश श्रीसीता, रामजी महाराज से	
१—श्रीस्वा०हनुमानजी महाराज	श्रीचारु सीलाजी
२—श्रीस्वा०ब्रह्माजी महाराज	श्री विस्व मोहिनीजी
३—श्रीस्वा०वशिष्ठजी महाराज	श्रीब्रह्मचारिनीजी
४—श्रीस्वा०पारासरजी महाराज	श्रीपापमोचनाजी
५—श्रीस्वा०व्यासदेव जू महाराज	श्रीव्यासेश्वरीजी
६—श्रीस्वामी श्रीशुकदेवजी महाराज	श्रीसुनीताजी
७—श्रीस्वा०पुरुषोत्तमाचार्य जी म०	श्रीपुनीताजी
८—श्रीस्वा०गङ्गा धराचार्यजी म०	श्रीगान्धर्वीजी
९—श्रीस्वामी सदाचार्यजी म०	श्रीसुदर्शनाजी
१०—श्रीस्वा०रामेश्वराचार्यजी म०	श्रीरामअलीजी
११—श्रीस्वामी श्रीद्वारानन्दजी म०	श्रीद्वारावतीजी
१२—श्रीस्वा०देवानन्दजी महाराज	श्रीदेवाअलीजी
१३—श्रीस्वा०श्यामानन्दजी महाराज	श्रीश्यामाअलीजी
१४—श्रीस्वामी श्रीश्रुतानन्द जी म०	श्रीश्रुताअलीजी
१५—श्रीस्वामी श्रीचिदानन्दजी म०	श्रीचिदाअलीजी
१६—श्रीस्वामी श्रीपूर्णानन्दजी म०	श्रीपूर्णा अलीजी

❀ श्रीजीमें अरु श्री सियाजी में अभेद मानि लिखा है, श्री श्री सम्प्रदा को सिया सम्प्रदा कहदेने में कुछ घटी नहीं है।

१७—श्रीस्वामी श्रीश्रियानन्दजी म०	श्रीश्रियाअलीजी
१८—श्रीस्वामी श्रीहरियानन्दजी म०	श्रीहरिसहचरीजी
१९—श्रीस्वामी श्रीराघवानन्दजी महा०	श्रीराघवालीजी
२०—श्रीस्वामी श्रीरामानन्दजी महा०	श्रीरामानन्द दायनीजी
२१—श्रीस्वामी श्रीसुरसुरानन्दजी म०	श्रीसुरेश्वरीजी
२२—श्रीस्वामी श्रीमाधवानन्दजी म०	श्रीमाधवाअलीजी
२३—श्रीस्वामी श्रीगरीवानन्दजी म०	श्रीगर्वहारिनीजी
२४—श्रीस्वामी श्रीलक्ष्मीदासजी म०	श्रीसुलक्षनाजी
२५—श्रीस्वामी श्रीगोपालदासजी म०	श्रीगोपाअलीजी
२६—श्रीस्मामी श्रीनरहरीदासजी म०	श्रीनारायनीजी
२७—श्रीस्वामी श्रीकेवलकूवारामजी म०	श्रीकृपाअलीजी
२८—श्रीस्वामी श्रीचिन्तामनीदासजीम०	श्रीचिंन्तामनीजी
५९—श्रीस्वामी श्रीदामोदरदासजी म०	श्रीमोददायकाजी
३०—श्रीस्वामी हृदयरामजी महाराज	श्रीउल्लासिनीजी
३१—श्रीस्वामी श्रीमौजीरामजी महा०	श्रीस्वच्छन्दाजी
३२—श्रीस्वामी श्रीहरिभजनदासजी म०	श्रीहरितलताजी
३३—श्रीस्वामी श्रीकृपारामजी महा०	श्रीकरुनाअलीजी
३४—श्रीस्वामी श्रीरतनदासजी महा०	श्रीरतनावलीजी
३५—श्रीस्वामी श्रीनृपतिदासजी म०	श्रीनीतिलताजी
३६—श्रीस्वामी श्रीशङ्करदासजी महा०	श्रीसुशीलाजी
३७—श्रीस्वामी श्रीजीवारामजी महा०	श्रीयुगलप्रियाजी
३८—श्रीस्वामी श्रीयुगलानन्यशरणजी म०	श्रीहेमलताजी
३९—श्रीस्वामीश्रीजानकीवरशरणजीम०	श्रीप्रीतिलताजी
४०—श्रीस्वामी श्रीरामवल्लभा शरणजीम०	श्रीयुगल बिहारिनीजी

सोरठा—इन्हकर मैं सियलाल, शरण शिष्य मन वचन क्रम ।
सतगुरु दीन दयाल, प्रेमलता के हरण भ्रम ॥ १ ॥

राजत अवध सुधाम, सतगुरु सदन सु सरयु तट ।
मम सतगुरु गुण ग्राम, श्रीराम वल्लभा शरण प्रभु ॥२॥

दोहा–परंपरा के भेद बहु, आचार्यनि अनुकूल ।
पै सब सांचे मोद प्रद, नाशक भ्रम भय भूल ॥ ३ ॥
मैं संतनि सन लहेउ जस, तस लिखि कीन्ह प्रकास ।
भूल चूक छमिहहिं सुजन, जानि मोहि निज दास ॥ ४ ॥
अब अष्टम सु प्रसंग महँ, संसकार जो पाँच ।
वरणों तिन्हिकर महत कछु, सुनत नशाहिं भव आँच ॥५॥

इति श्री जय सियराम जयजय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरण जी महाराज उपनाम श्री प्रेमलताजू कृत श्री उपासक प्रसङ्ग समाप्त शुभम् ॥ ७ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

श्रीपंचसंस्कार अष्टम प्रसंग ।८।

श्रीसतगुरवेनमः ॥ श्री सीताराम नामाभ्यां नमः ॥ श्री हनुमते नमः

दोहा ॥

तिलक छाप कंठी युगल, युगल मंत्र निज नाम ।
संसकार ये पाँच शुभ, हरण शोक सुख धाम ॥१॥
शेष गणेश महेश विधि, आगम निगम पुरान ।
नारदादि मुनि सिद्ध सुर, शारदादि कवि आन ॥२॥
संसकार यक एक की, महिमा गुण गरुताय ।
सब मिलि कोटिन कल्प लगि, गावैं लहहिं न थाय ॥३॥
बरणि सकौं केहिभाँति मैं, अति मति मन्द गमार ।
लिखौंकछुकनिजबोधहित, छमहिं सुजन सविचार ॥४॥
संसकार पाँचौनि के, न्यारे न्यारे भेद ।
कहहुँ यथा मति सुनहिं जन, जानि हरण भव खेद ।५।

श्री साकेताधीश कृपाला ❀ सीताबर प्रभु दीन दयाला ॥
जीवन कहँ अपनावन हेतू ❀ भवनिधि केर बनायेउ सेतू ॥
संसकार ये पंच सुहाये ❀ सम्मत करि प्रभु निज प्रगटाये ॥
प्रथम कीन निज अङ्ग सु धारण ❀ जो सब सुख सुकृतन के कारण ॥
पाँचउ संसकार प्रभु अङ्गा ❀ चेतन अमल अखेद अभङ्गा ॥
सकल सिद्धिप्रद आनँद दायक ❀ सबहिंसुलभसबविधिसबलायक॥
त्रिविध तापमन वच क्रम पापा ❀ हरण विषाद अलाप कलापा ॥
तीनि काल के कर्म कठोरा ❀ अनमिटहु जो पातक घोरा ॥

नासहिं सकल विकार अपारा ❀ संसकार ये पाँचहु सारा ॥
धारण करत जीव प्रभु रूपा ❀ होत पूज्य तिहुँ लोक अनूपा ॥

दोहा—संसकार पाँचौ सुभग, हेतु रहित हितकार ।
भुक्ति मुक्ति रति भगति प्रद, साँचे सरल उदार ॥६॥

निगुरा सठ निंदकी अदाया ❀ तजि प्रभु भजन बटोरहिं माया ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❀ वर्णाश्रमी अबुध बिभिचारी ॥
ज्वारी चोर मांस मद भच्छक ❀ संसकार ये सबके रच्छक ॥
भ्राता पुत्र मातु पितु घाती ❀ अमली पतित मलीन कुजाती ॥
लोभी लम्पट धर्म उदासी ❀ कृपिण कठोर महा अघरासी ॥
सब प्रकार अशरण जग आंहीं ❀ निन्दनीयँ तिहुँ लोकनि माँहीं ॥
कैसेहु होयँ अधम अविचारी ❀ लोक वेद बाहिर व्यवहारी ॥
संसकार ये सतगुरु पाँहीं ❀ लेत नशें अघ संशय नाँहीं ॥
कोटिन पातक पाप पहारा ❀ च्छण में होयँ सकल जरि छारा ॥
संसकार अँग धारत भाई ❀ आवा गवन कुरोग नशाई ॥
संसकार बिनु नर अघ रूपा ❀ लहहिं न रघुपति भगति अनूपा ॥

दोहा—श्रद्धा भगति समेत अँग, संसकार ये पाँच ।
धारहिं दृढ़ ते तरहिं भव, तपहिं न माया आँच ॥७॥

जग सब जरै त्रिविध भव आँचा ❀ वेष प्रभाव भगत इक बाँचा ॥
राम भक्त की परम चिन्हारी ❀ संसकार ये कहहिं पुरारी ॥
संसकार जेहि के नहिं होई ❀ राम भक्त तेहि कहहिं न कोई ॥
कोटिन जप तप करम सु कीजै ❀ कोटिन व्रत करि दान सु दीजै ॥
कोटिनि तीरथ साधन साधै ❀ कोटिनि योग यज्ञ आराधै ॥
कोटिनि सुकिरत करै सप्रेमा ❀ पूजन पाठ ध्यान दृढ़ नेमा ॥
कोटिनि तर्पण होम शराधा ❀ करै न छूटत भव भ्रम बाधा ॥
भजन भावना भगति सुहाई ❀ कोटिनि भांति करै मन लाई ॥

कोटिनि ग्रन्थ पढ़ै श्रुति चारी ❀ नाचै गावै आँसू ढारी ॥
चारि वर्न आश्रम के धर्मा ❀ साधै विधिवत नशै न भर्मा ॥

दोहा–संसकार ये पंच विनु, सव कृत होत विनाश ।
जन्म मरण छूटत नहीं, मिटति न आशा त्राश ॥८॥

संसकार विनु कवनिउँ कर्मा ❀ करै होइ सब धर्म अधर्मा ॥
संसकार संयुत करि देही ❀ करै कर्म शुभ होय सु तेही ॥
राम भक्त प्राकृति शुभ कर्मा ❀ करतउ तजैं न आपन धर्मा ॥
संसकार हीननि की बानी ❀ सुनत न राम भक्त विज्ञानी ॥
संसकार ये जो अँग धारे ❀ पूजनीयँ सोइ प्रभु के प्यारे ॥
प्रभु भक्तनि की महिमा भारी ❀ बदत पुराण शास्त्र श्रुति चारी ॥
भक्तनि लखि जो शीश न नावत ❀ ते शठ यमपुर बहु दुख पावत ॥
कोटिन द्विज शिवलिंग हजारनि ❀ शालिग्राम सैकरनि वारनि ॥
देवीं देव नाग गन्धर्वा ❀ रवि शसि लोकप लायक सर्वा ॥
प्रेत पितर मुनि सिद्ध उदासी ❀ जोगी जपी तपी सन्यासी ॥

दोहा–पूजै भाव समेत कोउ, स्वपच सु वैष्णव एक ।
तेहि कर समता योग नहिं, देखउ ग्रन्थ अनेक ॥९॥

इहाँ न संसय कर कछु कामा ❀ सब विधि भक्ति प्रभाव ललामा ॥
ऊँच नीच कर इहां न लेखो ❀ सवरी गीध निषादनि देखो ॥
राम भक्त विनु विधि किन होई ❀ चाण्डाल सम जानिय सोई ॥
संसकार युत स्वपचौ ऊँचा ❀ होत कहहिं प्रभु भक्त समूचा ॥
प्रभु भक्तनि महँ जाति विभेदा ❀ राखत ते पावहिं बहु खेदा ॥
भक्तनि कहँ जो जानहिं नीचा ❀ ते जन परहिं घोर भव कीचा ॥
तर्क सहित भक्तनि ते बोलहिं ❀ श्वान होयँ ते घर घर डोलहिं ॥
संसकार सतगुरु सन लेई ❀ पुनि अभाग वश त्यागि जो देई ॥
परम पवित्र सु वैशनव बाना ❀ सतगुरु सनलै तजहिं अयाना ॥

दोहा–घोर नर्क महँ जाय सो, भोगत नाना क्लेश ।
कवनिउँ विधि उबरत नहीं, तजहिं जो गुरु उपदेश ॥१०॥

संसकार गुरु प्रद जो त्यागहिं ❀ धरि धरि तनु बहु योनिनि वागहिं॥
जब लगि संसकार नहिं धारत ❀ तब लगि प्रभु नहिं ताहि निहारत॥
संसकार संयुत जन देखी ❀ हरषत प्रभु निज हृदय विशेषी ॥
सब ते देत ऊँच पद तेही ❀ संसकार युत देखत जेही ॥
संसकार संयुत लखि देहा ❀ करत कृपानिधि अधिक सनेहा ॥
नीचऊँच कर त्यागि विचारा ❀ अपनावत प्रभु परम उदारा ॥
ऐसे प्रभु की भक्ति विहीना ❀ फिरहिं ते नर्की जीव मलीना ॥
विनु वैष्णवी वेष अँग धारे ❀ भजहिं प्रभुहिं मनमुख मतवारे ॥
कहत विपुल हमहूं प्रभु पूजा ❀ करत भगति नित काम न दूजा ॥
तिन्हकी भगति भावना मंदा ❀ व्यर्थ यथा वासर महँ चंदा ॥

दोहा–संसकार विनु भगति गति, रति जस वेश्या भाँड़ ।
करहिं कष्ट बहु लाभ लघु, जिमि शृङ्गार सु राँड़ ॥११॥

पति विनु विधवनि कर श्रीङ्गारा ❀ केवलि निज मन रिझवन हारा ॥
वेश्या भाँड़ उदर हित लागी ❀ कौतुक करैं अनेक अभागी ॥
लोक रिझावहिं गाय बजाई ❀ तिन्हि के इष्ट न सिय रघुराई ॥
तिमि मनमुख बहु बेष विहीना ❀ भगत कहाँयँ प्रपंच प्रवीना ॥
विनु व्याही जिमि कन्याक्वारी ❀ जानहु सहस खसम की नारी ॥
जब वह करै ब्याह यक साथा ❀ अरपि अपन पौ जेहि के हाथा ॥
होइ एक पति जब तेहि खासा ❀ तब मिथ्या पति होंयँ निराशा ॥
तिमिजगजन मनमुखी बिलासी ❀ सब देवनि के बने उपासी ॥
सबकी पूजा अस्तुति बंदन ❀ करत मंद तजि सिय रघुनंदन ॥

दोहा–नगर नारि जिमि नायका, तनके पती हजार ।
आतम हित एकौ नहीं, सुख दाता भरतार ॥१२॥

प्रभु सनवन्ध हीन तिमि नाना ❀ भजन भाव रति भगति सुध्याना ॥
जब लगि भजत न सिय रघुराई ❀ गुरुमुख होइ अँग वेष सजाई ॥
सब देवनि की परिहरि आशा ❀ करतन जब लगि प्रभु विश्वासा ॥
तब लगि राम मिलन अति दूरी ❀ वेष विहींन सु भगति अधूरी ॥
राम भगति विनु लख चौराशी ❀ मिटति न पावत शुभगतिखाशी ॥
भगति वेष विनु उर न दृढ़ाई ❀ वेष न मिलु विनु गुरु सेवकाई ॥
राम कृपा विनु सत गुरु पूरा ❀ मिलत न हरण हृदय को कूरा ॥
संसकार करि ज्ञान दृढ़ावै ❀ संशय शोक समूल नसावै ॥
मोहादिक अभिमान नसाई ❀ करै विमल उर नाम रटाई ॥
जेहि कर सुनि उपदेस अनूपा ❀ छूटै जग नातौ दुख रूपा ॥

दोहा—नाशै वेश्या भाँड़ पन, आतम तत्व निहारि ।
सेवै तब सियराम पद, हिय अनन्यता धारि ॥ १३ ॥

डिगै न पुनि मन सपनेउ कबहूं ❀ कोटिन विघन होइँ जो तबहूं ॥
सब देवनि की नाशै आशा ❀ जन्म मरण की छूटै त्रासा ॥
नाना मत मनमुखता नाशै ❀ प्रभु सरूप जब हृदय प्रकाशै ॥
प्रभु विनु सब आशा दुख रूपा ❀ जिन्हि वश जीव परे भव कूपा ॥
अस विचारि जे परम बिवेकी ❀ रामहिं भजहिं टेक उर टेकी ॥
करहिं राम भक्तनि ते नेहा ❀ जाति पाँति कर तजि संदेहा ॥
जाति रूप विद्या महताई ❀ योबन बल पाँचौ दुखदाई ॥
भगति पंथ पाँचौ अभिमाना ❀ जानि तजहिं जन शूल समाना ॥
जिन्हि के उर एकौ अभिमाना ❀ रहत न ते पावहिं भगवाना ॥
सब प्रपंच तजि जोसिय रामहिं ❀ रटत लहहिं ते प्रभु सुखधामहिं ॥

दोहा—जिन्हके उर नाना मते, निवसत छल अभिमान ।
तिन्हि के उर आवत नहीं, सुखद भगति भगवान ॥ १४ ॥

जहँ बैठत खर सूकर स्वाना ❀ तहँ न रहत शुचि सन्त सुजाना ॥

तेहिविधिअभिमानिनिडरमाँहीं ❀ भूलिहु भगति सु आवति नाँहीं ॥
केतिक संसकार करि लेहीं ❀ वहुरि कुसंग पाय तजि देहीं ।
केतिक केवल कंठी माला ❀ राखहिं तिलक देत नहिं भाला ॥
केतिक कंठी माल विहींना ❀ तिलक लगावत नित्य नवीना ॥
केतिक केवलि माला राखैं ❀ कंठी तिलक धरहिं लै ताखैं ॥
केतिक जानहिं मंत्र न नामा ❀ निशिदिन रते मूढ़ ग्रह कामा ॥
ऐसे जीव न प्रभु मन भावत ❀ मिथ्या वैष्णव वेध लजावत ॥
जिन्ह की निष्ठा नहिं इन्हमाँहीं ❀ ते पापी गति पावत नाँहीं ॥
राम भगति श्री वैशनव बानों ❀ जिन्हैं न प्रिय तिन्ह पापीजानों॥

दोहा—संसकार पाँचौंनि में, खण्डन करै जु कोय ।
दुख पावै यहि लोक पुनि, प्रभुपद विमुखी होय ॥१५॥

संसकार पाँचौ इक जानें ❀ एक तजि नहिं एकै प्रमानें ।
जिमि कर पद वपु मन मुख होई ❀ संसकार तिमि जानहु सोई ॥
अस विचारि जियजागहु लोगू ❀ संसकार नहिं त्यागन जोगू ॥
जो गुरु दीन सीस धरि हाथा ❀ संसकार ये करन सनाथा ॥
पाँचौ करै यथा विधि धारन ❀ लखि यक रूप सु अधम उधारन ॥
आलस बस खण्डन कर जोई ❀ धारण करैं परैं भव सोई ॥
त्यागहिं अथवा अविधि समेता ❀ धारहिं अङ्गनि अवुध अचेता ॥
ते पामर उलटे :अपराधी ❀ होत सहहिं वहु भांति उपाधी ॥
जगत काज स्वारथ मति पागी ❀ तिलक देत अलसात अभागी ॥
केतिक केवल शिरी लगावत ❀ तिलक विहीन अधोगति पावत ॥

दोहा—केतिक करहिं न तिलक श्री, सिंहासन धरिलेत ।
बिमुख होत निज इष्ट ते, आलश विवश अचेत ॥१६॥

इन्ह महँ खण्ड मण्ड जो कोई ❀ करत परत भव सागर सोई ॥
संसकार पाँचौ अङ्ग धारै ❀ नेम सहित कबहूं न विसारै ॥

कैसेहु परै दुखी तन जबहूं ❀ संसकार त्यागै नहिं तबहूं ॥
जन्मत मरत जगत हितकारी ❀ तजहिं न तिनि हित वेष विचारी॥
पलकउ गुरु प्रद वेष न त्यागै ❀ तेहि की नाव पार भव लागै ॥
मातु पिता भ्राता सुत नारी ❀ नासवान जग नाते दारी ॥
राम भगति में बाधक जानी ❀ त्यागहिं तिन्हें भगत विज्ञानी ॥
प्रभु विमुखन ते नाते दारी ❀ राखहिं भक्त न विमल विचारी ॥
प्रभु विमुखन ते जो सनबंधा ❀ राखहिं राम भक्त ते अन्धा ॥
राम भक्त विमुखनि ते प्रेमा ❀ करैं कबहुँ तो लहहिं न छेमा ॥
विमुखन ते जो नेह लगावैं ❀ ते न भक्त निज प्रभु कहँ पावैं ॥
राम विमुख संपति सनवन्धी ❀ तजहिं न ते गति पावहिं गंधी ॥

दोहा—मातु पिता भ्राता सखा, धन बल विद्या धाम ।
भक्तनि के सियराम यक, आदि मध्य परिणाम ॥१७॥

राम भक्त पर धाम निवासी ❀ राम विमुख नरकी अघरासी ॥
राम भक्त अति विमल प्रवीना ❀ राम विमुख अति अबुध मलीना ।
भक्त भजैं निज प्रभु दिन राती ❀ विमुखनि प्रभु चरचा न सुहाती ॥
भक्त रटैं निसि दिन सियरामा ❀ विमुख बटोरैं अघ वसुयामा ॥
भक्तनि कै प्रभु नाम खजाना ❀ विमुखनि के धन अवगुन नाना॥
भक्त सु रहहिं भक्ति रस पागे ❀ विमुख विषय भोगनि अनुरागे ॥
तेहि लगि तिन्हैं भक्त परिहरहीं ❀ मन बच क्रमरतिप्रभुसनकरहीं ॥
राम भक्त दिन विमुख कुराती ❀ कहहु संग निवहै केहि भाँती ॥
राम विमुख कैसहु हितकारी ❀ होय तजिय तब द्रवहिं खरारी ॥
जो विमुखनि कर तजहिं न संगा ❀ चढ़त न तिन्ह उर भजन सुरंगा ॥
संसकार जो अङ्ग न धारत ❀ मुख न नाम सियराम उचारत ॥

दोहा—तिन्हिके मरे न रोवहीं, जिन्हि प्रिय वैश्नव धर्म ।
राम विमुख दुखरूप लखि, करहिं न कवनिउँ कर्म ॥१८॥

विमुखनि कर अस्पर्श न करहीं ❀ राम भक्त अस बुध उब्बरहीं ॥
संसकार जो जियत न कीन्हैं ❀ मरे कहा तिन्हि पिण्ड सुदीन्हैं ॥
इहाँ उहाँ दोउ लोकनि माँहीं ❀ राम विमुख सुख पावत नाँहीं ॥
लोक वेद वन्धन ते न्यारे ❀ जो सिय राम भक्ति दृढ़ धारे ॥
नाम निरत वैश्नव प्रभु प्यारे ❀ निर्बन्धन निर्मोह सुखारे ॥
जो वे वसें गेहहू मँाहीं ❀ प्रभु विनु काहुइ जानत नाँहीं ॥
जन्में मरैं जगत वरु कोई ❀ हरष विषाद न तिन्हि उर होई ॥
विधि प्रपंच तजि जग विवहारा ❀ भक्त भजें सियराम उदारा ॥
मातु पिता भ्राता सुत नारी ❀ होंयँ सुवैश्नव पर उपकारी ॥
राम भक्त दृढ़ देह सनेही ❀ मरैं तौ कर्म करैं हित तेही ॥

दोहा—तजहिं न वैश्नव धर्म निज, कंठी तिलक सुनाम ।
पित्र कर्म वा धर्म व्रत, करैं सु कवनिहुँ काम ॥१९॥

वैश्नव कर्म नित्य जो करहीं ❀ तेहि विनुकिये न कछु आचरहीं ॥
पित्र कर्म व्रत जग्य सराधा ❀ राम भक्त कहँ ये सब बाधा ॥
वैश्नव मरि प्रभु धाम सिधारैं ❀ प्रभु विमुखनि यम नर्कनि डारैं ॥
निज २ कर्म किये फल पावहिं ❀ तेकि सराध लखन इत आवहिं ॥
रिषिनि धर्महित ये सु निमित्ता ❀ लिखिप्रगटेउ जानहु अस चित्ता ॥
राम सुभक्त सुभा सुभ कर्मा ❀ त्यागि रटहिं सियराम अभर्मा ॥
भक्त सकुच वस जो श्रुति धर्मा ❀ करतौ तजहिं न वैश्नव कर्मा ॥
कंठी तिलक हींन जो करनी ❀ करत होय सो पाहन तरनी ॥
तिलक छाप कंठी विनु जेते ❀ करैं कर्म शुभ नाशहिं ते ते ॥
संसकार हीननि के दाना ❀ व्यर्थ वये जिमि ऊसर धाना ॥

दोहा—कंठी कंठ न तिलक सुभ, छाप समेत लिलार ।
मंत्र न श्री सियराम मुख, ते जन जिमि खर स्यार ॥२०॥

संसकार हींननि कर साथा ❀ करहिंनजिन्हिप्रियसियरघुनाथा ॥

संसकार हींननि ते भाई ❀ पसुनि केरि संगति सुखदाई ॥
श्री वैश्नवी सुदीक्षा हीना ❀ भ्रष्टौ ते ते जीव मलीना ॥
पढ़े लिखे बहु वेद पुराना ❀ इंगिलिस उर्दू विद्या नाना ॥
वैश्नव बेष न धारेउ अङ्गा ❀ भजेउ न रामहिं करि सतसंगा ॥
तिन्हि के सब करतब अघरूपा ❀ धर्महुं करत परत भव कूपा ॥
संसकार युत कवनिहुँ कर्मा ❀ करत होंयँ सब सुभ प्रद नर्मा ॥
पित्र कर्म अथवा सुभ कोई ❀ करै भक्त निज कृत करि सोई ॥
वैश्नव धर्म प्रान प्रिय जेही ❀ तजहिं न मरैं कोटि अस्नेही ॥
विछुरत मिलत जगत असनेही ❀ तिन्हि हित धर्म न त्यागहिं तेही ॥

दोहा—ससि सीतलता मीन जल, रविहि तजै जो घाम ।
तबहुँ न त्यागहिं भक्त निज, वैश्नव धर्म ललाम ॥२०॥

वैश्नव वैश्नव धर्म विहीना ❀ अपर काम नहिं करत प्रवीना ॥
वैश्नव धर्म हींन जो भोगू ❀ भक्तनि दुखद सकल जप जोगू ॥
विप्र पतित बिनु सिखा जनेऊ ❀ तिमि बिनुबेष सु वैश्नव तेऊ ॥
जो सब जगत उपाधी ठानें ❀ तजहिं न वेषहिं भक्त सयानें ॥
विघ्न अनेक आय जो लागैं ❀ तबहुँ न वेष विचारी त्यागैं ॥
संसकार बिनु भोजन पानी ❀ मल मूतनि सम जानहिं ज्ञानी ॥
प्रथम करै गुरु प्रद निज नेमा ❀ संसकार तिलकादि सप्रेमा ॥
चरणोदक लै गुरुहिं प्रणामा ❀ करि तब साधै दूसर कामा ॥
शिर के साटें वेष सु अङ्गा ❀ धारहिं सज्जन सदा अभङ्गा ॥
अस अनन्यता जिन्हि के नाँहीं ❀ ते झूठे वैश्नव जग माँहीं ॥

दोहा— संसकार पाँचौ सु ये, निष्ठा भगति समेत ।
धारण करहिं ते तरहिं भव, पावहिं पुर साकेत ॥२१॥

बिना भजन जप योग अचारा ❀ करै वेष जोवनि भव पारा ॥
जिन्हि की नहीं वेष महँ निष्ठा ❀ तिन्हि समान को जग पापीष्ठा ॥

वेष प्रताप नीचहू प्रानी ❀ लहत ऊँच पद सारँग पानी ॥
प्रभु बानों जेहि भावत नाँहीं ❀ तेहि सम पापी को जग माँहीं ॥
पापिनिकी यह प्रगट चिन्हारी ❀ राम भगति नहिं लागति प्यारी ॥
वेष भगतिजेहिप्रिय नहिंलागत ❀ नरतनु पाय विषय अनुरागत ॥
आलस बस अथवा कोउ कारन ❀ वेष भगति जो करत निवारन ॥
वैश्नव वेष लेत जो आनहिं ❀ रोकहिं भाखि मनमुखी ग्यानहिं ॥
ते दुख पावत नरकनि जाईं ❀ जग जनमें सूकर तनु पाईं ॥
येहि तनु पर प्रभु वेष न धारा ❀ ते मरि होत स्वान खर स्यारा ॥

दोहा—नरतनु लहि नहिं भजत प्रभु, धारि सुवेष शरीर ।
लख चौरासी योनि ते, भ्रमि सहिहैं बहु पीर ॥ २२ ॥

आश्रम वर्ण माँहिं नर नारी ❀ वेष भगति के सब अधिकारी ॥
वेष धारि करि भजन राम को ❀ तरि भव चोला पाइ चामको ॥
नतु पीछे पछितैहो भाई ❀ जब नर तनु नशिहै सुखदाई ॥
वेष धारि जो भजत न रामहिं ❀ ते दुख सहत जाय यम धामहिं ॥
चलिहहिं तहाँ न कछु अकड़ाई ❀ विद्या धन सुजाति बल भाई ॥
कर्म धर्म सुर साहि न करिहैं ❀ जब यमदूत मूसरनि मरिहैं ॥
सब मतवादी गादी वारे ❀ राम भजन विनु जइहहिं मारे ॥
भजत न रामहिं बेष सुधारी ❀ तेहि कर फल पैहहिं नर नारी ॥
वेष धारि जे भजन न करहीं ❀ ते भव सागर केहि विधि तरहीं ॥

दोहा—अवहीं बूझि न परत कछु, बिगत ज्ञान रत काम ।
आखिर अति दुख पावहीं, गर्भवती जिमि बाम ॥२३॥

वेष धारि जो पाप कमावत ❀ वैश्नव धर्महिं लाज लजावत ॥
वैश्नव वेष सु परम प्रतापी ❀ काँपहिं सनमुख आवत पापी ॥
संसकार वैष्णवी निहारी ❀ डरपति यम की सेना भारी ॥
संसकार ये सियवर केरे ❀ सुर नर मुनि सब जिन्ह के चेरे ॥

वानों यह प्रभु को जो धरहीं ❀ तिन्हकी सव मिलि सेवाकरहीं ॥
पाय वड़िनि कर संग सुनीचा ❀ पूजे जात बुधनि के बीचा ॥
प्रभु को होइ न कोसुख लहेऊ ❀ रामहिं त्यागि न को दुखदहेऊ ॥
पंडित पढ़ि पढ़ि वेद पुराना ❀ जन्म नशावत रत मद माना ॥
भजत न रामहिं वेष सु धारी ❀ वर्णाश्रम अभिमान विसारी ॥
राम भगत नहिं नाम धरावहिं ❀ तेहि लगि जन्मि२ दुख पावहिं ॥
श्री सियराम भगत वनि भाई ❀ जन्म मरन नासहु दुखदाई ॥

दोहा—राम भगत जब लगि नहीं, नाम धराय सुजीव ।
भजत न सियबर तवहिं लगि, पावत शोक अतीव॥२४

राम भक्ति अरु वेष विहीना ❀ लहहिं अधोगति जीव मलीना ॥
राम भक्ति विनु वैश्नव वेखा ❀ मिलतिन शुभकृत कियेउ विशेषा॥
प्रभु वानों सुख सानों जवहीं ❀ धारण करत सुगुरु सन तवहीं ॥
राम भक्त तेहि क्षण ते लोगा ❀ कहन लगहिं विनु जप तप योगा॥
सव जानत यह वात न गोई ❀ वेष धारि अँग भक्त सु होई ॥
विना वेष साकट नर नारी ❀ बाजत करतौ भगति खरारी ॥
वेष विपुल जग जन प्रगटाये ❀ तिन्हि महँअमित जीव अरुभाये ।
राम भक्ति विनु वेष सु भारा ❀ ढोये फिरत अवुध अविचारा ॥
श्री वैष्णव कर वेष उदारा ❀ प्रगटायेउ प्रभु निजसुख सारा॥
सब वेषनि तजि वैष्णव वाना ❀ धारहिं सोइ पावहिं भगवाना ॥
राम भक्ति विनु सब मत वेषा ❀ मिथ्या जिमि जल पर की रेखा॥

दोहा—पक्षपात की बात जनि, मानहु निज मन बीच ।
वैष्णव वेष सु धारि अँग, मिले प्रभुहिं वहु नीच॥२५॥

सब वेषनि महँ वैश्नव बाना ❀ अति उत्तम कह वेद पुराना ॥
अपर वेष बहु सूद्र समाना ❀ वैश्नव बेष सु विप्र सुजाना ॥
शुद्ध सात्वकी वैष्णव वेखा ❀ राम भक्ति कर सदन अद्धेषा ॥

नामहि श्री वैष्णव सु अनूपा ❀ दर्शनीय शुचि राम स्वरूपा ॥
अपर वेष जग कहहिं प्रवीना ❀ रज तम लिये सतोगुण हीना ॥
हिन्सा रहित अदोष प्रधाना ❀ बैष्णव वेष सु बेद बखाना ॥
वैष्णव वेष धारि अङ्ग नाना ❀ करत मलीन कर्म अज्ञाना ॥
वेष प्रताप न जान अभागा ❀ मिलेउ आइ हंसनि जिमि कागा ॥
अशुचिवस्तु निजप्रभु प्रतिकूली ❀ करहिं न ग्रहण सु वैष्णवभूली ॥
प्रभु प्रतिकूल पदारथ जोई ❀ करैं ग्रहण नहिं वैष्णव सोई ॥

दोहा—वैष्णव गृही विरक्त जग, तिन्हि सबकी यह रीति ।
प्रभु प्रतिकूल पदार्थजो, करत न तिन्हि सन प्रीति ॥२६॥

अमल तमालादिक मद मासा ❀ लहसुन प्याज मसूरी नासा* ॥
जो नहिं ग्रहण करैं भगवाना ❀ तजहिं ताहि मल मूत्र समाना ॥
यह लच्छण जिन्हि के उर नांहीं ❀ वञ्चक वैष्णव ते जग आंहीं ॥
सब जन होंइँ न एक समाना ❀ अस विचारि दूषहिं न सुजाना ॥
वंचक भगतउ वेष प्रभावा ❀ अशन बसन पावत विनु दावा ॥
चोखनि महँ मिलि खोटेउदामा ❀ चलत बिदित यह लोक तमामा ॥
बांस फांस जिमि मिसिरी मांहीं ❀ विकै सु सम कोउ दूषत नांहीं ॥
तिमि वंचक बनि वैष्णव भाई ❀ पुजहिं जगत यह वेष बड़ाई ॥
जीवत जग लूटत सुख सोई ❀ हुइहहि अन्त जु होनी होई ॥
वैष्णव धर्म निजातम ज्ञाना ❀ जानहिं ते पावहिं भगवाना ।
वेष धारि वैशनव की करनी ❀ करत न ते बूड़हि वैतरनी ॥

दोहा—संसकार पाँचोंनि के, विलग विलग गुण रूप ।
कहौं कछुक अब सुनहु सब, सज्जन सुखद अनूप ॥२७॥

प्रथम तिलक श्री विन्दु समेता ❀ देत सु सतगुरु कृपा निकेता ॥
सिंहासन सह ऊर्द्धसु पुण्डहिं ❀ सुर नर मुनिलखि नावत मुण्डहिं ॥

* सूंघनी—नाश ।

राम लखन दोउ तिलक अनूपा ❀ सिंहासन हनुमान सरूपा ॥
आचारज (श्री) विन्दु सुसीता ❀ राम प्रिया सब भांति पुनीता ॥
राम लखन बिनु सिया दुखारे ❀ रहत सियहिं दोउ प्राण पियारे ॥
रहि न सकत यक एक विहीना ❀ यह प्रसंग जानहिं सु प्रवीना ॥
तिलक रूप भे जब दोउ भाई ❀ विन्दु बनी सिय परम सुहाई ॥
तिलक विन्दु बिनु रहत उदासा ❀ रामलखन जिमि बिनु सियपासा ॥
तिलक ब्रह्म (श्रीं) जीव सुहावन ❀ विंदु सु माया मोद बढ़ावन ॥
तिलक बिंदु श्री की प्रभु ताई ❀ बहु विधि वेद पुराननि गाई ॥

दोहा—तिलक सु ज्ञान विराग दोउ, भक्ति बिन्दु सिय रूप ।
भक्ति विना फीके सकल, गुण ज्ञानादि अनूप ॥२८॥

आचारज श्री लाल अनूपा ❀ जो सब विधि मुद मङ्गल रूपा ॥
शिव आनन्द संहिता माँही ❀ कहेउतिलकविधिगिरिजापाँहीं ॥
देखउ सो पुनि ग्रन्थ अनेका ❀ पढ़त सुनत उपजइ सु विवेका ॥
बिन्दु विहीन तिलक जो लोगा ❀ देत होत सियराम वियोगा ॥
युगल उपासक भक्त विवेकी ❀ सेवहिं दम्पति पद प्रण टेकी ॥
लाल विन्दु श्री सह सिंहासन ❀ तिलक सु ऊर्द्धपुण्ड अघ नाशन ॥
तेहि ते भयेउ बहुरि बहु रूपा ❀ तिलक सकल प्रभु रूप अनूपा ॥
दुइ संग्या सब तिलकनि माँहीं ❀ वड़गल यक तिङ्गल सु कहाँहीं ॥
सिंहासन युत तिङ्गल राजैं ❀ बड़गल बिनु सिंहासन वाजैं ॥

दोहा—चतुर्भुजी कोउ लस्करी, बेंदी वारे कोइ ।
भये कहावहिं पै सकल, श्री वैष्णव जग सोइ ॥ २९ ॥

खान पान सम्प्रदा सु एका ❀ तिलक भेद केवलि बितरेका ॥
तिलक भेद के कारण नाना ❀ मुख्य एक सो सुनहु सुजाना ॥
भगतनि दुखद निसाचर रूपा ❀ प्रगटत रहहिं जगत अघकूपा ॥
लच्छी गिरि यक भयेउ गुसाँई ❀ प्रभु पद विमुख कंस की नाँई ॥

देविहिं सो आराधन कीन्हा ❀ दुर्गा तेहि यक खर्ग सु दीन्हा ॥
कहेउ खर्ग यह दूसर हाथा ❀ परिहै जब काटहि तब माथा ॥
जब लगि तब कर रहिहै सोई ❀ तब लगि तुम्हैं न जीतहिं कोई ॥
तब वह पाइ प्रबल बरदाना ❀ वैष्णव कुलते बैर जु ठाना ॥
लै सहाय बहु यती गुसांईं ❀ बहु वैष्णव मारेउ बरिआईं ॥
खोजि २ वैश्नव कुल हानी ❀ करै विपति नहिं जाय बखानी ॥

दोहा—पाँच सु वैष्णव काटि नित, तब वह भोजन खाय ।
कीन्ह मूढ़ अस कठिन प्रण, बरदानिक असि पाय॥३०॥

भजनानंद सु वैश्नव संता ❀ सुद्ध सांत उर भजहिं अनंता ॥
हिंसा रहित क्रोध मद माया ❀ भजहिं निरन्तर सिय रघुराया ॥
ते अति दुष्ट मांस मद भच्छी ❀ साक्त गुसांईं खल गिरि लच्छी ॥
दया रहित हिंसक बलवाना ❀ पायेउ पुनि कर अजय कृपाना ॥
बहुरि विमुख वहु मिले सहायक ❀ संतत जो भक्तनि दुख दायक ॥
तेहि भय वैश्नवकरि सुविचारा ❀ सैव साक्त इव वेष सम्हारा ॥
सीस जटा अँग भस्म रमाई ❀ कंठी तिलक त्यागि वहु भाई ॥
तुलसी काष्ट जनेऊ माँहीं ❀ राखहिं जटनि गरे विचनाँहीं ॥
आफत काल हेरि निज धर्मा ❀ धरेउ हृदय वैश्नव सुभ कर्मा ॥
सैवनि इव सब ठाट वनाई ❀ रक्षेउ प्राण धर्म निज भाई ॥
छाप तिलक पूजन व्रत पाठू ❀ करहिं हृदय लखि समय कुठाटू ॥
मनहीं मन विनवहिं रघुराजहिं ❀ राखौ प्रभु वाने की लाजहिं ॥

दोहा—तजेउ न वैश्नव वेष जो, डारेउ सो बहु मारि ।
मचेउ कुलाहल भूमि महँ, सोचत वैश्नव झारि ॥३१॥

वैश्नव कुल के अति दुखदाई ❀ बाढ़ेउ खल वहु वरनि न जाई ॥
सस्त्र लिये धावत जग डोलैं ❀ मारहिं निदरि वचन कटु बोलैं ॥
उमगेउ खल जिमि नदी तलावा ❀ वैश्नव धर्महिं चहत वुड़ावा ॥

हाहा कार दसौ दिसि मांहीं ❀ परेउ तासु डर सकल डरांहीं ॥
सोचहिं सव वैश्नव उर वीचा ❀ भक्त वंस नासेउ यह नीचा ॥
हे प्रभु दीन बंधु रघुराई ❀ वैश्नव कुल की करहु सहाई ॥
हे सिय स्वामिनि दया सु कीजै ❀ तोर सम्प्रदा निसि दिन छीजै ॥
हम अनाथ तू नाथ हमारी ❀ रच्छा करि मिथिलेस दुलारी ॥
यहि विधि वीते जव कछु काला ❀ सिय प्रेरित तव हनुमत वाला ॥
प्रगटेउ वैश्नव कुल अभिरामा ❀ स्वामी बालानन्द सु नामा ॥

दोहा—तिन्हिके संग सहायक, आचारज वलवान ।
सिय इच्छा अवतरेउ वहु, पारग वेद पुरान ॥३२॥

सव मिलि लै वहु वैश्नव संगा ❀ चले करन तेहि सँग रन रंगा ॥
सस्त्र सुविद्या सवहिं पढ़ाई ❀ बांधेउ सात अखाड़े भाई ॥
सैवाचरन असुचि डरि कोई ❀ धारेउ प्रथम सु वैश्नव जोई ॥
बालानन्द बुलाय छुड़ावा ❀ सुन्दर वैश्नव वेष बनावा ॥
अमल जटादि विभूति विहाई ❀ चले सकल मिलि करन लराई ॥
वालानंद प्रबल बल पाई ❀ बाढ़ेउ वैश्नव दल समुदाई ॥
लच्छीगिरि कहँ खोजत डोलहिं ❀ जय सियराम नाम सव बोलहिं ॥
एक समय सव सेंन समेता ❀ वदरी वन महँ रहेउ सचेता ॥
प्रात समै सव वैष्णव सैंना ❀ करत रहेउ नित नेम सुखैंना ॥
तेहि अवसर सो आइ प्रचारा ❀ लरन लगे सव करि जयकारा ॥
लच्छी गिरि अस्थिर इक ठामा ❀ वैठि जपै देवी को नामा ॥
तेहि के बल खल दल रन रारी ❀ करैं न मरैं सहहिं बहु मारी ॥

दोहा-स्वामी वालानन्द धरि, वाल रूप ढिग जाय ।
मोहि लीन निज कर खरग, मारेउ सहित सहाय ॥३३॥

रहेउ न कुल कोउ रोवन हारा ❀ ऊगत रवि जिमि नसत अँधारा ॥
प्रात समय यह विग्रह भयेऊ ❀ तेहिलगि विधिवत तिलक नदयेऊ ॥

रिपुहि जीति प्रभु पूजा कीन्ही ❀ तिलकनिहितअसआयसुदीन्ही ॥
स्वामी बालानन्द कृपाला ❀ राखउ तिलक लगे जस भाला ॥
जिन्हि तिलकन ते रिपु संहारा ❀ तेहिलगि इन्हकर करहु प्रचारा ॥
तिलक भेद यह तब ते भयेऊ ❀ जो जैसन तैसन रहि गयेऊ ॥
छिपेउ जाय कोउ साधु उजारा ❀ तापस बेष प्रथम जो धारा ॥
पर चारेउ सोइ वैश्नव माँहीं ❀ भस्म जटादिक येहि कुल नाँहीं ॥
सब श्री वैष्णव युगल उपासक ❀ सबके तिलक सुभग यम त्रासक ॥
जिन्हिके भालनि तिलकविराजत ❀ तिन्हैं विलोकि कालहू भाजत ॥
रामानन्दी तिलक निहारी ❀ नावत शीस देव मुनि झारी ॥

दोहा—तिलक देखि भूपति डरैं, भागहिं भूत पिशाच ।
तिलक बिना जग जीव बहु, नाचत नाना नाच ॥३४॥

तिलक लगावत सुर मुनि संता ❀ भजहिं निरंतर जो भगवन्ता ॥
तिलक देत लाजत अलसावत ❀ ते मति मन्द न प्रभुपद पावत ॥
तिलक ललाट लगाय सुहाये ❀ वैष्णव जग जीवन फल पाये ॥
तिलक लगाय सु भगत कहावै ❀ तिलक लगाय सकल सुख पावै ॥
तिलक लगाय सुगति मति होई ❀ तिलक सु करै तरै भव सोई ॥
तिलक देइ बन्धन ते छूटै ❀ तिलक देइ जग आनँद लूटै ॥
यज्ञ विवाह आदि शुभ कर्मा ❀ तिलक देइ साधै सब धर्मा ॥
तिलक चढ़ै तब पावै राजू ❀ तिलक करैं सबके शुभ काजू ॥
ऊर्द्ध पुण्ड जो भाल न धारत ❀ ताहि पकरि यम नरकनि डारत ॥
मनमुख तिलक न कीजै भाई ❀ गुरुमुख तिलक सदा सुखदाई ॥

दोहा—तिलक करैं धर्मातमा, बड़भागी बुधिमान ।
पापिनि तिलक न भावहीं, ग्रसेउ मोह अज्ञान ॥३५॥

उर्द्ध पुण्ड वैश्नव के देखी ❀ चढ़ति खलन सिर ताप विशेखी ॥
सकल उपाधी तिलक नशावत ❀ तिलकबिनाकोउ सुगतिनपावत ॥

तिलक महातम जानैं सोई ❀ कृपा राम की जापर होई ॥
कुष्टी भयेउ महा नृप एका ❀ बुलवायेउ सो वैद्य अनेका ॥
वैद्यनि कही हंस जो आवैं ❀ मारितिन्हैं औषधि सु बनावैं ॥
तब राजा दुइ वधिक बुलाये ❀ लावहु हंस पकरि समुझाये ॥
पैहौ बहु धन संशय नांहीं ❀ वधिक विचार कीन मनमांहीं ॥
मान सरोवर मिलिहैं: हंसा ❀ चले नाइ शिर करि सु प्रसंसा ॥
धन कर लोभ महा दुखदाई ❀ हंसनि पकरन चले कसाई ॥

दोहा—जेन केन विधि मानसर, बाधक पहुँचे जाय ।
लखेउ हंस सन्तनि निकट, क्रीड़त सुख समुदाय ॥३६॥

धरन चहहिं तब जाँयँ उड़ाई ❀ हाथ न आवत जानि कसाई ॥
हंसनि कर अति निर्मल ग्याना ❀ होत कहहिं श्रुति संत पुराना ॥
हितअनहितपहिचानत हिय को ❀ रहत भरोस जिन्हें सिय पियको ॥
तब वधिकनि यक युगति उपाई ❀ साधु बनें शिर तिलक लगाई ॥
लखि मराल गण सुमति दृढ़ाई ❀ अब इन्ह ते भागे न भलाई ॥
वेष विलोकि गयेउ पकराई ❀ अरपेउ प्राण सु प्रभुहित भाई ॥
हंसनि पकरि स्ववश करि भागे ❀ कंठीतिलक सु तेहिक्षण त्यागे ॥
मारग महँ कछु दिवस बितायेउ ❀ हंसनि सहित नगर निजआयेउ ॥
दीन हंस भूपहिं धन पाये ❀ तब भूपति सब वैद्य बुलाये ॥
हंसनि लखि सब वैद्य विचारी ❀ औटहु इन्हें तैल महँ डारी ॥
वैद कसाइनि दया न आई ❀ लागेउ हंसनि मारन भाई ॥

दोहा—तेहि औसर जनपाल प्रभु, वैद्य सुवेष बनाय ।
प्रगटि हरेउ नृप रोग सब, दीन्ह मराल छुड़ाय ॥३७॥

तिलकनि की मरजाद सदाई ❀ राखत आयेउ सिय रघुराई ॥
नकली तिलक विलोकि मराला ❀ फसे छुड़ायेउ आइ कृपाला ॥
गुरुमुख [illegible] की तिलक कहावत ❀ जिन्हें धारिजन प्रभु पद पावत ॥

तिलकनि की महिमा कछु गाई ❀ अब दुक सुनहु छाप प्रभुताई ॥
दूसर संसकार यह छापा ❀ छापत अंग नशैं तिहुँ तापा ॥
श्री सियराम अनन्य उपासी ❀ जिन्हिके युगल भावना खासी ॥
जानहिं निज उपासना भेदा ❀ ध्यावहिं दम्पति रूप अखेदा ॥
श्रीवैष्णव ते भाव विचारी ❀ छापहिं युगळ छाप अघ हारी ॥
प्रभु के धनुष वाण भय भंजन ❀ छापहिं दोउदोउभुजअरिगंजन ॥
सब दिन विजय भलाई तेही ❀ धनुष बान प्रिय लागत जेही ॥

दोहा—तिमि द्वै भूषण सीय के, छापहिं बिधिवत भाल ।
श्री सियराम सु दोउनि को, नाम निवारण काल ॥३८॥

जो नित छापहिं नाम लिलारा ❀ चढ़त न तिन्हि सिर पातकभारा ॥
दुइ दुइ दोउन के प्रिय भूषण ❀ नाम दोउन करयुगल अदूषण ॥
वाम भुजा धनु दाहिन वाना ❀ छापहिं सीतल तप्त सुजाना ॥
नयन निकट मुदरी दोउ ओरी ❀ तिलक मध्य चंद्रिका अखोरी ॥
तिलकनिदोउदिशियुगलसुनामा ❀ छापहिं सकलसुकृत सुखधामा ॥
दुइ सिय के दुइ प्रभु के चारी ❀ पंचम नाम युगल हितकारी ॥
पञ्च सुमुद्रा इन्हते कहहीं ❀ छापत अङ्ग अखिल अघ दहहीं ॥
चित्र कूट गिरि की रज पियरी ❀ तेहि महँ सानि छाप सब सियरी ॥
छापहिं तेहि कर तिलक अनूपा ❀ करहिं उपासक युगल सरूपा ॥
तिलक ललाट रामरज केरे ❀ राम उपासक करहिं घनेरे ॥

दोहा—पञ्च सु मुद्रा विन्दु वर, तिलकनि कर शृंगार ।
तिन्हि बिनु ऊर्द्ध सु पुण्ड जिमि, सोहत भूप उघार ॥३९॥

बिनु शृङ्गार न भूपति सोहत ❀ शृङ्गारहि कहँ सब कोउ जोहत ॥
पंच सु मुद्रा विन्दु उदारा ❀ जानि सु तिलकनि कर शृङ्गारा ॥
धारण करहिं सु युगल उपासी ❀ श्री वैष्णव साकेत निवासी ॥
सहित शृङ्गार तिलक जो करहीं ❀ तिन्हैं देखि पापिउ भव तरहीं ॥

तिलक शृङ्गार समेत बिलोकी ❀ आवहिंऋधिशिधिरुकहिंनरोकी ॥
तिलक सभूषण जिन्हिकहँप्यारे ❀ लागहिं ते प्रभु के प्रिय भारे ॥
सहित शृँगार सुतिलक निहारी ❀ काळहु उर उपजति भय भारी ॥
भाव भगति गुण ग्यान विचारा ❀ कर्म धर्म शुभ सुकृत अपारा ॥
निवसहिं तासु हृदय सुख सारा ❀ तिलक सभूषण जासु लिलारा ॥
तिलक सभूषन धारत जोई ❀ पावत श्री सियरामहिं सोई ॥

दोहा–पञ्चकेश युत पीत पट, तिलक सभूषण भाल ।
मालाकार जनेउ गर, युगल सु कंठी माल ॥ ४० ॥

कर्म ग्यान विद्या बल वारे ❀ ते सब इन्हते दूरि विचारे ॥
धारहिं श्रीवैष्णव बड़ भागी ❀ श्री सियराम चरण अनुरागी ॥
केतिक गुप्त उपासक आँहीं ❀ युगल भाव राखत मनमाँहीं ॥
तेसु चंद्रिका मुद्रा पासा ❀ राखहिं धनु शर नाम सुदासा ॥
मुद्रा, बाण, चन्द्रिका, चापा ❀ युगल नाम ये पाँच सु छापा ॥
तजहिं न वैश्नव जन विग्यानी ❀ पांचहु छाप प्राण सम जानी ॥
पूजहिं सब नित राखि सुनेरे ❀ जानि इष्ट निज निज प्रभुकेरे ॥
युगल उपासक बैष्णव सगरे ❀ कोउअबोधकोउसबगुण अगरे ॥
पांचौं छाप पूजिबे लायक ❀ सबरसग्यातनिकहँ सुखदायक ॥
धनुष बाण छापत सब कोऊ ❀ सीतल तप्त यथा विधि दोऊ ॥
सीतल छाप परम सुखदाई ❀ छापहिं भुजनि रसिक समुदाई ॥

दोहा–तीसर मुदरी वाम कर, छापहिं नाम लिलार ।
पंचम छाप सु चंद्रिका, पूजहिं सहित बिचार ॥४१॥

पाँचौ छाप रसिक नित छापहिं ❀ तेन कठिन त्रयतापनि तापहिं ॥
पाँचौ छाप बिना कल्याना ❀ लहहिं न वैश्नव कहत सुजाना ॥
यह सब प्रेम भाव की बाता ❀ जानहिं प्रेमी जन रस ज्ञाता ॥
जो सीता निज इष्ट बखानें ❀ राम उपासक कहहिं सयानें ॥

जानहिं ते उपासना भाऊ ❀ जिन्हिके उर निवसत रघुराऊ ॥
कुम्भजादि जो युगल उपासक ❀ तिन्हिकेवचनपढ़हुभ्रमनाशक ॥
येहि महँ जो प्रमाण सब गाऊँ ❀ बढ़ै प्रसंग पार नहिं पाऊँ ॥
संसकार दूसर ये छापा ❀ कहेउ कछुकतिन्हिकरसुप्रतापा ॥
तीसर कण्ठी माल सुहावा ❀ संसकार चहुँ वेदनि गावा ॥
दुइ छरकी कण्ठी गर पूरी ❀ लगी रहे मुद मङ्गल मूरी ॥
खंडन करि वा अविधि समेता ❀ धारन करहिं ते अबुध अचेता ॥

दोहा—तुलसी काष्ट पवित्र अति, प्रभु कहँ प्रिय जिमि श्वान ।
तेहि कर कण्ठी माल गर, धारहिं भगत सुजान ॥४२॥

भरि गर कंठि अठोतरि माला ❀ पहिरि भजिय सियराम कृपाला॥
तिलक छाप कंठी विनु दोऊ ❀ नाक हींन जिमि सुन्दर कोऊ ॥
विनु युवती जिमि भूपति गेहा ❀ भजन भाव जिमि विनु अशनेहा ॥
विद्या विनु द्विज नृप विनु नीती ❀ मनुष ज्ञान विनु प्रीति प्रतीती ॥
तिलक छाप कंठी विनु तैसे ❀ परहित रहित संत शुचि जैसे ॥
छाप तिलक कंठी विनु फीके ❀ लागत जिमि भोजन विनुघीके ॥
अस विचारि कंठी दृढ़ धारै ❀ श्रद्धा सहित न कबहुँ विसारै ॥
दर्शनीयँ धागा में पोही ❀ उभय लरी लागै न असोही ॥
दुइ छर की कंठी गरनांहीं ❀ ते न सुवैश्नव भक्त कहांहीं ॥
तुलसी काठ कंठिका हीना ❀ जिन्हिके गर ते जीव मलीना ॥

दोहा—धातु तार संसर्ग ते, तुलसी महिमा जाय ।
पाट सूत महँ गूँथि गर, राखहिं सुजन लगाय ॥ ४३ ॥

श्री तुलसी जग परम पावनी ❀ सियरामहिं प्रियअघ नसावनी ॥
त्रिगुना तीत विकार विहीना ❀ तेहि महँ पोहत धातु मलीना ॥
धातु तार तुलसिहिं जो पोहत ❀ तिन्हिके दिसिसियरामनजोहत ॥
रस महँ विष सुदूध महँ पानी ❀ मिलवहिं ते मनमुख अग्यानी ॥

सुरसरि नीर वारुनी जैसे ❀ तुलसि धातु संसर्गहु तैसे ॥
तुलसी महिमा माया धारी ❀ जाने कहा मूढ़ अविचारी ॥
जेहि माया कहँ जानि मलीना ❀ त्यागहिं प्रभुप्रिय भक्त प्रवीना ॥
तुलसिहिं तेहि माया के तारा ❀ बांधहिंजिन्हिकरमलिनविचारा॥
तुलसी काष्ट कंठिका माला ❀ तिलक भाल मुख नाम रसाला ॥
ये तीनों गुरु सन बिनु लीन्हें ❀ गति न पाव कोउ सुकृतहु कीन्हें ॥
कोटिनि साधै साधन कोई ❀ तुलसी बिनु प्रभु मिलत न सोई ॥

दोहा–तुलसी महिमा कहहुँ कछु, नारद मुनि एक बार ।
गयेउ द्वारिका दरश हित, प्रभुके करि सु विचार॥४३॥

ग्याता वैशनव धर्म सु केरे ❀ भली भांति सिय वर पद चेरे ॥
प्रथम सत्यभामा के गेहा ❀ गये मिली सो सहित सनेहा ॥
नारद ते सु कृष्ण की रानी ❀ बोलीं करि पूजा मृदु बानी ॥
जन्म जन्म पति होंयँ हमारे ❀ कृष्णचन्द्र मुनि जग उजियारे ॥
तब मुनि कही दान इन्हि देहौ ❀ पुनि पुनि तौ तुम्हयह वर पैहौ ॥
सुनि रानी धरि कृष्ण सुहाथा ❀ अर्पेउ मुनिहिं चले उठि साथा ॥
जात देखि रानी अकुलानी ❀ तजे न जात सुनहु मुनि ग्यानी ॥
बिलग होत उर रहत न प्राना ❀ छाँड़हु नारद कृपा निधाना ॥
कहेउ तौलि कंचन मुनि लीजै ❀ प्रभुहि छोड़ि करि कृपासु दीजै ॥
हरि रुख लखि कह नारद लीजै ❀ तौलि बरावरि भूषण दीजै ॥

दोहा–गहननिकर अभिमान अति, रहेउ रानि उर बीच ।
निदरति रहीं सु रुक्मिनिहिं,तुलसि भक्त लखि नीच ॥४४॥

रुक्मिणि श्री तुलसी की पूजा ❀ करति रहीं नित काम न दूजा ॥
तिन्हि सन सबरानी अभिमानी ❀ बोलत रहीं तर्क की बानी ॥
तेहि लगि प्रभु यह कौतुक ठाना ❀ नासेउ सब कर धन अभिमाना ॥
तौलन लगीं प्रभुहिं सब रानी ❀ धरे सकल भूषन निज आनी ॥

पूर न परी हृदय अकुलानी ❀ तब बोलेउ प्रभु हित की वानी ॥
रुक्मिणि कहै करहु सोइ काजू ❀ मिलिहहिं हम रीझहिं मुनिराजू ॥
परीं जाय तब रुक्मिणि चरना ❀ दीन्ह एक सो तुलसी परना ॥
कहेउ सकल धन लेहु उतारी ❀ धरहु एक यह दल अति भारी ॥
तुलसी पत्र समान न कोई ❀ प्रभुकहँ प्रिय जिय जानहु सोई ॥
धर्म कर्म कोटिन गो दाना ❀ तुलहिं न तुलसी पत्र समाना ॥

दोहा—अचरज मानेउ रानि सुनि, कीन्हेउँ तेहि विधि जाय ।
तुलसी दल भारी भयो, हलुक भये यदुराय ॥४५॥

रानिन कर अभिमान नसायेउ ❀ मुदित भये मुनि तुलसी पायेउ ॥
तुलसी के यक पत्र समाना ❀ भयेउ न माया श्री भगवाना ॥
रानी लखि तुलसी प्रभुताई ❀ पूजन लगीं सकल मनलाई ॥
श्री रुक्मिणिहिं गुरू करिमानी ❀ तुलसी महिमा जिन ते जानी ॥
तेहि तुलसी कहँ धातुनि संगा ❀ मढ़ि पहिरहिं मन मुख जन अङ्गा ॥
सूत पाट मृदु धागनि मांहीं ❀ पहिरिय गूंथि दोष कछु नांहीं ॥
धातु तार तुलसिहि जनि भाई ❀ बाँधहु रुष्टहिं सिय रघुराई ॥
तुलसि काष्ट के भूषन नाना ❀ पहिरहिं ते पावहिं भगवाना ॥
तुलसिकाष्टपरलिखि सियरामा ❀ धारहिं गर ते लहहिं सुधामा ॥
नामांकित तुलसी की माला ❀ कंठ कंठि लखि डरपत काला ॥
तुलसि काठ जिन्हिकेगर नांहीं ❀ अवसि गिरहिं ते नरकनि मांहीं ॥

दोहा—अस विचारि तजि विलम गुरु, करहु होत बड़ हानि ।
धारहु कंठी तिलक अँग, परि हरि मनमुख वानि ॥४६॥

तुलसी की कंठी गर मांहीं ❀ बाँधत पाप समूह नसांहीं ॥
जब सतगुरु कंठी कर लेहीं ❀ तेहिछण पाप छाँड़ि तनु देहीं ॥
बांधहिं जब गर गांठि लगाई ❀ मनहुँ धर्म चौकी बैठाई ॥
बाँधी कंठ कंठि गुरु जबते ❀ पाप पन्थ पग परत न तबते ॥

कंठी बांधि करन कोउ पापा ❀ चलत थरहरै आपहि आपा ॥
कंठी कहति बात सुनि लीजै ❀ हमहि बांधि गर पाप न कीजै ॥
होइ हृदय अस झीनी बानी ❀ समुझहिं ताहि सु आतम ज्ञानी ॥
चलत कुपन्थ कंठि बरियांई ❀ रोकत जीवनि गुरुकी नांई ॥
कंठी गर बिच जब लगि नाँही ❀ तब लगि बसत पाप तन माँहीं ॥
कंठी बाँधन हित जो देरी ❀ करत होत अगती तेहि केरी ॥

दोहा–किये अमित अघ प्रथम जो, ते सब ज़ात बिलाय ।
जेहि छण सतगुरु कंठिगर, बाँधत ज्ञान दृढ़ाय ॥४७॥

कंठी की महिमा गुरु देवा ❀ कहिहहिं तब जानहुगे भेवा ॥
मनमुख कंठी जो जन धारे ❀ लगहिं न ते भव सिन्धु कनारे ॥
जिमि कोउ भुजबल पैरिगमारा ❀ जान चहहिं वारिधि के पारा ॥
गुरुमुख कंठी नाव समाना ❀ बैठि न बूड़हिं चतुर सुजाना ॥
केवट ज्ञान विचार खिवैया ❀ जीवनि भवनिधि पार लगैया ॥
अपर काठ नर तनहिं उबारै ❀ तुलसी काठ जीव कहँ तारै ॥
यह महिमा प्रभु भक्त विचारहिं ❀ तेहिलगितुलसिमाल बहुधारहिं ॥
करनि भुजनि गर उर श्रुति भाला ❀ धारहिं तुलसि काष्ट मणि माला ॥
तुलसी माल कंठि गर धारी ❀ भक्त तरहिं भव सागर भारी ॥
कंठी तिलक न कादर धारहिं ❀ तिन्हैं पकरि यम नरकनि डारहिं ॥

दोहा–तिलक छाप कंठी सु तिहुँ, धारहिं वैष्णव वीर ।
राम विमुख कादर कुटिल, भागहिं देखि अधीर ॥४८॥

कंठी तिलक सु छाप कृपाना ❀ धारण करहिं बीर बलवाना ॥
श्रद्धा कवच ढाल बिस्वासा ❀ धारहिं राम भक्त तजि त्रासा ॥
केतिक धारण करि परिहरहीं ❀ ते कादर पुनि भवनिधि परहीं ॥
जे कंठी बाँधे बँधवावैं ❀ ते बिनु यतन राम कहँ पावैं ॥
निगुरनि जो गुरुमुख करवावहिं ❀ ते तनु लगि प्रभु नाम सिखावहिं ॥

जे खल कंठी तिलक छुड़ावत ❀ ते खर स्वान सुअर तनु पावत ॥
तिन्हि सम पापवन्त नहिं कोई ❀ कंठी तिलक छुड़ावत जोई ॥
वैष्णव वेष त्यागि जो आना ❀ करै गुरू सो होय पखाना ॥
श्री बैष्णवहिं अवैष्णव कोई ❀ करै शिष्य सूकर ते होई ॥
कोटिन जन्म स्वान के पावै ❀ जो कोउ कंठी तिळक छुड़ावै ॥

दोहा—तुलसी तिलक न त्यागिये, जो शिर काटै कोय।
छाप सहित तब रीझि प्रभु, अपनै हैं अघ धोय ॥४९॥

तुलसी बिनु प्रभु रीझत नाँहीं ❀ कोटिन जतन करौ जग माँहीं ॥
कहौं कछुक तुलसी प्रभुताई ❀ सुनि समुझौ जन मन चितलाई ॥
तुलसी कीन्ह तपस्या भारी ❀ विन्ध्याचल गिरि गुहा मझारी ॥
सिय की सखी होउँ प्रभु प्यारी ❀ यहि कारण काया कसि मारी ॥
रटै अखण्ड नाम सियरामा ❀ तैल धारवत तजि सब कामा ॥
भोजन सयन वैन तजि दीना ❀ पगी नाम रस जिमि जल मीना ॥
ठाढ़ी रहैं सदा यक ठामा ❀ अचल धारि तरु रूप ललामा ॥
बीते सम्बत साठि हजारा ❀ तप प्रभाव भा पीत पहारा ॥
तेहिं कर नाम रामरज आही ❀ धारहिं राम उपासक जाही ॥
देखि प्रबल तप राम ससीता ❀ आये निकट कृपाल बिनीता ॥

दोहा—फेरेउ कर तेहि शीस पर, तुलसी नाम पुकारि।
भई नारि चरणनि परी, दम्पति रूप निहारि ॥ ५० ॥

अस्तुति कीन विपुल कर जोरी ❀ पुरयेउ नाथ सु आसा मोरी ॥
तब सिय सहित राम उर लाये ❀ दीन्ह बहुरि वरदान सुहाये ॥
तुलसी तू मम नाम उचारी ❀ कोन कठिन तप सहिदुख भारी ॥
तेहि लगि हम दोउ तोर अधीना ❀ रहिहैं सन्तत सुनहु प्रवीना ॥
तरु स्वरूप जो एक तुम्हारा ❀ प्राण समान हमहिं सो प्यारा ॥
यह तरु तोर रहहिं जेहि ठामा ❀ करिहैं तहां हमहुँ विश्रामा ॥

रिद्धि सिद्धि संपति गति ग्याना ❀ तव तरु सेवत लहहिं सुजाना ॥
तव तरु की जो सेवा करिहैं ❀ ते विनु श्रम भवसागर तरिहैं ॥
तुलसी दल बिनु पूजा मेरी ❀ करहिं ते सहिहैं विपति घनेरी ॥
तुलसी दल विनु अशन अपारा ❀ अरपै लखहुँ न जानि असारा ॥
कवनिहुं वस्तु तुलसिका हीना ❀ करिहौं ग्रहन न सुनहु प्रवीना ॥

दोहा–तुलसि काष्ट कंठी रहित, सिव विरंचि किन होइ ।
सपनेउँ मोहिं न पावहीं, सत्य कहौं सुनु सोइ ॥ ५१ ॥

तुलसी विनु मोहि लहहिं न कोई ❀ औरहु सुनि यक आसिष सोई ॥
जहां कीन तू तप मम कारण ❀ तहं की रज करिहहिं सबधारण ॥
रामसुरज यहि कहँ सब कहहीं ❀ धारण करत सकल अघ दहहीं ॥
यहि रँग महँ रँगि वसन सु पीरे ❀ पहिरहिं ते निवसहिं मम तीरे ॥
करहिं तिलक छापा जो कोई ❀ यहि रज महँ पावहिं मोहि सोई ॥
यहि विधि तेहि बहु दै वरदाना ❀ गये लिवाय सङ्ग भगवाना ॥
यह प्रसंग सियराम उपासी ❀ सुनि ससुझहिं बुधभक्त उदासी ॥
सोइ तुलसी सिय सखी सु प्यारी ❀ भई धारि तिय तनु गुनगारी ॥
*तुलसीदास भई पुनि सोई ❀ यह प्रसंग जाने कोइ कोई ॥

❀ भक्त माल में श्री नाभा जी लिखे हैं, की कलि कुटिल जीव निस्तार हित बालमीकि तुलसी भयो । तैसे ही एक और प्राचीन महात्मा के वचन हैं भक्ति सार ग्रन्थ में, की सिय सनेह कर विरवा तुलसी नाम । प्रगटी भूतल रचन चरित प्रभु केर ललाम-आनन्द रामायन में भी लिखा है, की एक तुलसी नाम की सचहरी श्री सीताराम जी की परम प्यारी संपूर्ण रहस्यों की ग्यातारहीं, औ यों भी सुनने में आता है, की श्रीगोस्वामी श्री हनूमान जी का ही अवतार हैं, विस्वासी सत सज्जन ये सब ही बातें सत्य समुझि संका नहीं करते, कारन युग २ में भागवतों के नाना प्रकार से अवतार होते ही रहते हैं, कभी तुलसी नाम की ही सहचरी श्री गोस्वामी जी भये होंयेंगे ? तो आश्चर्यही क्या है ? इति—

सुनि आचरज न कीजै भाई ❀ प्रभु महिमा अनंत श्रुतिगाई ॥
तुलसी महिमा जो जन जानहिं ❀ ते न तजहिंजिमि खलमदमानहिं॥
तुलसि काठ की कंठी माला ❀ धारहिं निज सिय राम कृपाला ॥

दोहा—संसकार तीसर सु यह, कहेउ यथा मति गाय ।
चौथ मंत्र कर सुनहु अब, सन्सकार सुखदाय ॥५२॥

युगल मंत्र दाहिन श्रुतिमांही ❀ सुने हर्षि श्री सत गुरु पाहीं ॥
गुरु हनुमान मंत्र दोउ एहा ❀ लेइ जपै नित सहित शनेहा ॥
शरणागत युत मंत्र सु पावन ❀ लेइ अवसि पुनि पाप नशावन॥
सरनागत सु मंत्र यह भाई ❀ जपत जरत कलि मल समुदाई ॥
पुनि द्वै मंत्र युगल सुख दाई ❀ लेइ सु करि सतगुरु सिवकाई ॥
वहुरि लेइ गायत्री दोऊ ❀ जेहिते संशय रहहिं न कोऊ ॥
धनु बाणादि पञ्च जो छापा ❀ तिन्हिके मंत्र लेइ तजि दापा ॥
युगल मंत्र के ये सब अङ्गा ❀ लेइ सु गुरु सन करि सतसङ्गा ॥
इन्हि विनु युगल मंत्र सुखदाई ❀ होत न हृदय विचारहु भाई ॥
परम प्रतापी मंत्र सु सगरे ❀ युगल मंत्र के नेहीं अगरे ॥

दोहा--मंत्रीगण विनु भूप जिमि, अङ्गनि विनु नर काय ।
युगल मंत्र सब मंत्र विनु, कहहिं सुबुध तिमि गाय ॥५३॥

ये सब मंत्र सु मन्त्र राज के ❀ वैठैया संगी समाज के ॥
भरत लखन रिपुहन तिहुँ भाई ❀ इन्हिके मन्त्र सबहिं सुखदाई ॥
श्रुति कीरति माण्डवि उरमीला ❀ चन्द्रकला श्री चारु सु शीला ॥
इन्हिके मंत्रनि विनु सुखदाई ❀ होत न सीता मन्त्र सु भाई ॥
सीता मन्त्र विना शिधि दायक ❀ राम मन्त्र नहिं होत सहायक ॥
कोटिन वर्ष जपै विधि साथा ❀ तबहुँ न रीझहिं सिय रघुनाथा ॥
सियहिं विहाय भजे सिव रामहिं ❀ दशहजार सम्वत वशुयामहिं ॥
भयेउ अन्त रघुपति अपराधी ❀ सियहिं विहाइ राम कहँ साधी ॥

प्रभु सन पाय मर्म सह सीया ❀ भजेउ बहुरि भा सीतल हीया ॥
युगल मन्त्र सियराम सु नामा ❀ जपत भयेउ सिव सब गुनधामा ॥

दोहा—वैष्णव युगल उपासकौ, यह प्रसंग उर आनि ।
करहु चेत युगलहि भजहु, होइ अनन्य हठ ठानि ॥५४॥

सिया मन्त्र बिनु राम मन्त्रवर ❀ सोहन जिमि तिय हीन ग्रही घर ॥
राम मन्त्र भवतारक नाई ❀ सीता मन्त्र खिवैया भाई ॥
राम मन्त्र तनु परम सुहावा ❀ तेज सु सीता मन्त्रहि गावा ॥
राम मन्त्र जिमि अशन सु नाना ❀ स्वाद सु सीता मन्त्र बखाना ॥
राम मन्त्र फल सुमन सुहाये ❀ रस सुगन्ध सिय मन्त्र सु गाये ॥
राम मन्त्र वर ब्रह्म अनूपा ❀ शक्ति सु सीता मन्त्र सरूपा ॥
राम मन्त्र भूपति रत नीता ❀ रानी तेहिकर मन्त्र सु सीता ॥
राम मन्त्र समदर्शी पण्डित ❀ विद्या सीता मन्त्र अखण्डित ॥
राम मन्त्र शुचि संत विचारी ❀ सीता मन्त्र भजन अघहारी ॥
राम मन्त्र जल सिय सु मंत्र थल ❀ राम मन्त्र चख सिय सु मंत्र पल ॥

दोहा—अस विचारि लीजिय युगल, मंत्र सु वैष्णव भाय ।
एकै भजि तजि एकही, होउ न विमुख बजाय ॥५५॥

हठ करि चलहु न मनमुख पन्था ❀ पढ़हु सु निज आचार्य्यनि ग्रन्था ॥
हठ करि होत स्वइष्ट विरोधी ❀ तेहि लगि चलहु सुमारग सोधी ॥
आगे भयेउ रसिक रस ग्याता ❀ श्री सियराम उपासक त्राता ॥
सनकादिक नारद हनुमाना ❀ घटज सु रामानंद सुजाना ॥
केवल कूबा कबीर काल्हू ❀ अग्र कील नाभादि कृपाल्हू ॥
युगल भावना के अधिकारी ❀ भयेउ प्रथम आचारज भारी ॥
बावन द्वारे जिन्हि प्रगटाये ❀ युगलचरित्र सकल मिलि गाये ॥
तिन्हि के भाव विलोकहु भाई ❀ केहिविधिमिलेउसोप्रभुसनजाई ॥
तेहि मारग पर चलत अयासा ❀ पावहिं श्री सियरामहिं दासा ॥

केहिलगि जल्पिकल्पि हठ ठानी ❀ नाशहु नर तनु मन सुखज्ञानी ॥
रसिकनि की बानी सुख सानी ❀ सुनि धारहु उर हित पहिचानी ॥
दोहा—रुक्ष कर्म ज्ञानादि जो, भक्ति भावना हीन ।
ऋषी धर्म धरि लीन शिर, दास धर्म तजि दीन ॥५६॥
कर्म ग्यान नाना मत वादा ❀ नाशत राम भजन रस स्वादा ॥
पढ़हु सुनहु पुरखनि के वचना ❀ त्यागि दुखद निजमनकीरचना ॥
युगल मंत्र की तजि उपासना ❀ साधत बहु सुर करि कुवासना ॥
मन्त्र सु सप्त कोटि जग मांहीं ❀ युगल मंत्र सदृश कोउ नांहीं ॥
षट षट अक्षर के दोउ मन्तर ❀ श्री सियराम रूप नहिं अन्तर ॥
दोउमिलि भयेउ सु द्वादश अङ्का ❀ जपत नशावत सकल कलङ्का ॥
नाम रूप जिमि प्रभुगुण धामा ❀ आराधहिं जन युगल अकामा ॥
तैसहि युगल मन्त्र कहँ जानहु ❀ आनबात जनि उर विच आनहु ॥
युगल मन्त्र जब लगि नहिं होई ❀ तबलगि प्रभुकहँ पाव न कोई ॥
सात करोर मन्त्र चहुँ वेदा ❀ पढ़हु पुरान न नासहि खेदा ॥
दोहा—युगल मंत्र जब लगि न श्रुति, सुनि सनेम जपकीन ।
तबलगि भटकत जगत जन, भगति भावना हीन ॥५७॥
युगल मन्त्र विधिवत जपकरहीं ❀ ते जन अवसि घोर भव तरहीं ॥
युगल मन्त्र विनु मोक्ष न होई ❀ कोटिन मन्त्र जपै किन कोई ॥
युगल मन्त्र विनु युगल उपासी ❀ होत न होय सकल गुण रासी ॥
युगल मन्त्र जब लगि नहिंपासा ❀ तबलगि लागत बेष उदासा ॥
युगल मन्त्र भावना विहीना ❀ श्री वैष्णव पद पाव न दीना ॥
युगल मन्त्र विनु बेष सुभारा ❀ ढोये फिरत अबुध अविचारा ॥
युगल मन्त्र बिनु कोमल ताई ❀ मिलै न मिटति हृदय कुटिलाई ॥
युगल मन्त्र बिनु हृदय कठोरा ❀ द्रवत न सुमिरत युगल किशोरा ॥
हृदय द्रवे विनु प्रभु पद दूरी ❀ मनमुख भजन मरिय करिभूरी ॥

युगल मन्त्र विनु प्रेम न आवत ॥ प्रेम बिनाकोउ प्रभुहिं न पावत ॥

दोहा--श्री वैष्णव की साज शुभ, सजे मनोहर अंग ।
युगल मंत्र जानत नहीं, करिय न तिन्हि कर संग ॥५८॥

युगल मन्त्र विनु वेष सु कैसे ॥ सुभग सिंगार मृतक तन जैसे ॥
युगल मंत्र विनु सुगति न लहहीं ॥ जीव सु सकल उपासक कहहीं ॥
युगल मन्त्र विनु युगल सरूपा ॥ मिलत न नशत घोर भव कूपा ॥
युगल मन्त्र विनु वैष्णव काँचा ॥ वेष वनायेउ हृदय न साँचा ॥
युगल मंत्र कर जब लगि भेदा ॥ जानहिं मिटत न तबलगि खेदा ॥
युगल मंत्र विनु श्री सियरामा ॥ द्रवत न लहहिं जीव विश्रामा ॥
युगल मंत्र सत गुरु सन लीजै ॥ अबहुँ चेति उर हठ तजि दीजै ॥
केवल राम मन्त्र कर जापू ॥ करत चढ़त उलटो शिर पापू ॥
॥ विमुख होत प्रभु ते ज़न सोई ॥ राम मंत्र केवल ज़पु जोई ॥
भूलिहु केवलि राम मन्त्र बर ॥ जपहिंनरसिकजिनहिंप्रभुकरडर ॥

दोहा--अर्ध मंत्र श्री राम कर, सीता मंत्र विहीन ।
तेहि लगि लागत जपत अघ, भाषतभाव प्रवीन ॥५९॥

राम उपासक ये सब मर्मा ॥ जानत पंडित भूलेउ भर्मा ॥
इहाँ न चलिहहिं कछु चतुराई ॥ बाक बिलाश न वल बरियाई ॥
सुष्क कर्म ज्ञानादिक गाथा ॥ चलहिं न श्री उपासना साथा ॥
यह उपासना भेद सु गूढ़ा ॥ लखहिं उपासक जन न विमूढ़ा ॥
बेद पुराण शास्त्र गम नाँहीं ॥ श्री सियराम उपासन माँहीं ॥

॥ सीतां विनाये सखिकोटि कल्प समास्तुरामं जनकात्म जाद्य ।
ध्यायंति निन्द्या श्रय भागिनस्ते राम प्रसादाद्विमुखाः भवन्ति ॥
रामस्तुवस्यो भवतीह सीता प्रोच्चारणायेतुजपंति सीतांम् ।
भूत्वा नुगामी भजते जन स्तान् ब्रह्मेस सक्रार्चित राजपुत्रः ॥
(श्री सीताराम नाम प्रताप प्रकासे)

कुम्भजादि सनकादिक नारद ❀ युगल मंत्र जापक सु विशारद ॥
जानहिं ते उपासना भाई ❀ झगरहिं अपर सुवेष वनाई ॥
युगल मन्त्र महँ जिन्हकी प्रीती ❀ जानहिं ते उपासना रीती ॥
पण्डित घोषहिं वेद पुराना ❀ यह उपासना भाव सु आना ॥
कोटिन पण्डित वेष सुधारी ❀ येक उपासक पर बलिहारी ॥

दोहा–युगल उपासक जनन कर, भेद सु भाव विचार ।
लोक वेद बाहिर बहुरि, मन गुण वानी पार ॥६०॥

युगल उपासक सम कोउ नांहीं ❀ भागवन्त सुर नर मुनि मांहीं ॥
प्रभुहि मिलन चाहैं जो कोई ❀ जपैं मन्त्र युग गुरुमुख होई ॥
सुनहु विनय मम वैष्णव भाई ❀ युगल मन्त्र जपिये सुखदाई ॥
युगल स्वरूप नाम गुण धामा ❀ सेइय जपि युग मन्त्र ललामा ॥
प्रभु प्रतिकूल काज परि हरहू ❀ पूर्वाचार्यनि पथ अनुसरहू ॥
युगल मन्त्र जवहीं गुरु पांहीं ❀ लेत सकल अघ ओघ नशाँहीं ॥
अनुभवादि गुण ज्ञान विचारा ❀ प्रगटत जपत मंत्र युग प्यारा ॥
युगल मन्त्र जवलगि नहिं पावत ❀ तबलगि शिष्य न गुरु कहावत ॥
युगल मन्त्र जेहिते जो लेई ❀ साँचे गुरु चेला जग तेई ॥
युगल मन्त्र तजि मंत्रजु आना ❀ लेत देत ते जीव अयाना ॥
युगल मंत्र जब लगि श्रुति माँहीं ❀ परतन तब लगिदुख न नसाँहीं ॥

दोहा–युगल मंत्र मंत्रेश लखि, श्री सियराम सरूप ।
गुरुसन सुनि नित जपहिं जे, ते न परहिं भव कूप ॥६१॥

सुनि मम विनय यही चित दीजै ❀ युगल मंत्र दाता गुरु कीजै ॥
सकल उपाय त्यागि कलि काला ❀ युगल मंत्र जपिये जन पाला ॥
युगल मंत्र लीजै तजि देरी ❀ सज्जन सकल विनय सुनि मेरी ॥
चौथ सु संसकार ये नीके ❀ युगल मंत्र तारक सबही के ॥
महिमा इन्हिकी गाय न जाई ❀ रामहुँ थके बखानत भाई ॥

पंचम संसकार अब गाई ※ कहउँ सु सतगुरु पद शिर नाई ॥
शरण दास दासी तन नामा ※ पावहिं सतगुरु सन नर वामा ॥
प्रभु सम्वन्धी तेहि संसारा ※ करै सुशिष्य विचारि प्रचारा ॥
जो न प्रचारहिं गुरु प्रद नामा ※ द्रवहिंनतिन्हिपर गुरुसुखधामा ॥
गुरु प्रद नाम छिपावत जोई ※ तिन्हि पर प्रभुहुप्रसन्न न होई ॥
अस विचारि गुरु दीनजो नामा ※ करहु प्रचार जगत नर वामा ॥

दोहा—बिसरहिं सत गुरु दीन जो, प्रभु सम्वन्धी नाम।
भजनहु करत न होत जग, तिन्हिके पूरण काम॥६२॥

संसकार जेहि के सु करावै ※ तेहि सम्वन्धी नाम धरावै ॥
श्री सियराम मंत्र उर धरहीं ※ नामकरन आनहिं कर करहीं ॥
सिय रघुवर कर मंत्र सुनावत ※ कृष्णादिक कर दास बनावत ॥
जेहि कर मंत्र नाम तेहि केरा ※ देइ होइ तब मोद घनेरा ॥
नाम सुदेइ मन्त्र अनुकूला ※ जेहि न होय उर पाछे सूला ॥
तजि सियवर कुल नाम अनेरे ※ धरहिं अबुध जग गुरू घनेरे ॥
मानिक मोती हीरा दासा ※ धरत नाम तजि प्रभुकुल खाशा ॥
ग्यान भये पर करत गलानी ※ शिष्य नाम निज दूसर जानी ॥
मन क्रम वचन सु इष्टहिं ध्यावै ※ उर अनन्यगति जब सरसावै ॥
तब खटकत वह अटपट नामू ※ पलटि न सकत होत दुखधामू॥

दोहा—प्रथमहिं धरैं बिचारि गुरु, शिष्यन केर सुनाम।
जेहि न होय पछिताव पुनि, सेवत इष्ट ललाम ॥६३॥

नाम करन गुरु चेलनि केरे ※ करें अवसि करि प्रभुपद चेरे ॥
गृही जनन के नाम न धरहीं ※ केतिक गुरु ते केहि विधि तरहीं ॥
संसकार करि देत सु चारी ※ पञ्चम नाम न देत अनारी ॥
नाम विना खंडित बुध कहहीं ※ संसकार चहुँ पाप न दहहीं ॥
संसकार बहु नाम विहीना ※ पग विनु घर इव कहहिं प्रवीना ॥

दास नाम नहिं गेहिनि केरे ❀ होत विशेष सु शरण घनेरे ॥
दास धर्म अति कठिन बखाना ❀ तहँ किमि निबहहिं ग्रही अयाना ॥
तेहि लगि शरण नाम सुखराशी ❀ सबहिं सुलभ का गृही उदासी ॥
दास धर्म खाँड़े की धारा ❀ तेहिपर चलब कठिन सविचारा ॥
प्रभु सम्बन्धी नाम सु दासा ❀ स्वारथ लागि करत जग आशा ॥
प्रभुहिं लजावत नाम धराई ❀ दास धर्म जाने बिनु भाई ॥

दोहा—प्रभु भरोस तजि सपनेहुँ, मन बच क्रम पर आश ।
करै होइ निज इष्ट पद, विमुख स्वारथी दास ॥६४॥

प्रभु आग्या रुचि निसि दिन दासा ❀ जुगवत रहहिं त्यागि जग आसा ॥
नृप सेवक जिमि नृप ते डरहीं ❀ तेहि प्रतिकूल न कारज करहीं ॥
जेहि विधि रीझै सो सब काजू ❀ करहिं सुसेवक सहित समाजू ॥
बैठत उठत सडर सविचारा ❀ बोलत चलत सु सहित सम्हारा ॥
सावधान सेवा विच रहहीं ❀ नृप रुख राखि सकल सुख लहहीं ॥
जुगवत रहहिं सदा कर जोरे ❀ करहिं न तासु अवज्ञा भोरे ॥
नृप अनुकूल सदा सबकोई ❀ रहत सभीत सुसेवक सोई ॥
अशुचि अङ्ग अमलादिक खाई ❀ पहिरि मलिन पट नृप ढिंग जाई ॥
तेहि नृप देइ ताड़ना भूरी ❀ करै तुरत सेवा ते दूरी ॥
असन वसन बोलनि सब रीती ❀ शुचि निहारि नृप करत सु प्रीती ॥

दोहा—यह प्राकृत महिपाल गति, प्रभु देवनि के देव ।
तिन्हि की सेवा अगम अति, जानहिं जो नितसेव ॥६५॥

सेवा वस प्रभु सेवक केरे ❀ होत विवस निबसत नितनेरे ॥
दास सु नाम धराय कुकर्मा ❀ करत जीव किमि पावहिं *नर्मा ॥
हर हनुमान लखन भरतादी ❀ थरथर काँपहिं आतम वादी ॥
दास सखा सब परम पुनीता ❀ सेवहिं सदा सडर स प्रतीता ॥

*सुख ।

नारदादि मुनि विमल विचारी ❀ इन्द्रादिक सेवा अधिकारी ॥
तेउ सब रहत सभय रुख जोये ❀ सावधान निज प्रभुता गोये ॥
प्राकृत जीव मलिन सविकारा ❀ मोह मान मद छके गँमारा ॥
तेहि पर प्राकृत अमल अपारा ❀ खाइ भये औरहु मतवारा ॥
बोलनि चलनि रहनि अविचारी ❀ ते कि होंइँ सेवा अधिकारी ॥
कञ्चन कामिनि वश जे लोगू ❀ ते किमि होंइँ दासता योगू ॥
जिन्हि की मति माया मद सानी ❀ ते न दासता लायक प्रानी ॥

दोहा—यद्यपि शील सुभाव प्रभु, लखत न जनकी भूल ।
तदपि उचित सेवकनि अस, चलहिंन पथ प्रतिकूल ॥६६॥

सुचि दासनि के लक्षन जोई ❀ धारहिं निज उर सेवक सोई ॥
रहै इष्ट अनुकूल सदाई ❀ त्यागै सब निज मनमुखताई ॥
तजि छल कपट इन्द्रिआरामी ❀ मन वच क्रम शुचि सेवै स्वामी ॥
निज प्रभुमय सबविश्वविचारी ❀ सेवै सबहिं स्वामि अनुहारी ॥
सब ते आपुहिं नीच विचारै ❀ काहुइ कं नहिं दोष निहारै ॥
गार मार सबकी सहि लेई ❀ योग दासता के जन तेई ॥
नाम दास करनी जिमि स्वामी ❀ केहि विधि रीझहिं प्रभु परधामी ॥
दास धर्म वेदनि महँ गावा ❀ परम कठिन अति तेहिकर भावा ॥
दास भाव निबहत नहिं भाई ❀ कलि मल ग्रसित जीव समुदाई ॥
दास धर्म असि धार वखाना ❀ जीव मलीन ग्रसेउ मद माना ॥

दोहा—असविचारि आचार्य उर, शरण सुखद प्रभु जानि ।
शरण नाम लागेउ धरन, निरुपधि रहित गलानि ।६७।

गृही विरक्त भक्त नर नारी ❀ शरण नाम के सब अधिकारी ॥
सरण नाम निरुपधि सुखदाई ❀ सबहिं सुलभ नहिं कोउ कठिनाई ॥
ग्रही विरक्त शिष्य कोउ करहीं ❀ नाम अवश्य सुबुध गुरु धरहीं ॥
संसकार वैष्णवी सु जेही ❀ देइ धरै गुरु नाम सु तेही ॥

संसकार खंडित बिनु नामा ❀ होत कहहिं बुध गन गुन ग्रामा ॥
संसकार पांचौ सह नामा ❀ होत सबहिं दायक परधामा ॥
संसकार करि नाम न देई ❀ होइ दोष भागी गुरु तेई ॥
तेहि लगि शरण नाम भलजोई ❀ लागेउ लेन देन सब कोई ।
दास धर्म नहिं जाय सु साधा ❀ शरण नाम सब बिधि निर्बाधा ॥
करतब हीन दीन अघ धामा ❀ होय जीव सब भांति निकामा ॥

दोहा-शरण पुकारै त्राहि कहि, सुनि प्रभु करुणा अयन ।
अपनावत छमि सकल अघ, शरणागत सुख दयन।६८।

शरनागत पर प्रभु की दाया ❀ रहत अधिक सबते श्रुति गाया ॥
दास दासता करि गति पावैं ❀ रहित उपाय सु शरण कहावैं ॥
शरणागत बत्सळ प्रण धारी ❀ तजत न शरणहिं विरद विचारी॥
शरण दास कौनेउँ यक नामू ❀ देइ अवसि सम्बन्धी रामू ॥
पञ्चम संसकार यह नामा ❀ तेहिकर बरणेउँ भेद ललामा ॥
गृही विरक्त शिष्य जो कीजै ❀ संसकार पांचौ करि दीजै ॥
श्री गुरुमंत्र प्रथम कहि काना ❀ युगल मंत्र पुनि देत सुजाना ॥
शरणागत सु मंत्र हनुमाना ❀ मंत्र द्वै गायत्री ज्ञाना ॥
वहुरि पढ़ाइ देइ सब धर्मा ❀ श्री वैष्णव कुल केर सुकर्मा ॥
ग्रही विरक्त सिष्य जो कोई ❀ सम उपदेस करै गुरु सोई ॥

दोहा-भर्म विनाशै शिष्य कर, सब प्रकार गुरु सोय ।
शिष्यहु सेवै पाय अस, गुरु शरणागत होय ॥६९॥

ताय तपाय करै गुरु चेला ❀ जेहि पीछे नहिं परे झमेला ॥
चेलहु सतगुरु करै विचारी ❀ युगल उपासक भव भ्रम हारी ॥
संसकार विनु किये विचारा ❀ देत लेत ते उभय गँमारा ॥
पात्र विलोकि पदारथ भरिये ❀ शिष्यहु गुरू विचारि सु करिये ॥
लोभ मोह नद परि गुरु चेला ❀ होत परस्पर ठेलम ठेला ॥

स्वारथ लागि कुपात्रनि माँहीं ❀ भरहिं वस्तु यह ते गुरु नाँहीं ॥
पात्र कुपात्र न करहिं विचारा ❀ देत तत्व ते गुरू गँमारा ॥
संसकार पाँचौ सिय रघुवर ❀ प्रगटेउ जीवनि हेत कृपाकर ॥
महाशंभु ब्रह्मा हनुमाना ❀ महा विष्णु भौमा भगवाना ॥
संसकार इन्ह कहँ प्रभु दीन्हें ❀ महा रमा श्री सिय सन लीन्हें ॥
संसकार पाँचौ प्रिय सीके ❀ महारमा धारेउ विधि नीके ॥

दोहा—तिन्हि ते रमा उमादि शचि, सारदादि सुर नारि ।
संसकार पायेउ सु सब, देवीं दुर्गा झारि ॥७०॥

श्रुति कीरति मांडवि उरमीला ❀ संसकार सब लीन सुसीला ॥
चन्द्रकला कमलादि सु नारीं ❀ चारुशिलादिक सिय की प्यारीं ॥
ये सब जनक लली की चेलीं ❀ सब गुणखानि सुशील नवेलीं ॥
इन्हते सिय की सखी अपारा ❀ संसकार सब लीन्ह उदारा ॥
महाविष्णु ते विष्णू पाये ❀ संसकार सब भाँति सुहाये ॥
वहुरि विष्णु वैकुण्ठ मझारा ❀ संसकार सोइ कीन प्रचारा ॥
विष्वक्सेन आदि निज प्रियगन ❀ सकल पारषद कियेउ रामजन ॥
तेहिविधिविधिवतपुनिविधिवावा ❀ ब्रह्मलोक महँ तेसु चलावा ॥
इन्द्रादिक दिसिपाल सकल सुर ❀ विधि निदेस उर धरेउ जानि फुर ॥
महासंभु निज लोक प्रचारेउ ❀ संसकार ये गन सब धारेउ ॥

दोहा—सनकादिक नारदहिं विधि, संसकार ये दीन ।
तिन्हिते मुनि गन लहेउ बहु, व्यासादिक सु प्रवीन ॥७१॥

तिन्हिते सूतादिक ऋषि झारी ❀ रामभक्ति के भे अधिकारी ॥
तिन्हिते तिन्हिके पुत्र सु नाती ❀ आयेउ वैठत वैष्णव पाँती ॥
एकनि एक देत चलि आये ❀ संसकार ये परम सुहाये ॥
कुम्भज श्री हनुमत ते लीन्हें ❀ संसकार पुनि शिष्यनि दीन्हें ॥
परम विरक्त सुतीक्षण आदी ❀ किये शिष्य बहु आतम वादी ॥

ग्रही विरक्त एकते एका ❀ आये होत सु निरत विवेका ॥
परम्परा येहि विधि चलि आई ❀ चहुँ युग ते सो जानहु भाई ॥
प्रति कल्पान्त नवल सब होई ❀ सुनि आचरज न कीजै कोई ॥
रामानन्द राम अवतारा ❀ भयेउ बहुरि जग सुयश प्रचारा ॥
वैश्नव धर्म परात्पर पालक ❀ राम विमुख खलदल बलघालक ॥
पचगंगा कासी अविनासी ❀ रामानन्द तहँ भे सुखरासी ॥

दोहा—तिन्हिते भयेउ सु शिष्य बहु, पीपा आदि कबीर ।
श्री वैष्णव कुल रक्षक, बड़े बड़े मति धीर ॥७२॥

गोरखादि निज ग्यान प्रमादी ❀ जीतेउ जंग सकल मतवादी ॥
बावन द्वारा जिन्हि प्रगटाये ❀ यहि विधि संस्कार चलि आये ॥
अजहूं तिन्हि के वन्सनि माँहीं ❀ अगणित वैश्नव संख्या नाँहीं ॥
ग्रही विरक्त तपस्वी त्यागी ❀ परमहंस पंडित अनुरागी ॥
सिद्ध सती समरथ कवि दाता ❀ भजनानन्द शास्त्र श्रुति ज्ञाता ॥
यक ते एक प्रबल गुण आगर ❀ श्रीवैश्नव सबविधि सुखसागर ॥
श्री वैश्नव कुल के सिय रामू ❀ रक्षक स्वयं स्वामि सुख धामू ॥
सेवत जिन्हिं के चरण पुरारी ❀ ब्रह्मा विष्णु सकल तनु धारी ॥
तिन्हि के शरण होय सुखलीजै ❀ संशय सोच सकल तजि दीजै ॥
राम भगति विनु करनी भूठी ❀ ससरि जात जिमि बालू मूठी ॥

दोहा—संसकार गुरुदेव सन, लेहु सु पाँचहु आज ।
जन्म गयेउ प्रभु भजन विनु, छन छन होत अकाज ॥७३॥

संसकार पाँचौ सुखरासी ❀ एकते एक अधिक अघनासी ॥
गुरु प्रद नाम मन्त्र ए दोऊ ❀ भीतर बसें न जानत कोऊ ॥
कहे सुने पर जानहिं बुद्धा ❀ नाम मंत्र दोउ सुद्ध अशुद्धा ॥
गूढ़ तत्व भक्ती के मूला ❀ नाम मन्त्र नाशक भव शूला ॥
नाम मन्त्र भक्ती के प्राना ❀ नृपके जिमि धननीति प्रधाना ॥

कंठी तिलक छाप तिहुँ बाहिर ❀ राजत तन पर सब कहँ जाहिर ।
कंठी भक्ति केरि मरयादा ❀ दरसावति हरि सकल विषादा ।
कंठी विनु नहिं भगत कहावै ❀ भगतिहु करत सुगति नहिं पावै ॥
कंठी भक्ति केर सीमाना ❀ तेहि विनु मिलत न श्रीभगवाना ॥
कंठी हीन मन्त्र जप योगू ❀ निष्फल होइँ कहहि बुध लोगू ॥
कंठी कंठ न धारत जोई ❀ तिन्हिसम जगमहँ पतित न कोई ।

दोहा—कंठी श्री भगवान की, साँची चौकीदार ।
भक्तनि के धरि धरि गरे, खैंचि करै भवपार ॥७४॥

संसकार कंठी विनु कैसे ❀ माता हीन पुत्र लघु जैसे ॥
कंठी राम भक्ति की दासी ❀ भक्तनि की रक्षक सुखरासी ।
भगत कहाँयँ न कंठी धारैं ❀ तिन्हैं पकरि यम नरकनि डारैं ।
तुलसी की कंठिहि भगवाना ❀ दै राखेउ प्रथमहिं वरदाना ॥
तुलसी तो विनु अङ्गीकारा ❀ करिहौं मैं न कछू संसारा ॥
अस विचारि कंठी गर धारहु ❀ तुलसी की मनमुख हठ टारहु ॥
भगत होन की जो रुचि नीकी ❀ तौ कंठी क्यों लागहिं फीकी ॥
कंठी भगतनि केरि चिन्हारी ❀ धारन करहिं न ते अविचारी ॥
वेद पुराण सन्त अस गावत ❀ विनु कंठी कोउ प्रभुहिं न पावत ॥
अस विचारि तजि लाज कुशंका ❀ बाँधहु कंठी गर दै डंका ॥
कंठी की महिमा प्रभुताई ❀ सहस सेस श्रुति सकहिं न गाई ॥

दोहा—उर्द्ध पुण्ड तिमि भगति के, ध्वजा पताक समान ।
फहरत सीश सु महल पर, अनुपम तेज निधान ॥७५॥

कंठी बांधि न तिलक लगावत ❀ ते मति मंद न प्रभु पद पावत ॥
तिलक हींन प्रभु भक्त सु कैसे ❀ मुकुट हीन सुन्दर नृप जैसे ॥
पति बिनु नारि सु यथा मलीना ❀ तिलक हीन तिमि भक्ति प्रवीना ॥
तिलक हींन प्रभु भक्ति दुखारी ❀ पुत्र बिहींन बाँझ जिमि नारी ॥

तिलक लगाये बिनु शुभ कर्मा ❀ करै होइँ निष्फल सब धर्मा ॥
तिलक विहीन भक्त मुख देखी ❀ यमन लखेउ ते पाप विशेखी ॥
भगत कहाय तिलक नहिं करई ❀ केहि विधि सो भव सागर तरई ॥
भगतनि की यह प्रगट चिन्हारी ❀ तिलक ललाट झलक द्युतिकारी ॥
तिलक इष्ट पहिचान लखावै ❀ तिलक विना गति भगत न पावै ॥
कण्ठी गरे तिलक नहिं माला ❀ मिलत न तेहि सियराम कृपाला ॥
तिलक हींन वंचक भगताई ❀ करत प्रतीति न सिय रघुराई ॥

दोहा—सूर समर चढ़ि गति लहै, तजि ममता भय लाज।
भगत चढ़ै तिमि भगति पथ, पावै सिय रघुराज ॥७६॥

तिलक लगावत जो कोउ सरमें ❀ ते चौरासी जोंनिनि भर में ॥
तिलकनि की महिमा बड़ि भारी ❀ जानें कहा मूढ़ कुबिचारी ॥
विषई भव भोगनि अरुझानें ❀ तिलक महातम ते का जानें ॥
तिलक महातम जानें सोई ❀ कृपा रामकी जिन्हिपर होई ॥
पञ्चम पाँच सु छाप अनूपा ❀ छापत होय जीव प्रभु रूपा ॥
सकल पाप त्रय ताप नशावै ❀ छापत छाप परमपद पावै ॥
जिमि नृप देइ मुहर करि पाती ❀ पक्की होय न सो विनसाती ॥
छाप सहित तिमि भगति सुहाई ❀ अविचल होय मिलें रघुराई ॥
तिलक असोभित छाप विहीना ❀ नृप जिमि बिनु शृङ्गार मलीना ॥
तिलक स छाप हेरि यमदूता ❀ जाँयँ पराय प्रबल अघ भूता ॥
पाँचों छापें पञ्च सु प्राना ❀ तिलक ब्रह्मकर कहहिं सुजाना ॥

दोहा—ज्ञान सुइन्द्री पंच पुनि, तिलक नृपति कर छाप।
योगीराज सु तिलक तेहि, पञ्च तत्व निष्पाप ॥७७॥

तिलक त्वचा के पाँच सु अङ्गा ❀ पाँचौ छाप न जानहिं वङ्गा ॥
मंत्री पाँच तिलक भूपति के ❀ रक्षक भगति अनूपम छितिके ॥
छाप बरात तिलक सुन्दर वर ❀ येहि विधि कहहिं सुसन्त परस्पर ॥

छापहिं छाप न तिलक लगावहिं ❀ तेन भगतसिय पिय मन भावहिं ॥
कच्ची भगति वेष विनु छापा ❀ भजनउँ करत सिरात न तापा ॥
भजन विराग भगति सुभ कर्मा ❀ छाप हीन काँचे प्रद भर्मा ॥
तिलक छाप दोउ परम शनेही ❀ यक बिनु एक मृतक जनु देही ॥
इक इक छापनि केर प्रतापू ❀ नाशक प्रबल घोर भव पापू ॥
अस विचारि उर वैष्णव भाई ❀ करहिं स छाप तिलक सुखदाई ॥
सब सुखदानि हानि सब नाशक ❀ छाप जानि छापहिं सु उपासक ॥

दोहा—छाप सु कंठी तिलक तिहुँ, तन ऊपर पहिचानि ।
राखहिं भक्त सुजान उर, मन्त्र नाम सुखदानि ॥७८॥

संसकार ये पाँचनि मांहीं ❀ तजनि जोग भक्तनि कोउ नांहीं ॥
एकहु तजें वेष अङ्ग भंगू ❀ होत विचारहु करि सत संगू ॥
एकउ संसकार जो तजई ❀ लागे तेहि अँग काटन कजई* ॥
आलस वस कुतर्क कोउ आनी ❀ लोक लाज अरु कोउ भयमानी ॥
पांचनि महँ जो खण्डन करई ❀ सो न भगत भव सागर तरई ॥
संसकार पाँचहुँ लै जोई ❀ त्यागै पुनि ते शूकर होई ॥
लख चौराशी योनिनि वीचा ❀ भर्महिं मूढ़ वेष तजि नीचा ॥
निन्दा भगति वेष की करहीं ❀ कुम्भीपाक नर्क ते परहीं ॥
वेष भगति जिन्हि भावति नाँहीं ❀ जानहु तिन्हि नर्की जग माँहीं ॥
वैष्णव वेष भजन सियरामू ❀ जेहि न भाव ते जन अघ धामू ॥

दोहा—फूले फूले फिरत जग, भूले आतम रूप ।
प्रभु प्रति कूले वनि परे, मूढ़ मोह तम कूप ॥ ७९ ॥

वैश्नव गुरु विनु जन कल्याना ❀ लहहिं न साधहिं साधन नाना ॥
भूल भुलैयाँ अति दुखदाई ❀ जिन्हि बश जीव परे भव भाई ॥
अब अब करत गये दिन भूरी ❀ सुर दुर्लभ वय नाशहु रूरी ॥

* पाप ।

प्रभु के शरण होउ तजि देरी ❀ छण छण छीजत आयू तेरी ॥
प्रभु के शरण होंन हित साथी ❀ खोजहु तौ हुइहौ मरि हाथी ॥
सुनहु येक गाथा मन लाई ❀ गुनि गुरु करहु विलम तजि भाई ॥
रहेउ बनिक एक तेहिकी नारी ❀ नारद की चेली अति प्यारी ॥
यक दिन नारद तेहि ग्रह गयेऊ ❀ देखि गुरुहि सो प्रमुदित भयेऊ ॥
पद पखारि पी दीन सुआसन ❀ भोजन हित माँगेउ अनुसासन ॥
नाथ कहिय सोइ असन बनाऊँ ❀ अपने कर मैं प्रभुहिं पवाऊँ ॥

दोहा—कोटिनि जप तप नेम ब्रत, साधन सुकृत अपार ।
विप्र धेनु सुर सिद्ध मुनि, सेवै सह परिवार ॥८०॥

कोटिनि तीरथ विधि वत कोई ❀ करै न गुरु सेवा सम होई ॥
दान धर्म बहु भजन सु पूजा ❀ गुरु सेवा सम सुखद न दूजा ॥
भगति भावना ग्यान सुध्याना ❀ श्रवन मनन कीर्तन विग्याना ॥
सत गुरु सेवा सम नहिं कोई ❀ भाग हींन नहिं पावहिं सोई ॥
असमैं सुनी नाथ निज काना ❀ गुरु सेवा सम सुकृत न आना ॥
भयेउ सकल मम सिद्धिसु काजू ❀ गुरु ग्रह मोर पधारेउ आजू ॥
कृत कृत होय नाथ यह देहा ❀ गुरु सेवा करि सहित सनेहा ॥
बड़े भाग ते गुरु ग्रह आयेउ ❀ आजु मोर अघ ओघ नसायेउ ॥
दासी जानि दया प्रभु कीजै ❀ जो रुचि होय सुआयसु दीजै ॥
तब नारद बोले तेहि पांहीं ❀ पति तुम्हार प्रिय वैश्नव नांहीं ॥

दोहा-तासु संग व्योहार तुम्ह, करहु न करहु बिवेक ।
तेहि लगि खाउँ न असन तव, मोरे उर यह टेक ॥८१॥

खाउँ न अन्न अवैश्नव केरा ❀ प्रिय चेली अस दृढ़ प्रण मेरा ॥
तिय गुरु मुख पति गुरू विहीना ❀ पति वैश्नव तिय गुरू न कीना ॥
ते पति पत्नी वैश्नव नाँहीं ❀ खात न हम तिन्हिंके ग्रह माँहीं ॥
जेहि कर पुरुष अवैश्नव होई ❀ नारि वैश्नवी केहि विधि सोई ॥

त्यागहिं तिन्हें अवैश्नव जानी ❀ जे अनन्य वैश्नव विग्यानी ॥
वैश्नव खाय अवैश्नव गेहा ❀ अथवा करै सहाय सनेहा ॥
तिन्हैं न वैश्नव वैश्नव भाखें ❀ खान पान नहिं तिन्हि सँग राखें ॥
साँचे जगत सु वैश्नव जेते ❀ खात न गेह अवैश्नव के ते ॥
वैश्नव खाय अवैश्नव साथा ❀ तेहि पर द्रवहिं न सिय रघुनाथ ॥
लीन न जो सतगुरु ते दिच्छा ❀ लेत न वैश्नव तेहि कर भिच्छा ॥
अस अनन्यता जिन्हि के नाँहीं ❀ ते नकली वैश्नव जग आँहीं ॥
पावहिं ते न कबहुँ पर धामा ❀ बंचक भगत अवुध रत कामा ॥

दोहा—कंठी तिलक विहीन जो, करत न तिन्हिते हेत ।
साँचे प्रभुके भक्त सोइ, पावहिं पुर साकेत ॥८२॥

सुनि नारद के बचन सप्रीती ❀ पतिहि बुलाय कही सब नीती ॥
जो तुम्ह हमते राखहु प्रेमा ❀ तौ गुरु करहु आजु प्रद छेमा ॥
सुनि पति कही नीक यह बानी ❀ गुरु बिनु कोउ भव तरहिं न प्रानी ॥
अस कहि गुरु पूजा हित लागी ❀ गयेउ बजार वनिक अनुरागी ॥
प्रोहित मिलेउ मार्ग महँ जाता ❀ वनिक कही तेहि सन सब बाता ॥
सुनि वह ब्राह्मण पत्रा खोलेउ ❀ मिथ्या वचन वनिक ते बोलेउ ॥
आजु शिष्य तुम्ह हुइ हौ जोई ❀ पावहुगे दुख भारी कोई ॥
महिना एक महूरत नाँहीं ❀ गुरू करन को पत्रा माँहीं ॥
मनिहहु जो न बेद की बाता ❀ तौ न तुम्हार वनिक कुसिलात्ता ॥
वेद बचन पुनि द्विज की बानी ❀ जो न मानिहौ हुइ है हानी ॥

दोहा—डरेउ वनिक सुनि बचन द्विज, गयेउ पलटि ग्रह माँहिं ।
सिष्य होन हित मास दिन, कहेउ महूरत नाँहिं ॥८३॥

टारन केरि सु द्विज श्रुति बानी ❀ सक्ति न मो महँ मुनि बिग्यानी ॥
नारद सुनी वनिक की बाता ❀ जानेउ येहि पर वाम विधाता ॥
वैश्नव होत विघन बहु तेरे ❀ रोकत धरि धरि रूप घनेरे ॥

अबहीं बाँकी है कछु भोगा ❀ बनय न दीन सोई संयोगा ॥
अमित जन्म जो सुकृत कमावै ❀ श्री सियराम सरन तब आवै ॥
येहि विधि मुनि चेलिहि समुझाई ❀ चलेउ करत सियराम रटाई ॥
दै असीस मुनि गवने जबहीं ❀ वनिक निकटद्विजआयेउतवहीं ॥
बोलेउ प्रोहित सुनु जजमाना ❀ वैश्नव मंत्र सुनिय जनि काना ॥
हम प्रोहित गुरु तब कुल केरे ❀ सुनहु मंत्र हम सन बहु तेरे ॥
वैश्नव राम मंत्र यक जानहिं ❀ हम सब बेद पुरान बखानहिं ॥

दोहा—समुझि बूझि उर करहु गुरु, सुनि मम सीख असोक ।
सुख चाहहु जिजमान जो, सब विधि सिधि दोउ लोक ।८४।

विना विचारे जो गुरु करिहौ ❀ घोर नर्क महँ तौ तुम्ह परिहौ ॥
वैरागिनि की जाति न कोई ❀ हम सब ब्राह्मण जानहु सोई ॥
वैरागी विनु गेह गँमारा ❀ मागत भीख फिरत संसारा ॥
सिष्य साहु तेहि गुरू भिखारी ❀ कहहिं कहा सुनि जग नर नारी ॥
नाना विधि समुझाय बुझाई ❀ कीन्ह सिष्य कोउ मंत्र सुनाई ॥
विमुखनि की करि संगति भाई ❀ को न गिरेउ नर्कनि महँ जाई ॥
विप्र वनिक्क कहँ विघ्न सरूपा ❀ हुइ पटकेउ अगाध भवकूपा ॥
प्रभु सरनागत आवन हेता ❀ रोकहिं ते पिसाच जम प्रेता ॥
भयेउ विप्र सोइ वनिक भुलावा ❀ मन मुख मन्त्र सुनाय नसावा ॥
नारि पाय सुधि अति दुख माना ❀ कीन्ह कहा तुम पति अज्ञाना ॥

दोहा—वैस्नव धर्म विहीन गुरु, करि नासेउ परलोक ।
सेये विनु सियराम पद, नशत न संसृति सोक ॥८५॥

तारक राम सु मंत्र विहीना ❀ करि बैठेउ गुरु ग्रही मलीना ॥
जिन्हि के कंठ न कंठी माला ❀ उर्द्ध पुंड श्री सहित न भाला ॥
जानहु तिन्हि चण्डाल समाना ❀ पढ़े होयँ वरु बेद पुराना ॥
वैश्नव धर्म हींन पुनि गेही ❀ महा पतित गुरु कीन्हों तेही ॥

जीवत ही सो मरे समाना ❀ जिन्ह के अंग न वैश्नव बाना ॥
गेह मांहि जेहि की मति पागी ❀ तेहि कहँ तू गुरु कीन्ह अभागी ॥
अही गुरू करि भव निधि पारा ❀ जान चहहिं ते जीव गँमारा ॥
लोकी गुरुआ अति दुखदाई ❀ जिन्हिकीमति भोगनि अरुझाई ॥
तेहु महँ वैश्नव धर्म विहीना ❀ नर्क रूप तेहि कहहिं प्रवीना ॥
पुनि ओहिती कर्म जो करई ❀ तासु सिष्य हुइ को भव तरई ॥

दोहा—कुगुरू दीपक नखत ससि, इन्हते राति न जाय ।
एक भानु के उदय ते, बिनु श्रम तिमिर नशाय ॥८६॥

अही गुरू तिसि मोह अन्धेरा ❀ हरि न सकत कथि ग्यान घनेरा ॥
भजनानँद विरक्त गुरु भानू ❀ नासक मोह अन्ध अग्यानू ॥
त्यागी सत गुरु हंस समाना ❀ अही गुरू पति काग बखाना ॥
जिन्हिकी बाँहिनि श्रीधनु बाना ❀ कोटिनि रविसम तेज निधाना ॥
छपेउ न ताते अथवा सीतल ❀ अधम सिरोमनि सो जगतीतल ॥
रामायुध जो छापति बाँहिन ❀ तिन्हिसमरामहिं प्रियकोउनाहिंन॥
श्री सियराम नाम की छापा ❀ छापहिं ते न तपत त्रय तापा ॥
भुजनि कंठ तिलकनि दिसि दोऊ ❀ छापहिं नाम युगल जो कोऊ ॥
तिन्हि पर अति सियबरकी दाया ❀ रहत सदा सिर दोउ भुज छाया ॥
तिलक छाप श्री युगल मंत्रबर ❀ जेहि न भाव ते अधम नारि नर॥

दोहा—युगल मंत्र गुरु मुख न जे, श्रवन सुनेउ मति मंद ।
सुन्दर नर तन पाय ते, परिहहिं जम के फंद ॥८७॥

प्रभु संबंधी गुरुमुख नामा ❀ जो न धरायेउ ते मति बामा ॥
संसकार ये जो न करावत ❀ नरतन लहि ते बहु दुख पावत ॥
नर मुख जो सियराम सुनामा ❀ रटत नते जैहैं यम धामा ॥
तुम्हपतिराम विमुखगुरु कीना ❀ पैहहु दुख करि कर्म मलीना ॥
राम विमुख परिवार समेता ❀ बसहिं जाय यमराज निकेता ॥

करतब हींन विमुख वहुग्याना ❀ भाखत उर अभिमान समाना ॥
तेहि कारन प्रभु भक्त प्रवीना ❀ त्यागहिं तिन्हि कर संग मलीना ॥
राम भक्त स्वपचौ किन होई ❀ तेहि सम सुखद न सुर मुनिकोई ॥
राम विमुख केवल दुखखानी ❀ सो तुम्ह कीन गुरू हित जानी ॥
विमुखनि ते करि नातेदारी ❀ प्रभु भक्तौ दुख पावत भारी ॥

दोहा अस विचारि पति विमुख लखि, त्रिन सम त्यागि सरीर ।
चढ़ि विमान साकेत पुर, गई नशी भव पीर ॥८८॥

तासु बिरह विषई पति सोई ❀ मरि जन्म्यो नृप ग्रह गज होई ॥
नारद आय कुयोनि छुड़ाई ❀ सुगति दीन निज रयान दृढ़ाई ॥
रामभक्त तियकर सँग कीन्हा ❀ तेहि लगि ताहि नार्द गति दीन्हा ॥
यह प्रसंग सुनि गुनि उर लाई ❀ करहु वेगि गुरु वैश्नव भाई ॥
विधिसमहू गुरु करिय न गेही ❀ होय भक्त वरु राम सनेही ॥
सियवर भक्त विरक्त उपासक ❀ करहु वेगि गुरु भवभय नाशक ॥
अति लघु जीवन जग में जानी ❀ भजहु भक्त होइ प्रभु धनु पानी ॥
वैश्नव वेष लेन हित भाई ❀ करहु न सलह समय दुखदाई ॥
संगी सब ज्ञानहु यमदूता ❀ तिन्हि ते प्रेम न करहु बहूता ॥
वैष्णव धर्म जिन्हैं प्रिय नाँहीं ❀ पाप करत निशि वासर जाँहीं ॥

दोहा–तिन्हिकी सीख न मानिये, लीजै वैष्णव वेष ।
सेइय श्री सियराम पद, तजि जग रागरु द्वेष ॥८९॥

प्रथम आप सजि वैष्णव साजा ❀ पुनि वैष्णव सब करै समाजा ॥
सुख युत सदा सजातिनि संगा ❀ निवसि रटिय सियराम अभंगा ॥
नाशवान तन की तजि आसा ❀ होउ शीघ्र सियवर के दासा ॥
संसकार विनु भये शरीरा ❀ नशिहै तौ सहि हौ भव भीरा ॥
आलश वश जनि विलम लगावहु ❀ संसकार तन के करवावहु ॥
कथहु न आपन मनमुख ज्ञाना ❀ श्री वैष्णव गुरु करहु सुजाना ॥

वैष्णव धर्म निजातम ज्ञाता ❀ करहु वेगि गुरु जन्म सुजाता ॥
वैष्णव गुरु विरक्त विनु कीन्हें ❀ व्यर्थ होंयँ सुभ दान सु दीन्हें ॥
वैष्णव गुरु बिरक्त भव तारत ❀ गृही गुरु लै नरकनि डारत ॥
वैष्णव होंन हेतु जो देरी ❀ करत सहहिं ते विपति घनेरी ॥
वैश्नव वेष निन्दकी नीचा ❀ सहत दुसह दुखपरि भव कीचा ॥

दोहा—अमित जन्म के पाप जो, घेरि रहे करि प्रेम ।
वैष्णव होत नशाँयँ सब, पावैं तब जन छेम ॥९०॥

जन्म मरन नाशन भय भारी ❀ वैश्नव धर्म धरहु नर नारी ॥
सहित वंश सियराम अदूषण ❀ भजहु होइ वैष्णव कुल भूषण ॥
वैष्णव आप अवैष्णव वामा ❀ तेहि पर द्रवत न श्री सियरामा ॥
पुरुष अवैष्णव वैष्णव नारी ❀ तवहुँ होत दोउ लोक दुखारी ॥
नारि पुरुष जो वैश्नव दोऊ ❀ तिन्हि कर सुख किमि वरनैं कोऊ ॥
येकै गुरू करैं दोउ प्रानी ❀ तजि संसय संदेह गलानी ॥
केतिक अग्य कहहिं यह बाता ❀ भाय बहिनि कर लागहि नाता ॥
तेहि लगि येक गुरू नहिं कीजै ❀ विलग २ दोउ दीक्षा लीजै ॥
सो वे प्रानी यह नहिं जानत ❀ गुरु प्रभु येकै वेद बखानत ॥
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णू संकर ❀ गुरू परात्पर प्रभु परमेस्वर ॥

दोहा—जगत पिता भाषहिं सकल, प्रभु कहँ नर अरु नारि ।
नाना दादा ससुर कोउ, कहत न तिन्हैं पुकारि ॥९१॥

प्रभु सबके जब इक पितु माता ❀ तब कहँ नारि पुरुष कर नाता ॥
सासु ससुर कहँ सुत पितु माई ❀ येक पिता जो सब के भाई ॥
प्रभुहि पिता सब मानहु जोई ❀ भाइ वहिनि भे तौ सब कोई ॥
येहि बिधि येक गुरू सब केरा ❀ माननीयँ श्रुति न्याउ निवेरा ॥
नस्वर तन कृत विपुल सगाई ❀ गुरु प्रभु महँ सो घटै न भाई ॥
अरधंगिनि पुनि पति की नारी ❀ दूसर गुरु किमि करै विचारी ॥

यह सम्बन्ध आतमा केरा ❀ तन के मिथ्या नात घनेरा ॥
तेहि लगि सब संकोच विहाई ❀ करहिं एक गुरु लोग लुगाई ॥
पुनि परिवार परौसी मीता ❀ करै सबहिं वैष्णव सु पुनीता ॥
वैष्णव बंस वढ़ावन हारे ❀ होत अधिक सियबर के प्यारे ॥

दोहा—वैष्णव वेष विहीन नर, तनु जिमि सूकर स्वान ।
अस विचारि गुरु करि तरहु, भवनिधि भजि भगवान ॥६२॥

जेहि घर महँ वैष्णव भगवाना ❀ तुलसी तरु न सो गेह मसाना ॥
तुलसी वैष्णव श्री भगवाना ❀ रहत तहाँ आवहिं शिधि नाना ॥
तुलसी वैष्णव प्रभु जहँ नाँहीं ❀ निवसहिंकलितिन्हिगेहनिमाँहीं ॥
तिन्हि गेहनि के सव नरनारी ❀ तीनहुँ काल नरक अधिकारी ॥
तिन्हिं के हाथनि कर अन पानी ❀ करहु न ग्रहण पाप मय जानी ॥
भाव न जेहि श्री वैशनव वेषा ❀ तेहि समको जग पतित विसेषा॥
राम भक्त श्री वैशनव वाना ❀ जिन्हैं न प्रिय ते जग खर स्वाना॥
सम्भाषण स्पर्श न कीजै ❀ पापिनिते सु सुकृत निज छीजै ॥
वैष्णव वेष जिन्हैं प्रिय नाँहीं ❀ अवसि गिरहिं ते नरकनि माँहीं ॥
कर्म धर्म सुर साहि न करिहैं ❀ प्रभु बिनु भजे न जन भवतरिहैं ॥
अवहूँ विगरी लेहु सम्हारी ❀ जेहि न सहौ पुनि पुनि यममारी ॥

दोहा—होउ सु वैष्णव वेगि अब, अनुपम नर तन पाय ।
रटहु नाम सियराम मुख, मरहु न गाल बजाय ॥६३॥

धरहु बेगि वैश्नव गुरु चरना ❀ चाहहु जो भव सागर तरना ॥
प्रभु के नातेदार सु खासे ❀ वैष्णव जन कहि वेद प्रकासे ॥
तिन्हैं तमकि ताकहिं जो कोई ❀ देत ताहि प्रभु जरते खोई ॥
सियबर ते करि नाते दारी ❀ होउ अभय तिहुँ लोक मझारी ॥
पाँचौ संसकार सियबर के ❀ धारहिं ते वाजहिं प्रभु घर के ॥

सब प्रकार वैष्णव बड़भागी ❀ जिन्हिकी लय सियवरपदलागी॥
तिन्हि के शरण होइ सुख लीजै ❀ श्रीसियराम नाम रस पीजै ॥
नहिं अस नाम रूप यश धामा ❀ काहुइ के जन प्रद विश्रामा ॥
ईश इष्ट सुर बहु जग माँहीं ❀ श्रीसियराम सरिस कोउ नाँहीं ॥
सब मत पंथ अन्त नशि जाँहीं ❀ वैश्नव धर्म अडिग जगमाँहीं ॥

दोहा—श्रीवैष्णव कुल कमल सम, सीता इष्ट सुवारि ।
विकस्यो रहत सदैव सुख, राम सु भानुनिहारि॥९४ ॥

जगत जलधि विचफैलि फुलाना ❀ वैश्नव धर्म कमल कुल नाना ॥
भगति सुगन्ध त्रलोकनि छाई ❀ भ्रमर सु जीव रहे लपटाई ॥
यहि कुलकी महिमा प्रभुताई ❀ कोटिनि शेष सकैं नहिं गाई ॥
तेहिकी महिमा मैं किमि कहहूँ ❀ माया मोह विवश नित रहहूँ ॥
जेहि के मालिक सिय रघुराई ❀ तासु प्रभाव सकै को गाई ॥
भाषेउ कछुक करन निज बोधा ❀ मति अनुसार तत्व अविरोधा ॥
सुनिहहिं सज्जन छमि लरिकाई ❀ करिहैं भूलउ सोधि भलाई ॥
सज्जन हंस गहहिं गुण छीरा ❀ त्यागहिं मम औगुन लखि नीरा॥
रसिक सुजान सन्त सविचारा ❀ सुनि समुझहिं सब सार असारा ॥
बालक सम तोतरि मम बानी ❀ सुनहिं मातुपितुइव सुखमानी ॥

❀ दोहा ❀

निन्दहिं निन्दक बूझ विनु, जिनहिं न आतम ज्ञान ।
मो सम मलिन विचार उर, भरेउ मोह मद मान॥९५॥
पाँचौ रसके रसिक जन, पढ़ि सुनि हृदय विचारि ।
अपनैहैं सु प्रसंग यह, भगत विरोध विसारि ॥ ९६ ॥
श्री सियराम सु नामकी, रटन करौं वशुयाम ।
यह वरदान सु देउ मोहि, रसिक सन्त सुखधाम ॥९७॥

जय श्री वैष्णव वेष जय, श्री वैष्णव सियराम।
जयतिरसिकजयजयतितिन्हि, जेसुमिरहिनितनाम ॥९८॥

राम के छापि भुजनि धनुवान ॥ टेक ॥
बाँये धनुष वाण वर दाहिन, सीतल तप्त समान।
पीत वरण श्रीराम सु रज के, प्रेमिनि के प्रिय प्रान ॥ १ ॥
तिलक मध्य श्री पर सु चंद्रिका, सिय शिर भूषण जान।
धारहिं ते प्रिय परम राम के, गावत वेद पुरान ॥ २ ॥
तस सु मुद्रिका सिय कर भूषन, जीवनि की सुखदान।
नयन निकट दोउ दिसिजो धारहिं, लहहिंते भक्ति महान ॥ ३ ॥
युग भूषन सिय युग रामायुध, युगल नाम सुख खान।
पंच सुमुद्रा पंचायुध ये, छापहिं रसिक प्रधान ॥ ४ ॥
पीत तिलक श्री लाल विंदुतर, पंचायुध सग्यान।
धारहिं दृढ़ श्रीराम उपासक श्रृङ्गारी नहिं आन ॥ ५ ॥
निन्दहिं ते सठ सहहिं दुसह दुख, आदि मध्य अवसान।
इष्ट विमुख अघ रूप अभागे, जीवत ज्यों खर स्वान ॥ ६ ॥
पंचायुध पूजहिं जो धारहिं, करहिं नाम गुन गान।
बिचरहिं महि प्रियसिय रामहिं ते, जिमि सुख लोचन कान ॥७॥
पंचायुध विनु व्यर्थ सु वैश्नव, कर्म धर्म जप ध्यान।
प्रेमलता सो मिलहिं होय जब, रसिकनि ते पहिचान ॥ ८ ॥

दोहा

तुलसि माल कंठी तिलक, पंचायुध निजनाम।
युगल मंत्र ये पंच विनु, लहहिं न जन विश्राम ॥९९॥

संसकार पाँचौंनि की, महिमा मति अनुसार ।
कही यथारथ सुनि सुजन, धारहिं विमल विचार॥१००॥

अष्टयाम कर भेद कछु, बरनौं सुनहु सुजान ।
आगे नवम प्रसंग महँ, रसिकनि कहँ सुखदान ॥१०१॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक
श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री सिया-
लाल शरणजी महाराज उपनाम (श्रीप्रेमलताजू)
कृत श्री पंचसंस्कार अष्टम् प्रसंग वर्णनम्
शुभम् ॥ ८॥

जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

श्रीअष्टयाम भावनाप्रसंग ॥६॥

❀ दोहा ❀

बन्दौं रसिकनि के सु पद, जे प्रवीण यहि ध्यान ।
गुप्त रहस्य लखावहू, नाशि मोह मद मान ॥१॥
जब लगि कृपा सु रसिक जन, करहिं न तवलगि भाव ।
जीवनि उर आवत नहीं, कोटिन करैं उपाव ॥२॥
भाव विना भक्ती नहीं, तेहि विनु श्री सियराम ।
सपनेहूँ रीझत नहीं, जीवनि पर सुखधाम ॥३॥
प्रभु रिझये विनु मनुष तनु, पायेहु जन अति नीच ।
पावहिं गति गावहिं सुबुध, बेद पुराणनि बीच ॥४॥
अस विचारि सम्बन्ध शुचि, लीजै रसिक रिझाय ।
सेवत तव सियराम पद, नित नव सुख सरसाय ॥५॥
विनु सम्बन्ध न लहत सुख, प्रभु सेवा विचजीव ।
कोटिनि विधि पूजै तऊ, द्रवहिं न श्री सिय पीव ॥६॥

कहहिं उपासक विनु सम्बन्धा ❀ सब कर्तव्य नयन विनु अन्धा ॥
वैष्णव वेष सु लै नृप होई ❀ पद प्रभाव पूजत सब कोई ॥
श्री सम्बन्ध सु अयन समाना ❀ तेहि विनु भूप न होत सुजाना ॥
नातेदारी जब लगि नाँहीं ❀ तवलगि सुख नहिं लोकहु माँहीं ॥
जिन्हि ते होइ सु नाते दारी ❀ तिन्हि की मीठी लागहिं गारी ॥
तन मन धन अरपहिं तेहि हाथा ❀ नाते दारी जेहि के साथा ॥
सुखमें सुख दुखमें दुख मानहिं ❀ नातेदारनि कर सब जानहिं ॥

निज काजनि वरु पाछे करहीं ❀ प्रथम नतैंतनि कर अनुसरहीं ॥
नादेदार वसत जेहि ग्रामा ❀ सब सन नातौ लगै ललामा ॥
खान पान सम्बन्धिनि सङ्गा ❀ निर्भय होत सकल रस रङ्गा ॥

दोहा—रहत परस्पर अपनपौ, अति सम्वन्धिनि बीच ।
करत यथा वल साहिता, ऊँच होइ वा नीच ॥ ७ ॥

नातेदारनि निन्दे कोई ❀ तेहि पर हृदय कोप अति होई ॥
हानि लाभ दुख सुख के संगी ❀ होत नतैंत यथा अँग अङ्गी ॥
विनु सम्वन्ध परोसिनि हूँ पर ❀ करत न इतनी प्रीति नारि नर ॥
पशु पच्छी सेवक परिवारा ❀ सम्वन्धिनि कर लागहिं प्यारा ॥
संवंधी सव अति प्रिय भाई ❀ ससुरारी के पै अधिकाई ॥
ससुरारी की नातेदारी ❀ सब नातिनि ते लागति प्यारी ॥
यद्यपि सव सम्वन्धी प्यारे ❀ ससुरारी के पै अधिकारे ॥
यह लौकिक रीती सब कोई ❀ जानहु सव जेहि विधि जो होई॥
सुनहु पारलौकिक अव रीती ❀ प्रभुते जेहिविधि होय सुप्रीती ॥
कवनिउँ भाव धारि उर प्राणी ❀ सेवहिं प्रभुहिंसु मन क्रमवाणी ॥

दोहा—बातसल्य शृङ्गार वा, सान्ति सख्य अरु दास ।
पाँचहु रसिक सुभाव सह, सेवहिं प्रभुपद खास ॥८॥

विनु सम्वन्ध स्वरूप न जानैं ❀ केहि विधिइष्ट सु सेवा ठानैं ॥
नाम—स्वबय—सेवा—अधिकारा ❀ भाव—परापति—सुख—आधारा ॥
मातु—पिता—भगिनी—प्रियभ्राता ❀ वंस—विचार—महत्व सु—नाता ॥
रस—अनन्यता—इष्ट—भावना ❀ रीति—रहस्य—प्रबोध—पावना ॥
अस्थाई—निज ये सब भेदा ❀ जानें बिनु न मिटत उर खेदा ॥
ये चौवीस सूत्र सुखदाई ❀ इन्हके भेद भाव बहुताई ॥
सम्बन्धनि महँ ये सब बानी ❀ लिखीं ललित नहिं जाँइ बखानी॥
जो सम्बन्घ लेइ सो जानें ❀ रसिक अनन्यभाव सुखसानें ॥

दोहा—श्री वैष्णव सम्बन्ध बिनु, प्रभु सेवा अधिकार।
सपनेहूँ पावत नहीं, करै कोटि उपचार ॥ ९ ॥

बिनु सम्बन्ध लिये तनु जोई ❀ छूटै तौ प्रभु लहहिं न सोई ॥
बिनु सम्बन्ध सुग्यान विचारा ❀ व्यर्थ यथा गणिका शृंगारा ॥
लवण बिना वर व्यञ्जन जैसे ❀ बिनु सम्बन्ध सु वैष्णव तैसे ॥
बिनु सुगन्ध के सुमन नवीना ❀ तिमि वैष्णव सम्बन्ध विहीना ॥
बिनु सम्बन्ध भजन व्रत कर्मा ❀ होत न वैष्णव कहँ प्रद नर्मा ॥
बिनु सम्बन्ध सु वैश्नव कच्चा ❀ वेष बनाय न प्रभु रँग रच्चा ॥
वेष प्रताप तिलोकनि माँहीं ❀ पूजे जात सु भक्त कहाँहीं ॥
बिनु सम्बन्ध न स्वामी सेवा ❀ पावहिं वैष्णव सब सुखदेवा ॥
बिनु गौने की ब्याही नारी ❀ पति बिनु पिहर बसै दुखियारी ॥
तिमि श्री वैष्णव वेष सु धारी ❀ बिनु सम्बन्ध न मिलत खरारी ॥
पाँचौ मुक्ति भक्ति रस भीना ❀ लहहिं न जन सम्बन्ध विहीना ॥

दोहा—निज निज रसके ज्ञातनि, खोजि लेइ सम्बन्ध।
सेवा करि मन बचन क्रम, नशै हिये को अन्ध ॥१०॥

रसिकनि तन मन अरपन कीजै ❀ रिझइ तिन्हैं सम्बन्ध सुलीजै ॥
बिनु सेवा सतसँग सम्बन्धहिं ❀ लेत हरत नहिं उरके अन्धहिं ॥
चोरा चोरी देखा देखी ❀ लै सम्बन्ध जनावहिं सेखी ॥
तिन्हिपर कबहुँ न सिय रघुराई ❀ द्रवत जानि उरकी गति भाई ॥
सब रस के सम्बन्धनि जोई ❀ बाँटत तिन्हिते लेउ न कोई ॥
दास सख्य शृंगार आदि रस ❀ निज निज ठौर प्रसंशनीयँतस ॥
एक एक रस में अति प्रीती ❀ विलगनतदपिअहहि असनीती ॥
मुख्य एक जबलगि नहिं मानें ❀ तबलगि सुखनहिं कहत सयानें ॥
एक मुख्य करि सब रस माँहीं ❀ राखै प्रेम दोष कछु नाँहीं ॥
सब रस सुखद सराहन जोगू ❀ जानहिं भेद उपासक लोगू ॥

दोहा–जिन्हि के उर सु अनन्यता, एकै रसकी होय।
लीजे शुभ सम्बन्ध प्रिय, तिन्हिते संशय खोय ॥११

विनु अनन्यता एक सु रसकी ॐ कथनी सकल कथै घस पसकी ॥
निज निज रस अनन्यता धारै ॐ अपर रसनि सह भाव विचारै ॥
रस अनन्यता जिन्हिके नाँहीं ॐ ते न उपासक रसिक कहाँहीं ॥
तिन्हिते जनि सम्बन्ध सु लीजै ॐ उपदेशहु जनि भूलि सुनीजै ॥
एक नारि जो युग पति करई ॐ कहहु धर्म केहि विधि अनुसरई ॥
दुविधा में दुख प्रगट लखावत ॐ चतुर जानि अस एकै ध्यावत ॥
जो अनन्य एकै रस केरे ॐ मन वच क्रम सियवर पद चेरे ॥
युगल नामरत गत मद माया ॐ हेतु रहित जीवनि पर दाया ॥
ऐसे रसिकनि के पद सेई ॐ भली भाँति सम्बन्ध सु लेई ॥
धारण करै यथा विधि हीया ॐ पावहिं ते जन रघुवर सीया ॥
करहिंरसिकजेहिविधिप्रभुसेवा ॐ रस अनुकूल सुनौ सो भेवा ॥

दोहा–दासादिक सम्बन्ध जे, नरता भाव समेत।
सिय तजि केवल राम पद, सेवहिं बसि साकेत ॥१२॥

महलनि भीतर ते नहिं जाँहीं ॐ जिन्हिके पुरुष भाव मन माँहीं ॥
सखी भाव वारे शृंगारी ॐ बसि महलनि सेवहिं पियप्यारी ॥
पुरुष न तहाँ करहिं परवेसा ॐ विहरहिं जहँ सियसँग अवधेसा ॥
जे शृङ्गार रसेश उपासी ॐ सम्बन्धी उर भाव सुदासी ॥
निरखहिं ते यह रहस अनूपा ॐ सेवहिं दम्पति युगल सरूपा ॥
को वरणै अलियन के भागा ॐ प्रेम प्रमोद सुकीर्ति सुहागा ॥
आठौ याम राम सिय संगा ॐ निवसि विलोकहिं वहु रसरंगा ॥
अष्टयाम कर सुख सम्बन्धी ॐ जानहिं अपर न जो वहु धन्धी ॥
विनु सम्वन्ध सु आतम ज्ञाना ॐ ततसुख दुरलभ कहहिं सुजाना ॥
पढ़हु पुराण सास्त्र चहुँवेदा ॐ विनु संबंध न नासहि खेदा ॥

दोहा—तेहि लगि कछु सम्बन्ध की, महिमा कही बखानि ।
अष्टयाम विधि कछुक अब, कहौं सुनहु सुखदानि ॥१३॥

आठ पहर जो श्री सियरामा ❀ करहिं चरित सोइ अष्ट सु जामा ॥
गऊ लोक बिच श्री साकेता ❀ नगर अनूपम सोह सचेता ॥
कोटिनि भवन विपुल विस्तारा ❀ रचना अद्‌भुत अकथ अपारा ॥
गलिनि गलिनि ×विरजाकी धारें ❀ कल्पतरुनि की लगी कतारें ॥
गली बजार लतनि करि छाये ❀ पुर वासी सुचि सुभग सुहाये ॥
चहुँदिशिविविधिविटपअमराई ❀ विपुल जलाशय वरणि न जाई ॥
विपुल विहार सु अस्थल सोहैं ❀ जिनहिं देखि सुर मुनि मनमोहैं ॥
कनक भवन तेहि पुर बिच राजैं ❀ कोटिनि भानु तेज लखि लाजैं ॥
अति उतङ्ग बहु केतु पताका ❀ फहरत निरखि सुरनि मनथाका ॥
ग्यान विराग कर्म करतूती ❀ चलति न जहँ रस केलि विभूती ॥

दोहा—विविधि रङ्गके जटित मणि, परे झरोखनि जाल ।
कलश कँगूरा अमित शुचि, सोभित सुखद विशाल ॥१४॥

बाहिर महलनि की रुचि राई ❀ अदभुत अकथ कहहुँ किमिगाई ॥
भीतर कुञ्ज निकुञ्ज अनूपा ❀ बने खचित मणि विविधि सरूपा ॥
विछे पलँग बहु घले हिंडोरे ❀ कुञ्ज कुञ्ज प्रति मोद न थोरे ॥
चौवारनि चित्राम सुहाये ❀ मणि माणिक मय जाँयँ न गाये ॥
परदनि की अनुपम रचनाई ❀ देखत बनें बरणि नहिं जाई ॥
मखमलादि मृदु पाट पटोरे ❀ विछे लेत चित वरवश चोरे ॥
जीना ललित न जात बखाने ❀ लघु विशाल सुन्दर सोपाने ॥
दीपक मणिन केर बहु भ्राजैं ❀ भेरि संख धुनि नौवत बाजैं ॥
समय समय अनुकूल अगारा ❀ शोभित सुखद बिचित्र उदारा ॥
जब जेहि कुञ्ज जहां रुचि होई ❀ तब तहँ सुख विहरहिं प्रभु सोई ॥

×—विरजा—विरूजा—विजरा—येकही कानाम है ।

दोहा–कुञ्ज कुञ्ज प्रति लागेउ, जल सु यंत्र बहु रङ्ग ।
ऋतु इच्छा अनुकूल सो, देत वारि सुचि अङ्ग ॥१५॥
अमिय समान नीर सुख दाई ❀ गुन सुगंध मय अति मधुराई ॥
सकल वस्तु अनुकूल सचेता ❀ सत चित आनँद रूप निकेता ॥
सब बिभूति सियराम सरूपा ❀ चिन्तन करै नशै भव कूपा ॥
ललना गण निवसहिं चहुँओरी ❀ मधुर मंजरी मुग्ध किशोरी ॥
भीतर बाहिर महलनि केरे ❀ बसहिं अलिनि के यूथ घनेरे ॥
चन्द्रकला श्री चारु सुशीला ❀ यूथेश्वरी उभय मन मीला ॥
चन्द्रकला श्री भरत सुजाना ❀ चारुशिला जानहु हनुमाना ॥
महलनिकट पश्चिम दिशिमाँहीं ❀ इन्हके भवन विराजत आँहीं ॥
इन्हि के प्रेम विवश सियरामा ❀ करत उदार चरित वशुयामा ॥
जेहि पर ये दोउ करिहहिं दाया ❀ तेहिकहँ मिलिहहिं सिय रघुराया ॥
दोहा–कोटिनि यूथ सु अलिनि के, इन्हिकर भुजबल पाय ।
विहरहिं सुख साकेत महँ, युगल चरण उरलाय ॥१६॥
सबके विलग विलग अस्थाना ❀ बने विचित्र मनोहर नाना ॥
केतिक भीतर महलनि केरे ❀ निवसहिं नित सिय पिय के नेरे ॥
तिन्हि के आनँद अकथ अतीवा ❀ जानहिं रसिक न प्राकृत जीवा ॥
सरि सागर चहुँदिशि वन उपवन ❀ बिहरहिं जहँ प्रमुदित ललना गन॥
सदन सदन सुरतरु सुरगाई ❀ आलिनि के सुख वरणि न जाई ॥
सब ऋतु सुखदायक वह ठामू ❀ करहिं विहार जहाँ सियरामू ॥
कनक भवन महँ सिय रघुबीरा ❀ राजहिं संग आलिनि की भीरा ॥
जहँ देखौ तहँ ललनहिं ललना ❀ सेवहिं दम्पति त्यागहिं पलना ॥
निजनिज कुंजनि यूथ बनाई ❀ वसहिं मुदित सिय पिययशगाई ॥
कुञ्ज कुञ्ज महँ सिय रघुराई ❀ निवसहिं यक यक ढिग सुखदाई ॥
सुनि न रसिक उर अचरज मानहु ❀ सिया अलिनि एकै करिजानहु ॥

दोहा—विलग २ सुख देत प्रभु, आलिनि रुचि अनुसार ।
जानहिं अलि हमरेहि भवन, राजहिं दोउ सरकार ॥१७॥

जहँ देखौ तहँ श्री सियरामा ❀ विहरहिं अलिनि संग बसुयामा ॥
कहुँ सिय सखिन संग सुखदाई ❀ विहरहिं विलग निकुञ्जनि जाई ॥
एक रूपते प्रीतम संगा ❀ बिलसहिं आठोयाम अभंगा ॥
विविधि रूप धरि कुञ्ज निकुञ्जा ❀ निवसहिं देंन अलिनि सुख पुञ्जा ॥
तेहि विधि प्रीतम सिय रुख पाई ❀ कुंज कुंज प्रति रूप बनाई ॥
यकयक ललना ढिंग सुख रूपा ❀ रमहिं राम प्रमुदित सुर भूपा ॥
सब जानहिं हमरेहि ढिग प्यारे ❀ निवसहिं सदा जगत उजियारे ॥
कहुँदोउ कहुँसिय कहुँपिय न्यारे ❀ करहिं अलनि सँग चरित अपारे ॥
जेहि विधि ललना इच्छा करहीं ❀ तेहिविधितिन्हिकेदोउमनभरहीं ॥
चंद्रमुखी मृग लोचनि रमनो ❀ रमहि राम सँग रति मद दमनी ॥

दोहा—ततसुख कहत प्रधान बुध, निज सुख धूरि समान ।
सो फुर पै प्रभु रूप लखि, होत आनकी आन ॥१८॥

सियजूकृपा स्वसुखअलि भोगहिं ❀ परिहरि कर्म धर्म जप योगहिं ॥
आत्म निवेदन करि सिय हाथा ❀ भई सकल सिय रूप सनाथा ॥
देखत ही के नाना रूपा ❀ सखिगण सिय कर रूप अनूपा ॥
गुण बल रूप सुकीर्ति प्रभावा ❀ सियसम शीलसखिनि कर गावा ॥
सिय आलनिमहँ नहिं कछु भेदा ❀ यह प्रसंग अति गूढ़ अखेदा ॥
अँग अङ्गी इव सिय पिय संगा ❀ बसि महलनि निरखहिं रसरंगा ॥
यह सुख लहहिं न नर अभिमानी ❀ करहिं कोटि जप तप हठ ठानी ॥
जानहिं कोउ कोउ आतम ज्ञाता ❀ रटि सिय राम नाम सुखदाता ॥
चलहिं न तहँ श्रुति शास्त्र प्रमानू ❀ प्रगटहिं जब उर अनुभवभानू ॥
यह रहस्य अनुभव बिनु प्रानी ❀ लखि नसकहिं पढ़िकथा कहानी ॥
विद्या बाद तर्क अनुमाना ❀ चलत न जहँ रस केलि प्रधाना ॥

दोहा--नेति नेति श्रुति शास्त्रवद, प्रभु रहस्य अति गूढ़।
जानहिं सज्जन नाम रटि, झगरहिं विपुल विमूढ़॥१६॥

वाम मारगी यह रस स्वादा ❀ जानहिं कहा मूढ़ मनुजादा॥
जब लगि जड़ नरता नहिं नाशै ❀ तबलगि यह सुख उर न प्रकाशै॥
रूखे ग्यानिनि कहँ अति दूरी ❀ युगल विहार भावना रूरी॥
रटत रटत सियराम सु नामा ❀ उपजै अनुभव सब सुखधामा॥
तब अनन्यता भक्ति प्रकासै ❀ सूक्षम आतम रूप सु भासै॥
भक्ति रूप तब होइ सु जीवा ❀ नरता नशै लहै निज पीवा॥
राम ब्रह्म पति आतम पाये ❀ तब ते भव भ्रम भेद नशाये॥
अष्टयाम विहरैं पिय सङ्गा ❀ अरपि अपनपौ भइ पति अङ्गा॥
पराशक्ति सियको अलि होई ❀ सेवहिं प्रभु पद सिय रुख जोई॥
मन भावन दोउ सिय रघुराई ❀ देत अलिनि आनँद समुदाई॥

दोहा-कृपा खानि श्री जानकी, दया सिन्धु रघुनाथ।
बड़भागिनि आलीं सकल, विहरहि दम्पति साथ॥२०॥

आवागमन रहित पद पाई ❀ निबसहिं धाम परम सुखदाई॥
निज निज कुञ्जनि प्रीतम संगा ❀ करहिं विहार सकल रस रंगा॥
सबहिं देत सुख रुचि अनुहारी ❀ सियरुख लखि प्रभु राम खरारी॥
सब आलिनि के कुञ्जनि माँहीं ❀ भोग विभूति भरी घटि नाँहीं॥
प्रभु अनन्त वपु धरि यक रंगा ❀ विहरहिं सदा अलिनि के संगा॥
पति पत्नी सम्बन्ध सु लागा ❀ प्रभु सनदृढ़ संश्रिति दुख भागा॥
सेवहिं प्रभु पद सब सुख मूला ❀ निजनिजकुञ्जनिरुचिअनुकूला॥
आलिनि कर सुख भोग विलाशा ❀ भाग विभव पतिव्रत विश्वासा॥
लखि शचि सारद रमा भवानी ❀ याचहिं सोइसुखसब मुद दानी॥
देव दनुज नर नाग चराचर ❀ प्रभु सेवा सुख सबहिं अगमतर॥
सखी भाव विनु महल बिहारा ❀ लखि न सकहिं को उमनगुनपारा॥

दोहा—कनक भवन महँ जाइ सब, ललना गण सिय पीय ।
सेवहिं जेहि विधि कहहुँ सोइ, जस कछु भासैहीय॥२१॥
सोई सखि सब निज २ कुंजनि ❀ दम्पति रंग रँगीं सुख पुञ्जनि ॥
रहे पहर निशि बाजहिं बाजा ❀ सुनिजागहिंअलिंकरहिंस्वकाजा ॥
करहिं नाम धुनि कोकिल बैनी ❀ गावहिं सिय पिय गुणगणश्रैनी ॥
होइ सुचिसहज पुनीत नहावहिं ❀ सुभग अङ्ग शृंगार सजावहिं ॥
भूषण वसन सु अङ्ग सम्हारी ❀ कनक भवनकी कीन्ह तयारी ॥
निज निज सेवा करनि सुधारी ❀ गावत गीत चलीं सुखकारी ॥
प्रथम गईं यूथेस्वरिं धामा ❀ अस्तुति करि सब कीन्ह प्रणामा॥
आचारजनि मिलीं तेहि ठामा ❀ पायेउ आशिरवाद ललामा ॥
पुनि सब मिलि श्री महलसिधारीं ❀ दम्पति नवल रूप रिझवारीं ॥
आचारजनि सहित अलिवृन्दा ❀ भूषण वसन सु सजैं अमंदा ॥
दोहा—चन्द्रकलादि महान सब आचारज अलिवृन्द ।
गईं सकल गावति सुयश, सोये जहँ सुखकन्द ॥२२॥
मधुरे स्वरनि सुराग उचारहिं ❀ सुनि कलरव सुरतिय हिय हारहिं ॥
पहरेदार रात की वामा ❀ सब आचार्यनि कीन्ह प्रणामा ॥
बदली करि निजकुञ्जनि आईं ❀ सातलाख सब नवल लुगाईं ॥
ठाम ठाम महलनि चहुँ ओरा ❀ लागी अलीं करन शुचि सोरा ॥
कोउ गावहिं गुण नाम उचारहिं ❀ कोइ कुक्कुट इव बाँगसुमारहिं ॥
सुक सारिक चातक की बानी ❀ बोलहिं बहु मोरिनि मस्तानी ॥
मधुर मधुर काकनि की नांईं ❀ बोलि जगावहिं श्री सिय सांईं ॥
बहु पच्छिनि के शब्द सुनावैं ❀ जसके तस कोउ लखे न पावैं ॥
भेरि संख सहनाई बाजहिं ❀ मधुर निशान सु घन इव गाजहिं॥
केतिक चढ़ि सु विमाननि वामा ❀ करहिंगान किलकारि ललामा ॥
दोहा—वेद ध्वनि बहु करहिं अलिं, बहु सजि ताल बँधान॥

नाँचहिं गावहिं बाँधि पग, नूपुर सुखद सुजान ॥२३॥

समय विलोकि सुदम्पति जागे ❀ नयन चहूँ प्रेमालश पागे ॥
बारहिं बार लेत अकड़ाई ❀ खोलत मूँदत चख सुखदाई ॥
ढ़ाँकत मुख दोउ कहुँ पट टारी ❀ देखहिं आलिनि नयन उघारी ॥
अरुझि २ सोवहिं कहुँ जागहिं ❀ लखिछवि अलींसराहति भागहिं ॥
जयति जयति कहि परदा टारी ❀ गईं कहति ढिंग वलि वलिहारी ॥
करि विनती ललि लाल उठाये ❀ तिहुँ दिशि तकिया दै बैठाये ॥
अलसानी छवि नयन निहारी ❀ भईं मुदित आरती उतारी ॥
मंगलथार दिखाय निछावरि ❀ कीन सु मणिगण पट प्रमोद भरि ॥
उरझेउ लट भूषण सुरझाये ❀ आलिनि अनिर्वाच्य सुख पाये ॥
लेत उवासीं दोउ अलसाने ❀ पुनि लखि सखिनि ओर मुशिकाने ॥
हास विलास होत सुख कारी ❀ आलस विगत भये पिय प्यारी ॥
लखहिं परस्पर छवि पियप्यारी ❀ चिवुकनि कर धरि गर भुजडारी ॥

दोहा—कञ्चन चौकी साजि दोउ, बैठारेउ सुखदाय ।
बदन धोवाय खवायेऊ, माखन मिसरी लाय ॥२४॥

कुल्ला करि पुनि पोंछि वदनकर ❀ पहिरेउ भूषण वसन अमल बर ॥
बहुरि सुगंधित पानसु दीन्हा ❀ नृत्य गान आरंभ सु कीन्हा ॥
स्वयं रागिनी नाँचहिं गावहिं ❀ चूकहिं तहँ सिय पिय सु बतावहिं ॥
यहि विधि हास विलास सुहावा ❀ होत सुखद कछु दिन चढ़ि आवा ॥
विश्वमोहिनी अली प्रधाना ❀ प्रथम कुञ्ज महँ चतुर सुजाना ॥
समय जानि पठई यक दासी ❀ आई जहँ बैठे सुखरासी ॥
करि प्रणाम विनती तेहिं कीन्ही ❀ सुनतइ सव समाज उठि दीन्ही ॥
चलि अस्नान कुञ्ज दोउ गयेऊ ❀ कुञ्जेश्वरी जुहारति भयेऊ ॥
सुभग सु चौकिनि आसन देई ❀ बैठारेउ अति सादर तेई ॥
झीने पट पहिराय उतारे ❀ भूषन वसन प्रथम जो धारे ॥

दोहा–सुचि सुगंध मय उबटननि, उबटि सुअंग अनूप ।
ऋतु अनुकूल सुनीर भरि अन्हवायेउ सुर भूप ॥२५॥

श्यामगौर सुचि अङ्गनि परसहिं ❀ बड़ भागिनि अलि हिय अति हरषहिं॥
बहुरि अँगोछि सु पट पहिराये ❀ सादर पुनि चौकिनि बैठाये ॥
सौंधे अतरनि केस भिजाये ❀ रुचि अनुकूल मोद मन छाये ॥
समय सरिस कछु सुरस पिवायेउ ❀ पान मसाले दार खियायेउ ॥
आरति करि निवछावरि नाना ❀ कीन्ह सहित निज तन मन प्राना ॥
श्री शृङ्गार कुञ्ज ते वामा ❀ आई इक तेहि समय ललामा ॥
पहिरे भूषण बसन अनूपा ❀ रति मद मोचन सुभग सरूपा ॥
मदनकला की विनय सुनाई ❀ हरषि उठे सुनि सिय रघुराई ॥
बसन विचित्र बिछे तिन्हि पाँहीं ❀ सहित समाज चले प्रभु जाँहीं ॥
मदनकला निज सखिनि समेता ❀ भेंटेउ आइ सु कृपा निकेता ॥
चरन लागि करि अस्तुति नाना ❀ लखि दंपति छबि हृदय जुड़ाना ॥

दोहा–सह समाज सनमानि दोउ, गइ निज कुञ्ज लिवाय ।
आसन दै बैठायेऊ, यथा योग सुख पाय ॥२६॥

मदन कला रुखपाय बहोरी ❀ सियसिय वरहि रिझाय सुगोरी॥
बसन विभूषण नाना रंगनि ❀ पहिरावन लागीं प्रभु अङ्गनि ॥
रुचिर पिटारे बहुविधि खोले ❀ भूषण बसन भरे अनमोले ॥
शृङ्गारिनि सब करहिं शृङ्गारा ❀ रुचि अनुकूल सु सहित विचारा ॥
कबहुं परस्पर सिय पिय दोऊ ❀ करहिं शृङ्गार लखहिं सब कोऊ ॥
येहि विधि कीन्ह शृङ्गार सुहावा ❀ दर्पण लैकर आलि दिखावा ॥
रीझहिं निज निज रूप निहारी ❀ उभय परस्पर गर भुज डारी ॥
ललना गण लखि भईं सुखारीं ❀ जय जय कहि आरती उतारीं ॥
पुष्पांजलि दै अस्तुति कीन्हीं ❀ चरण लागि सब आशिष लीन्हीं ॥
यह सुख अकथ कहों किमि गाई ❀ सकइ कि गूंगा स्वाद बताई ॥

तेहि अवसर यक आली आई ❀ ग्यानकला की विनय सुनाई ॥
दोहा-सह समाज दोउ हर्षि तब, गये कलेऊ कुञ्ज ।
देत अलिनि आनंद अति, सिय सिय बर सुखपुञ्ज ॥२७॥
कुंज कुंज महँ परमानंदा ❀ उमगत जात जहाँ दोउ चंदा ॥
ग्यान कला यहि कुञ्ज मझारी ❀ अधिकारिनिसियपियकीप्यारी ॥
धाय आइ चरणनि लपटानी ❀ आपुहिं अति बड़ भागिनि जानी ॥
यथा योग पीढ़नि बैठारे ❀ दम्पति सखिनि सहित सतकारे ॥
दधि चूरादि मिठाई मेवा ❀ कन्द मूल फल अति सुख देवा ॥
सरस असी सम बहु पकवाना ❀ रुचिगर मधुर मनोहर नाना ॥
कामधेनु सुचि सुरतरु दीने ❀ सकल पदारथ रुचिर नवीने ॥
दम्पति सहित सु दै पनवारा ❀ सबहिं परोसेउ रुचि अनुसारा ॥
सहित समाज सु कीन्ह कलेवा ❀ ज्ञानकला तोषीं करि सेवा ।
सीथ प्रसाद सखी सब लीन्हा ❀ जीवन जन्म सफल निज चीन्हा
दोहा--पुनि कराय अँचवन सबहिं, दीन सु मेवा पान ।
बैठे पिय प्यारिनि सहित, निज निज सुभ अस्थान ॥२८॥
अनुपम सोभा सुख सु समाजा ❀ वरनि न सकहिं अमित अहिराजा ॥
होत परस्पर हास बिलाशा ❀ खेलन लगे सु चौपर पासा ॥
कुञ्जेश्वरी आरती कीन्हीं ❀ निवछावरि बहु वारि सु दीन्हीं ॥
बैठीं सब दम्पति चहुँओरीं ❀ चौपर खेल विलोकहिं गोरीं ॥
भोजन कुञ्ज केरि अधिकारिनि ❀ ममस्वामिनिश्रीयुगलविहारिनि ॥
अवसर जानि सु आलि पठाई ❀ तुरत कलेऊ कुञ्ज सु आई ॥
दम्पति चरण कमल शिर नाई ❀ भोजन केरि सु सुरति कराई ॥
उठेउ हरषि दोउ सहित समाजा ❀ पूरण करन जनन मन काजा ।
चलेउ परस्पर दै गरबाँहीं ❀ आयेउ भोजन कुञ्ज सु माँहीं ॥
स्यामल गौर किसोर किसोरी ❀ सुखमा सदन मनोहर जोरी ॥

दोहा—कुञ्जेश्वरी विलोकि छबि, सादर कीन्ह प्रणाम ।
बैठारेउ सनमानि दोउ, अलिनि सहित सियराम ॥२९॥
सुभगा सुभग शृङ्गार उतारा ❀ क्रीटादिक मणिमाल मुहारा ॥
सियहिं सुभग सारी पहिराई ❀ पियहिं पीत पट अति सुखदाई॥
सकल समाज पहिरि पाटाम्बर ❀ बैठेउ भोजन करन मोद भर ॥
मध्य सु दंपति एकइ आसन ❀ बैठेउ हरषि पाइ अनुसासन ॥
सिय सिय बर सम जदपि न कोई ❀ तदपि चलत भक्तन रुख जोई ॥
सादर सबहिं दीन्ह पनवारा ❀ चतुर सुआरिनि सुभग उदारा ॥
परसन लगीं सु वस्तु अनेका ❀ रसमय सुखद एक ते एका ॥
अगणित व्यञ्जन सखरे साजे ❀ पक्के बहु जाइँ न अन्दाजे ॥
साग अचारनि की नहिं गिनती ❀ परसहिं सबहिं सु करि २ विनती ॥
चटनीं चारु पकौरी पापर ❀ दही वरा परसहिं अलिं तापर ॥
दोहा—विविधि कटोरिनि साजि बहु, व्यंजन भरि भरि थार ।
दंपति सन्मुख धरेउ सब, सादर सहित दुलार ॥३०॥
करि अचवन दोउ जेवन लागे ❀ सकल समाज सहित अनुरागे ॥
सुधा भरे सब व्यञ्जन सोहैं ❀ विविधि भाँति बरणे कवि को हैं॥
चिन्तामणि सुरतरु सुरगाई ❀ इन्हकृत भोजन वरणि न जाई ॥
रहित विकार अनूपम स्वादा ❀ खात होत उर विगत विखादा ॥
जरा मरन दुख हरन कुरोगा ❀ सुरनि अगम कहँ पावहिं लोगा॥
जोइ जोइ व्यञ्जन प्रभु मन भावैं ❀ सोइ सोइ सरस सद्य प्रगटावैं ॥
मनहीं मन चाहहिं जो जोई ❀ स्वारिनि तिन्हैं देइँ सोइ सोई ॥
सूपोदन कर स्वाद सुहावा ❀ तेहि महँ सुर भी सरपि मिलावा॥
जेंवत सिय पिय मिलि यक संगा ❀ स्वादि स्वादि भोजन बहु रंगा ।
सोंधी कढ़ी पीत मन भाई ❀ सिय लै पिय कपोल लपटाई ॥
दोहा—अनुपम झाँकी झाँकि अलि, हँसीं सकल दै ताल ।

मंद मंद मुशिकाय सिय, लिये लाय उर लाल ॥३१॥

यहि विधि होत हास रस नाना ❀ भोजन कीन्ह सु कृपा निधाना ॥
उठेउ अचइ दोउ सिय रघुराई ❀ परिकर सकल प्रसादी पाई ॥
कंचन चौकिनि पर बैठाये ❀ खरिका दै मुख हाथ धोवाये ॥
पुनि अँगोछि मुख हाथ सु चरना ❀ निज आसन बैठे मुद भरना ॥
कुञ्जेश्वरी सु पान पवायेउ ❀ कीन्ह आरती आनँद छायेउ ॥
तब श्री प्रीतिलता सुखपाई ❀ सयन कुञ्ज कहँ चलीं लिवाई ॥
सकल समाजहिं जनक किशोरी ❀ कहेउ जाउ निज कुञ्जनि गोरी ॥
वंदि चरन आयसु धरि सीसा ❀ फिरीं राखि उर श्री सिय ईसा ॥
सयन कुञ्ज महँ सादर जाई ❀ पौढ़ेउ सेज सिया रघुराई ॥
कुञ्जेस्वरी समाज समेता ❀ सेवन लगीं सप्रेम सचेता ॥

दोहा-सीतल जल सु सुगंधित, अतर पान वनमाल।
पलँग निकट सजि चौकियनि, धरेउ मनोहर बाल॥३२॥

ऋतु अनुकूल सु कीन्ह सुपासा ❀ लगीं चरण चाँपन मृदु हासा ॥
करत परस्पर आनँद बाता ❀ सोये सकल विश्व सुखदाता ॥
सोये अलिनि लखे दोउ प्यारे ❀ उठि दरवाजिनि परदा डारे ॥
बाहर भीतर चौकीदारी ❀ लगीं करन सब सुन्दर नारी ॥
सोर करन पावै नहिं कोऊ ❀ महलन दम्पति सोये दोऊ ॥
यहि विधि चहुँदिशि पहरे लागे ❀ समय हेरि सिय सह पियजागे ॥
मुख मज्जन करि भूषण साजे ❀ छवि लखि कोटि मदन रति लाजे ॥
स्यामल गौर मनोहर जोरी ❀ सुन्दर सुखद सुबयस किसोरी ॥
अवलोकहिं अलि गन चहुँ ओरी ❀ जनु जुग चंदहिं निकर चकोरी ॥
कुञ्जेश्वरि तब करि सु आरती ❀ बहुबिधि भूषण पटउवारती ॥

दोहा-मधुर मुरब्बा खाय कछु, सुचि जल अचवन कीन्ह।
प्रेमलता अलि बिहँसि मुख, बीरी निज कर दीन्ह॥३३॥

रुचिगर पान पाय पिय प्यारी ❀ बैठेउ अलिगन गोल मझारी ॥
तेहिं अवसर आई इक नारी ❀ केलि कुञ्ज कर समय विचारी ॥
हेमलता जू की प्रिय वानी ❀ प्रभुसन कही जोरि युग पानी ॥
कुञ्जेश्वरी केरि सुनि वाता ❀ हर्षि उठे दम्पति जन त्राता ॥
केलि कुञ्ज गवने अलि साथा ❀ चलीं पाय रुख सिय रघुनाथा ॥
कुञ्जेश्वरि आगे होइ लीन्हें ❀ सबहिं यथोचित आसन दीन्हें ॥
ऊँच सिंहासन प्रभु बैठारे ❀ सादर जल लै पाँयँ पखारे ॥
सकल पान कर सीश चढ़ावा ❀ परमानन्द हृदय महँ छावा ॥
आग्या पाइ सु कौतुक नाना ❀ होन लगे आश्चर्य निधाना ॥
केलिकुञ्ज की अद्भुत लीला ❀ लखहिं नामरटिरसिकसुसीला ॥

दोहा—षट ऋतुके आचरण जो, सो सब परत लखाय ।
उत्पति पालन प्रलय सब, साक्षात दरशाय ॥ ३४ ॥

जो चरित्र मन वानी पारा ❀ कहि न सकतजेहि वदन हजारा ॥
दिखरावहिं कहि २ मृदु बचना ❀ अमित कोटि ब्रह्मांडनि रचना ॥
सप्तावरण भेद दिखरावैं ❀ कोटिनि शिव विधि विष्णु बनावैं ॥
नव सु खंड कहुँ सप्त सु दीपा ❀ देखि परैं कहुँ दूरि समीपा ॥
सप्त शिन्धु कहुँ भरे लखावैं ❀ कबहूँ सूखे दृष्टि सु आवैं ॥
कहुँ बिराट वैकुण्ठ समेता ❀ देखि परैं कहुँ विगत निकेता ॥
कबहुँ दिखावहिं चहुँ युग धर्मा ❀ बिलग विलग कहुँ मिश्रित पर्मा ॥
कबहुँ राम कृष्णादिक लीला ❀ दिखरावहिं सब सखीं सुशीला ॥
कबहुँ त्रिपाद विभूति यथारथ ❀ दिखरावहिं स्वारथ परमारथ ॥
पर परमारथ कबहुँ दिखावैं ❀ साधि सुजन जेहिप्रभु पदपावैं ॥

दोहा—काष्ट पूतरी करहिं कहुँ, वेद सु शास्त्रनि घोष ।
कृत्तिमसेना लरहिं कहुँ, अगणित करि करि रोष॥३५॥

कटि २ गिरहिं धरनि पर अङ्गा ❀ बहुरि लरैं जुटि जुटि स उमङ्गा ॥

महाविष्णु नारायण धामा ❀ उमा रमा के लोक ललामा ॥
देखि परत कहुँ अन्तर ध्याना ❀ होत सकल भासत मयदाना ॥
कबहुँ दिखावहिं दश अवतारा ❀ जेहि लगि भएउ सो हेतु उदारा ॥
कबहुँ अनन्त रूप प्रभु केरे ❀ दिखरावहिं करि चरित घनेरे ॥
कबहुँ उगावहिं कोटिनि भानू ❀ कबहुँकरहिंनिशितिमिरनिधानू ॥
कबहुँ रात दिन अर्धम अर्धा ❀ दिखरावहिं प्रभु कहँ सह शर्धा ॥
महा प्रलय कहुँ करि दिखरावहिं ❀ छनमें कोटिनि अण्ड बनावहिं ॥
हय गज ऊँट महिष खर स्वाना ❀ वृषभ दिखावहिं लरत सुजाना ॥
सर्ब शक्ति सिय आलिनि माँहीं ❀ तिन्हि के चरित बरणि नहिंजाँहीं॥
कार्णकार्य गुण अगुण सरूपा ❀ दिखरावहिं अलि खेल अनूपा ॥

दोहा—कबहुं दिव्य प्राकृत कबहूँ, अदभुत अकथ सुख्याल ।
करहिं अलीं आचरजमय, अवलोकहिं सियलाल ॥३६॥

विस्मय जनित अनेक प्रकारा ❀ करहिं चरित अलिअकथअपारा॥
कौतुक निधि दोउ कौतुकदेखी ❀ मानहिं उर आचरज विशेखी ॥
जिन्हि की कृपा पाय अलि खेला ❀ करहिं विवि विधि नित्य नवेला ॥
ते प्रभु उभय जननि सुखकारी ❀ अचरज मानहि खेल निहारी ॥
करहिं अलिनि की विपुल प्रसंशा ❀ दोउ भक्तनि मन मानस हंसा ॥
प्रभु प्रसन्न लखि अलीं मुदितमन ❀ भई हेरि रुख कीन्ह विसर्जन ॥
जय सियराम सुधुनि सुखदाई ❀ होन लगी पुनि गाय बजाई ॥
कुञ्जेश्वरी हृदय हरषाई ❀ कीन्ह आरती अति सुखदाई ॥
बहुरि विनय बहुविधि सब भाखी ❀ प्रमुदित मन मूरति दोउ राखी ॥
फल मेवा पुनि सुधा समाना ❀ पाये दोउ कछु कृपा निधाना ॥
बिहँसि २ दोउ आलिनि ओरा ❀ हेरहिं दम्पति जन मन चोरा ॥

दोहा—युगल प्रिया अधिकारिनी, कुंज हिंडोर सु माँहिं ।
समय जानि पठई अलीं, प्रमुदित दंपति पाँहिं ॥३७॥

शीश नाय तिन विनय सुनाई ❀ मुनि हिय हरषि उठे सुखदाई ॥
चले हिंडोर कुञ्ज हरषाई ❀ लगीं संग ललना समुदाई ॥
करसों कर जोरे दोउ मीता ❀ आलिनि सन बतरात सप्रीता ॥
कुञ्जेश्वरि प्रभु आवत देखे ❀ धाइ मिलीं बड़भाग सु लेखे ॥
चरन लागि दम्पति छवि हेरी ❀ मुदित भईं वारीं मणि ढेरी ॥
करि सनमान समाज समेता ❀ गईं लिवाय हिंडोर निकेता ॥
जटित महामणि कंचन भूला ❀ सब विधिसुखदप्रभुहिंअनुकूला ॥
तेहि पर हरषि चढ़े पिय प्यारी ❀ चहुँदिशि छाइ रही हरियारी ॥
बोलहिं चातक दादुर मोरा ❀ श्याम घटा छाई चहुँ ओरा ॥
कोकिल कीर सु बोलहिं बानी ❀ गुंजहिं मधुप अमित सुखदानी ॥

दोहा–झींगुर शब्द सुनावहीं, उमड़े नदी तलाव ।
बादर धावत फिरत नभ, झम झम बरषै आव ॥३८॥

हरित भूमि राजत चहुँ ओरी ❀ सुखमा हेरि होत मति भोरी ॥
छाई लता तरुनि महि डारो ❀ फूली फली झुकीं सुखकारी ॥
चमकहिं तड़ित वलाहक बोलहिं ❀ बकनि पांति जहँ तहँ नभ डोलहिं ॥
झरना झरहिं भामिनी गावहिं ❀ नाना विधि वाजने वजावहिं ॥
सुखगा भूल न कुञ्ज सुकेरी ❀ जानहिंसोइसपनेउँ जिनि हेरी ॥
हरित शृङ्गार सु सहित समाजा ❀ पहिरेउ नखसिख सियरघुराजा ॥
दिये परस्पर दोउ गरवाँहीं ❀ झूलत भरे मोद मन माँहीं ॥
दोउ दिशि ललना पकरें डोरी ❀ देतसुपेंग विहँसि मुख मोरी ॥
नाँचहिं अपर भरीं अनुरागा ❀ सब विधि अपन सराहहिं भागा ॥
बहुतक राग मलार उचारहिं ❀ बहुतक दम्पति रूप निहारहिं ॥

दोहा–पावस ऋतु धरि विविधि तन, सेवत प्रभु सुखकन्द ।
यह रहस्य जानहिं रसिक, कोउ कोउ हृदय अमन्द ॥३९॥

बकवादिनि कहँ यह सुख दूरी ❀ रोगिनि यथा सजीवन मूरी ॥

कबहुँ परस्पर झूलत दोऊ ❀ उपमा योग न त्रिभुवन कोऊ ॥
बाढ़त पेंग डरपि सिय प्यारी ❀ लपटहिं पियअँग गर भुजडारी॥
फहरत पट भूषण रव करहीं ❀ मुक्तनि हार टूटि महि परहीं ।
छूटी अलकें दोउ दिशि कारी ❀ लहरहिं ललित सु लागहिं प्यारी
निरखहिं अलीं परम बड़भागिनि ❀ दम्पति चरणकमलअनुरागिनि ॥
कबहूं प्रीतम सियहिं झुलावत ❀लखिनखसिखछबिअतिसुखपावत॥
कबहुँ चमर कहुँ बिजन ढुरावत ❀ कबहुँनचतपियसियगुणगावत ॥
कोउ संशय जनि करहु सुजाना ❀ भक्ति विवशप्रभु कृपा निधाना ॥
भक्तनि हित प्रभु निज मरियादा ❀ त्यागि देत सुख नाशि विषादा ॥
सूकरादि अवतार अपारा ❀ भक्तनि हित प्रभु धरेउ उदारा ॥
अस विचारि प्रभु भक्त प्रवीना ❀ पगे भक्ति रस जिमि जल मीना॥

दोहा--कर्म ज्ञान योगादि व्रत, निरस जानि परित्यागि ।
मनक्रम वचनसु भक्तिरस, रहेउ चतुर जन पागि ॥४०॥

तर्क वितर्क त्यागि यह लीला ❀ अवलोकहिं सज्जन मति सीला ॥
झूलन कुञ्ज केर सुख भाई ❀ अकथअलौकिकअति सुखदाई ॥
नित्य ध्यान झूलन सुख राशी ❀ निरखौ हृदय भाव धरि दासी ॥
बैठे झूलन दोउ पिय प्यारी ❀ झूलि झुलाय सु गर भुजडारी ॥
प्रीति परस्पर सिय रघुवर की ❀ जानहिंअलिगनगतिनहिंनरकी ॥
झूलन कुञ्ज विहार सुखैना ❀ देखत बनै न कहि सक बैना ॥
उमगत जहँ आनँद की धारा ❀ थकित होत लखि ज्ञान विचारा ॥
मज्जहिं अलिगन प्रेम प्रबाहू ❀ सेवहिं मन वच क्रम सिय नाहू ॥
भूषण बसन सम्हारि आरतीं ❀ कंचन थारनि आलि उतारतीं ॥
नाचहिं गावहिं बाजन बाजहिं ❀ चहुँदिशि मंगल मोद सुराजहिं ॥
बरषहिं सुमन सराहि स्वभागा ❀ अकथ अलिनिकर सुख अनुरागा ॥

दोहा--अस्तुति करि पद परसि पुनि, कनक कटोरनि माँहिं ।

बासौंधी रवड़ी सु भरि, लै आई प्रभु पाँहिं ॥४१॥

काम़धेनु के दूध सु केरी ❀ बनी सुगन्धित सुखद घनेरो ॥
मेवा मिश्रित अमी समाना ❀ रुचिगर मधुर हरन श्रमनाना ॥
कछुकखाय दोउकीन्हआचमन ❀ मुखअँगौछिलिएपानमुदितमन ॥
तेहि अवसर आई वहु वाला ❀ बोलीं विहँसि नाइ पद भाला ॥
रास कुञ्ज की बेरा भयेऊ ❀ सुनिप्रभु हृदय हरष अतिछयेऊ ॥
चले समाज सहित दोउ प्रानी ❀ रास कुञ्ज आयेउ गुण खानी ॥
कुंजेस्वरी सु कमला देवी ❀ मन वच क्रम दम्पति पद सेवी ॥
आयमिली निज सहितसमाजा ❀ साजें सकल रास की साजा ॥
सुभग सिंहासन सिय रघुबीरा ❀ वैठे सहित सखिन की भीरा ॥
रासारम्भ सु आयसु पाई ❀ कीन्ह नाइ शिर अलि समुदाई ॥

दोहा—कमला—विमला—लद्मना, कृपा—कौशिकी बाल ।
अधोउवारा —जामुनी, बाघमती—शशिभाल ॥४२॥

विरजा—अकुसी—सालिग्रामी ❀ बनघोषा—धूम्रा—अलि नामी ॥
अपर गेरुका—रातो—वामा ❀ इन्हिकर रहत रासकी सामा ॥
षोड़स ये सिय की अति प्यारीं ❀ सब विधि ते दम्पति हितकारीं ॥
ये सब मिथिला वासिनिआलीं ❀ केवल सिय सनेह प्रतिपालीं ॥
नृत्यहिं निज निज जूथ बनाई ❀ सकल कला युत भाव बताई ॥
थिरकनिमुरनिनटनिमुसकनियाँ ❀ करि आकर्षहिं चित सब धनियाँ॥
बाजहिं नूपुर किङ्किणि कङ्कन ❀ ताल बँधान समेत मोह मन ।
नृत्यहिं दुइ दुइ जोरी जोरी ❀ फहरत पट लट लखहिं किसोरी॥
विलग विलग कवहूं सब नाचहिं ❀ विविधिभांतितततथेइ मुदमाँचहिं ॥
नृत्य गान के भेद अपारा ❀ मैं किमि कहौं ग्रसेउ मद मारा ॥

दोहा—कहुँ करसों करजोरि सब, होत मंडलाकार ।
अगणित भाव दिखावहीं, करि करि कला अपार ॥४३॥

आलिनि कर गुन गति चतुराई ❀ अमित सेष सिव सकहिं न गाई ॥
सिंहासन आसीन कृपाला ❀ देखहिं दम्पति रास रसाला ॥
यूथ यूथ कबहूं बिलगावहिं ❀ निज २ गुण दम्पतिहिं दिखावहिं ॥
कबहूं मिलि सब एकै संगा ❀ नाँचहिं गावहिं भरीं उमंगा ॥
षोड़स सहस रास की साजा ❀ साजें अपर बजावहिं बाजा ॥
मानहुँ सकल रागिनी रागा ❀ धरें अलिनि के तन बड़ भागा ॥
तिन्हि के नृत्यगान गुण भावा ❀ सकल अनूपम जाँइँ न गावा ॥
कबहुँ हरषि नाचहिं पिय प्यारी ❀ चहुँदिशि मंडल बाँधहिं नारी ॥
रास शृङ्गार सजे सुखदाई ❀ नाचहिं दोउ अद्भुत नचनाई ॥
अलि मंडल सोहत चहुँ ओरी ❀ नाचहिं मध्य किशोर किशोरी ॥

दोहा--कबहुँ अलापहिं संग दोउ, अनुपम रागिनि राग ।
बिलग बिलग कहुँ गावत, बढ़ै परस्पर लाग ॥४४॥

श्रवन हाथ धरि राग अलापहिं ❀ सिय पिय सङ्ग हरत उरतापहिं ॥
जीतहिं सिय तब पिय मुसिकाई ❀ हृदय लाय बहु करहिं बड़ाई ॥
बोलहिं अलिजय२सियस्वामिनि ❀ जयतिसकलगुणखानिसुभामिनि ॥
लखि छवि युगलसखींसब हरषीं ❀ जयति२ कहि सुमन सु बरषीं ॥
अमितकामरतिनिवछावरि करि ❀ अवलोकहिंअलिछविसुनयननभरि ॥
बड़ भागिनि ललना सब भांती ❀ रहहिं सदा युग छवि मदमांती ॥
सब सियराम प्रेम की पालीं ❀ सबगुन धाम कामधुक आलीं ॥
इन्हिपर कोटिनि ज्ञान विरागा ❀ कर्म धर्म जप तप व्रत यागा ॥
सुर मुनि मनुजनि के सुख जेते ❀ निवछावरि करि डारिय तेते ॥
युगल माधुरी छवि रस स्वादा ❀ जानहिं अलीं न नर मनुजादा ॥

दोहा--पढ़ि पढ़ि के पंडित मरे, योगी करि तप योग ।
ग्रही मरे ग्रह काज करि, भोगी करि करि भोग ॥४५॥

तन सुख धन सुख रँगे नारि नर ❀ बूड़े सब जग मान मोह सर ॥

मिलेउन कोउ गुरु रसिक रसीले ❀ आतमदर्शी छयल छबीले ॥
चखवावहिं जे छवि मधुराई ❀ नयननि ते सिय पिय की भाई ॥
पति पतनी सम्बन्ध विहीना ❀ यह सुख दुर्लभ कहहिं प्रबीना ॥
रासकुञ्ज की अनुपम लीला ❀ करि कराय दोउ परम सुशीला ॥
हर्षित दोउ सिंहासन भ्राजे ❀ कीन्ह आरती बाजन बाजे ॥
पुष्पाञ्जलि दै अस्तुति कीन्ही ❀ नाइ चरण शिर आशिष लीन्ही ॥
कीन्ह विसर्जन रास शृँगारा ❀ अलिनि सहित दोउ दूसरधारा ॥
सयन कुञ्ज की सुभगा आली ❀ अधिकारिनि प्रभु कहँ लै चाली ॥
करहिं नाम धुनि अति सुख दैनीं ❀ मिलि सब ललना कोकिल बैनी ॥

दोहा—अलिनि सहित निज कुञ्ज में, सादर दम्पति आनि ।
ब्यारू विविधि करायेऊ, केहि विधि कहौं बखानि ॥४६॥

रुचि अनुकूल सु भोजन सामा ❀ पायेउ आलिनि सह सिय रामा ॥
करि अचवन दोउ सियरघुराजू ❀ बैठेउ चौकिनि सहित समाजू ॥
सोंधो दूध सु कन्द मिलाई ❀ कछुक गरम सुभगा लै आई ॥
कनक कटोरनि भरि सुखकारी ❀ अचयेउ हृदय हरषि पिय प्यारी ॥
धोय हाथ मुख प्रेम समेता ❀ गये मुदित मन सयन निकेता ॥
ऋतु अनुकूल सेज की सामा ❀ रचि राखी प्रथमहिं वर बामा ॥
यद्यपि सब ऋतु सेवा करहीं ❀ रुचि अनुकूल मोद मन भरहीं ॥
तद्यपि अलिगन ऋतु अनुसारी ❀ सेवहिं दम्पति भाव विचारी ॥
जस ऋतु तस ग्रह सेज सवाँरहिं ❀ प्रभुहिं रिझाइ सु जन्मसुधारहिं ॥
बैठे सुभग सेज सुखदाई ❀ सुभगा पान दान लै आई ।

दोहा—खात खियावत परस्पर, सिय सियवल्लभ लाल ।
पान मसालेदार शुचि, अलि लखि होत निहाल ॥४७॥

कोमल करनि करहिं अलिसेवा ❀ पौढ़े पलँग सु दोउ सुख देवा ॥
कीन्ह चरित जो कुन्जनि माँहीं ❀ कहहिं कहावहिं आलिनि पाँहीं ॥

सीठी उगलि सयन पुनि कीन्हीं ❀ सकलअलिनिकहँआयसुदीन्हीं॥
अब तुम निज निज कुञ्जनि आली ❀ सोवहु जाइ सु मिलिहैं काली॥
सुनि दम्पति प्रिय वचन रसाला ❀ चलीं नाइ शिर कुञ्जनि बाला॥
वरणति पिय प्यारी की प्रीती ❀बोलनि हँसनि तकनि सुचि रीती॥
निज निज कुञ्जनि पिय उरलाई ❀ सोईं सकल प्रमोद बढ़ाई।
यहाँ राति की चौकी वारीं ❀ आई लाखनि सुन्दर नारीं॥
चन्द्रकला जेहि भाँति बतायेउ ❀ तेहि विधि निज २ यूथ बनायेउ॥
प्रीतम प्यारिहिं सोवत जानें ❀ बैठीं निज निज ठौर ठिकानें॥
खिरकिनि द्वार झरोखनि नाना ❀ नीचे ऊपर बैठेउ थाना॥

दोहा—भीतर बाहर महल के, राजहिं ललना बृन्द।
मन वच क्रम दम्पति चरण, सेवहिं अति सुखकंद॥४८॥

जगि न जाँयँ अबहीं दोउ सोये ❀जुगवहिं सब जिमि नयननि कोये॥
सैंटिनि में बतियाँइँ परस्पर ❀ महलन में सोये सिय रघुवर॥
अपर न शब्द करै कोउ आली ❀ चलें दाबि पाँयनि सब चाली॥
नूपुर हू नहिं बाजन पावैं ❀ येहि विधि एकनि एक सिखावैं॥
सामा सकल भोग हितकारी ❀ सेज निकट सब धरीं सम्हारी॥
मधुर मंजरी सेज समीपा ❀ हाजिर खड़ीं बरहिं मणि दीपा॥
सयन कुञ्ज कर गुप्त विहारा ❀ निरखहिं अलीं नयन सुखसारा॥
गोपनीयँ अति रति शाला सुख ❀ होत महा पातक भाखत मुख॥
यह सुख नहिं भाखन के योगू ❀ होत विषय रत सुनि जड़ लोगू॥
नव कुंजनि कर कछुक विहारा ❀ कहेउँ छमहिं सो रसिक उदारा॥

दोहा—मनन ध्यान लायक सदा रसिकनि गुप्त विहार।
अन्तरंग अलि भाव दृढ़, धारि समेत विचार॥४९॥

गुप्तकेलि जो कहि प्रगटावत ❀ प्रभुको ते जन स्वाद न पावत॥
नव निकुञ्ज के चरित सुप्यारे ❀ मनन जोग नहिं स्वाद उघारे॥

सांचे रसिक उपासक जोई ❀ करत भावना अन्तर सोई ॥
लोलुपलिखिलिखिगुप्तविहारा ❀ करहिं प्रकाश अबुध अविचारा ॥
कर्म वचन मन त्रय गुन पारा ❀ नव निकुंज कर युगल विहारा ॥
सोसुख भोगहिं अलीं सुसीला ❀ जानहिं कहा पुरुष गुब्ररीला ॥
अधिकारिनिप्रतिरसिकसुजाना ❀ उपदेशत आये यह ग्याना ॥
महामंत्र सम काननि मांहीं ❀ देत रहे मुख ते लिखि नांहीं ॥
ते वह गुप्त रहस्य वजारनि ❀ छपि २ विकत सु लेत हजारनि ॥
करत मसखरी लोग चवाई ❀ रसिकनि ते हँसि २ दुख दाई ॥
रसिक विचारहु तौ मन माँहीं ❀ भांखन जोग केलि सुख नाँहीं ॥

दोहा–जो रहस्य शिव सतिहु संन, कहेउ न रहे छिपाय ।
सो रहस्य छपवाय अब, वेचत विमुखी भाय ॥५०॥

रस कर स्वाद रसिक जो जानें ❀ तौ न प्रगट कहि कबहुँ बखानें ॥
प्रथम सु रहेउ रसिक रसग्याता ❀ जिन्हि के जस ग्रंथनि विख्याता॥
संभु सेष विधि श्री हनुमाना ❀ जाग वलिक श्री जनक सुजाना ॥
सनकादिक नारद मुनि ग्यानी ❀ वालमीकि कुंभज सुखदानी ॥
येकनि येक सिखावत आये ❀ पाँचहु रस के भाव सुहाये ॥
चारिउ युगनि रसनिके ग्याता ❀ आये होत नई नहिं बाता ॥
कलि युगहू महँ भये अनंता ❀ रसग्याता आचारज संता ॥
श्री सठकोप आदि मुनि व्रन्दा ❀ स्वामी रामानंद अद्वंदा ॥
अग्रदेव नाभा मति धीरा ❀ तुलसि दास श्री कील कबीरा ॥
राम सखा श्री कृपा निवासा ❀ ए सब रसिक भये बहु खासा ॥

दोहा–वातसल्य शृङ्गार सुचि, सख्य सांति अरु दास ।
पाँचहु रस आचार्य्य सब, हिलि मिलि कीन्ह प्रकास ॥५१॥

जीवनि के कल्यान सु हेतू ❀ पांचहु रस प्रगटेउ भवसेतू ॥
सब आचार्यनि में अति मेला ❀ रहेउ रहित उतपात झमेला ॥

पाँचहु रसकरजिन्हि कहँग्याना ❁ झगरहिं ते न रसिक मतिमाना ॥
जिन्हैं नकवनिहुँ रसकर स्वादा ❁ करत सोइ बहु वाद बिवादा ॥
रसिकनि ते मागौं कर जोरी ❁ सुनहु कृपाल विनय यह मोरी ॥
गुप्तकेलि दम्पति जो करहीं ❁ जेहिकर ध्यान सिवादिक धरहीं ॥
रतिशालादिक युगल विहारा ❁ दूसर यह सम्वन्ध उदारा ॥
कृपापात्र विनु ये जनि भाखौ ❁ मन्त्र समान गुप्त करि राखौ ॥
लोभ मोह वश ये सु पदारथ ❁ देत होत सब सुकृत अकारथ ॥
बैठि इकन्त भावना कीजै ❁ मुखते श्री सियराम रटीजै ॥
सखी भावना उर धरि रूरी ❁ नाशमान नरता करि दूरी ॥

दोहा—तव पावहुगे स्वाद अति, जो सुख वरणि न जाय ।
दम्पति गुप्त रहस्य कर, सुख अनुपम दरशाय ॥५२॥

करहुँ न मैं कछु यह उपदेशू ❁ विनय विचारिय रशिक नरेशू ॥
जो नृप के प्रिय सेवक आँहीं ❁ दम्पति रहस कहत कहुँ नाँहीं ॥
भाखैं तौ अपराधी होई ❁ पावैं दण्ड जान सब कोई ॥
तिमि सियवर की यहरति लीला ❁ भाखहिं जहँ तहँ जन न सुशीला॥
जागे विगत निशा पिय प्यारी ❁ प्रथम कहेउ तिमि लेहु विचारी ॥
चढ़िसु विमाननिबहुअसवारिनि ❁ विचरहिंजहँतहँसहितसुनारिनि ॥
विहरहिं अलिनि संग बशुयामा ❁ कृपासिन्धु दम्पति सियरामा ॥
कुञ्जनिकुञ्जनि बननि सुबागनि ❁ विहरत हृदय भरे अनुरागनि ॥
येक नारि व्रत प्रभु उर माँहीं ❁ रहत गुप्त बहु जानत नाँहीं ॥
तेहि लगि नारिनि बीच बिहारा ❁ करत सदा श्रीराम उदारा ॥

दोहा—कोटिनि वाम सु नामरत, सेवहिं पद वशुयाम ।
बसहिं धाम सियराम सँग, आत्म अर्पि तजि काम ॥५३॥

नारिन में विहरत वशुयामा ❁ बसि साकेत राम सुखधामा ॥
प्रभु की महिमा अगम अपारा ❁ को कहि सकै सहित व्रिस्तारा ॥

कनक भवन निज धाम विहाई ❀ जात न कहुँ एकउ पग भाई ॥
सोइ सियराम आयमहि भारहिं ❀ हरि दशशीस आदि संहारहिं ॥
सकल सत्य प्रभु करैं जो सोई ❀ न्यून कहत अति पातक होई ॥
विस्व रूप सियराम उदारा ❀ छणमहँ करत सु चरित अपारा ॥
इहां उहां परिपूरण रहहीं ❀ यहिविधिश्रुति पुराण मुनिकहहीं ॥
जेहिकर जेहिविधि भावसु होई ❀ तेहि विधि करत चरित प्रभुसोई ॥
पूरहिं सदा जनन अभिलाखैं ❀ निजप्रण तजि भक्तनि प्रण राखैं ॥
जहँ देखौ तहँ प्रभु के धामा ❀ करत सदा सब महँ विश्रामा ॥

दोहा–विश्वरूप प्रभु कुञ्ज सब, कुञ्ज रूप संसार ।
बिहरत श्री सियराम जहँ, सेवत जीव अपार ॥५४॥

देत सबहिं सुख दुख अपहरहीं ❀ भक्तनि हित नाना तन धरहीं ॥
अखिलविश्व यह प्रभु करधामा ❀ पुन्यस्थल सोइ कुञ्ज ललामा ॥
सुकृती जीव सु सखी सरूपा ❀ सेवहिं सब विधि चरण अनूपा ॥
अधिकारिनि जड़ चेतन माया ❀ प्रगटहिं छण महँ विश्व निकाया ॥
देश विदेश न भाविक लेखैं ❀ घट घट निज प्रभु व्यापित देखैं ॥
प्रभु समर्थ चाहहिं जो करहीं ❀ तिन्हिके चरित जानि नहिं परहीं ॥
अस विचारि सब सङ्क विहाई ❀ सेवहिं भाविक सिय रघुराई ॥
जानहु भाव वस्य भगवाना ❀ करहिं चरित भक्तनि हित नाना ॥
अटर साहिबी सकल प्रकारा ❀ सब विधि मन गुन श्रुति गो पारा ॥

दोहा उत्पति पालन प्रलय जग, लोका लोक अनन्त ।
करहिं पलक महँ बार बहु, प्रभु समर्थ सिय कन्त ॥५५॥

तिन्हिके चरितनि माँहिं अशंका ❀ करत मलीन जीव जड़ रङ्का ॥
निरगुन भुस जे कूटन वारे ❀ रूखे ग्यानी विपुल विचारे ॥
कहहिं ब्रह्म अद्वैत गँमारा ❀ सूझ न सियबर रूप उदारा ॥
अबुध अग्य बुधि विद्या हीना ❀ अभिमानी रत विषय मलीना ॥

मिलेउ न संत गुरु रटेउ न नामा ❀ लखेउ न आतम रूप ललामा ॥
भयेउ विराग न विमल विवेका ❀ तेहि लगि करत कुतर्क अनेका ॥
तिन्हिंकर भूलिहु करत न संगा ❀ रसिक रँगे जे सिय पिय रंगा ॥
श्रीसियराम नाम दिनराती ❀ रटहिं रटावहिं तजि जग जाती ॥
तजि सु नाम अपराध आसाधा ❀ करहिं सदा सुचि संग अवाधा ॥
आतम ज्ञान हृदय जव आवै ❀ नशै पुरुष पन तव प्रभु पावै ॥
आत्म समर्पण करि तिय भाऊ ❀ धारण करत मिलैं रघुराऊ ॥

दोहा—रटहिं नाम तिय भाव उर, धरि दृढ़ सुजन ललाम ।
चिन्तहिं चरित प्रपञ्च तजि, पावहिं ते सियराम ॥५६॥

सखी सरूप सु आतम केरा ❀ यह सिद्धांत सु दृढ़ निरबेरा ॥
जिन्हि उर सखी भावना रूरी ❀ निवसति प्रणवों तिन्हि पदधूरी ॥
यद्यपि सब मम प्रिय प्रभुप्यारे ❀ रसिक नाम जापक मतवारे ॥
सब श्री वैष्णव पूजन जोगू ❀ प्रभुहिं समर्पें जो सव भोगू ॥
सखी भाव जिन्हि के मन माँहीं ❀ तिन्हिसम प्रिय सियकहँकोउनाँहीं ॥
जेहि पर सियकी कृपा सु देखी ❀ तेहिपर द्रवत सु प्रभुहु विशेषी ॥
दम्पति कृपा पात्र शृङ्गारी ❀ सखी भावना जो दृढ़ धारी ।
तेहिलगि तिन्हिके बन्दौं चरना ❀ मन वच करम मोह मद हरना ॥
आलिनि के सुखकहँलगि गाऊँ ❀ बार बार पद कमल मनाऊँ ॥

दोहा—सियहिं भजै कोउ राम पद, कोउ जन युगल किशोर ।
मैं चाहौं सिय अलिनि की, कृपा कोर निशि भोर ॥५७॥

सिय दासिनि की दासीं जेऊ ❀ पूजनीयँ मेरी प्रिय तेऊ ॥
जो सियरामहिं लाड़ लड़ावैं ❀ मन वच क्रम दम्पति गुण गावैं ॥
तिन्हिसमानतिहुँलोकनिमांहीं ❀ भाग्यवन्त सुकृती कोउ नाहीं ॥
यहि रस जेहि कर मन नहिं पागा ❀ वृथा तासु जप योग विरागा ॥
सिया अलिनि के सुख ब्रह्मादी ❀ चाहत सकल सु आतम वादी ॥

कर्म ज्ञान जप तप व्रत त्यागी ❀ रसिक रँगे अलि भाव अदागी ॥
येहि सुख विनु सब मत चतुराई ❀ लखहिं रसिक जिमि भूत मिठाई ॥
वक सूकर कूकर खर कागा ❀ भक्षहिं मलिन पदार्थ अभागा ॥
तिमि यह सुख मन मुख मतवारे ❀ लहहिं न जीव मलीन विचारे ॥
स्वाती कर सुख चातक जानें ❀ मुक्ता चुगहिं मराल सयानें ॥
पावक खाँयँ चकोर चकोरी ❀ चितवत चन्दहिं नयन सु जोरी ॥
यह अनन्यता औरनि माँहीं ❀ है न होय होनेउँ की नाँहीं ॥

दोहा—यद्दपि पत्ती वृन्द वहु, गरुड़ादिक जग माँहिं ।
तिन्हिकी समता जोग कोउ त्रिभुवन में न लखाँहिं ॥५८॥

चातक हंस चकोर सु केरा ❀ कठिन भाव कहुँ जात न हेरा ॥
तिमि तिय भाव सहस कोउ भावा ❀ तुलत न वेद पुराणनि गावा ॥
गति अनन्यता आत्म समर्पन ❀ सखी भाव विनु करि न सकत जन ॥
असली आत्म समर्पन सोई ❀ जेहि महँ परदा रहहि न कोई ॥
पति पत्नी सम्बन्ध सु माँहीं ❀ परदा बीच रहत कछु नाँहीं ॥
तेहि कारण तिय भाव शिरोमनि ❀ भयेउ सकल भावनि में धनि धनि ॥
सब भावनि विच प्रभु मरयादा ❀ राखहि भाविक हेतु प्रसादा ॥
पत्नि भाव विच एकम एका ❀ होत जीव प्रभु तजि अविवेका ॥
विमल विचारी ये सब भेदा ❀ समुझहिं बादी मानहिं खेदा ॥
सत्य कहौं करि सपथ सु साता ❀ कहेउँ न पच्छपात की बाता ॥
शृंगारी अति प्रभु कहँ प्यारे ❀ पलकनि जिमि दोउ लोचन तारे ॥

❀ दोहा ❀

भाविक बात विचारहीं, निन्दहिं अबुध अबोध ।
बन्दौं तिन्हके चरण मैं, मन वच क्रम अविरोध ॥५९॥
कहेउ कछुक अनुसार मति, अष्टयाम की रीति ।
जिज्ञासू जन लहहिं सुख, पढ़ि सुनि समुझि सप्रीति ॥६०॥

गुण ग्राही तजि अशुण सम, गहिहहिं गुण दुइ एक।
अवगुण ग्राही गुणनि तजि, गहहिं अगुण अविवेक ॥६१॥
जग नर वायस हंस सम, तिमि करतव तिन्हि केर।
हंस गहहिं गुण अगुण तजि, वायस अवगुण हेर ॥६२॥
बुरे बुराई करि बनें, बुरे विषय रस पागि।
भले भलाई गहि भये, भले बुराई त्यागि ॥ ६३ ॥
रटहिं न जब लगि नाम सिय, राम अधिक सविवेक।
होत न तबलगि हृदय शुचि, करहु उपाय अनेक ॥६४॥

पद।

महल की टहल करिय चितलाय ॥ टेक ॥
सुर दुर्लभ मानुष तनु पायेउ, कहत संत श्रुति गाय ॥ १ ॥
आलस त्यागि सु प्रातकाल उठि, लागि गुरुनि के पाय।
तन कृत करि पुनि बैठि सु आसन, कहुँ इकंत थल जाय ॥२॥
युगल नाम लय लाय रटै मुख, मधुरे स्वर हरषाय।
मन चित करि थिर मूंदि नयन दोउ, आसा नींद विहाय ॥३॥
सावधान होइ निज सरूप लखि, पंची कृत विसराय।
नख सिख किये शृङ्गार लिये कर, सेवा सुचि निर्माय ॥४॥
सेवहिं श्रीदम्पति पद प्रमुदित, अलिगन सँग सुख दाय।
कंचन भवन सुदिव्य सिंहासन, रचना अनुप निकाय ॥५॥
बिहरहिं जहाँ सदा सिय पिय दोउ, वन उपवन बहुताय।
नित नूतन मुद मंगल सरसत, चहुँदिसि सुख रहो छाय ॥६॥
भोग राग शृङ्गार आरती, सयन केलि वर भाय।
करहिं करावहिं प्रभुहिं सहचरीं, रुख लखि रीझि रिझाय ॥७॥

समय समय जेहि कुंज जाँयँ तहँ, परिकर सन्मुख आय।
प्रेमलता नइ अर्घ पाद्य दै, हँसि सँग जात लिवाय ॥ ८ ॥

दोहा—खट शरणागत कहहुँ अब दशम प्रसंग सु बीच।
सम्भुक्त उपजै भक्ति उर, नशै भर्म भव कीच ॥६४॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक श्रीवैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरणजी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत किंचित सम्बन्ध महत्व अष्टयाम भावना वरणनो नाम नवम प्रसंगः शुभम् ॥९॥

जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

षट् शरणागत प्रसंगारंभः।१०।

श्री सतगुरवे नमः।

❀ दोहा ❀

षट शरणागत षष्ट तिमि, सम्पति भक्तनि केरि।
इन्हि बिनु भक्त अभक्त सम, कहत संत श्रुति टेरि ॥१॥
इन्हके भेद न जानहीं, ते न उपासक जीव।
कोटिनि करैं उपाय तउ, लहहिं न श्री सिय पीव ॥२॥
षट सम्पति बिनु कंगला, शरणागत बिनु लूल।
भजन भावना करत बहु, प्रभु सुभाव प्रतिकूल ॥३॥
जिमि कोउ नृप सन बहस हित, जाय सु बनि मुखतार।
ऐन पढ़े बिनु मूढ़ मति, कहहु लहहि का सार ॥४॥
तिमि सियराम समीप कोउ, जान चहहिं बनि सन्त।
बिनु जानें द्वादस सु ये, लक्षण लहहिं न अन्त ॥५॥
तेहि लगि तिन्हिके भेद कछु, कहौं स्वमति अनुसार।
विलग विलग समुझहिं सुजन, गुणग्राही सविचार ॥६॥
जिज्ञासू जन मनन करि, धरि उर बारहु भेद।
मिलिहहिं श्री सियराम सन, तरि भवनिधि प्रद खेद ॥७॥

श्रीसतगुरुमोहि जेहिविधि दीना ❀ लिखि प्रगटौं सोइ लखौ प्रवीना ॥
प्रथम कहौं शरणागत भेदा ❀ षट विधि बरणि हरण भव खेदा ॥
प्रभु अनुकूल बस्तु सन प्रीती ❀ करै त्यागि जग डर सप्रतीती ॥

जेहि विधि रीझैं श्री सियरामा ❀ करै उपासक सोइ सोइ कामा ॥
प्रभु अनुकूल नीचहू प्रानी ❀ करिय प्रीति तेहिसन हित जानी ॥
अनुकूलनि ते प्रीति सु करहीं ❀ जग चबाव ते जो नहिं डरहीं ॥
ते सु उपासक सियवर केरे ❀ मन वच कर्म राम पद चेरे ॥
जड़ चेतन दोउ योनिनि माँहीं ❀ प्रभु अनुकूल वस्तु जो आँहीं ॥
करै उपासक सब सन नेहा ❀ सोइ प्रभु सेवक निःसन्देहा ॥
लोक लाज डरप्रभु अनुरागिनि ❀ तजहिं ते जरहिं घोरभवआगिनि ॥
निंदनीयँ सब भाँति मलीना ❀ होय न तद्यपि तजहिं प्रवीना ॥

दोहा—अनुकूलनि ते वैर जो, करै उपासक होय ।
उलटो कुम्भीपाक महँ, गिरै न उबरै सोय ॥८॥

प्रान समान राम के प्यारे ❀ मानहिं ते सियराम दुलारे ॥
प्रभु अनुकूल नारि नर कोऊ ❀ वर्ण मांहिं वा बाहिर होऊ ॥
तेहि सन करै सु प्रीति उपासक ❀ जानहु सोइ साँचे प्रभु आसक ॥
जाति कर्म को जेहि उर ज्ञाना ❀ ते न उपासक कहहिं सुजाना ॥
जाति कर्म प्रभु भक्तनि माँहीं ❀ देखहिं ते सु उपासक नाँहीं ॥
जाति विचारि भक्त ते घिरिना ❀ करै परै भव उबरै फिरिना ॥
भ्रष्ट होइ तेहि कर व्रत जापा ❀ मातु संग कर लागै पापा ॥
जो भक्तनि महँ जाति विचारै ❀ ताहि पकरि यम नरकनि डारै ॥
अबहिं निदरि भक्तनि सुख पावै ❀ नर्क परै तब अति पछितावै ॥
प्रभु अनुकूलनि केर प्रसादा ❀ चरणामृत सब हरै विषादा ॥

दोहा—जाति कर्म तजि भक्तको, देखै उर अनुराग ।
प्रभु प्रसन्नता हेत तेहि सेवै लखि धनि भाग ॥ ९ ॥

लखहु मतङ्ग महातम भारी ❀ कहँसबरी अति जड़मति नारी ॥
प्रभु अनुकूल जानि अपनाई ❀ सहि बहु निन्दा तजि द्विजताई ॥
सब ऋषिकीन्ह जाति ते बाहिर ❀ जानत जगत बात यह जाहिर ॥

अमित उपाधि भई तेहि लागी ❀ तदपि न मुनि सवरी कहँ त्यागी ॥
बहु अपवाद जाति अपमाना ❀ सहेउ न सवरिहि तजेउ सुजाना ॥
जब लगि जिये मतंग विचारे ❀ तब लगि रहे जाति ते न्यारे ॥
अन्त त्यागि तनु गे पर धामा ❀ जपत नाम सियराम ललामा ॥
सवरी के गृह राम पधारे ❀ खायेउ फल भे द्विज मुखकारे ॥
भक्त निरादर कर फल पायेउ ❀ सवरी शरण सकल चलिआयेउ ॥
तब पंपासर नीर सुधारा ❀ भक्ति महातम प्रभु विस्तारा ॥

दोहा–कहँ बशिष्ठ मुनि ब्रह्म सुत, कहँ निषाद अति नीच ।
प्रभु अनुकूल विचारि तेहि, लीन लाय उर बीच ॥१०॥

तिमि श्री भरत राम के भाई ❀ मिलै गुहहिं सो कवन सगाई ॥
प्रभु अनुकूलनि ते न गलानी ❀ करहिं कबहुँ जे आतम ज्ञानी ॥
हिरणाकुश प्रहलादहि तायो ❀ खम्भ फारि नर हरि प्रगटायो ॥
पकरि असुर धरि गोद बिदार्‍यो ❀ उदर भक्त रिपु लखि संहार्‍यो ॥
रावण कीन्ह भक्त अपमाना ❀ कुल समेत मार्‍यो भगवाना ॥
सुक्राचार्य भक्त की बानी ❀ निदरी भा यक लोचन हानी ॥
भयेउ दुर्दशा दुर्वासा की ❀ कहुँ न सहाय करी कोउ ताकी ॥
अम्बरीष के शरणहिं आवा ❀ चक्र सुदर्शन ते सु बचावा ॥
परसुराम जनकहिं धमकायेउ ❀ भरी समाज तासु मद नायेउ ॥
भस्मासुर संकरहिं दुखावा ❀ मोहिनि बपु धरि ताहि नसावा ॥

दोहा–प्रभु भक्तनि कर कीन्ह जो, मूढ़ निदरि अपमान ।
तिन्हि कहँ निजकर दण्ड अति, दीन्ह स्वयं भगवान ॥११॥

प्रभु भक्तनि की महिमा भारी ❀ जानै कहा जीव संसारी ॥
तुच्छ पदारथ पाय भुलानें ❀ जाति बुद्धि भक्तनि महँ आनें ॥
प्रभु अपनायेउ तेहि महँ दोषा ❀ मूढ़ निरूपहिं करि उर रोषा ॥
जाके उर प्रभु करहिं निवासा ❀ निदरहिं ताहि बने जग दासा ॥

जो जन प्रभु मय सब जग देखैं ❀ तेहि महँ दुर्जन अवगुन लेखैं ॥
कृपापात्र जे आतम ज्ञानी ❀ तिन्हे दुखावत सठ हठ ठानी ॥
प्रभु अनुकूल वस्तु जेहि प्यारी ❀ सोइ प्रभु सेवक विमल विचारी
लोक लाज जिन्हि के उर लागी ❀ ते न उपासक भक्त विरागी ॥
हाड़ चाम पर केवलि ध्याना ❀ आतम तत्व न लखहिं अयाना ॥
तेहि लगि अधम अबुध अग्यानी ❀ निदरहिं प्रभु भक्तनि अभिमानी॥

दोहा–खर सूकर स्वानादि जे, स्वपच डोम चण्डाल ।
पूजहिं प्रभु अनुकूल लखि, ते पावहिं सियलाल ॥१२॥

प्रभु अनुकूलनि ते जो प्रीती ❀ करत होय तिन्हि की जग जीति॥
यह अनुकूल ग्रहण शरणागति ❀ प्रथम कही मैं कछुक यथामति ॥
अब दूसर प्रतिकूल पदारथ ❀ प्रभुते त्यागहु जानि अकारथ ॥
प्रभु प्रतिकूल वस्तु जो होई ❀अतिसय प्रिय तउ त्यागिय सोई ॥
प्रभु प्रतिकूल पदारथ जेते ❀ त्यागहिं राम उपासक तेते ॥
भोजन बसन आचरण कर्मा ❀ पूजा पाठ तीर्थ व्रत धर्मा ॥
देव पितर मुनि सिद्ध सयानें ❀ जे सियराम नाम विमुखानें ॥
जोगी जपी तपी सन्यासी ❀ मतवादी सब देव उपासी ॥
पति पतनी सुत हित पितु माता ❀ पुर परिजन धन ग्रह गुरु भ्राता ॥
जहँ लगि विधि की रचना भाई ❀ दृष्टि अदृष्टि वस्तु समुदाई ॥

दोहा–जड़ चैतन्य पदार्थ सब, प्रभु प्रतिकूल विचारि ।
तजहिं उपासक यतन बिनु, जीति होय वा हारि ।१३।

प्रियते प्रीय होय किन कोऊ ❀ राम विमुख लखित्यागहिंसोऊ ॥
प्रभु प्रतिकूलनि ते नहिं नाता ❀ राखत भक्त निजातम ज्ञाता ।
मन वच कर्म इष्ट पद प्रीती ❀ लगी पगी मति तजि जगरीती ॥
लोक रीति प्रभु भक्ति मझारी ❀ अति विरोध जिमि इन्दु तमारी ॥
लोक रीति परतीति राम की ❀ हरै सुमति जिमि प्रीति वामकी ॥

तेहिसन करि शनेह प्रभु पासा ❀ जान चहहिं ते अबुध अदासा ॥
प्रभु प्रतिकूलनि कर करि त्यागा ❀ रँगै मनहिं पुनि प्रभु अनुरागा ॥
तब रीझैं सियवर धनुधारी ❀ नाशैं जन्म मरण भय भारी ॥
प्रतिकूलनि कर जब लगि साथा ❀ तवलगि द्रवत न सिय रघुनाथा ॥
पूजा पाठ भजन सुखदाई ❀ फुरत न विमुखनि के सँग भाई ॥

दोहा—लोभ मोह कामादि वश, प्रतिकूलनि ते प्रेम ।
करहिं जो राम उपासक, ते न लहहिं कहुँ छेम ॥१४॥

अमल अफीम आदि मद मासा ❀ करहिं न ग्रहण कबहुँ प्रभुदासा ॥
खात पियत जो मलिन तमाला ❀ द्रवत न तिन्हि पर राम कृपाला ॥
अमल हृदय कहँ करत अचेता ❀ करहिं न सुजन ग्रहण तेहि हेता ॥
लहसुन प्याज तमाल मसूरी ❀ इन्हते प्रभुजन निवसहिं दूरी ॥
लगत न जो सियरामहिं भोगू ❀ पावहिं ताहि न वैष्णव लोगू ॥
प्रभु प्रतिकूल सुधा कि न होई ❀ करहिं न ग्रहण सु वैष्णव सोई ॥
प्राण कंठ लगि आवै जबहूं ❀ खात न वस्तु अभक्षहि तबहूं ॥
प्रभु प्रतिकूल पदार्थनि माँहीं ❀ करहिं प्रीति ते हरिजन नाँहीं ॥
प्रभु प्रतिकूल पदार्थनि भाई ❀ ग्रहण करत सब सुकृत नशाई ॥
बूझि सुद्ध सन्तनि ते भेदा ❀ पढ़ि सुनि शास्त्र पुराण सु बेदा ॥
तजि प्रतिकूलनि प्रभुअनुकूलहिं ❀ करै ग्रहण परिहरि भ्रमभूलहिं ॥

दोहा—खोजि खोजि सब त्यागहीं, प्रभु प्रतिकूल पदार्थ ।
प्रभु प्रसन्नता हेतु जन, तजि स्वारथ परमार्थ ॥१५॥

प्रिय ते प्रिय ग्रह देह सनेही ❀ पूजनीयँ वरु होंयँ सुतेही ॥
जिन्हि के त्याग किये परलोका ❀ नशै होइ जग में अति शोका ॥
ऐसेउ प्रिय जो प्रभु प्रतिकूला ❀ होंइँ तजैं तिन्हि भक्त समूला ॥
पाप पुन्य निन्दा अपवादा ❀ होइ न तेहि कर हर्ष बिषादा ॥
कोटिनि क्लेश सहहिं जग माँहीं ❀ तदपि भक्त दुख मानत नाँहीं ॥

प्रभु विमुखनि सँग जो दुखहोई ❀ तेहि सम अपर कलेश न कोई ॥
अस विचारि जो भक्त सयाने ❀ तजिविमुखनि प्रभुभजन लुभाने ॥
प्रतिकूलहु बहु भजन अचेता ❀ करहिं दम्भ छल लोभ समेता ॥
षट शरणागत भेद न जानैं ❀ तिन्हि के सब करतब भ्रमसानैं ॥
भजन करत विमुखनि कर संगा ❀ करत चढ़त नहिं भजन सुरंगा ॥

दोहा–वैष्णव वेष सु साजि अँग, उदर भरहिं बहु लोग ।
भजन भाव दरशाय जग, विमुख करहिं सुखभोग ॥१६॥

प्रभुपद प्रीति न स्वारथ साने ❀ इष्ट स्वभाव न विदित अयाने ॥
खाँयँ हुहाँयँ कथहिं परदोषू ❀ करहिं दीन दुखियन पर रोषू ॥
ग्यानःविवेक न शील विचारू ❀ तन मन में झलकत मद मारू ॥
जग जीवन की आश तिराशा ❀ राखत उर नहिं प्रभु विश्वासा ॥
रचहिं प्रपञ्च विपुल वशुयामा ❀ जेहि तेहि भांति बटोरहिं दामा ॥
निज स्वारथ रत परतिय गामी ❀ कपटी कुटिल कलह प्रियवामी ॥
तन पर वेष सु प्रभु प्रिय धारेउ ❀ हृदय लोभ बस जगहित हारेउ ॥
तन वैष्णव मति प्रभु प्रतिकूली ❀ तिन्हिकर संग करिय जनिभूली ॥
दुमुख उरग सम तिन्हिकहँ जानी ❀ त्यागहिं शुचि वैष्णव विज्ञानी ॥
कपटी प्रभु प्रतिकूल अपारा ❀ रचहिं सु वेष ठगन संसारा ॥
बने उपासक पंडित संता ❀ ग्यानी प्रभु प्रतिकूल अनन्ता ॥

दोहा–भलीभाँति आचरन लखि, करिय जानि पहिचानि ।
प्रभु प्रतिकूलनि ते वचहु, जेहि न होय हित हानि ॥१७॥

भजन भावना भक्ति विरागा ❀ नाशहिं प्रभु प्रतिकूल अभागा ॥
कृपापात्र कोटिनि महँ कोई ❀ खोजे पर मिलिहैं यक दोई ॥
राम भक्त रत पर परमारथ ❀ बिरले विपुल रँगे निज स्वारथ ॥
साँचे भक्त मोह निशि जागहिं ❀ प्रभु प्रतिकूल पदार्थनि त्यागहिं ॥
लोक वेद निन्दें नहिं डरहीं ❀ प्रभु प्रतिकूल न कारज करहीं ॥

प्रभु प्रतिकूलनि ते नहिं नाता ❀ जोरहिं राम भक्त विख्याता ॥
प्रभु प्रति कूलनि ते नहिं मेला ❀ राखहिं हरि जन रहहिं अकेला ॥
प्रभु प्रतिकूलनि एका एकी ❀ त्यागहिं सोइ बर भक्त विवेकी ॥
प्रभु प्रतिकूलनि तजि अनुकूले ❀ भयेउ भक्त सहि नाना शूले ॥
प्रतिकूलनि मल मूत्र समाना ❀ त्यागि सु भक्त भजहिं भगवाना॥

दोहा—तजेउ पिता प्रह्लाद ध्रुव, भक्त विभीषण भाय ।
गोपिनि पति बलि भूप गुरु, त्यागेउ भरत सु माय ।१८।

रहेउ पूज्य पै प्रभु प्रतिकूला ❀ हेरि तजेउ जिमि खग सरि पूला ॥
अपरउ विपुल भक्त मीरादी ❀ त्यागेउ प्रभु प्रतिकूल विवादी ॥
प्रभु प्रसाद तिन्हि कहँ तिहुँलोका ❀ भयेउ सु मंगल मय गत शोका॥
तिन्हिकी रीति गहहिं जो कोई ❀ साँचे राम भक्त जग सोई ॥
राम भक्ति कछु खेल न होई ❀ अति सय अगम जान सब कोई॥
बिनु अनुकुल भये सब भाँती ❀ सकहु न बैठि सु भक्तनि पाँती ॥
इति प्रतिकूल त्याग शरणा गति ❀ धारण करत होय प्रभु पद रति ॥
बिनु त्यागे प्रतिकूल पदारथ ❀ द्रवत न श्रीसियराम यथारथ ॥
तेहि लगि यह दूसर शरणागति ❀ कहेउँ कछुक मैं गाय यथामति ॥
सुनिगुनि भजहिं प्रभुहिंजनग्यानी ❀ प्रति कूलनि तजि मन क्रम बानी॥
सरवसु होय हाँनि तउ भाई ❀ प्रभु प्रतिकूलनि तजेइँ भलाई ॥

दोहा—कारपन्यता तीसरी, कहौं सुनहु धरि ध्यान ।
जेहि बिनु द्रवत न कबहुँ प्रभु, श्रीसियवरभगवान ॥१९॥

अपने अवगुण निशिदिन केरे ❀ लिखत जाय लघु मध्य बड़ेरे ॥
मन क्रम बचन होत जो पापा ❀ जिन्हि करिभयेउ मलीन सुआपा॥
जो तुम्ह निशि दिन पाप कमावहु ❀ भलीभाँति करि यतन दुरावहु॥
सब जानत प्रभु अन्तर यामी ❀ घट घट व्यापि रहेउ सुर स्वामी ॥
तिन्हिते करहिं दुराव अयाने ❀ कपटी कुटिल विषय रस साने ॥

जे प्रभु प्रिय वैष्णव विज्ञानी ❀ षट शरणागत ग्याता प्रानी ॥
ते निज दोष विचारि विचारी ❀ रोवहिं बहु विधि आँसू ढारी ॥
प्रभु सन्मुख वा बैठि इकन्ता ❀ निज अघ प्रभु गुण गावहि सन्ता ॥
आपुहिं अवगुन मूरति मानहिं ❀ मन वच कर्म भजहिं भगवानहिं ॥
गर्भहिं ते प्रभु गुन निज दोषा ❀ समुझि भक्त पावहिं संतोषा ॥

दोहा–रज वीरज को पिण्ड करि, पुतरी दीन्ह बनाय ।
अनुपम मानुष देह यह, पुनि बहु कीन्ह सहाय ॥२०॥

गर्भ माँहिं जेहि विधि रखवारी ❀ कीन्ह कृपानिधि राम खरारी ॥
सो सुख लाखउ जाइ न गाई ❀ मैं केहि भाँति बखानौं भाई ॥
धन बल विद्या गुण चतुराई ❀ अशन वसन भूषण प्रभुताई ॥
जहँ न सहायक कोउ हितकारी ❀ मातु पिता भ्राता सुत नारी ॥
ऊपर चरण रहेउ तर माथा ❀ तहाँ सहाय कीन्ह रघुनाथा ॥
पानी पवन प्रकाश न जहँवाँ ❀ दस महिना राखेउ तोहि तहँवाँ ॥
हलन चलन सुख नींद तमासा ❀ रहेउ न तहँ कछु भोग विलासा ॥
भूलत रहेउ वँध्यो नश जारा ❀ पायेउ दुख अति गर्भ मझारा ॥
ग्यानी अबसो बिसरि कलेसा ❀ बने जीवते ब्रह्म परेसा ॥
तुच्छ जीव कहँ ब्रह्म समाना ❀ भाषत मूढ़ सनें मद माना ॥

दोहा–नयन नाशिका श्रवण मुख, जीह हाथ पग शीश ।
पराधीन सब रहेउ जहँ, तहँ न बनेउ जगदीश ॥२१॥

उदर माँहिं दुख सहेउ अनेका ❀ तब न रहेउ यह ब्रह्म विवेका ॥
दश महिना प्रभु रक्षा कीन्हीं ❀ गर्भ माँहिं सुन्दर मति दीन्हीं ॥
तब तहँ प्रभु सन कीन्ह करारा ❀ सपथ सहित करि विनय अपारा ॥
दीन बंधु प्रणतारति हारी ❀ त्राहि त्राहि प्रभु शरण तुम्हारी ॥
करहु दीन दुखिया पर दाया ❀ गर्भ कलेस हरहु रघुराया ॥
हरहु गर्भ दुख रटिहौं नामा ❀ निशिदिन प्रभु तब तजि सब कामा ॥

तब प्रभु बन्धन खोलि निवारेउ ❀ घोर गर्भ के दुख ते तारेउ ॥
बाहिर निकसत संग अहारा ❀ जननी उरजनि माँहिं निकारा ॥
दाँत दीन्ह पुनि भोजन नाना ❀ अंगनि माँहिं शक्ति भगवाना ॥
पुनि माथिक बहु भोग विहारा ❀ विद्या ज्ञान दीन्ह परिवारा ॥
तिन्हि महँ अरुझि भई मतिमन्दा ❀ विसरेउ राम नाम सुखकन्दा ॥
जग सुख लखि मतिमंद अभागी ❀ प्रभु तजि भयेउ विषय अनुरागी ॥

दोहा—नाशेउ सहज स्वभाव निज, बिसर्‌यो गर्भ करार ।
भोगन लग्यो कुभोग बहु, बनितादिक संसार ॥२२॥

गोबर के गुबरीला नाँई ❀ भयेउ ग्यान विसरेउ सियसाँई ॥
जो प्रभु दीन्ह अनूपम काया ❀ फँसि मद मोह ताहि विसराया ॥
अबहूं करि गलानि मन माँही ❀ यहि विधि विनय करै प्रभु पाँहीं ॥
हे प्रभु दीन बन्धु सुखकारी ❀ भूलि परेउ अब तुमहिं विसारी ॥
जोरि लियेउ जग बहु विधि नाता ❀ झूठे सब सुत हित पितु माता ॥
घोर गर्भ के तुम हितकारी ❀ तहँ न रहेउ सुत पितु महतारी ॥
अब मैं इन्हि सन नाते जोरे ❀ दुखदायक जो सबविधि मोरे ॥
स्वारथ के सब सगे सनेही ❀ तिन्हि के कर वेची यह देही ॥
अबप्रभु पाहिशरण तकि आयेउ ❀ ठगनि संग मिलि बहु दुख पायेउ ॥
आयू धन जग नातेदारा ❀ हरेउ नाथ अब करहु सम्हारा ॥

दोहा—लोभी लम्पट लालची, लोलुप लोल लवार ।
भयेउ नाथ अति नीच मैं, परि हरि चरण तुम्हार ॥२३॥

काम क्रोध मद मोह विकारा ❀ नासेउ प्रभु मम ज्ञान विचारा ॥
जो कछु करौं सुकृत शुभ कर्मा ❀ भजन पाठ तीरथ व्रत धर्मा ॥
दम्भ कपट छल बरबस हरहीं ❀ पाप प्रपंच संचि उर भरहीं ॥
सोवत जागत पाप कमायेउ ❀ गुणावाद प्रभु के नहिं गायेउ ॥
कबहुँ न बैठि सुसन्तनि साथा ❀ रटेउँ नाम तव सुनेउँ न गाथा ॥

विषयनि के सँग जन्म गमायेउ ❀ गर्भ करार न नाथ पुरारेउ ॥
मो समान जग को अघरासी ❀ अस प्रभु विसरि परेउ चौरासी ॥
दीन दया करि जो नर देही ❀ मैं मतिमन्द विसारेउ तेही ॥
रोंम रोंम कोटिनि अपराधा ❀ किये छमहु प्रभु कृपा अगाधा ॥
युवतीं भोगत जन्म सिरानों ❀ तजि तव भजन विषय लपटानों ॥
बुझै न नाथ विषय की आगी ❀ तृप्त न मानत हृदय अभागी ॥

दोहा–विमुखनि संग सुप्रीति करि, विमुखी भयेउ वजाय ।
तुमहिं रिझावन हेत प्रभु, नहिं कछु कीन्ह उपाय २४

जन्म सिरानेउ पूरत जाला ❀ मकरी इव प्रभु दीन दयाला ॥
अव प्रभु करहु वहुरि वह छोहू ❀ जेहिते नशै कठिन भव मोहू ॥
तुम्ह लायक प्रभु मैं नालायक ❀ अरुझेउ पाइ पदारथ मायक ॥
गर्भवास की कृपा सँभारहु ❀ छमि अपराध वहुरि निरवारहु ॥
श्री वैष्णव सतगुरु सु मिलाई ❀ संसकार निज देउ कराई ॥
जिन्हि बिनु जीव न प्रभुपद पावत ❀ वेद पुराण सन्त सब गावत ॥
गुरु मुख होइ नाम सियरामा ❀ रटौं करहु सोइ कृपा ललामा ॥
त्राहि त्राहि कहि वारम्बारा ❀ परै चरण करि पाहि पुकारा ॥
हे प्रभु दीनबन्धु रघुराई ❀ पाहि पाहि प्रभु करहु सहाई ॥
नहिं कोउ जगत मोर हितकारी ❀ तुम्ह समान जन आरत हारी ॥

दोहा–अधम अलायक पतित मैं, प्रभु पुनीत मम नाथ ।
करहु कृपा सँभार अव, तारहु भव गहि हाथ ॥२५॥

भयेउ अनाथ पील कों नांई ❀ करहु सम्हार वेगि सियसांई ॥
स्वारथ साने जगत सनेही ❀ लखत न पीर हृदय की तेही ॥
त्रिभुवन तीनि काल हितकारी ❀ तुम सम मम नहिं कोउ धनुधारी ॥
अब निज नाम अखंड अकामा ❀ रटवावहु प्रभु श्री सियरामा ॥
यहि प्रकार होइ दीन दुखारी ❀ कोमल करि उर दम्भ बिसारी ॥

प्रभु उपकार सु निज अपकारा ❀ प्रभुहिं सुनावै करि सु विचारा ॥
कारपण्यता यही कहावति ❀ परम सुखद तीसरि शरणागति ॥
गोपत्रत्व अव चौथी भाई ❀ कहौं कछुक तेहि लक्षण गाई ॥
राम रम्योसव जगत मझारा ❀ जड़ चेतन विच करत विहारा ॥
रोंम रोंम में प्रभु झलकाँहीं ❀ लखहिं विमल मति विषयी नाँहीं ॥

दोहा–घटनि वीच प्रतिविम्व रवि, लाली मेंहदी पात ।
व्यापेउ जिमि प्रभु जगत में, सतुगुरु विनु न लखात ॥२६॥

आँकनि अर्थ अर्थ में सारा ❀ सार वस्तु महँ ब्रह्म विचारा ॥
सुखमें दुख दुख में सुख जैसे ❀ व्यापेउ राम जगत विच तैसें ॥
पय विच घृत भोजन में स्वादा ❀ न्याई नृपनि मांहि मरयादा ॥
फल में रस फूलनि महँ बासा ❀ मणिन मोल मंगन विच आसा ॥
सन्तन में जिमि भजन सुजापा ❀ अगजगमाँहिसुप्रभुतिमिव्यापा ॥
रामनाम विच सकल सुधर्मा ❀ व्यापेउ कर्मिनि महँ जिमि कर्मा ॥
भूमि वीज मय राजति जैसे ❀ व्यापेउ राम जगत विच तैसे ॥
अवगुण सब जिमि अमलनि माँहीं ❀ बसत झूठ महँ पाप सदाँहीं ॥
अनुभव महँ जिमि निर्मल आसै ❀ तिमि सब जगत राम मय भासै ॥
साधन विच जिमि शिद्ध निकाया ❀ भोगनि रोग नारि विच माया ॥
विद्या विच जिमि भरेउ विवादा ❀ राम भजन विच जिमि अह्लादा ॥

दोहा–नवनि यथा सज्जननि विच, उड़गण बसहिं अकाश ।
दामिनि जिमि जलधरनमहँ, धन बिचभोग विलाश ॥२७॥

गुन महँ अगुन अगुनगुन बीचा ❀ मिलेउ यथा नहिं जानहिं नीचा ॥
हिंसा विच जिमि निवसहिं पापा ❀ पापनि रोग सोग प्रद तापा ॥
तिमि प्रभु महँ सब सब विच रामू ❀ रमण करहिं अनुछन वशुयामू ॥
भुवन चतुर्दश दश दिशि माँहीं ❀ प्रभु विनुतिल महि खाली नाँहीं ॥
जिमि आतम येहितन महँ व्यापी ❀ तिमि जगबिचप्रभुपरम प्रतापी ॥

अस विचारि जे जन जिज्ञासू ❁ निर्भय रहत मानि विश्वासू ॥
प्रभु मय बिश्व जानि मन माँहीं ❁ काहुइ कबहुँ दुखावत नाँहीं ॥
जड़ चेतन सँग भाव समेता ❁ करत प्रीति जिन्हिके उर चेता ।
बिचरहिं महि प्रमुदित डर नाँहीं ❁ निजप्रभुमयजगलखि मनमाँहीं ॥
गोपत्रत्व शरणागत भासी ❁ उर महँ द्वैत भावना नासी ॥
जहाँ जाय तहँ प्रभु सुख रासी ❁ व्यापेउ जिन्हि की माया दासी॥

दोहा—दशहूं दिशि मंगल सु तेहि, जेहिके प्रभु सब ठाम ।
व्यापेउ सर्वानन्द प्रद, जिन्हिकर नाम ललाम॥२८॥

जहँ देखहु तहँ जनके तीरा ❁ निवसहिं सदा सिया रघुवीरा ॥
भक्त हृदय अस करि विस्वासा ❁विचरहिं अवनि मुदिततजित्रासा॥
गोपत्रत्व शरणागति एहा ❁ जानि तजहु जन सब सन्देहा ॥
तेहिके लक्षण कहेउँ बखानी ❁ कछुक यथा मति समुझहिंज्ञानी॥
प्रभु रक्षक मम दृढ़ विश्वासी ❁ यह पंचम शरणागति खासी ॥
तेहि कर कहौं कछुक गुण गाई ❁ पढ़ि सुनि आश तजहु पर भाई ॥
रक्षक जानि प्रभुहि नर आसा ❁ करत न पावहिं ते पद खासा ॥
प्रथम करहु निज हृदय विचारा ❁ गर्भ माँहिं को करी सम्हारा ॥
जहँ न रही कछु भोजन सामा ❁ बल न वसन भूषण ग्रह दामा ॥
वदनउँ रहेउ वन्द जहँ भाई ❁ तहँ तोहि पालेउ सिय रघुराई ॥
नाभी ते एक नल पैठारा ❁ आप गये भीतर तेहि द्वारा ॥

दोहा—तोर आँत ते जोरि वह, नल पुनि बाहिर आय ।
मातु आँत ते जोरेऊ, प्रभु कृपाल सुखदाय ॥ २९ ॥

तेहि नल ढिग चौकी बैठाई ❁ रस अनरस देखन हित भाई ॥
जो कछु खाइ मातु तेहि सारा ❁ पसरत जननी अङ्ग मझारा ॥
तोर उदर महँ सोइ रस सारा ❁ पहुँचावत प्रभु तेहि नल द्वारा ॥
बाहिर करत उदर ते जबहीं ❁ प्रगटत पय अस्तन में तबहीं ॥

भीतर राखेउ रस आधारा ❀ बाहिर दीन्ह सु दूध अहारा ॥
जब वय भोजन लायक भयेऊ ❀ तब कृपाल मुख दाँत सु दयऊ ॥
भरेउ पेट महँ पेट तुम्हारा ❀ बाहिर साथहि दूध निकारा ॥
दाँत दये तौ अन्नहु दीन्हा ❀ प्रभु उपकार सु बहु विधि कीन्हा॥
सोइ प्रभु अबहूं पालन करहीं ❀ पेट रच्यो सु अवश्यहिं भरहीं ॥
तू करि सोच मरै केहि लागी ❀ राम नाम रटु जीव अभागी ॥

दोहा—जिन्हि विरची नरदेह यह, सुर दुर्लभ करि नेह ।
सो भोजनहूँ देइँगे, बृथा करहु सन्देह ॥३०॥

ब्रह्मा उतपति शम्भु सँहारा ❀ करहिं सदा विधिवत संसारा ॥
विश्वम्भर प्रभु पालन करता ❀ आप बनें निज सब जग भरता ॥
जल थल नभ विच जीव घनेरे ❀ निवसत सूक्षम मध्य बड़ेरे ॥
सब कहँ भोजन जेहि जस जोगू ❀ देत सदा प्रभु जानत लोगू ॥
पालन करन केर शिर भारा ❀ आप उठाय लीन करतारा ॥
करता बनि तू जनि दुख पावै ❀ श्री सियराम नाम किन गावै ॥
जिमि नृप नीतिवान के दासा ❀ राखहिं जो केवल नृप आशा ॥
ऊँच नीच मध्यम नर नारी ❀ पशु पक्षी ज्ञानी अविचारी ॥
समीचीन कोउ देस निवासी ❀ अपराधी सठ वा गुन रासी ॥
मातु पिता जुवती सुत भाई ❀ दासीं दास सुहृद समुदाई ॥

दोहा—यथा जोग पालत सबहीं, यह प्राकृत महिपाल ।
अखिल लोक लोकपनि तिमि, पालत श्री सियलाल॥३१॥

यह प्रभाव जबलगि नहिं जाना ❀ तबलगि भक्त न प्रभु पहिचाना ॥
भोजन हित जो चिन्ता करहीं ❀ प्रभु विश्वास न दृढ़ उर धरहीं ॥
ते पामर खर स्वान समाना ❀ देखत के नर नारि सुजाना ॥
अशन बसन हित व्याकुल डोलत ❀ धनिकन ते दासनि इव बोलत ॥
प्रभु विश्वास न रञ्चक जिन्हिकों ❀ भगवतभक्त न कहिये तिन्हिकों ॥

भगवत भक्त जगत की आशा ❀ करहिं त्यागि निज प्रभु विश्वासा ॥
तौ न लहहिं गति सुमति सुठामा ❀ द्रवहिं न तिन्हिपर कवहूं रामा ॥
प्रभु मम रक्षक देश विदेशा ❀ व्यापि रहे जिमि पवन दिनेशा ॥
अशन बसन सोइ प्रभु सब ठामा ❀ देहहिं अवसि अहेत अकामा ॥
रटहिं नाम प्रभु को अस जानी ❀ रामभक्त सोइ आतम ग्यानी ॥

दोहा–विमुखनि हूं कहं देत प्रभु, अशन वसन निरहेत।
भक्तनि केहि विधि राखिहैं, भूखे कृपा निकेत ॥३२॥

अस विश्वास सु जिन्हि उर मांहीं ❀ सोइ सांचे प्रभु भक्त कहांहीं ॥
जो सियराम नाम वशुयामा ❀ रटिहँहिं बैठि इकन्त ललामा ॥
लय लगाय तजि जग की आसा ❀ धारि हिये निज प्रभु विश्वासा ॥
तेहिं ढिग ऋधि शिधि संपति सारी ❀ प्रभु प्रेरित आवहिं सुखकारी ॥
प्रथम देत प्रभु जनन खवाई ❀ पाछे पावत सिय रघुराई ॥
जनहित रचे पदारथ नाना ❀ जनहिं भजनहित कृपा निधाना ॥
परि हरि भजनहिं भोजन सोचू ❀ करहिं ते अधम मंद मति पोचू ॥
डोलहिं घर घर भजन विसारी ❀ असन बसन हित दीन दुखारी ॥
प्रभु जन होइ धनिकन कहँ याँचत ❀ द्वार द्वार मंगन बनि नाँचत ॥
प्रभु भक्तनि कर धारेउ वाना ❀ सील विचार न आतम ग्याना ॥

दोहा–भजन विराग विवेक, सम, दम न तोष विश्वास।
धनहित नाँचहिं नाँच बहु, सियबर के बनि दास ॥३३॥

भजन करहिं जो करि विश्वासा ❀ बैठि निचन्त त्यागि जग आसा ॥
तौ सुख संपति ऋधि सिधि भाई ❀ ऐहैं तव ढिग विनहिं बुलाई ॥
श्री प्रभु पूरहिं सब मन कामा ❀ जन रक्षक सियवर सुख धामा ॥
जिन्हि ते तू याचत ग्रह जाई ❀ ते परिहैं तब चरणनि आई ॥
अस विचारि तजि याचक ताई ❀ रटहु नाम प्रभु करहिं सहाई ॥
रक्षक सियबर सब विधि मोरे ❀ अस विश्वास तजहु जनि भोरे ॥

भोजन छाजन की तजि चिन्ता ❀ रटहु नाम सियराम सु मिन्ता ॥
सकल काम पूरक प्रभु नामू ❀ हेतु रहित हित जन अभिरामू ॥
सब विधि सकल ठाम जनरक्षक ❀ काल कर्म सुभाव गुण भक्षक ॥
सुमिरहु तेहि तजि जगकी आशा ❀ हरिहैं सब दुख दुसह दुरासा ॥

दोहा—रक्षा में विश्वास दृढ़, धारि रटै सियराम ।
पंचम शरणागति सु यह, समुझहिं संत अकाम ॥३४॥

पढ़ि सुनि धारन करि सुचि संता ❀ निर्भय होइ भजहिं भगवन्ता ॥
षष्टम आत्म निवेदन प्यारी ❀ शरणागति सवविधि सुखकारी ॥
तेहिकर लक्षण मति अनुसारा ❀ कहहुँ सुनहिं सुचि सन्त उदारा ॥
उभय प्रकार सु आत्म निवेदन ❀ समुझे बिना नशत उर खेद न ॥
प्रथम सुनों मरकट शिशुनाँई ❀ आत्म अर्पि जन पकरहिं साँई ॥
यह उपाय सह आतम दाना ❀ देत सु प्रभुकर जन सज्ञाना ॥
जिमि मर्कट शिशु मातु सुअङ्गा ❀ निज कर पकरें रहत अभंगा ॥
यदपि अबोध तदपि अति स्याना ❀ जननी अङ्ग सटत सह ज्ञाना ॥
लाँघति कबहुँ धरति तब देही ❀ शिशु की जननी परम सनेही ॥
यदपि रहत पकरें सुत देही ❀ तदपि सम्हारति जननी तेही ॥

दोहा—खेलत शिशुकहुँ त्यागि तेहि, जननी लखि हरषाय ।
करति ताड़ना कबहुँ धरि, पुनि उर लेति लगाय ॥३५॥

समय समय अनुराग कोप करि ❀ तोषतिसुतहिं सप्रीति हृदय धरि ॥
तिमि प्रभु भक्त भरोसे वारे ❀ आत्म निवेदक रामहिं प्यारे ॥
सहित विवेक एक सिय रामहिं ❀ धरें रहत निजकर वशुयामहिं ॥
जब प्रभु करहिं आचरज लीला ❀ तब तिन्हिके कर होत सुढीला ॥
गिरत जानि प्रभु लेत सँभारी ❀ करि कछु दण्ड दया उर धारी ॥
गरुड़ भुसुंडि सती शिव वामा ❀ ये सब ज्ञानी भक्त अकामा ॥
प्रभु ऐश्वर्य रूप कर ग्याना ❀ रहेउ सगुन यश सुनेउ न काना ॥

जब माधुर्य्य चरित्र विलोका ❀ उपजेउ उर संशय प्रद शोका ॥
प्रभु करुणानिधि दया निकेतू ❀ करि कछु दण्ड करायेउ चेतू ॥
आत्म समर्पी सहित उपाऊ ❀ रहेउ सकल ये जन रघुराऊ ॥
निज करतव्य केर अभिमाना ❀ रहेउ कछुक सह आतम ग्याना ॥

दोहा–प्रभु रक्षक शिर जानि तउ, करत रहेउ शुभ कर्म ।
तेहि लगि रामचरित्र लखि उपजि परेउ उर भर्म ॥३६॥

रक्षक सदा प्रभुहिं निज जानत ❀ तवहूं कर्म शुभा शुभ मानत ॥
प्रभु भरोस पुरुषार्थ समेता ❀ करहिं वजहिं ते भक्त सचेता ॥
प्रभु भरोस जब दृढ़ उर होवै ❀ कर्म शुभा शुभ केहि लगि ढोवै ।
पुरुषारथी कहावहिं ज्ञानी ❀ प्रभु के भक्त कृपा अभिमानी ॥
प्रभु ऐश्वर्य्य चरित के ज्ञाता ❀ रस माधूर्य्य न तिन्हैं दिखाता ॥
तेहि लगि तिन्हिपर प्रभु करप्रेमा ❀ रहत यथा योगहि प्रद क्षेमा ॥
मर्कट शिशु इव ते निज ज्ञानहिं ❀ धरें रहत उर ते भगवानहिं ॥
तिन्हि कर इतनी सार सम्हारा ❀ करतन प्रभुलखि सहितविचारा ॥
गिरन चहहिं जब भक्त सुग्यानी ❀ रक्षहिं तव तिन्हि प्रभु धनुपानी ॥
भक्त सुप्रभु वल निज वल ग्यानी ❀ धरि उर भजहिं राम धनुपानी ॥

दोहा–प्रौढ़ तनय सम भक्त जे, दास सखादिक बृन्द ।
करत सम्हार सु समय पर, तिन्हि कर प्रभु सुखकन्द ॥३७॥

ज्ञानी भक्तनि की गति भाखी ❀ जिनि उर मर्कट सिसु मति राखी ॥
अब सु उपाय सून्य शरणागति ❀ दूसर आत्म समर्पिनि की मति ॥
मञ्जारी के शिशु की नांई ❀ रहत अचिन्त पाय सिय सांई ॥
जब चाहैं तब भोजन देवैं ❀ जब चाहैं तब प्रभु सुधि ले वैं ॥
जहँ चाहैं तहँ जेहि विधि जैसे ❀ राखहिं राम रहहिं ते तैसे ॥
निज पुरुषार्थ स्वार्थ परमारथ ❀ तजे जानि प्रभु कृपा यथारथ ॥
कर्म शुभाशुभ साधन ज्ञाना ❀ तजेउ पाठ पूजन मद माना ॥

नवधा भक्ति धर्म व्रत दाना ❀ छूटे सकल पाय भगवाना ॥
नर्क स्वर्ग कर हर्ष न शोका ❀ तिनहिं समान लोक पर लोका ॥
रँगेउ इष्ट रँग नखसिख भाई ❀ करै को कर्म धर्म समुदाई ॥
पूरन घट जल करि तेहि मांहीं ❀ दूसर वस्तु समावति नांहीं ॥

दोहा—खेलति कन्या खेल बहु, जब लगि मिलत न पीव ।
पतिहिं पाइ तजि देत सब, खेल अर्पि तेहि जीव॥३८॥

तेहि विधि आत्म समर्पी जीवा ❀ तजत वेद विधि पाय सु पीवा ॥
निज करतव्य तरकि सब डारहिं ❀ प्रभु भरोस यक दृढ़ उर धारहिं ॥
तिन्हिकी सार सम्हार गुसाँई ❀ करहिं राम पिय तिय की नाँई ॥
आत्म अर्पि जब प्रभु कर दयेऊ ❀ सब विधि तब रघुपति के भयेऊ॥
तब उपाय केहि कारण करहीं ❀ जन बिश्वास अचल उर धरहीं ॥
राम भरोसे पर अनुरागी ❀ परे रहत जहँ तहँ भय त्यागी ॥
बाँधव छोरब उनके हाथा ❀ अरपि दीन्ह जिन्हिके करमाथा॥
मारहिं पालहिं प्रभु पद भारा ❀ आपु न आपन करैं सँम्हारा ॥
ज्यों पशुपाल पशुहिं जिमि राखैं ❀ तेहि विधि रहहिं न ते कछु भाखैं॥

दोहा—हृदय मिलेउ निज रामते, पायेउ अति विश्राम ।
रटत नाम वशुयाम सुख, त्यागि शुभा शुभ काम॥३९॥

कर्म सुभा सुभ साधन नाना ❀ छूटेउ सकल पाय भगवाना ॥
जब प्रभु मिले राम घनश्यामा ❀ तिन्हि कहँ अरपेउ आतम रामा॥
तब को करै शुभा शुभ करमा ❀ भजन भावना जप तप धरमा ॥
जिमि पतिव्रता पाइ पति नीका ❀ रँगै तासु रँग यह जग लीका ॥
पति अनन्य होइ सर्बसु अरपी ❀ मिलै तासु अँग अँग जिमि सरपी॥
पतिहु ताहि पर अतिसय प्रेमा ❀ करै बिलोकि तासु दृढ़ नेमा ॥
अङ्गी अङ्ग समान शनेहू ❀ होत अनन्यनि कर निरबेहू ॥
सून्य उपाय शरण जो प्रानी ❀ आतम अरपी मन क्रम बानी ॥

अतिशय प्रीति प्रतीति सु प्रभुपर ❀ जिन्हिकीतिन्हैंनसपनेउँ कहुँडर॥

दोहा—आत्म निवेदन सर्व पर, निर उपाय जो होय।
तेहिकर महिमा अमित अति, राम रूप जन सोय ॥४०॥

निर उपाय आतमा निवेदन ❀ होत रहत तव साधन खेदन ॥
प्रभु सन बीच रहत कछु नाँहीं ❀ निर उपाय शरणागति माँहीं ॥
जिमि पति पतनी एक सरूपा ❀ होत यथा प्रभु जीव अनूपा ॥
यह वर भेद जान तब प्रानी ❀ द्रवैं राम जब जन सुखदानी ॥
आतम ज्ञान होय जब जीवहिं ❀ अरपै आतम तब निज पीवहिं ॥
अहं भाव पुरुषारथ नाशै ❀ तव निज आतम रूप सु भासै ॥
आतम रूप सु शक्ति सरूपा ❀ तेहिकर पति प्रभु पुरुष अनूपा ॥
नशै पुरुष पन आतम ज्ञाना ❀ होइ देइ तब प्रभु कहँ दाना ॥
पानि ग्रहण वर दुलहिनि केरा ❀ होत न बर बर महँ कहुँ हेरा ॥
पुरुष पुरुष महँ होत न ब्याहू ❀ कतहूँ देखेउ सुनेउ न काहू ॥
नारी नर महँ ब्याह सँयोगू ❀ होत प्रसिद्धि लखहु जग लोगू ॥

दोहा—आतम धारेउ पुरुष पन, बिसरेउ सहज स्वरूप।
केहि बिधि तेहि कर दान प्रभु, लेंइँ चराचर भूप॥४१॥

कठिन पुरुष पन आतम धारा ❀ केहि विधि रीझैं राम उदारा ॥
दुलहिनि बनें आतमा जबहीं ❀ पानी ग्रहण करैं प्रभु तबहीं ॥
पति पतनी सम्बन्ध सु लागै ❀ तब प्रीतम पद प्रेम सु पागै ॥
छूटै कर्म शुभा शुभ सारे ❀ जन्म मरन संश्रृति दुख भारे ॥
पावै आतम पति तजि नरता ❀ रघुपति जग पालक संहरता ॥
नरता तजै न आतम जबलगि ❀ आत्म निवेदन होय न तबलगि ॥
आत्म निवेदन बिनु प्रभु प्यारी ❀ होय न आतम नरता धारी ॥
नरता लिये न आत्म निवेदन ❀ होत कबहुँ नाशै भव खेद न ॥
आत्म समर्पन ब्याह समाना ❀ होत कहहिं श्रुति सन्त पुराना ॥

दोहा—तेहिलगि पत्नी भाव विनु, आत्म निवेदन नाँहिं ।
होत सु प्रभु सँग सुजन सव, समुझौ निज मन माँहिं ॥४२॥

आत्म निवेदन खेल न होई ❀ वातनि ते प्रभु मिलत न सोई ॥
आत्म स्वरूप दृष्टि जव आवत ❀ तव सव चटक मटक विनशावत॥
वोलव हँसव जगत व्यवहारा ❀ विधि निषेध मय कर्म अपारा ॥
जाति बुद्धि वर्णाश्रम धरमा ❀ तू मैं भेद मतादिक भरमा ॥
बिनशहिं सव परपञ्च पसारा ❀ रविहिं पाय जिमि रैनि अँधारा ॥
अनुभव भानु हृदय परकाशा ❀ सूझेउ आतम रूप सु खाशा ॥
प्रेमा भक्ति तरुणता छाई ❀ नसेउ लरिकपन जड़ नर ताई ॥
दुलहिनि वनी आतमा नीकी ❀ तव कीन्हीं सुधि राम सु पीकी ॥
गुरु दूती सखि सज्जन बृन्दा ❀ आनि मिलायेउ प्रभु सुखकन्दा ॥
पानि ग्रहण तव करि अपनाई ❀ आतम राम सु पति सुखदाई ॥
आत्म निवेदन विधि कछु भाखी ❀ पैहैं प्रभुहिं सुजन उर राखी ॥

❀ दोहा ❀

आत्म निवेदन भाँति यहि, होत न आन विधान ।
कहेउ सु सुनि समुझहिं सुजन, जिन्हिके आतम ज्ञान ।४३।

षट शरणागति भेद वर, लेइ सु गुरु सन जानि ।
पीछे करै उपासना, तव न होय हित हानि ॥४४॥

जानत जो न उपासक, षट शरणागत भेद ।
तिन्हिकर भजनहुँ करत नहिं, नाशत संभृत खेद ॥४५॥

संग्रह[१] प्रभु अनुकूल कर, प्रतिकूलहिं[२] कर त्याग ।
गोपत्रत्व[३] सव महँ रमें, रक्षहिं[४] सोइ बड़ भाग ॥४६॥

५
कारपण्यता दोष निज, प्रभु सन कहै बखानि ।
६
आत्म निवेदन आत्म, निजअर्पै सियबर पानि ।।४७।।

षट शरणागति सुभग यह, समुझहु कही बखानि ।
चूक क्षमा करि मोर सब, लघु बालक निज जानि ।।४८।।

खटसंपत्ति सुग्यारहवाँ, कहहुँ प्रसंग सहेत ।
जेहि सुनि गुनि कंगाल पन, नशै होय चितचेत ।।४९।।

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्वी परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरणजी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत षटशरणागति बरणनो नाम दशम प्रसंगः शुभम् ।। १० ।।

जय सियराम जय जय सियराम ।।
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ।।
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ।।
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ।।

❀ श्री: ❀

षट् सम्पत्ति प्रसंग ११

❀ दोहा ❀

षट सम्पत्ति सु भेद अब, कहौं यथा मति भाखि ।
पैहहिं श्रीसियराम पद, जिज्ञासू उर राखि ॥ १ ॥
प्रभुहिं मिलन कर पंथ अति, विकट बार ते झीन ।
चलि न सकहिं जिज्ञासु जन, षट सम्पत्ति विहीन ॥२॥
षट सम्पत्ति सु युक्त गुरु, करहु खोजि जग माँहिं ।
समुझौ तेहिसन भेद वर, आनभाँति गति नाँहिं ॥३॥

प्रथम कहौं समके कछु लक्षण ❀ समुझहिं सुजन हेरि हिय अच्छन ॥
अन्तस्करण चतुष्ट कहाँहीं ❀ निवसहिं सदा सकल उर माँहीं ॥
अहंकार मन बुधि चित भाई ❀ चारिउ प्रबल दुसह दुखदाई ॥
असम होयँ तब नाँच नचावहिं ❀ ब्रह्मा दिकनि हाथ नहिं आवहिं ॥
तेहि लगि प्रथम इन्हैं सम करहीं ❀ साधक जेहि निज धर्म न टरहीं ॥
माया रचित पदारथ नाना ❀ अद्भुत अति आश्चर्य निधाना ॥
वहु अनुकूल विपुल प्रतिकूला ❀ बहु सुख दायक वहु प्रद शूला ॥
देखत चित मन संग्रह कारी ❀ बुद्धि कहति गुण दोष विचारी ॥

दोहा–संग्रह त्यागन योग जस, समुझि करहिं तस ताय ।
अहंकार तब उभय विच, उपजत आपहिं आय ॥४॥

अस विचारि साधक विग्यानी ❀ त्यागहिं दोउ बंधन पहिचानी ॥
संग्रह त्याग उभय जब त्यागै ❀ मन बुधि चित प्रभु पद अनुरागै ॥
अहंकार कर बल तब नाशै ❀ होय प्रकाश रूप निज भाशै ॥

तेहि सरूप महँ चितहि लगावै ❀ तब मन आपहि थिरता पावै ॥
सान्ति भये जब मन चित दोऊ ❀ तवन विघनकारक उर कोऊ ॥
बुद्धि शुद्ध अति सुखद सयानी ❀मन चित सँग मिलिहोति दिसानी॥
मनकी चित्त साहिता करई ❀ चित जीते मन आपहिं मरई ॥
चित जीतन कर यही उपाऊ ❀ जो पै कृपा करैं रघुराऊ ॥
श्रीसियराम नाम रस ज्ञाता ❀ सतगुरु मिलै सु ततसुख राता ॥
बीत सु राग अनन्य उपासी ❀ आतम ग्याता भाव सु दासी ॥

दोहा–षट सम्पति शरणागती, जानकार सब भेद ।
श्रृङ्गारी दृढ़ ब्रत सदा, रटै सु नाम अखेद ॥५॥

गुप्त प्रगट जो प्रभु की लीला ❀ जानैं सब उदार मन सीळा ॥
तेहि कर सेवा करि सतसंगा ❀ जानैं नाम भेद रस रंगा ॥
रटै रोम प्रति नव नव बारा ❀ श्री सियराम सु नाम उदारा ॥
जेहि विधि सतगुरु देइँ बताई ❀ तेहि विधि मुदित रटै लय लाई ॥
तब थोरेइ श्रम चित वश होई ❀ आन भांति कलि जितै न सोई ॥
चित जीते पर मन बुधि दोऊ ❀ होत विकार रहित सुचि सोऊ ॥
अहंकार अँधियारी नाशी ❀ आपहि अनुभव किरण प्रकाशी ॥
विमल प्रकाश हृदय जब भयेऊ ❀ अघ उलूक सब संशय गयेऊ ॥
कामादिक तस्कर दुखदाई ❀ आवत नहिं पुनि उर अधिकाई ॥
तब निर्मल उर मन बुधि पाई ❀ निज निज काजनि लागहिं भाई ॥

दोहा–चित लागेउ प्रभु रूप महँ, मन श्री नाम मझार ।
बुधि लागी चिन्तन करन, नाम रूप गुण सार ।६।

अहंकार निज करतब हीना ❀ भयेउ वसे तन महँ हुइ दीना ॥
यहि विधि चारिउ अन्तस्करना ❀ जीतहिं जन करि सम आचरना ॥
दूसर सम्पति दम सुखदाई ❀ तेहिकर भेद सुनहु कछु भाई ॥
दश इन्द्रीं तहँ सुर करि थाना ❀ बैठे चहत विषय सुख नाना ॥

बरवश जीवनि कुपथ चलाईं ❀ छल करि डारत सुकृत नशाईं ॥
त्वचा–जीह–चख–नाशा–काना ❀ ये पाँचौ चेतन जग जाना ॥
इन्हके पञ्च विषय बलवाना ❀ जीतहिं ते पावहिं भगवाना ॥
ये पाँचौ जीते विनु भाई ❀ राम मिलन अति दूरि दिखाई ॥
शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गन्धा ❀ जिन्हिके विवश भयेउ जग अन्धा॥
एक एक ते प्रवल प्रचण्डा ❀ इन्ह कहँ जीतै करि यह दण्डा ॥

दोहा–प्रथम करै संगति सदा, इन्द्री जीतनि केरि ।
तिन्हिकी रहनि सुरीति उर, धरै सकल दृग हेरि ॥७॥

पुनि जीतै यक यक विलगाई ❀ सहित बिचार नाम रटि भाई ॥
भोजन शयन विषय व्यवहारा ❀ कमती करै समेत विचारा ॥
पुनि कहुँ तजै गहै पुनि त्यागै ❀ बैठि इकन्त नाम रस पागै ॥
यक दिन खाय एक दिन त्यागै ❀ शुद्ध अहार दिवस निशि जागै ॥
तजै लवण कहुँ साग अहारा ❀ करै सु रटि श्रीनाम उदारा ॥
यहि विधि दुर्वल करै शरीरा ❀ कछुदिन निवसि सु सतगुरु तीरा॥
हुइहैं शिथिल सकल इन्द्रीगन ❀ गुरुप्रसाद लहि नाम परम धन ॥
जब उर आतम ज्ञान सभावा ❀ प्रगटहि तब सब बनहि बनावा ॥
विषय वासना इन्द्रिनि केरी ❀ नासै सहजहि दुखद घनेरी ॥

दोहा–सतगुरु कृपा प्रसाद लहि, रटि सियराम सुनाम ।
थोरेहि दिन महँ होइ सब, वश इन्द्रीगन वाम ॥ ८ ॥

उपजै ज्ञान इन्द्रि गन जागैं ❀ प्रभु दिशि लगैं विषय रस त्यागैं॥
यहि विधि इन्द्रीं दमन समेता ❀ जीतहिं जन रटि नाम सचेता ॥
भूख बढ़ाय नाम जो लूटै ❀ आपहि विषय बासना छूटै ॥
एकौ बार यतन करि प्रानी ❀ जीतहिं जो इन्द्रिनि हठ ठानी ॥
उपजि परै जब आतम ज्ञाना ❀ पुनि न करैं कछु बल बलवाना ॥
आत्मज्ञान लहि इन्द्रीं मन्दा ❀ होत यथा दिन उड़गण चन्दा ॥

रहहि सदा जो आतम ज्ञाना ❀ तौ न देइँ दुख इन्द्रीं नाना ॥
आत्म ग्यान जबलगि न प्रकासै ❀ तब लगि इंद्रिनि बल नहिं नासै ॥
जब लगि इन्द्रीं गन न जिताँहीं ❀ तब लगि भजन माहिं सुख नाँहीं ॥
अस विचारि गुरु इंद्री जीता ❀ करि सेइय तेहि चरन सप्रीता ॥

दोहा—भजनहिं ते इन्द्रीं जिते, इन्द्रिजीत गुरु साथ ।
मनमुख भजनी करत बहु, श्रम सुख लगत न हाथ ॥ ६ ॥

गुरु प्रसाद इंद्रीबल भाई ❀ श्रमबिनु आपहि जात नशाई ॥
अब उपराम तीसरी सम्पति ❀ जाने बिनु न होय प्रभु पद रति ॥
तेहिकर भेद यथामति गाई ❀ कहौं सुनहिं जिन्हि प्रिय रघुराई ॥
त्यागहि कहँ भाखैं उपरामा ❀ जेहिबिनु लहहिं न जन विश्रामा ॥
जहँ लगि दृश्य पदारथ नाना ❀ सब दुख दायक बिनु भगवाना ॥
सुत बनितादिक नातेदारा ❀ स्वारथ के सब सगे अपारा ॥
उर अग्यान अँधेरी छाई ❀ तेहि लगि तिन्हि सन प्रीति दृढ़ाई ॥
मदिरा मोह कीन्ह अति पाना ❀ चढ़ेउ अमल बहु नासेउ ज्ञाना ॥
तेहि लगि बोलति बचन बिचित्रा ❀ प्रभु तजि पूजति आतम पित्रा ॥
सुने न शिख भइ आत्म अचेता ❀ तजि प्रभु कीन जगत सन हेता ॥

दोहा—काम महा अहि डसेउ मन, मीठ लगहिं विष भोग ।
क्रोध कठिन बीछी हन्यो, केहि बिधि उबरहिं लोग ॥ १० ॥

लोभ गुहेरा काटि कठोरा ❀ कीन्ह आतमा व्याकुल घोरा ॥
बिबिध बासना सोइ मधुमाछी ❀ रहीं नचाय जननि विधि आछी ॥
तेहि पर प्रिय बियोग उर घाऊ ❀ भयेउ कठिन नहिं होत लखाऊ ॥
गड़े पच्च मद भाले भारी ❀ हृदय बीच अतिशय दुखकारी ॥
पाप प्रचण्ड रोग बहुतेरे ❀ रहहिं दिवश निशिचहुँ दिशिघेरे ॥
लरिका लरिकीं माँगें रोटी ❀ नारि करकशा काटै चोटी ॥
बाढ़ति जाय बिथा नित नूतन ❀ घेरि लीन्ह सम्बन्धी भूतन ॥

ब्याकुल भई आतमा डोलै ॥ जड़ माया वश अटपट बोलै ॥
सुनै न सुचि सिख संतन केरी ॥ आतम भई विषय की चेरी ॥
सत सँग सेवा भजन सुकर्मा ॥ कियेउ न आतम भूली भर्मा ॥

दोहा–घरही में घूमत मरेउ, तेली कैसो बैल ।
धन हित नाशेउ जन्म सब, मिटेउ न मन कर मैल ॥११॥

जगत प्रपञ्च सिन्धु बड़ भारी ॥ तेहि महँ बूड़ि रहेउ जनझारी ॥
वेद पुराण शास्त्र मत नाना ॥ सब प्रपञ्चमय बिनु भगवाना ॥
सबके वचननि माँहिं विरोधा ॥ अहहिं परस्पर बुध जन शोधा ॥
कोउ निषेध कोउ विधिहि दृढ़ावैं ॥ पाप पुण्य कोउ प्रबल बतावैं ॥
कोउ निरगुन कोउ सरगुन मानें ॥ अपनी २ दिसि सब तानें ॥
कोउ कह जगत जीव प्रभु रूपा ॥ कोउ कह माया रूप अनूपा ॥
ये सब कथनी केर बजारा ॥ बैठे विमुखी खोलि अपारा ॥
भोग बिहार ठगनि के भोजन ॥ विमुख होत तिन्हि संग्रहिं जोजन
ठग सब जग के नातेदारा ॥ स्वारथ रत प्रभु विमुख अपारा॥
बहुमत बादी पंडित नाना ॥ लरहिं परस्पर पढ़ि सु पुराना ॥

दोहा–इन्ह सबते वैराग जब, होय रटै सियराम ।
तब पावहिं जन सान्ति पद, जो सब विधि सुखधाम ॥१२॥

जहँ लगि आवत दृष्टि पसारा ॥ दुखद सकल उर करहु विचारा ॥
विधि निषेध बन्धन भव भोगू ॥ इन्हें न त्यागहिं जबलगि लोगू ॥
तब लगि जन प्रभु बिमुख कहावैं ॥ जन्मत मरत चैन नहिं पावैं ॥
अस बिचारि जगते उपरामा ॥ करहिं ते पावहिं जन सिय श्यामा ॥
होय बिराग नशैं सब दोषा ॥ रटै नाम तजि जगत भरोसा ॥
जीवनमुक्त होय गुरु पाई ॥ रटै नाम निशि दिन लयलाई ॥
प्रभुहिं भजै जगभोगनि त्यागी ॥ सोइ वैरागी जन बड़ भागी ॥
भोगनि मांहिं भजन रुचिकैसे ॥ रोगिहिं बर भोजन की जैसे ॥

भोगनि करी आतमा रोगी ❀ को साधै साधन वनि योगी ॥
बाढ़त जाय विथा दिन राती ❀ जरत प्रपञ्चनि महँ नित छाती ।
दो०–ग्यान सु भेषज वैद्य गुरु, देइ सु संयम साथ ।
स्वाद हरैं भव भोग रुज, भावैं तव रघुनाथ ॥१३॥
मज्जन करै सुप्रेम भक्ति जल ❀ सुगति क्षुधा तव लगै वढ़नभल ॥
होय विराग सुबल उर मांहीं ❀ तव प्रभु भजन सुअशन सुहांहीं॥
उपरामहिं ते भव रुज भोगा ❀ छूटहिं गति पावहिं तव लोगा ॥
तेहि लगि यह तीसर उपरामा ❀ भाखेउ कछु समुझहिं नर वामा॥
चौथ तितिछा सम्पति रूरी ❀ जिज्ञासुनि प्रद लाभ सुभूरी ॥
भाखों तेहि कर कछुक विचारा ❀ सुनि समुझहिं शुचि सन्तउदारा॥
सुख दुख दोऊ सम करि जानें ❀ सोइ जिग्यासू सन्त सयानें ॥
सुखदुखदोउ निशि दिनकीनाँई ❀ जीवनि पर प्रेरेउ सिय साँई ॥
दुख सम्मुख सुख विमुख करावै❀ जीवनि प्रभुते अस श्रुति गावै ॥
दुखमहँ दीन होइ सिय रामहिं ❀ भजहिं जीव परिहरिमदकामहिं ॥
विषइनि कहँ सुखही सुखभावत❀ तेहि लगि ते नाना दुख पावत ॥
दोहा–कृपापात्र दुखही चहैं, जेहि महँ सुमिरन होय ।
काम क्रोध मद मोह बल, व्यापत नहिं उर कोय॥१४॥
भक्तनि कहँ दुख परम सहायक ❀ जेहि महँ भजै नाम रघुनायक ॥
सुख में इन्द्री गन बलवाना ❀ होत वढ़त कामादिक माना ॥
दाम काम बामा सन प्रेमा ❀ होत नशत शुभ भजन सुनेमा ॥
ग्यानवन्त दुखकहँ सुख मानहिं ❀ सुखकहँ कोटिन दुखसमजानहिं॥
अज्ञानी चाहहिं सुख भूरी ❀ दुख विलोकि सठ भाजहिं दूरी ॥
दुखमें दुख्ख सुखमहँ सुखभारी ❀ मानत अज्ञ अवुध अविचारी ॥
प्रभुकृतदुख्ख सुखसमकरि जानी ❀ भोगहिं हर्ष सहित जन ज्ञानी ॥
सुख में प्रगटहिं पाप घनेरे ❀ बसहिं सदा जीवनि के नेरे ॥

अधिक २ नित बाढ़त जाहीं ❀ तेइ सब सबके सुकृत नशाँहीं ॥
जिन्हि के उर ग्रह पाप विराजें ❀ ते सुभ कर्म करत अति लाजें ॥

दोहा–रोकहिं जात सुमारगनि, जीवनि पाप पहार।
बरबस पटकि कुमारगनि, भेजहिं नरकागार ॥१५॥

पापनि के अति झीने ज्ञाना ❀ समुझहिं गुरु बिनु जन न अयाना॥
पापनि ते उर होत मलीना ❀ देत सबहिं दुख सीदत दीना ॥
अविचारिनि कहँ सुख दुख शूला ❀ होइ देत नाना विधि शूला ॥
सुख ते पाप पाप ते शोका ❀ होत शोक ते दुख दोउ लोका ॥
दुखते होइ पाप सब छीना ❀ प्रगटै ग्यान विवेक नवीना ॥
दीन होइ उर करै गलानी ❀ रीझहिं तव सियवर धनुपानी ॥
असविचारिसव विधि हितजानी ❀ याचहिं प्रभु सन दुख विज्ञानी ॥
सुख में हाँसी अति दुखदाई ❀ आवति नाशक कीर्ति सुहाई ॥
बहु प्रतिकूल होत सुख माँहीं ❀ जिन्हि वश जन प्रभुते विमुखाँहीं॥
देखत ही कर सुख भल भाई ❀ प्रभु सन विमुखी देत बनाई ॥

दोहा–दुख में आवत दीनता, नयननि टपकत नीर।
होत विमल उर जरत अघ, समुझत पर की पीर ॥१६॥

दुख सुख जानहु दोउ प्रिय भाई ❀ सुख भोगी दुख विरत सदाई ॥
दुख में भोग आपही त्यागत ❀ सुख में संग्रह करि करि पागत ॥
असन बसन भूषन सुत वामा ❀ दुख में भावत भोग न धामा ॥
सुख बाँधै दुख वन्धन छोरै ❀ दुख प्रभु सन्मुख सुख मुख मोरै ॥
दुख में हित अनहित पहिचानें ❀ सुख में हानि लाभ नहिं जानें ॥
दुख में धर्म नीति सब सूझै ❀ सुख में शुभ उपदेश न बूझै ॥
दुख में झूठे सांचे प्रेमी ❀ बूझे जात सु छेमी नेमी ॥
दुख ग्यानी सुख अति अविचारी ❀ दुखप्रकाशसुखनिशिअँधियारी ॥
दुख करि दण्ड विकार जरावै ❀ सुख करि प्रेम प्रपञ्च बढ़ावै ॥

दुख में बढ़ैं ग्यान गुन नाना ॐ सुख में कामादिक मद नाना ॥

दोहा—दुख सुख में तेहि लगि नहीं, रहत मेल क्षण एक ।
दुख में केवल गुण भरे, सुख में अगुन अनेक ॥१७॥

विषई जीव पाप रत जोई ॐ सुखही सुख चाहहिं नित सोई ॥
चाहहिं निज इच्छा अनुकूला ॐ सकल पदारथ जड़ जन भूला ॥
प्रभु जन प्रभु इच्छा पर रहहीं ॐ तेहिलगि दुखसुख समकरिसहहीं
अग्यानी लखि सुख मधुराई ॐ मधु मांछी इव लपटहिं भाई ॥
निज इच्छा अनुकूल चहहिंसुख ॐ तेहिलगिपावहिं अन्तपरमदुख ॥
प्रभु इच्छा जो सो शिर धरहीं ॐ राम भक्त मुख नाम सु ररहीं ॥
सुख ते दुख कहँ प्रिय करि मानें ॐ अथवा सुखदुखसम करिजानें ॥
सुख लखि प्रभुजन करत गलानी ॐ दुखलखिहरषहिंहितपहिचानी ॥
नरतनु तरु दुख सुख नभचारी ॐ बैठत आय अवसि तेहि डारी ॥
करि वहु यतन सु देत उड़ाई ॐ वहुरि २ बैठहिं फिरि आई ॥

दोहा—एक उड़त यक वैठत, सुख दुख उभय विहंग ।
दुख सुख नित घेरें रहत, तजत न दोउ तरु अङ्ग ॥१८॥

दुख सुख की अति सूक्षम करनी ॐ जानहिं गुरुमुख जाय न वरनी ॥
पाप पुन्य येहि तन ते होई ॐ तेहिते उपजहिं दुख सुख दोई ॥
तेहि लगि दुखसुख त्यागत नाँहीं ॐ बसत सदा तनु तरुके माँहीं ॥
दुख सुख तन के साथी जानी ॐ सनमानहिं दोउनि जन ग्यानी ॥
आदि अन्तलगि दुख सुख दोऊ ॐ तजत न जीवनि जनजिय जोऊ ॥
दुख सुख दोउ जीवनि के मीता ॐ साँचे अतिशय राखत प्रीता ॥
दुख सुख हूं ते अधिक सनेहा ॐ राखत कबहूं तजत न देहा ॥
सुख बीचहिंमिलि बीचहि तजई ॐ दगाबाज तेहि कहँ को भजई ॥
साँचे प्रेमी दुख सब केरे ॐ आदिअन्त लगि निवसत नेरे ॥
सुखहू में दुख जीवनि भाई ॐ तजत न निवसत संग सदाई ॥

दोहा-गर्भइ ते संगी भये, जीवनि के दुख राय ।
प्रसव समय ते जन्म भरि, गयेउ न कहुँ बिलगाय ॥१६॥

मरन काल पुनि दुखही संगी ❀ होत तजहिं सब सुख रस रंगी ॥
गर्भवास ते मरन प्रयंता ❀ सत्य शनेही दुख गुनवन्ता ॥
तेहिकहँ अग्य निवारन करहीं ❀ परम सनेही दुखते डरहीं ॥
प्रभुजन सुखते दुखहि बड़ाई ❀ आयेउ देत प्रथम ते भाई ॥
असबिचारि दुख सुख समजानी ❀ रहहिं मुदित मन आतम ग्यानी ॥
यहि कहँ कहहिं तितिक्षा वेदा ❀ चौथी संपति नाशन खेदा ॥
श्रद्धा सम्पति पञ्चम भाई ❀ प्रभुभक्तनि कहँ अति सुखदाई ॥
श्रद्धा बिना सिद्धि नहिं होई ❀ कवनिउँ काज करै जो कोई ॥
श्रद्धा सहित करै जो कामा ❀ होय अवश्य सिद्धि सुख धामा॥

दोहा-श्रद्धासहित कुकर्म करि, पावत यमपुर लोग ।
करि सुकर्म श्रद्धा सहित, सुरपुर भोगत भोग ॥२०॥

तिमि सह श्रद्धा रटि सियरामा ❀ सेइ प्रभुहिं पावहिं पर धामा ॥
वैष्णव वेष सु प्रभु कर जानी ❀ श्रद्धा सहित लेइ सुख खानी ॥
कंठी तिलक नाम निज छापा ❀ युगल सुमंत्र हरण त्रय तापा ॥
संसकार पांचौ ये लेई ❀ श्रद्धा सहित सु गुरु पद सेई ॥
धारण करै यथा विधि अज्ञा ❀ शिवजिमि शिरहरि पदज सुगङ्गा॥
जपै मंत्र दै तिलक सु भाला ❀ गर कंठी तुलसी की माला ॥
छापै पाँचहु छाप छवीली ❀ राम सुरज के रङ्ग रँगीली ॥
गुरु प्रद प्रभु सम्बन्धी नामा ❀ करै प्रचार रटै सिय रामा ॥

दोहा-शुचि संतन कर संग नित, करै हरण अघ व्याधि ।
पढ़ै सुनै समुझै सदा, प्रभु चरित्र निरुपाधि ॥२१॥

तजि नाना मत निर्गुन ग्याना ❀ वैश्नव होय भजौ भगवाना ॥

प्रभु सम्बन्धी ये सु पदारथ ❀ रोचकतादिक रहित यथारथ ॥
तिनमहँ करहिं न जे जन श्रद्धा ❀ ते सठ सूकर कूकर गृद्धा ॥
वेष भजन प्रभु कर शुचि संगा ❀ यह सब कारक निर्मल अङ्गा ॥
इन महँ जिन्ह कर श्रद्धा नाँहीं ❀ परिहैं ते शठ नरकनि माँहीं ॥
वैष्णव धर्म परम गति दाई ❀ सब विधि हिन्सा वर्जित भाई ॥
उपदेशहिं जेहि सन्त सयाना ❀ गावहिं नित सोइ वेद पुराना ॥
सियबर नाम रूप गुण धामा ❀ सर्वोपरि दायक विश्रामा ॥
तिमि सुवेष वैष्णव गुरु देवा ❀ सबविधि हरण अमिट अवरेवा॥

दोहा-सेवहिं श्रद्धा सहित जे, ये सब भगवत धर्म ।
परहिं न ते भवसिन्धु पुनि, नशहिं शुभाशुभ भर्म ॥२२॥

गुरु प्रद दिव्य पदार्थनि माँहीं ❀ जिन्हि जीवनि की श्रद्धा नाँहीं ॥
ते मन मुख कोटिन व्रत दाना ❀ करैं जोग जप तप मख ध्याना ॥
द्रवत न सिय वर राम खरारी ❀ मिटत न जन्म मरण भय भारी॥
श्री सतगुरु उपदेश असारन ❀ श्रद्धा सहित करहिं जे धारन ॥
ते सज्जन सिय राम सरूपा ❀ होत बहुरि परहिं न भव कूपा ॥
श्रद्धा देवी सब फल दाता ❀ श्रद्धा हींन सकल दुख पाता ॥
श्रद्धावन्त समुद्र थहावै ❀ श्रद्धावन्त सुमेरु उठावै ॥
श्रद्धावन्त गनै महि बारू ❀ शीस उठावै सब छिति भारू ॥
श्रद्धावन्त प्रभुहिं प्रगटावत ❀ जिन्हिकहँमुनिजन ध्याननपावत॥
श्रद्धावन्त चहहिं जो सोई ❀ करैं न रोकन हारा कोई ॥

दोहा-तौले नीर पहारनि, वनस्पतिहिं सब सोय ।
अनहोनी हूँ करि सकै, जेहि उर श्रद्धा होय ॥ २३ ॥

श्रद्धा में वल अतुलित राजै ❀ सब साधन के ऊपर राजै ॥
श्रद्धावन्त परम पद पावत ❀ श्रद्धावन्त सु प्रभुहिं सुहावत ॥
श्रद्धा के वश सिय रघुराई ❀ श्रद्धावन्तनि देत दिखाई ॥

श्रद्धावन्तनि की बलिहारी ❀ टहल महलकी जिन कहँ प्यारी ॥
श्रद्धावन्त लाज परित्यागी ❀ रटत नाम निशिदिन बड़ भागी ॥
श्रद्धा सहित सकुल परिवारा ❀ भजहिं प्रभुहिं ते जन औतारा ॥
आप तरैं औरनि कहँ तारैं ❀ श्रद्धावन्त कीर्ति विस्तारैं ॥
श्रद्धा शक्ति अपूर्व पदारथ ❀ नाशहिं सज्जन तेहि न अकारथ ॥
करहिं खर्च श्रद्धा सुख मूला ❀ प्रभुदिशिसवबिधिहोइ अनुकूला ॥
लोक लाज कुल कानि बड़ाई ❀ श्रद्धावन्त भगत तजि भाई ॥

दोहा— बाँधि घूँघरू पगनि में, नाचहिं गावहिं गीत ।
प्रभु सन्मुख सियराम रटि, श्रद्धावन्त अभीत ॥२४॥

तिलक छाप कंठी गर माला ❀ मुख सियराम सु नाम रसाला ॥
पीत वसन प्रभु प्रीति बढ़ावन ❀ धारहिं श्रद्धावन्त सुपावन ॥
कोउ निन्दैं वन्दैं कोउ मारैं ❀ श्रद्धावन्त न प्रभुहिं विसारैं ॥
रोंमरोंम प्रभु दुख उपजावैं ❀ श्रद्धावन्तनि कहँ अजमावैं ॥
अचरज जन्य उपाधि अनेका ❀ होतौ डिगैं न जन दृढ़ टेका ॥
जिन्हि की श्रद्धा प्रभु पद माँहीं ❀ तिन्हि कहँ जग सपनेउँ डर नाँहीं ॥
दिन प्रति कोटिनि वाधा आवै ❀ श्रद्धावन्त खेद नहिं पावै ॥
तजहिं न वेष विरति प्रभु धर्महिं ❀ श्रद्धावन्त सु पावत नर्महिं ॥
डगै सुमेरु शम्भु कैलाशा ❀ विचलहिं श्रद्धावन्त न खाशा ॥
अस श्रद्धा जिन्हि के उर माँहीं ❀ रामरूप ते दूसर नाँहीं ॥

दोहा—तिन्हि कर सेवा संग करि, सुधरहिं अगणित जीव ।
वैष्णव धर्म सुधारि दृढ़, पावहिं श्री सिय पीव ॥२५॥

श्रद्धावन्तनि की प्रभुताई ❀ शिव विधि वेद सकैं नहिं गाई ॥
मैं मतिमन्द कहौं किमि तेही ❀ श्रद्धावन्त भगत गुण गेही ॥
श्रद्धा संपति की प्रभुताई ❀ कही कछुक यह पंचम भाई ॥
छठवीं सम्पति प्रभु विश्वासा ❀ सुनि उर धारि तजहु जगआशा ॥

बिनु विस्वास न कउनिउँ सिद्धी ❀ होइ न कबहुँ धरम की वृद्धी ॥
विस्वासी जन के उर डेरा ❀ रहत सदा प्रभु सियवर केरा ॥
गुरु वेदान्त वाक्य सुनि काना ❀ गुनैं हृदय निज तजि मदमाना ॥
सारासार विचार सुकीजै ❀ तजि असार सारहिं गहिलीजै ॥
तेहि महँ कीजै दृढ़ विश्वासा ❀ तरिये भवनिधि त्यागि दुरासा ॥
परम सार सियराम सुनामा ❀ ब्रह्म स्वरूप सत्य सुख धामा ॥
तेहि महँ करि सु अचलविस्वासा ❀ रटहु पुकारि सदा प्रति स्वासा ॥

दोहा—गुरु वेदान्त निदेश बहु, रोचकादि भयदाय ।
परिहरि सो सु यथारथ, राखहु हृदय दृढ़ाय ॥ २६ ॥

गुरुश्रुति शास्त्र सन्त कवि पंडित ❀ करहिं सकलउपदेशअखंडित ॥
विपुल भयानक रोचक वानी ❀ कहहिं यथारथ तत्व बखानी ॥
कर्म ग्यान उपासना नाना ❀ तीनि काण्ड ये करहिं बखाना ॥
तेहि महँ कर्म ग्यान दोउ धर्मा ❀ रोचक ग्यान भयानक कर्मा ॥
परिहरि दोउ तीसरि उपासना ❀ गहहु त्यागिशुभअशुभवासना ॥
उपासना महँ करि सुविचारा ❀ समुझौ उर का सार असारा ॥
देवीं देवनि कर उपासना ❀ करतउ नाशति जनन त्राशना ॥
रीझव खींझव तिन्हि कर भाई ❀ समझहुसमनहिंकछुसुखदाई ॥
विपुल वेष मत जग उपासना ❀ तिन्हिके हूजै सुजन दासना ॥
मतवादी वहु वेष सुधारी ❀ ठगत फिरहिं जगअत्याचारी ॥

दोहा—समुझि बूझि कर कीजिये, सौदा सज्जन लोग ।
ठगनि हाथ जनि वेचिये, शीश सराहन योग ॥२७॥

राम विमुखगुरुअन के हाथा ❀ भाइहु वेचहु जनि निज माथा ॥
यह शिर जेहिकर तेहिकहँ दीजै ❀ प्रभुते उऋण होइ यश लीजै ॥
परम कृपालु कृतज्ञ सु स्वामी ❀ सीतावर सब अन्तरयामी ॥
तिन्हिके तुम्ह तुम्हरे ते साँई ❀ पालत जनन प्राण की नाँई ॥

जिन्हिके नाम रूप गुण धामा ❀ सवविधि भक्तनि सुखद ललामा ॥
सब ईशनि के ईश अनूपा ❀ श्री सिय रघुवर युगल सरूपा ॥
श्री सियराम शरण सुखदाई ❀ सरल सवल अतिसुलभ सुहाई ॥
नहिं अस वेष न मंत्र न छापा ❀ नहिं अस रूप न नाम प्रतापा ॥
नहिं अस धाम न लीला वरजू ❀ सरित न अस जस कमला सरजू ॥
गावत यश श्रुति सास्त्र पुराना ❀ राम समान न कोउ भगवाना ॥
अवतारी अवतार अनूपा ❀ सिय वर के सब अंस सरूपा ॥

दोहा--इन्हकी करि सु उपासना, कीजै दृढ़ विश्वास ।
होइ अनन्य मन वचन क्रम, भजहु सुसियबर खास॥२८॥

महा विष्णु वैराट प्रधाना ❀ अवतारनि पति इनहिं वखाना ॥
सव असमर्थ सहायक ईशा ❀ देवीं देव ब्रह्म जगदीशा ॥
कोउ न स्वतंत्र ब्रह्म वहुतेरे ❀ जानहु सव सियवर के चेरे ॥
तिन्हैं न हारि अपन पौ दीजै ❀ सियवर सेइ जन्म फल लीजै ॥
यहि कलि काल कराल भुवाला ❀ शुभद्वारनि दीन्हेउ पट्ट ताला ॥
कामादिक करि बैठेउ थाना ❀ चलतनकछुसाधनसिधिज्ञाना ॥
देवि देव काराग्रह डारे ❀ पराधीन दुख सहहिं बिचारे ॥
मन्त्र यन्त्र व्रत पूजन पाठू ❀ सम दमादि भये उकठे काठू ॥
भाव भगति पर बैठेउ पहरे ❀ सत्यादिक गुण बोरेउ गहरे ॥
दम्भ कपट कामादिक वीरा ❀ सबके उर व्यापेउ मतिधीरा ॥

दोहा-हृदय मलिन साधन मलिन, परवश देवीं देव ।
कवन भाँति कोउ लहहिं सिधि, कलि करि इन्हकी सेव २९

हठ करि जो साधहिंसुर साधन ❀ अफल होइँ कलि सब आराधन ॥
अस विचारि जे जन विश्वासी ❀ श्री सियराम सु नाम उपासी ॥
सब विधि जानि सुनाम निरोगा ❀ रटहु त्यागि सुर साधन योगा ॥
यही लिख्यो श्रुति शास्त्रनि माँहीं ❀ तजि सियराम नाम गति नाँहीं ॥

करि कोउ सतगुरु दृढ़ विश्वासी ❀ युगल नाम धुनि रटन प्रकाशी ॥
तेहि सन संसकार तन धारै ❀ पञ्च वैष्णवी भ्रम वुधि टारै ॥
करि विश्वास नाम कर नेमा ❀ लेइ रटै नित लाख सप्रेमा ॥
पुरवै प्रथम गये जे स्वासा ❀ एक नाम प्रति स्वास सुखासा ॥
गत स्वासनि के पुरतहिं नामा ❀ पावहिं जीव हृदय विश्रामा ॥

दोहा—पुनि पच्चीस हजार नित, रटै सहित विश्वास ।
पावै श्री सियराम पद, नाशै भव भ्रम त्राश ॥३०॥

जन्म मरन छूटै भव फंदा ❀ मिलैं राम सिय आनँद कंदा ॥
राम नाम सब सुकृत निवासा ❀ राम नाम रटि नशै दुरासा ॥
राम नाम स्वामिन के स्वामी ❀ राम नाम नामिन के नामी ॥
श्री सियराम नाम सुखकन्दा ❀ भक्त चकोरनि पूरण चन्दा ॥
श्री सियराम नाम विश्रामा ❀ कलियुग अपरन साधन सामा ॥
राम नाम पर करि विश्वासा ❀ रटहु रटावहु सहित हुलासा ॥
रामहुँ कर विश्वास न कीजै ❀ राम नाम रट दृढ़ धरि लीजै ॥
नाम सरिस प्रभु रूप न धामा ❀ चरित न भाव भगति अभिरामा ॥
युगल नाम जहँ होत उचारन ❀ प्रगटत तहँ सुख सुकृत अपारन ॥
युगल नाम की धुनि जहँ होई ❀ तहँ न अमंगल आवत कोई ॥
जय सियराम नाम जहँ गाजहिं ❀ सुनि यमदूत भूत गण भाजहिं ॥
जय सियराम नाम धुनि जोई ❀ करत तरन तारन ते होई ॥

दोहा—सब विधि नाम समर्थ लखि, तेहि महँ करि विश्वास ।
रटहु रटावहु छाँड़ि छल, तजि सुर साधन आश ॥३१॥

रटहिं रटावहिं जो सियरामा ❀ करि विस्वास लहहिं ते धामा ॥
नाम विहाइ अपर विस्वासा ❀ करिहैं ते पावहिं अति त्रासा ॥
आचारज जो गुरु उपदेशी ❀ सब मतवादी भजना वेशी ॥
सब सन भाखौं दोउ कर जोरी ❀ सुनहु कृपाकरि विनती मोरी ॥

श्री सियराम नाम अवलम्भा ❀ देउ लेउ सब विधि निर्दम्भा ॥
धरहु धरावहु नाम अधारा ❀ करि कराय विश्वास विचारा ॥
पढ़हु सुनहु सब वेद पुराना ❀ कलियुग केवल नाम प्रधाना ॥
भूलि अपर विस्वास न कीजै ❀ श्री सियराम नाम गहि लीजै ॥
पैहहु अति सुख कलियुग माँहीं ❀ हठको काम यहाँ कछु नाँहीं ॥
हठ करिहहु तौ नरकनि जाई ❀ सहिहहु बहु दुख नाम विहाई ॥

दोहा–परिहरि आस भरोस मत, हठ सुर साधन धाम।
करि कराय विश्वास दृढ़, रटहु रटावहु नाम ॥३२॥

सबके इष्ट देव श्री नामू ❀ रटत तिन्हैं पैहौ सियरामू ॥
जो न मानिहौ विनती मेरी ❀ हठवश सहिहौ विपति घनेरी ॥
चेति करहु विस्वास सु येही ❀ रटहु रटावहु नाम सनेही ॥
राम नाम महँ करि विश्वासा ❀ को न गयो परपद तजि त्रासा ॥
वालमीकि मुनि ध्रुव प्रह्लादा ❀ लहेउ परम पद रहित विषादा ॥
नारद शिव षटबदन गणेशा ❀ भयेउ नामरटि विगत कलेशा ॥
हनूमान नामहिं विश्वासी ❀ होइ लहेउ सियबर सुखरासी ॥
नामदेव रविदास कबीरा ❀ पद्मनाभ कामध्वज धीरा ॥
केवल कूबा अग्र उपासी ❀ ये सब भयेउ नाम विस्वासी ॥
धरमातमा भये बहु पापी ❀ रटि सियराम सुनाम प्रतापी ॥
मोसे अधम अमित भव पारा ❀ गयेउ रटत श्री नाम उदारा ॥

दोहा–तुलसि दास महाराज श्री, युगल अनन्य सुशर्ण।
मम गुरुदेव सु नाम के, बिश्वासी दृढ़ पर्ण ॥३३॥

जिन्हि रटि नाम भूप चेताये ❀ बंधन ते बहु संत छुड़ाये ॥
आचारज बहु नाम उपासी ❀ भये होत हुइहैं विश्वासी ॥
राम नाम महँ करि विश्वासा ❀ विपुल तरे भव गे प्रभु पासा ॥
जो सियराम नाम विश्वासी ❀ सोइ पैहैं गति रति मति खासी ॥

तजि सियराम नाम की आशा ❀ जे जन करहिं आन विश्वासा ॥
पैहैं ते यमपुर दुख भारी ❀ राम नाम विमुखी नर नारी ॥
जिन्हिके उर न नाम विश्वासा ❀ जानहु तिन्हैं नर्क केदासा ॥
गुरु प्रभु शास्त्र वेद अस गावत ❀ नामहिं रटि जन सव सुख पावत॥
करि विश्वास रटहु सियरामा ❀ नाम काम तरु कलि सुख धामा॥
खष्टम सम्पति यह विस्वासा ❀ भाखेउँ सुनत होय भ्रम नाशा ॥
समुझहु हृदय त्यागि जग आसा ❀ छटवीं संपति यह विश्वासा ॥

❀ दोहा ❀

नामहिं में विश्वास करि, रटि रटाय प्रतिस्वास ।
तारहु जीवनि तरहु निज, तजि कलि साधन आश॥३४॥
विनु विश्वास न होत सिधि, रटतौ श्री सियराम ।
तेहि लगि करि बिश्वास दृढ़, रटहु रटावहु नाम ॥३५॥
श्री सियराम सु नाम कर, उपजै जव विश्वास ।
अभय होयँ तिहुँलोक महँ, नशै बासना त्रास ॥ ३६ ॥
निकसि जाँयं अवगुण सकल, गुण उर करैं निवास ।
मन क्रम वचन सु होय जव, सुदृढ़ नाम विश्वास॥३७॥
जिन्हिकर भयेउ सु नाम में, अविचल दृढ़ विश्वास ।
तिन्हिकर सुख सोइ जान उर, कहि किमि करै प्रकास ३८
श्री सियराम सु नाम महँ, सब सुख प्रगट लखाय ।
विश्वासिनि निगुरनि नहीं, जिन्हिके गुरु न सहाय॥३९॥
विश्वासी गुरु करि करो, वेगि नाम विश्वास ।
रटहु रटावहु विलम तजि, परिहरि भोग विलास ॥४०॥

अब द्वादस सु प्रसंग महँ, भक्ति प्रार्थना प्रेम ।
बरणौं भक्त विचारि उर, पावहिं अनुपम च्छेम ॥४१॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक
श्रीवैष्णव धर्मावलम्वी परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल
शरणजी महाराज उपनाम 'श्रीप्रेमलता जू' कृत
पटसम्पत्ति बरणनो नाम एकादश
प्रसंगः शुभम् ॥ ११ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

❀ श्री ❀

प्रेमभक्तिप्रार्थनाप्रसंगारंभः १२

❀ दोहा ❀

प्रेम भक्ति अरु प्रार्थना, सब साधन कर सार।
इन्ह बिनु द्रवत न जनन पर, दशरथ राज कुमार ॥१॥
सर्व कला सम्पन्न उर, भजन करै दृढ़ नेम।
द्रवत न प्रभु आये बिना, भक्ति प्रार्थना प्रेम ॥ २ ॥
कोटिनि पूजा पाठ ब्रत, जप तप साधन धाम।
सेवै प्रेम सु भक्ति बिनु, द्रवत न श्री सियराम ॥३॥
विलग विलग अनुसार मति, कछुक सु तिन्हि के भेद।
बरणौं मैं निज बोध हित, सुनि जन होइँ अखेद ॥४॥
धारण करि उर लहहिं प्रभु, जिज्ञासू रटि नाम।
प्रेम भक्ति अरु प्रार्थना, तीनिहुँ सब सुख धाम ॥५॥

जय गुरुदेव सकल शिरताजा ❀ जय सियराम नाम महराजा ॥
जय सियराम रूप सुखदाई ❀ जयति उपासक सिय रघुराई ॥
जयति सकल परिकर सुखकारी ❀ जयति सन्त प्रेमी नर नारी ॥
जय हनुमत सियराम दुलारे ❀ जय सब भक्त सु प्रभु के प्यारे ॥
छमि अपराध कृपा सब कीजै ❀ प्रेम भक्ति माँगे मोहिं दीजै ॥
प्रेम भक्ति की महिमा काननि ❀ सुनी कछुक प्रेमिनि के आननि ॥
तव ते अति उत्कण्ठा लागी ❀ प्रेम भक्ति दीजै बड़भागी ॥
प्रेम भक्ति श्री नाम समेता ❀ देउ दया करि कृपा निकेता ॥

दोहा—सतगुरु श्री सियराम प्रभु, परिकर भक्त समाज।
सकल कृपा करि दीजिये, प्रेम भक्ति शिरताज ॥६॥
प्रेम हीन सब साधन सूने ❀ प्रेम समेत बढ़ें सत गूने॥
प्रेमदशा जब लगि नहिं आवति ❀ तब लगि मति थिरता नहिं पावति॥
प्रेम मूर्ति प्रीतम रघुराई ❀ भक्ति सु विग्रह सिय सुखदाई॥
आतम रूप प्रार्थना प्यारी ❀ तेहिके बश सियराम खरारी॥
प्रेम समेत सबहिं सुख दाता ❀ भक्ति प्रार्थना साधन त्राता॥
भक्ति प्रार्थना प्रेम विहीना ❀ जिमि बासर महँ चन्द्र मलीना॥
राम रूप सो प्रेम अनूपा ❀ जेहि विनु जीव परे भव कूपा॥
प्रेम रूप प्रभु जेहि महँ बासा ❀ करैं होइ तेहिं बहुरि न नासा॥
तेहि की महिमा अकथ अपारा ❀ पूजनीयँ तिहुँ लोक मझारा॥
कोटिनि जप तप ग्यान विचारा ❀ प्रभु के प्रेमी पर निवछारा॥
दोहा—राम रूप होइ जात सो, नाशत द्वैता भेद।
सहज शनेह सु रस सन्यो, हृदय अखंड अखेद ॥७॥
सुर मुनि मनुज चराचर माँहीं ❀ वड़ भागी कोउ तेहि सम नाँहीं॥
अहंबाद अग्यान नसायेउ ❀ जेहिं बस ज्ञीव प्रभुहिं बिमुखायेउ॥
सकल विकार रहित सो प्रानी ❀ होत सकल शुभ गुण की खानी॥
सबहिं सुखद सब बिधि सबलायक ❀ निरुपम निराकार निर्मायक॥
मायाकृत अकार तेहि नाँहीं ❀ प्रेममूर्ति प्रभु जेहि उर माँहीं॥
देखत की पंचीकृत देहा ❀ रहित बिकार बिगत सन्देहा॥
विधि निषेध मय सकल बासना ❀ नाशीं सब बहिरँग उपासना॥
घूमत फिरें भरे अनुरागा ❀ सहज सनेह सु प्रभु सन लागा॥
आत्म समर्पण करि प्रभु हाथा ❀ बिचरत अवनि सु होइ सनाथा॥
ऋधि सिधि सम्पति प्रभु कृतमाया ❀ सेवहिं चरण छांड़ि छल छाया।
दोहा—दशहू दिशि आनन्द तिन्हि, दुखद न कोउ तिहुँलोक।

जी चाहै जहँ जाँयँते, कतहूँ रोक न टोक ॥ ८ ॥
सब जीवनि पर आज्ञा तिन्हिकी ❀ प्रभुपदप्रीतिप्रतीतिसुजिन्हिकी ॥
जिन्हिकी प्रीति राम पद मांहीं ❀ तिन्हि सम भागवंत कोउ नांहीं ॥
त्यागि लोक की मान बड़ाई ❀ निसि दिन रटैं नाम लय लाई ॥
पगे प्रेम पावन रस रूपा ❀ सबविधितिन्हिकीदशा अनूपा ॥
लोक वेद बाहिर आचरनी ❀ करत सकल अचरज मयं करनी॥
हृदय परम पावन निष्पापा ❀ प्रभुसन मिलेउ रहित त्रय तापा ॥
कर्म धर्म परमारथ स्वारथ ❀ तजेउ जानि प्रभु प्रेम यथारथ ॥
वेष सम्प्रदाई मत बादा ❀ पूजा पाठ अमित रस स्वादा ॥
वहेउ प्रेमकी धार अनेका ❀ जप तप योग यज्ञ अविवेका ॥
केवल एक रहेउ सिय स्वामी ❀ रोंम रोंम रमि अन्तरयामी ॥
दोहा–कोउ निन्दत बन्दत सु कोउ, ऊँच कहत कोउ नीच ।
होत न हर्ष विषाद तिन्हि, मारि सकै नहिं मीच ॥९॥
सब प्रकार जिन्हि इष्ट भरोसा ❀ दुखवतहू उर करहिं न रोसा ॥
दुखवइ को तिनि कहँ संसारा ❀ सुमिरहिं जो सियराम उदारा ॥
जाति जमातिनि तजि यक ओरा ❀ भयेउ प्रेम सियवर सन जोरा ॥
जाति पांति तिन्हिकर यक प्रेमा ❀ तेहि विनु कतहुँ न पावहिं छेमा ॥
प्रेम विना सब धर्म अधर्मा ❀ जानत प्रेमी जन गत भर्मा ॥
ज्ञान ध्यान तवहीं लगि भाई ❀ प्रेम दशा जबलगि नहिं आई ॥
कथा कहानी वेद पुराना ❀ कहब सुनब समुझब विधि नाना ॥
प्रेमरङ्ग जवलगि नहिं रङ्गा ❀ तब लगि खोजत सङ्ग असङ्गा ॥
प्रेम अमल जब चढ़ै प्रचण्डा ❀ तब न लखात नयन ब्रह्मण्डा ॥
आपु सहित व्यवहार अनेका ❀ बिसरत रहत सु प्रीतम एका ॥
दोहा–विद्या जाति विचार बुधि, कर्म धर्म आचार ।
प्रेम पन्थ पग देत सब, बिसरत प्रिय परिवार ॥१०॥

प्रेम पंथ खाँड़े की धारा ❀ जानहिं प्रेमी जन न गँवारा ॥
प्राकृत प्रेम करत जब कोई ❀ तिन्हिकीदशा लखहु कस होई ॥
तिय नरहित नर तियहित लागी ❀ देत प्राण आदिक सब त्यागी ॥
गणिकनि सँग भोजन व्यवहारा ❀ करनलगहिंद्विज तजि आचारा ॥
प्रभु सन विमल प्रेम जब होई ❀ तब न दृष्टि आवत जग कोई ॥
जहँ देखो तहँ प्रीतम रूपा ❀ झलकत सब महँ अमलअनूपा ॥
द्वैत भावना होय विनासा ❀ पाप पुन्य की छूटै त्रासा ॥
देखत की केवल द्वै देही ❀ होत एकही उभय सनेही ॥
प्रभु मय विश्व प्रेमते जानी ❀ तब नानात्व कुबुद्धि नशानी ॥
प्रीतम की राजी में राजी ❀ रहत सदा जग जीती बाजी ॥
दशहू दिशि तिन्हि केर सु राजू ❀ राखहिं केवल प्रभु ते काजू ॥

दोहा—प्रेम पात्र प्रभुके सुजग, कोटिनि में कोउ एक ।
जीवतही मरि रहेउ सो, तजि गुन अगुन अनेक ॥११॥

कर्मी धर्मी बहु मत वादी ❀ प्रेम दशा किमि लखहिं प्रमादी ॥
सुनहु एक प्रेमी की गाथा ❀ जेहिकर जीवन सिय रघुनाथा ॥
तन मन सरवसु प्रभु हित लागी ❀ अर्पि अटहिं महि जन बड़भागी ॥
जाति पांति कुल धर्म बड़ाई ❀ धन बल विद्या गुन चतुराई ॥
लोक वेद मत नाना कर्मा ❀ त्यागि रँगे प्रभु रँग गत भर्मा ॥
दिशिअरुविदिसिननीकविकारा ❀ सूझत सुमिरहिं नाम उदारा ॥
गेह सनेह जगत के त्यागी ❀ केवल एक नाम लय लागी ॥
कहुँ रोवत कहुँ हँसत ठठाई ❀ कबहुँ मूक कहुँ नाचत गाई ॥
कहुँ उघार कहुँ बसन सुधारें ❀ कहुँ सोवत कहुँ नींद बिसारें ॥
कहुँ छाया तर कहुँ मयदाना ❀ करत निवास न कतहुँ ठिकाना ॥

दोहा—दुख सुख निंदा अस्तुति, हानि लाभ रिपु मीत ।
जानहिं सम सियराम सुख, रटहिं अखंड अभीत ॥१२॥

मन वच कर्म पार तिन्हि की गति ❀ प्रीतम रंग रँगी जिन्हि की मति ॥
सियवर हाथ अरपि सिर दीना ❀ जन्म लाभ नर तन लहि लीना ॥
करैं सदा तिन्हिकी रखवारी ❀ आपु स्वयम्प्रभु धनुशरधारी ॥
हनुमदादि सिव विधि सब देवा ❀ सक्तिनि सहित करहिं तेहि सेवा ॥
कृपा पात्र प्रेमिनि की गाथा ❀ कहिनसकहिंसिवश्रुति अहिनाथा ॥
प्रभु ते प्रेमिनि की प्रभुताई ❀ अकथ अनंत अटर श्रुति गाई ॥
तिन्हि की महिमा मैं केहि भाँती ❀ कहों वुद्धि ममता मद माँती ॥
कृपा पात्र प्रेमी जो संता ❀ तिन्हि के विवश रहत भगवन्ता ॥
प्रेमिनि की रति गति मति देखी ❀ सब विधि अगम अथाह अलेखी ॥
ब्रह्मा के मन अचरज भयेऊ ❀ चारिवेद महँ कछु लिखि लयेऊ ॥

दोहा–सोइ चहुँ वेदनि पढ़ि करैं, पंडित उर अभिमान ।
प्रभु प्रेमिनि की अगम गतिं, लखहिं न सो अज्ञान ॥१३॥

पंडित पढ़ि श्रुति सास्त्र पुराना ❀ झगरहिं मूढ़ न प्रभु पहिचाना ॥
प्रभु प्रेमिनि के अदभुत लक्षन ❀ लखहिं न पंडित ग्यान विचक्षन ॥
प्रेम पात्र जो मन गुन पारा ❀ रहत रहेउ यक नगर मझारा ॥
रहेउ एक तहँ भक्त उदारा ❀ साधू सेवक सहित विचारा ॥
धन अपार यक पुत्र विहीना ❀ रहेउ सोचरत दम्पति दीना ॥
हम दोउन के पीछे भाई ❀ करिहै को संतति सिवकाई ॥
यही सोच बड़ दोउ नर नारी ❀ करत रहहिं नित हृदय मझारी ॥
दियं सन्त बहु अशीर्बादा ❀ मिटेउ न तिन्हिकर तदपि विषादा
नारद मुनि आयेउ इकवारा ❀ तिन्हिकी सेवा कीन्ह अपारा ॥
पुत्रहीन तेहि कहँ मुनि देखी ❀ उपजि परेउ उर छोह विसेखी ॥
परदुख हेरि द्रवै सोइ संता ❀ निज सुख त्यागि भजहिं भगवंता

दोहा–कहेउ जाइ भगवान पहँ, पुत्र दिवाउब तोहि ।
रहहु मुदित अब सोच तजि, जानहु नारद मोहि ॥१४॥

प्रभु दाया मोपर अधिकाई ❀ देहहिं पुत्र अवसि सो भाई ॥
साहु मुदित भा सुनि मुनि दानी ❀ नारद गयेउ जहाँ धनुपानी ॥
कुशल प्रश्न करि दण्ड प्रणामू ❀ बैठे प्रभु ढिग मुनि सुखधामू ॥
कहेउ भक्तहित पुत्र सँदेशा ❀ हरहु तासु करि कृपा कलेशा ॥
चित्र गुप्त सन प्रभु तव भाखा ❀ दिखरायेउतिन्हिजोलिखि राखा॥
सात जन्म तेहि आगनि माँहीं ❀ पुत्री पुत्र कहेउ कछु नाँहीं ॥
सुनि नारद मुनि भयेउ उदासा ❀ पुत्र होंन की नाशेउ आसा ॥
बहुरि विचार कीन्ह मुनि येहा ❀ अब न जाब कबहूँ तेहि गेहा ॥
कहेउ विदूषि हृदय भगवाना ❀ केहि विधि मेटौं लिखेइ सुजाना॥
मेंटहुँ जो मैं हीं श्रुति लीका ❀सुर नर मुनि कोउ कहहिंननीका॥

दोहा—नारद ... तेहि कर्म कहँ, दोष सु प्रभु गुण भाखि।
चलेउ रटत सियराममुख, सियबर छबि उर राखि॥१५॥

साहु अभाग समुझि मन माँहीं ❀ नारद हठ न कीन्ह प्रभु पाँहीं ॥
भक्त भवन कबहूं इकबारा ❀ प्रेम पात्र सो गयेउ उदारा ॥
भक्त देखि उठि आदर कीन्हा ❀ पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥
प्रेम पात्रही लागी भूखा ❀ कहेउ देउ कछु रूखा सूखा ॥
साहुदीन तब रोटी सागा ❀ पायेउ प्रेमी सह अनुरागा ॥
अचइ नीर प्रमुदित मन भयेऊ ❀ साहु विनय करि पान सु दयेऊ ॥
तब प्रेमी बोले सुखपाई ❀ कहा देउँ मैं तुम कहँ भाई ॥
साहु कही किरपा प्रभु केरी ❀ हमकहँ सकल सुखनि की ढेरी ॥
तब बोले प्रेमी पुनि बाता ❀ तुम्हरे होंयँ पुत्र प्रिय साता ॥
राम भक्त सब गुन गन गेहू ❀ हुईहैं सकल न कछु संदेहू ॥

दोहा--साहु साहुनी जोरि कर, नायेउ चरणनि माथ।
प्रेमी गमनेउ देइ बर, सुमिरत सिय रघुनाथ॥ १६ ॥

साहूनि क्रम क्रम पुत्र सु सांता ❀ जायेउ सुन्दर गोरे गाता ॥

भयेउ भक्त सब विद्या पाई ❀ सेवहिं साधु भजहिं रघुराई ॥
साहु मुदित मन सुख न समाई ❀ राम भक्त अनुपम सुत पाई ॥
प्रेम पात्र संतन की सेवा ❀ सबविधि अभिमतफल सुखदेवा॥
प्रेमिनि की महिमा अति भारी ❀ जानहिं कहा जीव संसारी ॥
कोटिनि वापी कूप खनावै ❀ सर सागर वहु बाग लगावै ॥
सरितनि केर सु सेतु बँधावै ❀ दुर्गम मारग सुगम करावै ॥
धर्मसाल गोसाल अपारा ❀ रचै न रीजहिं राम उदारा ॥
ये सब सुकृत करत अघ होई ❀ मरहिं जीव बहु जान न कोई ॥
सुकृत थोर अघमय श्रम भारी ❀ तेहि महँ पचत मूढ़ नरनारी ॥
भूमि दान गो दान अनेका ❀ तीरथ वर्त करै सविवेका ॥

दोहा--जप तप साधन जोग मख, धर्म कर्म बहु दान ।
करै यथा विधि जन्म भरि, रीझत नहिं भगवान ॥१७॥

बिनु सेये प्रभु के प्रिय संता ❀ द्रवत न कबहूँ श्री सियकंता ॥
साधू सेवक प्रभु कहँ पावत ❀ श्रम विहीनश्रुतिमुनिबुधगावत ॥
अपर करै कोउ सुकृत अनेका ❀ साधू सेवा सम नहिं येका ॥
धर्म कर्म सुभ साधन साधे ❀ पावत सुर पुर सुर आराधे ॥
भोगि सकृत फल जो कछु होई ❀ गिरत बहुरि भव सागर सोई ॥
पाप करै तो नरकनि जावै ❀ पुन्य करै तौ सुर पुर पावै ॥
स्वर्ग नर्क महँ पाप पुन्य फल ❀ भोगि बहुरि जन्मत जगती तल ॥
पाप पुन्य दोउ वन्धन भारो ❀ स्वर्ग नर्क दायक दुखकारी ॥
जन्मत मरत जीव जग झारी ❀ पाप पुन्य बस परि नर नारी ॥
प्रभु भक्तनि कर सेवा संगा ❀ करै सुभासुभ बंधन भंगा ॥

दोहा--जन्म मरन कर दुसह दुख, स्वर्ग नर्क कर वास ।
विनु सेयेप्रभु भक्त वर, होत न कबहुँ विनास ॥१८॥

पाप पुन्य दोउ बाँधन हारे ❀ छोरत संत राम के प्यारे ॥

पाप पुन्य दारुन दुख दानी ❀ राम भक्त केवलि सुख खानी ॥
प्रभु भक्तनि के बचन विनीता ❀ सुनहु श्रवन मनलाय सप्रीता ॥
जो सियराम नाम दिन राती ❀ रटत लोक चरचा न सुहाती ॥
तिन्हि की सेवा संगति भाई ❀ सकल सुकृत कर फल सुखदाई ॥
पसु पच्छिनि वहु भाँति खवावै ❀ कोटिनि विप्र सुन्योति जिमावै ॥
कोटिनि सैव साक्त वैरागी ❀ सेवै कोउ सब विधिसिधि लागी ॥
भजन हीन वैश्नव वहु तेरे ❀ सेवै ग्रही विरक्त घनेरे ॥
विपुल वेष धारिनि वहु दाना ❀ देइ करै वहु विधि सनमाना ॥
येहि ते कोटिनि गुन फल दाई ❀ नाम जापकनि की सिवकाई ॥

दोहा—जग सुख त्यागी नाम रत, श्री सिय राम अनन्य ।
प्रेमपात्र प्रभु केर तिन्हि, सेवहिं ते जग धन्य ॥ १९ ॥

आत्मअर्पि सियराम सु नामहिं ❀ रटत निरंतर तजि छल कामहिं ॥
जिन्हिके सरबसु सिय रघुराई ❀ तिन्हिके चरन कमल मनलाई ॥
सेवत सुभ गति पावहिं सोई ❀ नसें सुभासुभ बंधन दोई ॥
पच्छपात भाषहिं अग्यानी ❀ सर्वोपरि प्रभु प्रेमी प्रानी ॥
देखहु कही नार्द प्रभु पाँहीं ❀ साहु पुत्र हित्त कीन्हेंउँ नाँहीं ॥
प्रेम सुपात्रहि सेइ रिझायेउ ❀ साहु सात सुत श्रमबिनु पायेउ ॥
विधि प्रेरित नारद तेहि धामा ❀ गवने कबहुँ रटत सियरामा ॥
साहु साहुनी सुतनि समेता ❀ पूजेउ नारद कृपा निकेता ॥
नारद बूझेउ लखि सुतसाता ❀ भक्त कहेउ तव कृपा सुताता ॥
रहेउ साहु उर यह विस्वासा ❀ नारद पुरयेउ मोर सु आसा ॥

दोहा—सुनि नारद भगवान पर, कोपेउ अति मन माँहिं ।
आप दीन्ह यहि सात सुत, मोर कहे कछु नाँहिं ॥२०॥

यह बड़ कपट कीन्ह मम संगा ❀ देउँ शाप चलि बढ़ी तरंगा ॥
ठगत सबहिं करि २ कुटिलाई ❀ आजु देउँ यह बान छुड़ाई ॥

सब समान यह जानेउ मोहीं ❀ तेहि लगि देउँ सीख चलि ओही ॥
करत कोप अतिसय मन माँहीं ❀ नारद चलेउ सपदि प्रभु पाँहीं ॥
प्रभु जानेउ सब अन्तरयामी ❀ रचेउ एक कौतुक सुरस्वामी ॥
लोटन लागेउ महलनि माँहीं ❀ हाय हाय करि २ अकुलाँहीं ॥
देखि दशा व्याकुल सब कोई ❀ भयेउ पारषद शुधि बुधि खोई ॥
सुर पुर ते अश्विनी कुमारा ❀ आयेउ प्रभु ढिग वैद्य उदारा ॥
तेहि अवसर नारद मुनि आये ❀ देखि दशा सब कोप भुलाये ॥
कहेउ वैद्य प्रभुकी लखि नारी ❀ उठत हूक इन्ह के उर भारी ॥
जो न करिये कछु वेगि उपाई ❀ तौ अति वढ़ै विथा अधिकाई ॥

दोहा–प्रभु भक्तनि के रुधिर में, बूटी एक मिलाय ।
करौं लेप गमाय कछु, तुरत कुरोग नशाय ॥२१॥

यहि कर भेद न वैदहु जाना ❀ रचेउ कवन कौतुक भगवाना ॥
लेन जाय कोउ आतुर आवै ❀ रुधिर सु भक्तनि कर जहँ पावै ॥
वेगवन्त नारद सम नाँहीं ❀ प्रभु के सकल किंकरन माँहीं ॥
तुम्ह विनु यह कारज को करिहै ❀ प्रभु की पीर अपर को हरिहै ॥
तब नारद लै छुरी कटोरा ❀ चलेउ शीघ्र अति भक्तनि ओरा ॥
गयेउ जहाँ जहँ भक्त समाजा ❀ वसत रहे सुमिरत रघुराजा ॥
तिलक दाम धारी वहुतेरे ❀ वसहिं जहाँ जहँ जेहि जेहि खेरे ॥
तहँ तहँ जाय कहहिं यह बाता ❀ परेउ दुखित अति प्रभुजनत्राता ॥
देउ रुधिर कोउ निज तन केरा ❀ होइ भक्त जो प्रभु प्रिय चेरा ॥
देइ रुधिर प्रभु हित जो कोई ❀ त्रभुवन धन्य आजु सो होई ॥

दोहा–करै लेप सुर वैद्य तव, नाशै प्रभु की हूक ।
व्याकुल लोटत धरणि पर, घुटत न भीतर थूक ॥२२॥

विलम करहु जो लोहू देता ❀ तौ प्रभु होइहैं अधिक अचेता ॥
सुनि सब बोलि उठत खिसियाई ❀ जानि परत यह साधु कसाई ॥

कोउ कह देउ दंड तजि छोहू ❀ माँगत दुष्ट साधु कर लोहू ॥
साधु वेष धरि करत बहाना ❀ कहत दुखी अति श्रीभगवाना ॥
प्रभु कहँ क्लेश कहाँ ते आवा ❀ लोहू हित यह ढङ्ग बनावा ॥
जिन्हि कर नाम लेत जगमाँहीं ❀ जन्म मरन दुखदुसह नसाँहीं ॥
तिन्हि कहँ कहत दुखी भगवाना ❀ काटहु येहि कर नाशा काना ॥
असकहि कोउ उठि मारन धाये ❀ नारद मुनि तब भागि पराये ॥
गये जहाँ तहँ तहँ यह हाला ❀ देखि भयेउ उर सोच विशाला ॥
कंठी तिलक सु अङ्गनि धारा ❀ वैष्णव वेष न भाव विचारा ॥
केहि विधि नसिहहिं प्रभुकी पीरा❀ रुधिर विना मुनि भयेउ अधीरा ॥

दोहा—ग्याता वैश्नव धर्मके, ग्रही विरक्त सचेत ।
जाँचे बहु नहिं देत कोउ, लोहू निज प्रभुहेत ॥२३॥

जिन्हि कर वानों अङ्गनि धारी ❀ भक्त कहाँयँ विपुल नर नारी ॥
जपत मंत्र जेहि ध्यान लगाई ❀ पूजत जासु मूर्ति पधराई ॥
उदर भरत जेहि कर लय नामा ❀करत विविधि सुख जग वसु जामा ॥
सेवक शरन भक्त जेहि दासा ❀ बनें न रंचउ उर विस्वासा ॥
देखत के सब भक्त कहावत ❀ लोहू माँगत मारन धावत ॥
केहि लगि वैष्णव वेष वनावा ❀ प्रभु कारज जो अङ्ग न आवा ॥
प्रभुहि दुखी सुनि द्रवत न कोई ❀ काहुइ के उर दया न होई ॥
पढ़ि पढ़ि पोथीं कथहिं सुग्याना ❀ भक्ति भाव नहिं उर कछुआना ॥
हारेउ खोजि कहाँ अब जाऊँ ❀ प्रेम पात्र प्रभु कर कहँ पाऊँ ॥
लखि प्रभु भक्त सु माँगौं लोहू ❀ सोइ कटु वचन कहत करि कोहू ॥

दोहा—रुक्षग्यान सबके हिये, प्रेमी भक्तन कोय ।
देइ रुधिर प्रभु अर्थ जो, मिलै कहाँ अब सोय ॥२४॥

मैं जानेउँ वैष्णव प्रभु हेता ❀ तन मन धन सब देत सचेता ॥
सो सब कहत कशाई येहा ❀ सब कहँ प्रिय अति निजरदेहा ॥

मिलत न कोउ प्रभु भक्त उदारा ❀ देइ रुधिर नाशे दुख भारा ॥
येहि बिधि करत विलाप कलापा ❀ नारद फिरत भरे परितापा ॥
सात पुत्र जो साहुइ दयेऊ ❀ अनायास सोइ मग मिलि गयेऊ॥
भयेउ बिकल सुनि प्रभु दुख काना ❀ कहेउ लेउ लोहू तन प्राना ॥
असकहि गहिकर छुरी शरीरा ❀ प्रभु हित रोंमरोंम धरि चीरा ॥
सब अङ्गनि कर रुधिर निचोरा ❀ नारद कर भरि दीन्ह कटोरा ॥
बोलेउ बहुरि सीघ्र तुम्ह जाऊ ❀ इत उत व्यर्थ न विलम लगाऊ ॥
प्रथमहिं काहे न ममढिगआयेउ ❀ लोहू हित प्रभु अति दुख पायेउ ॥

दोहा—अस्थि चाम को अंग मम, आवै जो प्रभु काम ।
आवहु तौं पुनि लौटि तुम्ह, मिलि हौं मैं यहि ठाम॥२५॥

लोहू देत न दुख तेहि व्यापा ❀ प्रभु कहँ दुख सुनि उर अति तापा ॥
नारद साहस तासु निहारी ❀ अचरज भयेउ हृदय अति भारी॥
रञ्चौ मोह न तन कर कीन्हा ❀ प्रभु हित हरषि काटि सबु दीन्हा॥
तेहि की दशा देखि मुनि ज्ञानी ❀ भगति भावना सकल भुलानी ॥
कोटिन भक्तनि में अजमायेउ ❀ येहि समान नहिं कोउ जग पायेउ॥
धन्य धन्य कहि पद शिरनायेउ ❀ आतुर नारद प्रभु पहँ आयेउ ॥
प्रभु नारद कहँ आवत देखी ❀ मिलेउ लाय उर हर्ष विशेषी ॥
बहुत दिननि पर दर्शन दीना ❀ रहेउ कहाँ मुनि परम प्रवीना ॥
नारद के मन अचरज आवा ❀ तब प्रभु कहि सब भेद बुझावा ॥
सुनु नारद मेरी यह रीती ❀ करौं सदा भक्तन पर प्रीती ॥
अरपहिं जो मोहि तन मन प्राना ❀ डरहुँ सदा तिन्हि ते मति माना ॥

दोहा—आवत देखि सकोपित, तुमहिं दैन मोहिं शाप ।
तेहि लगि करि सुचरित्र यह, नाशेउ मुनि तब ताप॥२६॥

तुम्ह जानेउ साहुइ सुत साता ❀ दीन प्रभुहिं यह झूठी बाता ॥
रुधिर दीन तोहिं पुत्रहु सोई ❀ दयेउ साहु कहँ अपर न कोई ॥

तन मन धन जो ममहित लागी ❀ अरपहिं ते सब विधि बड़ भागी ॥
तिन्हिके बश मैं निशिदिन रहऊँ ❀ सुनु नारद मुनि झूठ न कहऊँ ॥
भावहिं मनहिं करै जो सोई ❀ आज्ञा मेटन हार न कोई ॥
मेटत लिखे अङ्क जो भाला ❀ भय मानत तिन्हि ते यम काला ॥
हमहिं आदि जहँलगि जग रचना ❀ मानहिं सब तेहि जन के वचना ॥
तन मन धन जिन्हि मोपरवारा ❀ तिन्हि की नाव करौं मैं पारा ॥
प्रेम भक्ति बिनु मो कहँ प्रानी ❀ पावत नहिं सपनेउ मुनि ज्ञानी ॥
वेष धारि मम भक्त कहाँहीं ❀ प्रेम हीन मोंहि पावत नाँहीं ॥

दोहा--जिन्हि कहँ तन धन प्राण प्रिय, तिंन्हि कर भजन विवेक।
कर्म धर्म पूजन पठन, फलत न साधन एक ॥२७॥

विनु अर्पे सरवस मोहि प्रानी ❀ पावत नहिं सपनेउ मुनि ज्ञानी ॥
तुमहिं आदि मम भक्त अपारा ❀ गृही विरक्त भरे संसारा ॥
नहिं कोउ दीन्ह रुधिर मम लागी ❀ खोजेउ तुम बहु गृही विरागीं ॥
रुधिर दीन ते कोटिन मांहीं ❀ मिलेउ एक दूसर जग नांही ॥
प्रेम भक्ति कर लक्षण एहा ❀ अरपै मोहिं सर्वस करि नेहा ॥
मम भरोस हिय धारि मुदित मन ❀ जीवहिं जग अति प्रियमोंहिते जन॥
तिन्हि भक्तनिके सब मनकामा ❀ पुरवहुँ मैं सुनु मुनि सुख धामा ॥
प्रेम भक्ति जिन्हि के उर माँहीं ❀ तिन्हि सम प्रिय मोहिं दूसर नाँहीं ॥
द्वादश विधि के भक्त सु मोरे ❀ तिन्हि महँ प्रेमी जन अति थोरे॥
पुनि २ मुनि भाखों तोहिं पाँहीं ❀ मोहिं प्रेमी सम प्रिय कोउ नांहीं ॥

दोहा--द्वादश विधि की भक्ति के, बरणौं सुनहु सरूप ।
धारण करहिं ते मिलहिं मोंहिं, सहित सुप्रेम अनूप ॥२८॥

प्रथम भक्ति वैष्णवी सु येहा ❀ संसकार धारै निज देहा ॥
कण्ठी तिलक मंत्र निज नामा ❀ भुजनि छाप धनु वाण ललामा ॥
संसकार ये पाँच कहावहिं ❀ इन्हि बिनु प्रानी मोहिं न पावहिं ॥

वैश्नव वेष मोहिं अति प्यारा ❀ तेहि विनु भक्त न होय हमारा ॥
वेष विहीन सु वैष्णव कर्मा ❀ करैं होंयँ सब निष्फल धर्मा ॥
दूसर भक्ति सु गुरु सिवकाई ❀ करै कपट छल मान विहाई ॥
गुरु सेवा बिनु मम पद माँहीं ❀ प्रीति प्रतीति होति कछु नाँहीं ॥
तीसरि भक्ति सजातिनि संगा ❀ करत चढ़ै उर अनुपम रंगा ॥
बिनु सत संग सजातिनि केरा ❀ जानत परम प्रभाव न मेरा ॥
चौथी भक्ति सुनो मुनि नाथा ❀ पढ़ै सुनैं मम भक्तनि गाथा ॥
भक्तनि की बानी श्रुति पारा ❀ मम चरित्र मय रहित विकारा ॥

दोहा—भक्तनि के आचरण सुनि, धरि उर दृढ़ तेहि पंथ ।
चलै त्यागि मत वादभ्रम, विधि निषेध बहु ग्रन्थ ॥२६॥

ये सब भक्ति मार्ग महँ बाधक ❀ त्यागहिं मम आराधक साधक ॥
भक्तनि की जो धारहिं टेका ❀ तिनहिं न व्यापहिं विघन अनेका ॥
पञ्चम भक्ति सु खट् शरणागति ❀ षटसम्पतिसहधारहिंसुचिमति ॥
इन्हिकें भेद न जब लगि जानें ❀ तबलगि नारद भक्त अयानें ॥
शरणागति षट सम्पति भेदा ❀ जाने विनु न मिटत भव खेदा ॥
षष्टम भक्ति रटन सियरामा ❀ सब विधि सो दायक मन कामा ॥
सब भक्तिनि की परम प्रकाशक ❀ नामरटन अघओघ विनाशक ॥
नाम रटन मम भक्ति सुहाई ❀ तेहिलगि भक्तिनि बीच सुगाई ॥
श्री सियराम नाम रटनाई ❀ भक्तिसुअनुपम मोंहिं अतिभाई ॥
नाम रटन बिनु भक्ति विचारा ❀ व्यर्थ यथा विधवनि शृङ्गारा ॥
श्री सियराम सुनाम उचारन ❀ सकल सुकृत साधन कर कारन ॥

दोहा—सप्तम भक्ति सरूप मम, बत्तिस दोष विहाइ ।
पूजै विधिवत लायमन, मुदित होय मोंहि पाइ ॥३०॥

सेवहिं तजि बत्तिस अपराधा ❀ जो मोहि तिन्हिको नासहुँ बाधा ॥
भोग राग मम जन्म विवाहू ❀ होरी झूलन आदि उछाहू ॥

करै ससर्द्धा भक्तनि सेवा ❀ धरि अनन्य व्रत तजि वहुदेवा ॥
मम समान मम भक्तनि जानी ❀ मोंहि समेत सेवै जो प्रानी ॥
तिन्हि सन नहिं कछु काम करावैं ❀ अस मम पूजक मुनि मोहिं पावैं ॥
अष्टम भक्ति मोर गुन ग्रामा ❀ गावैं सुनें गुनें वसुयामा ॥
जो जो धर्म कर्म उपदेशा ❀ रामायण महँ लिखे मुनेशा ॥
प्रथम समुझि सतगुरु सन लेई ❀ भली भांति तजि हठ पद सेई ॥
धारन करै विचारि विचारी ❀ पावहिं ते मम पद नर नारी ॥
जो मम लीला के अनुसारा ❀ चलहिं ते पुनि न परहिं संसारा ॥

दोहा—नवम भक्ति मम धाम महँ, करै अखण्ड निवास।
पाप पुन्य परपञ्च तजि, सेवै सहित हुलास ॥३१॥

कोटिनि विघन होंयँ जो भाई ❀ तवहुँ न तजैं धाम सुखदाई ॥
धाम निवासिनि केर प्रसादा ❀ मांगि खाय तजि वाद विवादा ॥
मौन रहै अथवा मम नामू ❀ रटै धाम वसि सुख वशुयामू ॥
मम सरूप लखि तहँके बासी ❀ निन्दै तिन्हैं न धाम उपासी ॥
जो कोउ दुखवै तवहुँ न वोलै ❀ प्रमुदित मन वीथिनि विचडोलै ॥
मछरो सम अनन्यता धारै ❀ येको पलक न धाम विसारै ॥
दशम भक्ति मम मानस पूजा ❀ करै विहाय भरोसा दूजा ॥
बैठि यकन्त सुद्ध करि तन मन ❀ चिन्तै मम चरित्र आँनँद घन ॥
अष्टकुञ्ज विच गुप्त विहारा ❀ करौं सदा मन गुन श्रुति पारा ॥

दोहा—दशधा बारे भक्त मम; लखहिं रसिक शिरमौर।
आत्म समर्पो धरि सुउर, सखी रूप नहिं और ॥३२॥

रहहिं विमल मन ते मम संगा ❀ रसिक धारि आलिनि कं अङ्गा ॥
नर तन ते सु भावना करहीं ❀ कोटिनि विघन होइं नहिं टरहीं ॥
नाम रटन सखि भाव भावना ❀ अष्टकुञ्ज की परम पावना ॥
यह मम सेवा अति निरुपाधी ❀ जानहिं भाविकजन जिन्हि साधी ॥

आत्म ज्ञान विनु मानस सेवा ❀ दुर्लभ जिमि पतितनि गुरुदेवा ॥
नवधा भक्ति यथा विधि साधै ❀ तब दशधा विधिवत आराधै ॥
उपजै उर अनुभव सुखदाई ❀ आतमरूप तब परै लखाई ॥
तव वहिरंग आचरण त्यागै ❀ मानस पूजा में मन लागै ॥
दसधा वारे मानस पूजा ❀ करहिं अखंड काम तजि दूजा ॥

दोहा—करत करत उर मानसिक, सेवा सखी सरूप ।
पावै आतम सुद्ध निज, अजर अखंड अनूप ॥३३॥

आत्म रूप अति सूक्षम भाई ❀ दरसै तब अति सुख सरसाई ॥
नाशै तिहुँ तन कर अभिमाना ❀ जेहिबस सहत जीव दुख नाना ॥
आतम सहज सरूपहि पाई ❀ नित्य विहार मिलै जब आई ॥
तव दशधौ कर अन्तर ग्याना ❀ छूटै सकल भावना ध्याना ॥
प्रेम सरूप होइ यक रंगा ❀ पाय सखी अँग अमल अभंगा ॥
मिलि विहार मम लीला देखै ❀ जीवन जन्म सफल निज लेखै ॥
नित नव प्रेम उमँग उर माँहीं ❀ विहरतममसँगनिशिदिन जाँहीं ॥
प्रेम भक्ति एकादश रूपा ❀ रहित बिकार यहै मुनि भूपा ॥
मम सुख में सुख मानि सदाई ❀ रहहिं सुदित परिकरता पाई ॥
जेहिकहँ ततसुखकहहिं सुजाना ❀ परिकर सोजिन्हिआतम ग्याना ॥

दोहा—सर्बस करिसु समर्पण, प्रेमी जन मम हेत ।
परिकर तनु लहि मोर सँग, बिहरहिं सुख साकेत ॥३४॥

भक्ति यकादश प्रेमा नामा ❀ अतिशयप्रियममुनिअभिरामा ॥
प्रेमा भक्ति हृदय विनु आये ❀ श्री सियराम नाम विनु गाये ॥
कोटिनि साधन साधै कोई ❀ मम परिकरता योग न होई ॥
भक्ति द्वादसी के कछु लक्षन ❀ बरनों नारद सुनहु विचक्षन ॥
भक्ति द्वादसी जब उर आवति ❀ प्रेमहुँ की तव दसा बहावति ॥
तेहि कर दसा जात नहिं गाई ❀ भेद बुद्धि सब देइ नशाई ॥

अन्तरंग वहिरंग अभेदा ॐ मम सम करै नाशि सब खेदा ॥
कोटिनिं वर्ष कर्म जो साधै ॐ तिमि बहु वर्ष ग्यान आराधै ॥
विधिवत नवधा भक्तिसु साधी ॐ पावै तव दसधा निरुपाधी ॥
तव एकादस प्रेमा पावत ॐ आपसहितजनजगहिं भुलावत ॥
प्रेमा ते पुनि परा सु एहा ॐ पाय होत जन मेरी देहा ॥
येहि कर भेद न जानत कोई ॐ जानहिं ते जन मो सम होई ॥

दोहा—वेदसु सास्त्र पुराण मत, कर्म उपासन ग्यान।
श्रवन कथन सतसंग सव, नवधा लगि मुनि जान ॥३५॥

दसधा में छूटहिं सव कर्मा ॐ रहत वेष यक वैश्नव धर्मा ॥
एकादस महँ होइ विसुद्धा ॐ सव धर्मनि ते विमुख विरुद्धा ॥
प्रेम मँगन मन नाँचत गावत ॐ कर्म सुभासुभ ताहि न भावत ॥
पाप पुन्य कर डर नहिं ताही ॐ प्रेमा भक्ति जासु उर आहीं ॥
बहुरि द्वादसी सबके पारा ॐ पावत मुनि मम जन सु उदारा ॥
जो साधहिं ये भक्ति सु द्वादस ॐ मोरकथितविधिवततजिअनरस ॥
सो पावहिं मोहि संशय नांहीं ॐ बारम्बार कहौं तुम पांहीं ॥
द्वादस महँ एकौ दृढ़ धारै ॐ आप तरै भव अपरनि तारै ॥
सब भक्तिनि महँ प्रेम प्रधाना ॐ तेहि विनु होत न आतम ग्याना ॥
द्वादस भक्ति अराधहिं साधक ॐ आत्मग्यान दृढ़ लहहिं अवाधक ॥
आत्मज्ञान विनु सहज सरूपा ॐ लखत न जीव परे भव कूपा ॥
सहज स्वरूप बोध विनु सारा ॐ पावत जीव न मोर विहारा ॥
नित्य विहार मोर जव पावै ॐ तब मुनि आवागमन नशावै ॥

दोहा—द्वादश भक्ति अराधक, साधक अति प्रिय मोर।
करौं साहि तिन्हिकी सदा, नाशि कुसंकट घोर ॥३६॥

द्वादस भक्तिनि कर आरंभा ॐ यहि विधि करैछांड़ि छलदंभा ॥
सब मतबाद कुसंग कुसाधन ॐ तजि सुर करै मोर आराधन ॥

प्रथम चढ़ै मम भक्ति सु मारग ❀ कंठी तिलक धारि श्रुति पारग ॥
गुरुसेवादि भक्ति क्रम क्रम करि ❀ चढ़तजाय विश्वास सुदृढ़धरि ॥
तब नवधा दशधा के पारा ❀ प्रेमा भक्ति यकादश सारा ॥
पावहिं साधक साधन त्यागी ❀ होत सु सिद्ध प्रेम रस पागी ॥
दशधा लगि साधन सँग प्रेमा ❀ रहत साधकनि दायक छेमा ॥
एकादश महँ रूप सु भासै ❀ साधकता साधन दोउ नाशै ॥
एकादशी भक्ति प्रद छेमा ❀ प्रेमरूप केवल गत नेमा ॥
छूटेउ साधन संग मुकामा ❀ प्रेमा में पायेउ विश्रामा ॥
आवा गमन रहित मम धामा ❀ निवसहिंते तेहिमहँ वनि वामा ॥

दोहा–अष्टयाम मम अंग सँग, लागे रहत अखंड ।
ग्यारह वारे भक्त सब, प्रेम सरूप अदंड ॥३७॥

निशिदिनममसँगभोग विलाशा ❀ करतविविधियनिपरिकरखाशा ॥
मिलि मम संग सु मोर सरूपा ❀ होत सु प्रेमी भक्त अनूपा ॥
मोर मिलन की आशा नाशी ❀ भयेउ सदा अँग संग विलासी ॥
विहरत संग ढीठता आवै ❀ सहज प्रीति पर उर सरसावै ॥
रहत न हृदय बनावट कोई ❀ परा भक्ति कर लक्षण सोई ॥
नशै द्वैतता भेदी भेदा ❀ परा भक्ति सोइ परम अखेदा ॥
खान पान रस भोग विहारा ❀ होइ एक मम संग मझारा ॥
हृदय होय यक तन द्वै दरशै ❀ परा भक्ति रस जब उर सरसै ॥
अनहद तासु वचन वर करनी ❀ समुझब कठिन जाय किमि बरनी ॥
कहब सुनब साधन श्रम नासै ❀ परा भक्ति जब हृदय प्रकासै ॥

दोहा–प्रेमाकी परि पक्कता, पराभक्ति सोइ जानि ।
नारद मुनि मैं कहेउँ सब, तुम्हसन भेद बखानि ॥३८॥

परा भक्ति जब जेहि उर आवै ❀ सोइ मुनि मम परि करता पावै ॥
मम सरूप सब परिकर मेरे ❀ बसहिं मोर ढिग मैं तिन्हि नेरे ॥

जड़ जीवनि कल्याण सु हेतू ❀ प्रगटहिं जग सोइ परम सचेतू ॥
जन्म मरन दुख आदि कलेशा ❀ तिन्हैं न व्यापहिं सुनहु मुनेशा ॥
द्वादश भक्तिनि कर उपदेशा ❀ करहिं जनमि जग हरहिं कलेशा ॥
धीर वीर ग्यानी गुण ग्रामा ❀ रटहिं रटावहिं मोर सु नामा ॥
पद्म पत्र इव जग जल माँहीं ❀ रहहिं अचिन्त सोच डर नाँहीं ॥
देह गेह तजि धन परिवारा ❀ प्रेमभक्ति मम करहिं प्रचारा ॥
जिन्हिके गुण कछु प्रथम वखाने ❀ विचरत अवनि मनहुँ मस्ताने ॥
जीवन मुक्त जगत विच सोई ❀ तिन्हकी सरवर करै न कोई ॥

दोहा—जिन्हिते लायेउ रुधिर तुम्ह, ते जन मम अवतार ।
तिन्हि की सेवा संग करि, अधम होंइ भव पार ॥३६॥

देखेउ तुम्ह प्रेमिनि की करनी ❀ कहनि रहनि समुझनि आचरनी ॥
अस भक्तनि कर सँग सिवकाई ❀ प्रेम भक्ति दायक मुनिराई ॥
ये सब तुमहिं सिखावन हेतू ❀ कीन्ह चरित्र करहु चित चेतू ॥
यह प्रसंग जो पढ़हिं पढ़ावहिं ❀ ते सज्जन मम धाम सिधावहिं ॥
करहिं कण्ठ जो पाठ सुजाना ❀ पावहिं मम पद आतम ज्ञाना ॥
द्वादश भक्ति कहीं तुम पाँहीं ❀ तिन्हि कहँ बहु जग जानत नाँहीं ॥
कहि विस्तारहिं ते मम प्यारे ❀ हुइहैं नारद जिमि चख तारे ॥
यह प्रसंग जो तुम्हसन गावा ❀ जड़ जीवनि सुखहित प्रगटावा ॥
पढ़िहैं गुनिहैं सुनिहैं जोई ❀ मम परिकरता पावहिं सोई ॥
मोर उपासक जो नर नारी ❀ तिन्हि कहँ तो यह अति हितकारी ॥

दोहा—समुझहिं सतगुरु करि सु यह, द्वादश भक्ति प्रसंग ।
पैहैं ते मम लोक सुख, अनुपम अकथ अभंग ॥४०॥

मम कृत द्वादस भक्ति अघारी ❀ समुझहिं ते तरिहहिं भव भारी ॥
निन्दहिं ते शठ नरकनि परिहैं ❀ जन्मि जन्मि जग युग युग मरिहैं ॥
नारद कही सत्य सब बानी ❀ समुझहिं विमल सु आतम ज्ञानी ॥

द्वादश भक्ति मोर प्रगटाई ❀ आराधहिं मम जन सुखदाई ॥
प्रेम भक्ति मोहिं अतिशयप्यारी ❀ पढ़ि सुनि येहि पावहिं नर नारी ॥
मम सम्बन्धी सेवक सोई ❀ आज्ञा मोर धरै शिर जोई ॥
अस कहि कृपासिन्धुअरगायेउ ❀ नारद बार बार शिर नायेउ ॥
जय प्रभु दीन बन्धु हितकारी ❀ द्वादश भक्ति कहेउ अति प्यारी
प्रभु विनु यह उपदेश गुसांई ❀ देइ जनन को गुरुकी नाँई ॥
स्वारथ के सव सगे सनेही ❀ प्रभु विनु यह सुख दियेउ न केही ॥

दोहा—द्वादश भक्ति अनूप सुनि, भयउ हृदय अति चेत ।
गयउ मोर सन्देह सव, हे प्रभु कृपा निकेत ॥४१॥

मैं मतिमन्द अबोध कुचाली ❀ प्रभु कृतज्ञ विरुदावलि पाली ॥
बार बार मैं करौं खुटाई ❀ करुणानिधि प्रभु लेत बचाई ॥
झूठे भक्तनि पर यह दाया ❀ तुम्ह विनु को करिहै रघुराया ॥
कबहुँ न मोपर कीनेउँ क्रोधा ❀ सहि दुर्वचन करायेउ बोधा ॥
स्वारथ रत जड़ जीव अचेता ❀ प्रभु हित कारक परम अहेता ॥
एक बार मम उर अभिमाना ❀ भयेउ जीति कामहिं भगवाना ॥
शङ्करहू की वात न मानी ❀ कही यदपि सो अति हित सानी ॥
पुनि प्रभुके ढिग आय अभागा ❀ बोलेउ बचन कुटिल जिमिकागा ॥
तबहुँ न कीन्ह मोर अपमाना ❀ नाना विधि उपदेशेउ ज्ञाना ॥
अति असीम दाया प्रभु कीन्ही ❀ मैं मति मलिन न तबहूँ चीन्हीं ॥

दोहा—पुनि कामातुर होइ सठ, परि हरि नाम ललाम ।
व्याह करन श्री कीन्ह उर, प्रबल चाह दुख धाम॥४२॥

भजन विनाशक नारि निहारी ❀ प्रभु करि कृपा व्याधि सो टारी॥
तेहि कारण प्रभु कहँ करि दापा ❀ दीन्ह मन्द मति मैं अति सापा ॥
प्रभु करुणामय अङ्गीकारा ❀ कीन्ह सहेउ दुख विविध प्रकारा॥
क्षमि सो सकल मोर अपराधा ❀ कीन्ह निबार्न व्याह की बाधा ॥

कीन्हेउ दुष्ट दण्ड को कामा ❀ तेहि पर दया कीन्ह सुखधामा ॥
रञ्चौ कीन्ह न प्रभु उर रोषा ❀ तोखेउ मोहिंसबविधि तजिदोषा॥
पुनि सन्तन के गुण बहु भाखे ❀ सोउ मतिमन्द न मैं उर राखे ॥
कीन्ह कुसेवक पर अति छोहू ❀ बारहिं बार नशायेउ मोहू ॥
अस स्वामी समरथ कहुँ नांहीं ❀ प्रभु समान तिहुँ लोकनि मांहीं ॥
देखे सुनें ईस बहु तेरे ❀ प्रभु स्वभाव के पै सब चेरे ॥

दोहा—मोसम मन्द न नाथ सम, पावन कोउ कहुँ नाँहिं ।
बार बार अघ करत मैं, तुम्ह न धरहु मन माँहिं॥४३॥

केहिविधि करौं विनय प्रभुकेरी ❀ कीन्ह कुचालें में बहु तेरी ॥
अबकी बहुरि कीन्ह बड़ पापा ❀ आयेउँ देन प्रभुहिं इत सापा ॥
देखि साहु के सुत सुख कारी ❀ उपजी हृदय मलिनता भारी ॥
मम प्रति झूठ भाखि भगवाना ❀ दिये पुत्र एहि सात सुजाना ॥
यह बड़ कपट कीन्ह ममसाथा ❀ बाजत प्रभु भगवत सुर नाथा ॥
एक पुत्र मागेउँ प्रभु पांहीं ❀ येहि कारण सो कीनेउँ नांहीं ॥
तेहि लगि देउँ शाप चलि घोरा ❀ पुनि अपमान न करिहैं मोरा ॥
नासौं आजु सकल प्रभुताई ❀ जरा मूल ते सहित सहाई ॥
अस कुबुद्धि उर धरि प्रभु पाँहीं ❀ आवत रहेउँ कोपि मन मांहीं ॥
प्रभु कौतुक निधि दीन दयाला ❀ होन न दीन मोर मुख काला ॥

दोहा—कौतुक कीन्ह कृपाल अति, सुख दायक जन हेत ।
बिनु प्रयास मम कोप हरि, नाथ करायेउ चेत ॥४४॥

जयति अखिल ब्रह्मांडनि नायक ❀ जय अवतारिनि पति सबलायक॥
जयति२ मम स्वामि कृपाला ❀ जय जन पालक दीन दयाला ॥
जयति २ करुणा गुण आगर ❀ जयति सकल शुभ विद्यासागर ॥
जयति भक्त रक्षक रघुबीरा ❀ खलदल दलन जयति रण धीरा॥
जयति सान्ति मूरति सुखदाई ❀ जयति क्षमा सागर रघुराई ॥

जयति भक्त हित बहु तनु धारी ❀ जयति कुसंकट दहन अघारी ॥
जयति अखिल भुवनेश्वर स्वामी ❀ जयति मनोहर अन्तर यामी ॥
जयति सियाबर राम खरारी ❀ जयति हरण संश्रृति भय भारी ॥
जयति महा मङ्गल सुख राशी ❀ जयति जानकी सङ्ग विलाशी ॥
जय महेश मुनि हृदय विहारी ❀ जय सुतन्त्र भक्तनि सुख कारी ॥

दोहा–जयति पतित पावन प्रभो, शरणपाल सर्वज्ञ।
जयति सु गाहक दीन के, रशिक रसज्ञ कृतज्ञ ॥४५॥

जयति नाम रसिकनि के प्यारे ❀ जयति मोर आंखिन के तारे ॥
जयति जयति साकेताधीसा ❀ सर्वोपर ईसन के ईसा ॥
जयति मोर प्रभु प्राण अधारा ❀ प्रेम भक्ति मोहि देउ उदारा ॥
प्रेमी भक्तनि के गुण दीजै ❀ मोर मनोर्थ सफल प्रभु कीजै ॥
कहनि रहनि समुझनि करतूती ❀ प्रेमी भक्तनि केर विभूती ॥
देउ दया करि पात्र बनाई ❀ बार बार मांगौं रघुराई ॥
द्वादश भक्ति केर अधिकारी ❀ करहु मोहि प्रभु शरण तिहारी ॥
द्वादश भक्ति नाथ जो गाई ❀ सो अतिशय मोरे मन भाई ॥
तिन्हिकर मैं करिहौं आराधन ❀ परि हरि लोक वेद मत साधन ॥
प्रेमी भक्तनि में निज नामू ❀ चहहुँ लिखावन जन अभिरामू ॥

दोहा–त्राहि त्राहि प्रभु त्राहि अब, पाहि पाहि कहि पाहि।
परेउ चरण महँ दीन होइ, करहु वेगि प्रभु साहि ॥४६॥

नाथ असाध कीन्ह अपराधा ❀ छमहु कृपा करि सील अगाधा ॥
बार बार दुखयेउ अग्याता ❀ छमहु छमानिधि मम अघत्राता ॥
प्रभु नारदहिं लाइ उर लीन्हा ❀ बहुत भाँति परितोष सु कीन्हा ॥
तुम्ह मम प्रीतम प्राण समाना ❀ करहु न हृदय गलानि सुजाना ॥
प्रेम भक्ति के तुम्ह अधिकारी ❀ अहहु होउ औरउ सुखकारी ॥
द्वादश भक्ति आदि गुण ज्ञाना ❀ प्रेमिन के लक्षण सुख नाना ॥

वसहिं सदा अब तव उर माँहीं ❀ मोर कृपा कछु संशय नाँहीं ॥
सखी भाव उर धरहु अनूपा ❀ प्रेम भक्ति कर यही स्वरूपा ॥
सखी भावना मोहिं अति प्यारी ❀ सब भावनि ते मुनि सुखकारी ॥
यही भावना उर दृढ़ धरहीं ❀ प्रेमी भक्त स्ववश मोहि करहीं ॥
येहिविनुकोउकृत्रनिउँ विधिध्यावैं ❀ कोटिनि जन्म मोहि नहिं पावैं ॥

दोहा—निज सिद्धान्त सु भाखि प्रभु, दीन्ह विपुल वरदान ।
नारद मुनि गुनि धरेउ उर, होइ कृत कृत्य सुजान ॥४७॥

वारवार प्रभु पद शिरनावा ❀ नारद हृदय हर्ष अति छावा ॥
प्रभु प्रिय सखी भाव उर धारा ❀ द्वादश भक्ति सहित सविचारा ॥
श्री रसराज उपासक भयेऊ ❀ नारद अव सब संशय गयेऊ ॥
श्री भगवान गुरू वनि आपू ❀ नाशेउ नारद कर संतापू ॥
विनु भगवान भेद शृङ्गारा ❀ जानैं का जड़ जीव गँवारा ॥
यद्यपि प्रभु सब रसके ज्ञाता ❀ निज शृङ्गार मूर्ति सुर त्राता ॥
जेहि पर कृपा करंत सुखरासी ❀ ताहि वनावत महल उपासी ॥
जीवनि आतम रूप लखावत ❀ आपहि आपन भेद बतावत ॥
लख चौरसी जोनि छुड़ाई ❀ धाम निवास देंत सुखदाई ॥
अस भगवान छाँड़ि जो आँनहिं ❀ भजहिंअधमतिन्हिंवेदवखानहिं ॥

दोहा—नाशत आवा गमन प्रभु, नित्य विहार मिलाय ।
कृपापात्र निज प्रिय जनन, सखी स्वरूप बनाय ॥४८॥

सखी भाव विनु नित्य विहारा ❀ मिलत न उद्यम करहु अपारा ॥
श्री सियराम विहार अनूपा ❀ लखहिं रसिकधरिसखी सरूपा ॥
प्रेमा भक्ति विना सखि भाऊ ❀ आवत हृदय न कोटि उपाऊ ॥
प्रेम भक्ति कर अद्भुत धर्मा ❀ आवत हृदय नशत सब कर्मा ॥
जिमि उनमत्त होंयँ मद माँते ❀ धर्मा धर्म सु लखहिं कहाँते ॥
तिमि प्रभु प्यारे भक्त सु प्रेमी ❀ रहत विसुद्ध न जानहिं नेमी ॥

नखशिख भरेउ सु प्रभु अनुरागा ❀ बिसरेउ कर्म धर्म जप यागा ॥
नाम रूप गुण धाम सु प्यारे ❀ लागत प्रभु के जग उजियारे ॥
मन वच कर्म अचञ्चल होई ❀ सेवत प्रभुहिं परम हित जोई ॥
जिमि पतिव्रता सुघर पति पाई ❀ सेवत मन बच कर्म लगाई ॥
डिगै न होतउ बिघ्न अनेका ❀ सेवति पतिहि सप्रेम विवेका ॥

दोहा-दूषण धारी कोटि किन, दूषैं मिलि यक संग ।
सुनति न सो दृढ़ प्रण तिया, तजति न आपन रंग ॥४६॥

तिमि सियराम उपासक प्रानी ❀ सेवत प्रभुहिं सु मन क्रम बानी॥
बकहिं काक कूकर इव नाना ❀ खलमद मत्त विवश भ्रम माना ॥
आतम बोध न उर उपासना ❀ सूझत जिन यमराज त्रासना ॥
तिनके बचन दुसह दुख धामू ❀ सुनहिं न जे सुमिरहिं सियरामू ॥
जिनहिं न विदित रसनिके भेदा ❀ डोलहिं उदर भरत सह खेदा ॥
तिन्हिके वचन न रसिक सुजाना ❀ करहिं कान लखि अबुध अयाना ॥
विमुखो विपुल भरे संसारा ❀ कृगा पात्र कोउ लाख मझारा ॥
नकटनि केर नगर महँ बासा ❀ करहिं वचाय चतुर निजनासा ॥
आत्म तत्व ग्याता निज रूपा ❀ येहि विधि देखहिं परम अनूपा ॥
जीवातम नहिं यह जड़ काया ❀ बरनी जो मोहिं गुरू लखाया ॥

दोहा-भक्ति सु नाशा जीवकी, ज्ञान विचार सु नयन ।
श्रवण विवेक विराग मुख, शीस शीलता अयन ॥५०॥

अधर अनन्द असोच कपोला ❀ सुधा रूप अनमोल सु बोला ॥
ग्रीव ब्रह्म विद्या मय जोऊ ❀ हृदय सत्य सम दम भुज दोऊ ॥
उदर गँभीर ज्ञान दृढ़ भाई ❀ कटिसु अचलता बरणि न जाई ॥
भाव भावना के दोउ चरणा ❀ येहि बिधिआतमरूप सु बरणा ॥
सकल अङ्ग शुभ गुणमय भाई ❀ भक्ति नाक प्रथमहिं जो गाई ॥
तेहि विनु जीवन नकटा जानौं ❀ तिन्हि के बचन हृदय नहिंआनौं ॥

सुनहु सकल सिय राम उपासी ❀ विनय मोर सब सुख की रासी॥
सेवहु श्री सियरामहिं भाई ❀ सन्सकार गुरु सन करवाई॥
भाव समेत भर्मना त्यागी ❀ भजहुसु प्रभु पद हुइ अनुरागी॥
प्रभु प्रतिकूल विपुल मत भाऊ ❀ तिन्हिमहँफसिजनिजन्मनसाऊ॥
सांची भगति राम की भाई ❀ कलि सियराम सु नाम रटाई॥

दोहा—भटकहु जनि जग लोभ बश, नाशहु जन्म न जाय।
करहु न कारज कपट मय, जानत सब रघुराय॥५१॥

जप तप जोग यग्य व्रत ध्याना ❀ कलि न विराग कर्म श्रुति ग्याना॥
प्रभु रसिकनि की करि सिवकाई ❀ जन्म लाभ लीजै जग आई॥
हठ बश जनि यह मानुष काया ❀ नाशहु व्यर्थ करहु टुक दाया॥
बहुरि न अस तन पैहौ भाई ❀ परिहहु लख चौराशी जाई॥
तब उर होइहै अति पछितावा ❀ नर तन लहि हम कछु न बनावा॥
यहि जुग योग न जप तप ध्याना ❀ कर्म ज्ञान साधन व्रत नाना॥
श्री सियराम नाम कलि मांहीं ❀ एक अधार अपर गति नाँही॥
ज्ञानी भक्त गृहस्थ विरागी ❀ कर्मी धर्मी भोगनि पागी॥
सब मत बादिनि ते कर जोरी ❀ विनती करौं निहोरि निहोरी॥
निज कल्याण हेत हठ त्यागी ❀ मानहु मोर विनय बड़ भागी॥

दोहा—रटहु रटावहु नाम सिय, राम सकल सुखधाम।
बदत सन्त श्रुति शास्त्र बुध, कलि प्रधान यकनाम।५२।

सब मत वादिनि नाम अधारा ❀ अहहि एक कलि करहु विचारा॥
जोगी जती तपी सन्याशी ❀ शैव शाक्त सब देव उपासी॥
देखौ सब निज हृदय विचारी ❀ कलि प्रधान का भजन अघारी॥
हठ परि हरि समुझहु मनमाँहीं ❀ कलि प्रभु नाम छांड़ि गति नाँहीं॥
नाम राम के यद्यपि नाना ❀ राम नाम सब मांहि प्रधाना॥
पक्षपात की बात जो करई ❀ ते सठ घोर नर्क महँ परई॥

शिव नारायण अज हनुमाना ❀ शेष गणप रवि शसि मुनि नाना ॥
राम नाम सब रटत रटावत ❀ राम नाम महिमा सब गावत ॥
अन्त समय सब कहत पुकारी ❀ रामनाम है सत्य अघारी ॥
सत्य नाम नहिं अपर सुजाना ❀ कहहिं ते अवुध अधम अज्ञाना ॥

दोहा--आन युगनि के धर्म जे, ते कलि किये निकाम ।
राखेउ एक अवलम्ब दृढ़, सब कहँ राम सुनाम॥५३॥

आज्ञा वर्तमान युग केरी ❀ माननीयँ सब सुख कीं ढेरी ॥
करहिं प्रजा नृप हुकुम अदूली ❀ भूप चढ़ावत तिन कहँ शूली ॥
अस विचारि जोकलि कुशलाई ❀ चहहु करहु तौ नाम रटाई ॥
श्री सिय राम नाम आराधन ❀ करहु त्याग सवजग के साधन ॥
सबसिधिलहहिं नामरटि प्रानी ❀ सबविधि लाभ न सपनेउ हाँनी ॥
सब मत वादी श्रीसियरामा ❀ रटहु रटावहु नाम ललामा ॥
करहु नकोउ यहिमहँ कछुशंका ❀ रटहु नाम निशि दिन दै डंका ॥
श्री सियनाम सहित लय लाई ❀ राम नाम रटिये सब भाई ॥
दश अपराध वराय सचेता ❀ रटहु नाम पैहहु साकेता ॥
सेवा महँ बत्तिस अपराधा ❀ तिमि सतसँग महँ ब्यासी बाधा ॥
सत सँग सेवा नाम रटाई ❀ करहु सकल अपराध बराई ॥

दोहा--जो सब दोष वराय नित, सेवहिं प्रभु गुरु नाम ।
पावहिं सो जन अकथ सुख, अनुपम अमल ललाम॥५४॥

अपराधन सह सतसग: सेवा ❀ नाम रटन होत न सुख देवा ॥
सतगुरु कृपा प्रकाश मझारी ❀ लिखेउ भेद ये लेउ निहारी ॥
मैं मतिमन्द अवुध अविचारी ❀ नहिं कछु लायक कहहुँ पुकारी ॥
जोकछुलिखेउँ सोप्रभुलिखवायेउ❀ नाम रटाय सकल दरशायेउ ॥
सुद्धा सुद्ध विचार न मेरे ❀ लिखेउ कछुक सो प्रभु के प्रेरे ॥
कविता भेद न एकौ जाना ❀ मैं केहि लागि करौं अभिमाना ॥

प्रभु प्रेरित गुरु कृपा प्रसादा ❀ रटत नाम प्रगटेउ अहलादा ॥
सब जीवनि के हित की बाता ❀ लिखवायेउ सियबर जन त्राता ॥
वैष्णव कुल कहँ अति सुखदाई ❀ एढ़ टेढ़ यह मम कविताई ॥
शुद्ध राम भक्तनि आचरना ❀ आत्म सरूप जथारथ वरना ॥

दोहा–वैष्णव कुल प्रभु प्राण प्रिय, सिय सु इष्ट जेहि खास ।
प्रगटेउ तिन हित ग्रंथ यह, सतगुरु कृपा प्रकास ॥५५॥

पढ़ि सुनि रुमुझि सु वैष्णवभाई ❀ प्रभु अनु कूल होउ सुखदाई ॥
त्यागहु अमल कपट छल माना ❀ लोभ मोह मत्सर अग्याना ॥
काम कोह मद दम्भ अदाया ❀ परिहरि सुमिरहु सिय रघुराया ॥
बड़े कहाय न लघु लघु कर्मा ❀ करहु विचारहु आपन धर्मा ॥
प्रभु प्रतिकूल पदारथ जोई ❀ त्यागहु तेहि अतिप्रिय किन होई ॥
निज निज मन महँ लेहु विचारी ❀ प्रभु प्रतिकूल व्रात का धारी ॥
वैश्नव धर्म सुधारन वारे ❀ ग्रही विरक्त राम सिय प्यारे ॥
तुम्ह कहँ को उपदेशहि ग्याना ❀ सब गुन आगर अहहु सुजाना ॥
जानहु उर सब नीक विकारा ❀ हठ वश तजहु न यह अविचारा ॥
जो वैष्णव कुल धर्म विरोधा ❀ करै कर्म तेहि करहु सुबोधा ॥

दोहा–ढील पोल जबते भई, वैष्णव कुल के बीच ।
तब ते वेष सु साजि अँग, आय घुसे बहु नीच ॥५६॥

असली नकलिनि केर विचारा ❀ करहु कृपा करि संत उदारा ॥
उत्तम ऋषिन केरि जो बाना ❀ जटा विभूति वेष भगवाना ॥
सो दुशाध कलवार चमारा ❀ लालच लोभ लागि अँग धारा ॥
भंजन भाव गत संत कहावत ❀ धनहित विकल दशौदिशि धावत ॥
घर में राँड़ वेष वैरागी ❀ वैठत रेल मांहि बनि त्यागी ॥
पकरे जात खात बहु लातें ❀ सुनत वेष निंदित बहु बातें ॥
तदपि न मानत निलज अभागा ❀ वैष्णव कुलहि लगावत दागा ॥

तिनि कर संग पाइ सुचि सन्ता ❀ पावत दुख अति अकथ अनन्ता ॥
दुष्ट देखि नकलिनि की रचना ❀ दुखवतअसलिनिकहिकटुवचना ॥
हरही सँग करि कपिलौ गाई ❀ सहति सोक सो जानहु भाई ॥
दोहा—भोग लगे भोजन तजत, अमल हेत हठ ठानि ।
तिनके मैं बन्दौं चरण, सदा जोरि युग पानि ॥५७॥
वैशनवकुल अनुकूल सुकाजा ❀ करिये श्री वैशनव महाराजा ॥
भाइहु मोपर कीजै माया ❀ ये आचरन तजहु करि दाया ॥
मोर ब्रिनय सुनि विलग न मानहु ❀ आपन लघु किङ्करि करि जानहु ॥
वैष्णव कुलमहँ लगै न दागा ❀ सोइ सब करहु सहित अनुरागा ॥
जो कछु हित की नीचौ भाखै ❀ सुनि तेहि वचन हृदय धरि राखै ॥
हित की बात सुनत जो रोषत ❀ तिनके उर न कवहुँ सन्तोषत ॥
अस विचारि मोपर जनि रोषू ❀ करिय कृपाकरि तजिये दोषू ॥
एक करत लाजत सब कोई ❀ निन्दत वेषहि दुर्जन जोई ॥
सेवहु सुचि सन्तनि के चरणा ❀ रटि सियराम नाम अघ हरणा ॥
प्रभु प्रति कूल काज परिहरहू ❀ वैशनव वनि अनुचित जनि करहू ॥
दोहा—कमती कबहुँ न परहिं कहुँ, अशन वसन धन माल ।
बिनु मागे पैहहु विपुल, सुमिरत नाम कृपाल ॥५८॥
रहिये प्रभु पर करि विश्वाशा ❀ जासु कहावहु दासी दासा ॥
करिहहिं सो सब पूरन कामा ❀ विस्वम्भर जेहि प्रभु कर नामा ॥
रटत सदा सिय रामहिं जोई ❀ मुक्ति भुक्ति तेहि कहँ जग होई ॥
कही यथारथ परिहरि क्रोधा ❀ हृदय विचारहु होय सु बोधा ॥
सतगुरु कृपा प्रकाश प्रकाशा ❀ पढ़त करै उर सह विश्वासा ॥
सांची वात सुनत कटु खारी ❀ लागत अवुधनि अति भय कारी ॥
समुझै तौ सत अमिय समाना ❀ सत्य वचन अति मीठ वखाना ॥
पढ़ि सुनि वचन बिचार सुकीजै ❀ एका एकी दोष न दीजै ॥

हित अनहित सब लेउ विचारी ❀ आदि अन्त लगि ग्रन्थ निहारी ॥
भय प्रद रोचक अपर यथारथ ❀ स्वारथ मय परमार्थ अकारथ ॥
दोहा—कर्म कि ज्ञान उपासना, सारा सार विचारि ।
निन्दा अस्तुति करिय पुनि, ग्रन्थहि नयन निहारि ॥५९॥
समुझौ जो निज धर्म विचारी ❀ तौ सब हित की बात उचारी ॥
सतगुरु कृपा प्रकाश सु माँहीं ❀ वचन यथारथ गड़ बड़ नाँहीं ॥
सुनि समुझहिं जो आतम ज्ञानी ❀ निन्दहिं मूढ़ मलिन अभिमानी ॥
अनुभव ज्ञातनि कहँ यह पोथी ❀ सुखदायक अतिअवुधनिथोथी ॥
श्री सियराम नाम गुण धामा ❀ तिनकी महिमा लिखी ललामा ॥
सुचि सन्तनि के लक्षन करनी ❀ लिखी बहुरि नीचनि आचरनी ॥
भक्ति ज्ञान वैराग विधाना ❀ वेष प्रभाव कहेउ विधि नाना ॥
गुरु महिमा निज आतम रूपा ❀ शरणागति षट भेद अनूपा ॥
षटसम्पति के लक्षण गायेउ ❀ बहुविधि गूढ़ाशय प्रगटायेउ ॥
यह उपासना रहस सु गूढ़ा ❀ लखहिं उपासक संत न मूढ़ा ॥
दोहा—पढ़ि सुनि गुनि उर उपजिहै, अनुपम ज्ञान विचार ।
श्री सियराम सु नाम में, हुइहै प्रीति अपार ॥६०॥
नाम प्रसंगावली बखानी ❀ मति अनुरूप सु समुझहिं ग्यानी ॥
द्वादश ये प्रसंग सुखराशी ❀ पढ़हु सुनहु सियराम उपासी ॥
सावधान मति करि पुनि देखौ ❀ पक्षपात की बात न लेखौ ॥
एकवार पढ़ि सुनि नहिं बूझत ❀ वचन अर्थ सूझतही सूझत ॥
वैष्णव कुल की महिमा बरनी ❀ यहिमहँ शुचिसन्तनिआचरनी ॥
सुनिगुनि निजकुल केर सँम्हारा ❀ करहु कृपा करि तजहु विकारा ॥
नीच अवुध वैश्नव कुल माँहीं ❀ बढ़त जाँयँ कोउ खोजत नाँहीं ॥
माँगौं हाथ जोरि वरदाना ❀ अवुध वैश्नवनि देउ सुग्याना ॥
जेहि ते वैश्नव कुल अपमाना ❀ होइ न सो सब करहु सुजाना ॥

सतगुरु कृपा प्रकाश मझारी ❀ यह सु प्रसंगावली उचारी ॥
रसिकनि की सम्पति सुखदाई ❀ यह पुस्तक प्रभु प्रेरि लिखाई ॥
वैष्णव भाइन की यह नीती ❀ पढ़ि सुनि समुझहिं सन्त सप्रीती ॥
निन्दहिं अबुध भेद बिनु जानें ❀ जे पामर भोगनि अरुझानें ॥

दोहा—मन मुख मानी विषयरत, गत प्रभु भजन अबोध ।
बिनु बूझें ते देखि यह, ग्रन्थ करहिं उर क्रोध ॥६१॥

जिन्हिकहँमिलेउनसतगुरु ग्यानी ❀ भाविक भक्त उपासक ध्यानी ॥
तिन्हिके मैं धरि चरण मनाऊँ ❀ बार बार निज चूक छमाऊँ ॥
करहु कोप जनि भ्रात वृथाई ❀ वचन अर्थ समुझहु चितलाई ॥
पढ़त सुनत यहि ग्रन्थहिं नीके ❀ खुलिहहिंविमलनयन दोउहीके ॥
पढ़हिं पढ़ावहिं करिंह प्रचारा ❀ तिन पर द्रवहिं सुराम उदारा ॥
रस ज्ञाता रशिकनि के चरणा ❀ बन्दौं बार बार भ्रम हरणा ॥
छमि अपराध देउ वर येहू ❀ बढ़ौ नाम सन सहज सनेहू ॥
रटौं सदा सियराम सु नामू ❀ यह वर देउ सन्त सुख धामू ॥
जय सियराम नाम ध्वनि प्यारी ❀ करहुँ करावहुँ मंगलकारी ॥
यह वरदान देउ करि दाया ❀ कीजै बालक जानि सुमाया ॥
पढ़ि सुनि समुझहु कोप न कीजै ❀ नाम रटन बर मो कहँ दीजै ॥

दोहा—अपर न चाहौं कबहुँ कछु, नाम रटन यकतार ।
माँगौं पुनिपुनि दीजिये, रसिक सुसन्त उदार ॥६२॥
कामी कपटी कुटिल मैं, नीच मलीन विचार ।
मिथ्यावादी निन्दकी, सब अवगुन भण्डार ॥६३॥
जन्म लीन द्विज वन्समहँ, तजि तेहि कुलको कर्म ।
अच्युतगोत्री भयेउ प्रभु, धारिसु वैष्णव धर्म ॥६४॥
राखौ तेहि को लाज अब, रटवावहु सियराम ।

रसिकनि ते विनती सु यह, जूठनि देहु ललाम ॥६५॥
जूठनि भोजन जीर्णपट, रटन नाम सियराम ॥
चाहौं रसिक सुजननते, बसिवो मिथिला धाम ॥६६॥
जयति रसिक वैष्णव सकल, जय सियराम सु नाम ।
जयति जयति हनुमान प्रभु, पूरक जन मन काम ॥६७॥
त्रयदसमें सु प्रसंग में, प्रभु संकर संवाद ।
भयेउ सु जेहि विधि कहहुँ अब, समुझत मिटै विखाद॥६८॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम प्रचारक श्री वैष्णव धर्मावलम्बी परहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरणजी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत प्रेम भक्ति प्रार्थना बरणानो नाम द्वादश प्रसंगः शुभम् ॥ १२ ॥

जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

❀ श्रीः ❀

प्रश्नोत्तर प्रसंगारम्भः ॥१३॥

श्रीसतगुरवे नमः । श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥ श्री हनूमते नमः ॥

दोहा ।

जयति नाम सियराम गुरु, जय सियराम कृपाल ।
जयति सन्त सियराम प्रिय, जय श्री हनुमत लाल॥१॥
दया करहु अपराध छमि, निज अबोध जन जानि ।
नाम रटन दृढ़ देहु सब, जन्म जन्म सुख दानि ॥२॥
प्रश्नोत्तर सु प्रसंग यह, जेहि विधि प्रेरेउ हीय ।
तेहि विधि प्रभु लिखवाइये, सबहि सुखद कमनीय ॥३॥
हृदय हाथ मन बुद्धि चित, अबल सकल गुणहीन ।
सिय सिय बरबर बखसु मोहि, देहु कृपा करि पीन ॥४॥
रटों नाम तव जीभ ते, कर ते लिखों प्रसंग ।
प्रेम लतहि वरदान यह, दोजै श्री सियरंग ॥ ५ ॥

एक समें साकेत सुधामा ❀ कनक भवन महँ श्रीसियरामा ॥
बैठे सुख कामद तरु छाँही ❀ बेदी पर दोउ दै गर बाँहीं ॥
स्यामल गौर अङ्ग अति पावन ❀ सुखमा बहु रति काम लजावन ॥
सुभग चंद्रिका क्रीट ललामा ❀ असित लटैं लटकें प्रद कामा ॥
करन फूल कुण्डल झलकाँहीं ❀ जटित महा मनि बरनि न जाँहीं ॥
नासा मनि लटकत नथ हीरा ❀ हेरत हरत हृदय की पीरा ॥
पीत तिलक सुभ भालनि सोहत ❀ लाल विन्दु श्री सह मन मोहत ॥

करुना कृपा भरे चहुँ लोचन ❀ भौंहैं वंक ताप त्रय मोचन ॥
हँसनि चारु द्युति दसनन केरी ❀ हरति जननि उर केरि अँधेरी ॥
कलित कंठ कठी मनि माला ❀ हार हमेल सु हीरनि जाला ॥
चुरीं बलय अङ्गद भुज बाजू ❀ सजी मनोहरि अनुपम साजू ॥

दोहा--सारी नील सु जरकसी, कंचुकि तन अनुहार।
जामा पटुका पीत तस, मोतिनि गुथेउ किनार ॥६॥

कटि किंकिनि लहँगा पट पियरा❀ राजत दोउ दिसि भावत हियरा॥
भूषन युत चहुँ चरन सुहावन ❀ सोभा कहि न जाय अति पावन॥
संग सखी गन सुभग सयानी ❀ सेवहिं अमित कर्म मन बानी ॥
पुरुष भाव धारेउ जो कोई ❀ तिन्हि कर तहाँ जाव नहिं होई ॥
नाम शुशीला सखी सरूपा ❀ विरचि शम्भु सादर सुर भूपा ॥
प्रभुहिं मिलन हित श्री साकेता ❀ गयेउ मुदित मन उमा समेता ॥
कृपा पात्र शिव सिय बर केरे ❀ नाम रटत गवनेउ प्रभु नेरे ॥
परेउ चरण लखि सियबर जोरी ❀ उमा सहित उर प्रीति न थोरी ॥
प्रभु मुशिकाय शिरनि कर फेरे ❀ बैठन कहेउ हर्षि निज नेरे ॥
सवहिं यथा विधि भेटि महेशू ❀ बैठेउ निकट सुनन उपदेशू ॥
रुख लखि जोरि पानि शिरनाई ❀ बोलेउ बचन सम्भु सुखदाई ॥

दोहा—यद्यपि प्रभु के नाम बहु, अधिक एक ते एक।
नाथहि लागत कौन प्रिय, सो हम रटैं सटेक ॥७॥

बोलेउ सियबर सह अनुरागा ❀ प्रश्न तुम्हार मोहि प्रिय लागा ॥
सकल नाम मम अधम उधारन ❀ राम नाम पै सबके कारन ॥
इष्ट देव मम राम सु नामा ❀ महिमा अकथ अनूप ललामा ॥
राम नाम मम प्राण अधारा ❀ इन्हिके बल नाशौं महि भारा ॥
जपौं सदा मैं राम सुनामू ❀तिन्हिसम प्रिय मोहि देह न धामू॥
राम नाम आधीन सदाँई ❀ रहहुँ यथा तन कर परिछाँई ॥

रामनाम सुमिरहिं प्रति स्वासा ❀ बसौं सदा मैं तिन्हि के पासा ॥
कामिहिं प्रिय जिमि सुन्दरनारी ❀ रामनाम तिमि मोहिं पुरारी ॥
लोभिहि धन जिमि अज्ञहि देहा ❀ तिमि मम राम नाम पर नेहा ॥
कृषी किसानहिं राजहिं राजू ❀ सत संगिनि जिमि सन्त समाजू॥
पतिवर्तनिपति तिमि प्रिय मोहीं ❀ लागहिं नाम कहौं सत तोही ॥

दोहा—योगिनि योग पियार जिमि, भोगिनि कहँ प्रिय भोग ।
राम नाम तिमि मोर प्रिय, सब सुख धाम निरोग ॥८॥

गेहिनि जिमि ग्रह काज सु प्यारे ❀ तजि न सकहिंभरिजन्मविचारे॥
मातनि पूत चेटकिनि भूता ❀ पापिनि जिमि प्रिय पाप बहूता ॥
रागिनि राग इकन्त विरक्तनि ❀ प्रियजिमिमोरभक्तिममभक्तनि ॥
तिमि श्रीराम नाम मोहि प्यारे ❀ करहुँ न कबहुँ हृदय ते न्यारे ॥
सुरनि सुगन्ध द्विजनि निज कर्मा ❀ प्रिय लागत जिमि धर्मिनि धर्मा ॥
शिसुनि दूध बर भूषन नारिनि ❀क्रय विक्रयजिमिप्रिय व्योपारिनि॥
असवारनि जिमि प्रिय गज घोरे ❀ राम नाम तिमि प्रीतम मोरे ॥
जड़नि सुजीवन जाति जवाला ❀ परपञ्चिनि पर पंच विशाला ॥
प्रिय लागहि जिमिमीनहिं पानी ❀ तिमि मम रामनाम सुखदानी ॥
खगनि पंख प्रिय संखसु सन्तनि ❀ ज्ञानिनि ग्यान सुमान महन्तनि ॥
आचारिनि जिमि वहु आचारा ❀ प्रियअनुभविनिसुअनुभवसारा ॥

दोहा—सूरनि कहँ जिमि समर प्रिय, क्रूरनि दोष पराय ।
राम नाम तिमि मोर प्रिय, कहूँ कहाँ लगि गाय ॥९॥

विद्यार्थिनि सुविद्या प्यारी ❀ माली गननि यथा फुलवारी ॥
रजकनि धूप चूप प्रिय चोरनि ❀ बारिद नाद सुप्रियजिमिमोरनि ॥
स्वाति चातकनि चन्द चकोरहिं ❀ प्रिय तिमि रामनाम मन मोरहिं ॥
मान सरोवर मोती हंसनि ❀ प्रियजिमिमौतिसरुज निर्वंशनि ॥
खलनि उपाधि भलनि निरुपाधी ❀ मुनिनिमनन तप ध्यान समाधी ॥

नरकिनि नशा विवादिनि वादा ❀ प्रियलागतजिमिस्वादिनिस्वादा ॥
राम नाम तिमि प्रीतम मेरे ❀ वारम्बार कहत हौं टेरे ॥
ममपद विमुखनि मलिन अहारा ❀ मलिननिमलिनवासजिमिप्यारा ॥
हठशीलनि हठ सठनि कुबचना ❀ दम्भिनि प्रिय जिमि झूठी रचना ॥
दुष्ट जननि प्रिय हिन्सा जैसे ❀ राम नाम मम प्रीतम तैसे ॥
श्रोतनि कथा यथा प्रिय लागै ❀ बक्तनि मन जिमि अर्थनि पागै ॥

दोहा—बहुमत प्रिय मनमुखनि जिमि, तजि मम वैश्नव धर्म ।
राम नाम प्रिय मोर तिमि, सब विधि दायक नर्म ॥१०॥

असुरनि प्रियनिन्दा जिमिनिद्रा ❀ खोजत फिरहिं सदा पर छिद्रा ॥
दुर्जन जीवनि जिमि मद मासा ❀ परितियगमनविषय की आशा ॥
आतम ज्ञाननि में जिमि प्यारा ❀ नाम मोर तिमि प्राण अधारा ॥
सुजन सुबोधनि वैश्नव बाना ❀ प्रिय लागहिं निज प्राण समाना ॥
शुचि सेवक जिमि स्वामिहिं प्यारे ❀ सेवहिं जो तन मन धन वारे ॥
ज्वारिनि जुवाँ खेलारिनि खेला ❀ प्रिय लागहिं जिमि गुरुहिंसु चेला ॥
अपकारिनि जिमि प्रिय अपकारा ❀ उपकारिनि उपकार सुप्यारा ॥
दातनि प्रिय जिमि भक्त हमारे ❀ तिमि श्री राम नाम मोहिंप्यारे ॥
राम नाम मम सदना धारा ❀ राम नाम सारहु कर सारा ॥
राम नाम के बश मैं रहहूँ ❀ सत्य बचन शिव तुम्हते कहहूँ ॥
राम नाम आज्ञा अनुसारी ❀ सकल काज मैं करहुं पुरारी ॥

दोहा—राम नाम मम देवता, पूज्य परम सुख रूप ।
ईस पतिन के ईश अपि, सब धर्मनि के भूप ॥११॥

राम नाम मम जप तप ध्याना ❀ धर्म कर्म व्रत पूजन दाना ॥
मातु पिता प्रिय स्वामि शनेही ❀ सुजन सहायक आतम देही ॥
धन विद्या सतगुरु सुखदाई ❀ सब सब विधि मम नामहिं भाई ॥
असन वसन सुख भोग विलाशा ❀ प्रभुता पर ईशत्व प्रकाशा ॥

अखिल लोक पति कर अधिकारा ❀ राम नाम मोहिं दीन उदारा ॥
सर्वोपरि मोहि भाषहिं वेदा ❀ गावहिं सब मम कीर्ति अखेदा ॥
मोर अन्श अवतार अपारा ❀ प्रगटहिं सदा हरन महि भारा ॥
लखौ सुनहु जो मोर प्रभावा ❀ सो सब मैं रटि नामहिं पावा ॥
राम नाम रटना प्रतिश्वासा ❀ करौं अखंड त्यागि सब आसा ॥
नामहिं केर प्रताप सकल सुख ❀ पायेउँ मैं नहि सपनेउँ कछु दुख ॥
जो कोउ राम नाम करि नेहा ❀ रटै होइ सो मोरिहि देहा ॥

दोहा--एक गुप्त मत अपर मम, तुम्ह सन कहहुँ सप्रेम ।
सिया नाम सँग रटहिं जे, राम नाम करि नेम ॥१२॥

पावहिं ते थोरेहि दिन माँहीं ❀ सकल शिद्धि कछु संशय नाँहीं ॥
सतगुरु खोजि सु वैष्णव कोई ❀ श्री सियराम नाम रत होई ॥
तेहिसन लेइ वैष्णवी दिच्छा ❀ संसकार पाँचो सह शिक्षा ॥
बहुरि सनेम नाम सियरामहिं ❀ रटै त्यागि सब संशय कामहिं ॥
जप तप तीरथ साधन नाना ❀ धर्म कर्म व्रत कथित पुराना ॥
परिहरि सब सियराम उचारै ❀ आप तरै सो औरनि तारै ॥
विधि हरि हर पद पावै सोई ❀ रटै सदा सियरामहिं जोई ॥
राम नाम सिय नाम समेता ❀ रटि पावै मोहि पुर साकेता ॥
जितना नाम रटै लय लाई ❀ उतना सुख पावै अधिकाई ॥
जो चाहैं सो नाम दयाला ❀ सिय सँग रटत देइं जन पाला ॥
सिया नाम सँग रामहिं जोई ❀ रटै सदा ते मो सम होई ॥

दोहा–कहेउँ कछुक श्री नाम की, महिमा अकथ अपार ।
रटत रटत दरशावहीं, नामहिं हृदय मझार ॥१३॥

सुनि शिव सखी समाज समेता ❀ नाम महत्व भयेउ चित चेता ॥
सब सियराम नाम रत भयेऊ ❀ बार बार पद पंकज नयेऊ ॥
जोरि पानि पुनि पुनि शिरनावा ❀ शंकर अनिर्वाच्य सुख पावा ॥

नाथ कृपा करि गुप्त प्रभावा ❀ श्री सियराम नाम कर गावा ॥
अब निशि दिन हम श्री सियरामहिं ❀ रटहिं रटावहिं तजि सब कामहिं॥
सुनि श्री नाम महातम गूढ़ा ❀ भयेउ मोर मन रटना रूढ़ा ॥

दूसरा प्रश्न ।

नाम रटन कर प्रभु अधिकारा ❀ केहि केहि कहँ सो कहहु उदारा॥
नाम मन्त्र महँ केतिक भेदा ❀ कहहु नाथ नाशक भव खेदा ॥
सुनि शिव प्रश्न बिहँसि रघुराई ❀ बोले बचन शनेह बढ़ाई ॥
नाम मंत्र एकै गति दाता ❀ सर्वोपरि दोउ दोउ जन त्राता ॥
नाशक महापाप अघ भारे ❀ नाम मन्त्र दोउ जग उजियारे ॥

दोहा—भानु प्रभा इव सङ्ग दोउ, रहत सदा सुख रूप ।
नाम मंत्र जहँ लगि जिते, ये सब के शिर भूप ॥१४॥

राम मन्त्र श्री राम सु नामा ❀ एक रूप दोउ प्रद बिश्रामा ॥
कोटिनि मन्त्र लेइ श्रुति माँहीं ❀ जन्म मरन दुख विनशत नाँहीं ॥
सकल ईश अवतार अपारा ❀ राम मन्त्र सब जपहिं उदारा ॥
देवि देव गण ऋषि मुनि भारी ❀ राम मन्त्र सब जपहिं पुरारी ॥
राम मन्त्र ते सब गति चाहत ❀ जपत यथा विधि नेम निबाहत ॥
मन्त्र रूप सब ईशनि केरे ❀ राम मन्त्र आधीन घनेरे ॥
तिन्हि के शरण भये सुख थोरा ❀ राम मन्त्र भव बन्धन छोरा ॥
अपर मन्त्र बिनु जाने कोई ❀ लियेउ तजै तउ निर्वल जोई ॥
राम मन्त्र पुनि लेइ न हानी ❀ करि दूसर गुरु आतम ज्ञानी ॥
राम मन्त्र सुनि कान बहोरी ❀ करै आन गुरु तौ बड़ि खोरी ॥
राज शिंहासन जिमि सेवक गन ❀ बैठारे कोउ अबुध मूढ़ मन ॥

दोहा—राम मन्त्र गुरुदेव सन, सुनि बिसरत जो कोय ।
ते जनु पारस पाय सठ, देत गाँठि ते खोय ॥१५॥

गुरु न होयँ तौ बहुरि सु गुरुकरि ❀ सुनें मंत्र पुनि दोव दूरि धरि ॥

मन्त्र अर्थ जप विधि सब भेदा ❀ सीखि जपै तब नाशहिं खेदा ॥
राम मन्त्र जबलगि नहिं काना ❀ सुनत सहत दुख तबलगि नाना ॥
कोटिनि मन्त्र लेइ गुरु करि करि ❀ तउ न तरै भव जन्मैं मरि मरि ॥
भव तारक श्री राम मन्त्र वर ❀ सुनतै श्रवण हरत नरकनि डर ॥
तिमि श्रीराम सु नाम कृपाला ❀ रटत नशावत सब जग जाला ॥
देवि देव ईशनि के नामा ❀ रटै करोरनि तजि धन धामा ॥
राम नाम बारक सम नाँहीं ❀ शक्ति सु सब नामनि के माँहीं ॥
नाम मंत्र दोउ परम सु समरथ ❀ रटत जपत नाशत अघ अनरथ॥
जब लगि लेत न राम मंत्रवर ❀ तब लगि द्रवत न नाम जननि पर॥
मंत्र हींन कोउ कितनउँ नामहिं ❀ रटै न पावत उर विश्रामहिं ॥

दोहा–अस विचारि श्री नामके, जापक जीव सुजान ।
राम मंत्र गुरुदेव सन, सुनै यथा विधि कान ॥१६॥

मन्त्र हृदय धरि जपै कछुक नित ❀ रटै नाम पुनि करि अस्थिर चित
युगल मंत्र उर नाम युगल मुख ❀ जेहिजनपहँकतहुँनतेहिकहँदुख॥
मंत्र सु नाम प्रभाव प्रतापू ❀ एकै हरत उभय त्रय तापू ॥
नाम मंत्र महँ भेद न भाई ❀ अगम सुगम कछु कहौं बुझाई ॥
मंत्र सविधी जपत सिधि देई ❀ सोइ सुख नाम अविधि रटि लेई॥
नामहिं अगम मंत्र के रूपा ❀ भयेउ सुगम ते उभय अनूपा ॥
मंत्र अगम अति सुगम सुनामू ❀ जपै जाहि जो लगै ललामू ॥
जेन केन विधि नाम उचारै ❀ आपु तरै औरनि कहँ तारै ॥
मंत्र उपाधि सहित जपकरई ❀ होय शिद्धि तो आपहि तरई ॥
कारण नामहिं मंत्र सु कारज ❀ यह बर भेद बूझिहैं आरज ॥
सब विधि सुगम नाम सियरामू ❀ मंत्र अगम यद्यपि सुखधामू ॥

दोहा–अब बरणौं अधिकार प्रिय, नाम मंत्र युग केर ।
सब कहँ अहइ न शंक कछु, नर तिय छोट बड़ेर ॥१७॥

श्रद्धावन्त होय जो कोई ❀ नाम मंत्र अधिकारी सोई ॥
नाम मंत्र महँ जेहि रुचि नाँहीं ❀ तेहि सम नीच न कोउ जग माँहीं॥
श्वपच विप्र यवनादिक कोई ❀ पाप रहित वा पातकि होई ॥
नाम मंत्र करि श्रद्धा लेई ❀ संशय तजि सतगुरु तेहि देई ॥
अधम उधारण नाम मंत्र वर ❀ लेत देत इन्हि कहो कवन डर ॥
श्रद्धावन्त होय कोउ प्रानी ❀ नाममंत्र तिन्हि अति सुखदानी ॥
श्रद्धाहीन विप्र बुध वन्ता ❀ नाम मंत्र तेहि देत न सन्ता ॥
श्रद्धावन्त सूद्र नर नारी ❀ नाम मंत्र के ते अधिकारी ॥
मंत्र कूप शुचि नाम सु सरिता ❀ परम तत्व जल दोउ महँ भरिता॥
करहि पान मज्जहिं दोउ बीचा ❀ श्रद्धावन्त सुजन नहिं नीचा ॥
मंत्रहु ते अति नाम सुगमतर ❀ नदी कूप की समुझो पटितर ॥

दोहा–रोक न काहुइ कहँ पियत, मज्जत दोउनि माँहिं ।
पापी जन जड़ रोग वश, एकउ निकट न जाँहिं ॥१८॥

श्री सियराम नाम अमिधारा ❀ वहत निमज्जहिं सन्त उदारा ॥
पापिनि अगम मंत्र अरु नामू ❀ मम पदविमुखनि जिमि ममधामू॥
यद्दपि अइहि सब कहँ अधिकारा ❀ नाम मंत्र महँ रहित विचारा ॥
पापी जन निज रूप विसारा ❀ अन अधिकारी बने गँमारा ॥
१ २ ३ ४ ५ ६
नाम मंत्र मम रूप सुधामा ❀ लीला वैष्णव वेष ललामा ॥
सबहिं सुलभ सब कहँ गति दाई ❀ सेवत सब अघ ओघ नशाई ॥
कामादिक षट कठिन विकारा ❀ तिन्हिते ये षट सब विधि पारा ॥
अबुध अधम इन्हि तजि बहुपंथनि ❀ चढ़े मोह वश पढ़ि बहु ग्रन्थनि ॥
सो जिमि पूरण असन सु पाई ❀ तजि तेहि माँगत टूक रिराई ॥
वेद पुराण सु शास्त्रनि केरे ❀ धर्म कर्म शुभ अशुभ घनेरे ॥
ते सब उन्ह जीवनि हित लागी ❀ जे न भजहिं मोहि सर्वस त्यागी ॥

दोहा–नाम मंत्र वर वेष मम, रूप सु लीला धाम ।

इन्ह समान नहिं धर्मकोउ, साधन प्रद विश्राम ॥१९॥

मोर धर्म यह वेदनि पारा ❀ धारहिं जो जन सहित विचारा ॥
बैठि विमाननि मम पुर माँहीं ❀ आवहिं ते कछु संशय नाँहीं ॥
अपर धर्म स्वर्गादिक लोका ❀ देत न नाशत संशृति शोका ॥
वर्णाश्रम के धर्म अनेका ❀ विलग विलग अधिकार विवेका ॥
द्विज कर काम सूद्र नहिं करई ❀ सूद्र काम नहिं द्विज आचरई ॥
यहि विधि बँधी वेद की रीती ❀ जो न करै तौ होय अनीती ॥
विधि निषेध मय सब श्रुति धर्मा ❀ मित सुख प्रद सोउ संयुत भर्मा ॥
हठिरअबुध पचत तिन्हि माँहीं ❀ नाशत जन्म तरत भव नाँहीं ॥
मोर धर्म सबते वलवाना ❀ मम समान सुनु सम्भु सुजाना ॥
सवहिं सुलभ नाशक भव रोगा ❀ विधि निषेध ते रहित अशोगा ॥
महा महा पापी अघराशी ❀ भये नाम रटि परम सुपासी ॥

दोहा—अस विचारि जे चतुर जन, सब धर्मनि परित्यागि ।
रटैं रटावैं नाम मम, महा मोह निश जागि ॥२०॥

जाति कुजाति होय कोउ प्रानी ❀ रटै नाम सियराम सु बानी ॥
अभय होय अघ ओघ नशाई ❀ मम पुर लहै निशान बजाई ॥
मोहि भजै पुनि डर केहि केरा ❀ डरपै तो वह भक्त न मेरा ॥
मोहि भजै ते छोट न होई ❀ ताके डर डरपै सब कोई ॥
नीच होय अति ऊंच सु जबते ❀ रटै नाम वनि वैष्णव तबते ॥
यहि विधि नाम मन्त्र अधिकारी ❀ सकल जीव जग श्रद्धाधारी ॥
कहेउ कछुक तुम बूझेउ जोई ❀ अब का कहौं कहहु भय खोई ॥
सुनि स समाज परम सुखपावा ❀ पुनिपुनिसबचरणनिशिरनावा ॥
चितवहिं सब शंकर मुख ओरी ❀ बूझहिं कछु सुचि कथा वहोरी ॥
शीस नाय शिव विनती कीन्हीं ❀ नाथकृपाकरिशुचि सिखदीन्हीं ॥
सहस अमी सम श्री मुख वानी ❀ तृप्ति न होत सुनत सुख दानी ॥

तीसरा प्रश्न ।

दोहा–वैष्णव वेष विहीन जे, भगति करत प्रभु केरि ।
ते जन पावहिं कवन गति, नाथ कहहु मोंहिं फेरि ॥२१॥

भजन भेद पुनि उभय प्रकारा ❀ गुप्त प्रगट को प्रभुहिं सु प्यारा ॥
सुनि बोले मुशिकाय सियावर ❀ प्रश्न तुम्हार प्रिया अति सुन्दर ॥
वेष विहीन भगति जो मेरी ❀ करत न होतिसुगति तिन्हिकेरी ॥
मोरे भक्तनि केरि चिन्हारी ❀ मुख्य सु वैष्णव वेष अघारी ॥
वेष हीन ब्रह्मा किन होई ❀ भजनउँ करत नप्रिय मोहिसोई ॥
वैष्णव वेष सु प्रिय अति मोरा ❀ तेहिविनु भगत कहाय सु चोरा ॥
वैष्णव वेष सु अंग न धारहिं ❀ भजहिं मोहिं ते लहत न सारहिं ॥
झूठे साँचे भक्तनि केरी ❀ वैष्णव वेष चिन्हारि बड़ेरी ॥
साँचे भक्त सु प्राण समाना ❀ वेष धारि मोहि भजहिं सुजाना ॥
झूठे वेष हींन त्रिपुरारी ❀ भक्त कहावहिं ते अविचारी ॥
तेहि कर कहुँ विश्वास न कीजै ❀ मोर तत्व तेहि भूलि न दीजै ॥

दोहा–पूज्य सकल जग होय जो, भजै रैन दिन मोहिं ।
वेषहीन तेहि ठग समुझि, तजिय बुझाऊँ तोहिं ॥२२॥

भजन करै मम वेष न धारै ❀ तेहिलगि ताहि भजन नहिं तारै ॥
भजन मोर चेतन सुखदाई ❀ सवहिं देत गति परम सुहाई ॥
वेष विना वह भजन सु मोरा ❀ द्रवत न कवहूँ बन्दीं छोरा ॥
जेहि कहँ भजन दिवावत जोई ❀ तेहि जन कहँ हम देत सु सोई ॥
भजन वेष जेहि कहँ प्रिय मानें ❀ ते मोहि पावहिं जीव सयानें ॥
भजन वेष की साखि विहीना ❀ देत न मैं गति कबहुँ प्रवीना ॥
जीवनि मम दिशि लावन हेता ❀ प्रगटेउँ मैं यह भजन सचेता ॥
तेहि कहँ वेष सहायक दीना ❀ उभय हरैं भव रोग प्रवीना ॥

उभय एक इक एक विहाई ❀ होत न विलग प्रीति अधिकाई ॥
प्रति प्रति विम्ब समान सनीती ❀ भजन वेष महँ परम सुप्रीती ॥
वेष विहीन न भजन देत गति ❀ भजन हीन नहि वेष करत रति ॥

दोहा—अस जिय जानि सुभक्त मोहिं, भजहिं वेष अँगधारि ।
आपु तरैं भव सिन्धु ते, देइँ सु औरनि तारि ॥२३॥

मूरख मूढ़ इन्द्रि आरामी ❀ मन मुख कपटी कादर कामी ॥
सुनत न सीख सुसन्तनि केरी ❀ बकत बाय आपनी घनेरी ॥
तन सुख रत दम्भी हठ शीला ❀ सुनी न गुनी कबहुँ मम लीला ॥
सोइ अज्ञान कहहिं यह वानी ❀ वेष लिये बिनु नहिं कछु हानी ॥
मनते भगत बनें जो कोई ❀ तौ का प्रभु जानत नहिं सोई ॥
अन्तर यामी प्रभु सब जानत ❀ वेष लिये का लाभ बखानत ॥
मन की कण्ठी छाप सु टीका ❀ धरि हम भजन करत सियपीका ॥
बाहिर तिलक छापकेहि लागी ❀ धारें यहि विधि बकत अभागी ॥
मम कर की बाँधी मरयादा ❀ टारन चहहिं ताहि बकि वादा ॥
कंठी तिलक आदि मम बाना ❀ ताहि निवारन करत अयाना ॥
झूठे भगत कहावत मेरे ❀ विषयाशक्त मोह मद घेरे ॥

दोहा—साँचनि की पहिचान यह, वेष निशान बजाय ।
धारैं अँग श्रद्धा सहित, गुरु सन लाज विहाय ॥२४॥

मन मुखता सठता हठ त्यागै ❀ लेइ सु वेष भजन रस पागै ॥
तब पावै मोहिं भक्त सु मोरा ❀ जन्म मरन भय नाशौं घोरा ॥
नतरु वेष बिनु लिये अपारा ❀ करै भजन भव तरै न भारा ॥
यह मरयाद सनातन केरी ❀ चलि आवति दृढ़ बाँधी मेरी ॥
मोर निकट आवन हित चोखा ❀ राज मार्ग यह सरल अधोखा ॥
वेष हीन जहँ जो गति पाई ❀ सो मरयादा बाहिर भाई ॥
मरन समय मम नाम उचारी ❀ अकि करनी कोउ कीन्ह सु भारी ॥

तेहि हित निज महिमा दिशि जोई ❀ देउँ सुगति यह नीति न कोई ॥
राज मार्ग ते जो चलि आवत ❀ तिन्हि समान मोहि ते नहिंभावत॥
सो गति जुआँ खेल की नाई ❀ धोखे कर है काम सदाई ॥
वेष धारि विधिवत जो कोई ❀ गति पावत सो लहहिं न सोई ॥

दोहा—जिमि कोउ नृप पर नारि पर, रीझि वनावै जोय ।
पूरै सकल मनोर्थ पै, व्याहो सम नहिं होय ॥ २५ ॥

गुप्त नारि राजा की जानी ❀ तेहिकर अदब करत सब प्रानी ॥
पै व्याही नृप रानि समाना ❀ तासु प्रभाव न होत सुजाना ॥
तिमि विनु वेष भगत जग मेरे ❀ मन बच क्रम माया के चेरे ॥
विधिवत वेष सु गुरु सन लेई ❀ भजहिं मोहिं तिन्हि सम नहिं तेई॥
विनु वरदी चपरास सिपाही ❀ होत न जिमि मन ते जो चाही ॥
चपरासादि सु चिन्ह विहीना ❀लखि न करत कोउ अदब प्रवीना॥
विनु चपरास भूप के पासा ❀ जाय न सकत दास बनि खासा ॥
वेष रहित तिमि भगत हमारे ❀ झूठे मनमुख बने विचारे ॥
मनके मोदक जिन्हि प्रिय लागत❀ तिन्हि कीभूख कवहुँ नहिंभागत॥
मनते चाहहिं करन विवाहा ❀ वर कन्या तौ मिटै न दाहा ॥
मातु पिता विधिवत जेहि साथा ❀ देत विवाह बिकै तेहि हाथा ॥

दोहा—मनते कन्या बरि सु बर, प्रीति करै तेहि होय ।
कुलटा नारि कहाय जग, भली कहैं नहिं कोय ॥२६॥

मनमुख राजा राज नशावै ❀ उभय लोक महँ अपयश पावै॥
मनमुख काम करै जो कोई ❀ तेहि की गति सपनेउँ नहिं होई ॥
मनमुख जीवनि के शुभकर्मा ❀ नाशत नाम रटे जिमि भर्मा ॥
मनमुख भजनी वेष विहीना ❀ पावत सपनेउँ गति न प्रवीना ॥
गुप्त प्रगट जो भजन प्रभाऊ ❀ बूझेउ सो अब कहौं सचाऊ ॥
गुप्त प्रगट दोउ भजन सु साँचा ❀ नाशत उभय घोर भव आँचा ॥

जो विचार युत साधै कोई ❀ उभय लोक तिन्हि कहँ सुख होई
बिना विचारे भजन सुकर्मा ❀ होत अधर्म न नाशत भर्मा ॥
जिमि रोगी मनमुखी दवाई ❀ करै न कबहुँ कुरोग नशाई ॥
बाढ़ै विथा अधिक अधिकाई ❀ वैद्य विना रुज कबहुँ न जाई ॥
तिमि भव रुज की उभय दवाई ❀ गुप्त प्रगट मम भगति सुहाई ॥

दोहा—सतगुरु वैद्य सबोध सन, बूझि सु तेहि अनुकूल ।
करै ससंयम भजन तव, नशै त्रिविध भव शूल ॥२७॥

पोथिनि महँ चहुँ युग के धर्मा ❀ लिखेउ न गुरु बिनु नाशतभर्मा॥
तिन्हि कहँ पढ़ि पढ़ि मनमुख प्रानी❀ करत कष्ट बहु सहि हैरानी ॥
करत योग जप तप कोउ ध्याना ❀ साधन साधत वहुविधि नाना ॥
करत कर्म कोउ पढ़ि पढ़ि वेदा ❀ यज्ञादिक नहिं जानत भेदा ॥
कोउ देवनि की पूजा ठानें ❀ तेहि कहँ उत्तम भजन बखानें ॥
वर्तमान युग की प्रभुताई ❀ तेहिकर धर्म न तिन्हैं लखाई ॥
कहहुँ कछुक चहुँ युग के धर्मा ❀ सुनि गुनि जीव सु पावहिं नर्मा ॥
जेहि युग कर जो धर्म प्रधाना ❀ माननीयँ सोइ सवहिं सुजाना ॥
मनमुख जीव सु गुरु विनु नाना ❀ करत जोग जप तप व्रत दाना॥
पोथिनि पढ़ि २ झगरत पंडित ❀ करहिं योग जप तप व्रत खंडित ॥
पूजनादि अपराध समेता ❀ करत होय तेहि लगि न सुचेता ॥
गुप्त प्रगट पढ़ि पोथिनि माँही ❀ करत भजन सिधि पावत नाँहीं॥

दोहा—चहुँ युग केर सु धर्म के, ज्ञाता सतगुरु हीन ।
करत मनमुखी कर्म वहु, पढ़ि पोथिनि मति पीन ॥२८॥

वर्तमान युग कर जो धर्मा ❀ समुझि सु गुरु सन करें सु कर्मा ॥
तौ सिधि पावहिं लहहिं न हानी ❀ कर्मी धर्मी पंडित ज्ञानी ॥
योग ध्यान जप तप आचारा ❀ ये सब सतयुग के व्यवहारा ॥
सकल जीव निष्पाप सुकर्मी ❀ होत स्वयं सतयुग सब धर्मी ॥

दीर्घायू अस्थी महँ प्राना ❀ होत परा वानी कर ज्ञाना ॥
चारिउ चरण धर्म के पूरे ❀ रहत तात सतयुग महँ रूरे ॥
आपन मोर रूप के ज्ञाता ❀ होत जीव सब सतयुग ताता ॥
बाधा विघ्न रहित मम ध्याना ❀ करत रहत सब हृदय सुजाना ॥
अन्तर बाहिर भजन सु अर्था ❀ करत सदा सब जीव समर्था ॥
तब त्रेता युग दूसर आवत ❀ तासु प्रभाव अखिल जग छावत॥
ध्यानादिक सतयुग के धर्मा ❀ जात सकल इक रहत सुकर्मा ॥

दोहा—सत्य चरण जो धर्म कर, टूटत रहत सु तीन ।
सौच-दया-अरु-दान पुनि, होत अवस्था छीन ॥२९॥

प्राण मांस गत होत सुज्ञाना ❀ जात हृदय मद मोह समाना ॥
अन्तरङ्ग बहिरङ्ग सु कर्मा ❀ लगत करन सब जीव सभर्मा ॥
पस्यन्ती वानी ते जापा ❀ करहिं कछुक उर व्यापत तापा ॥
लागहिं होंन विघ्न वहुतेरे ❀ शक्ति हींन जन होत घनेरे ॥
पुनि आवत तीसर युग द्वापर ❀ निज परताप प्रचारत घरघर ॥
राजस तामस रत सब लोगा ❀ होत आयु लघु देह सरोगा ॥
प्राण चाम महँ करत निवासा ❀ होंन लगति मसकनि ते त्राशा॥
कामादिक व्यापत उर माँहीं ❀ ग्यान विरागादिक गुन जाँहीं ॥
सत्य सौच दुइ चरण सुहाये ❀ नशत धर्म के द्वापर आये ॥
सब धर्मनि तजि पूजा प्यारी ❀ लगति सुरनि की जीवनि भारी॥
कृतयुग त्रेता के कहुँ कोऊ ❀ करत धर्म निवहत नहिं सोऊ ॥

दोहा—सिद्ध सु वाणी मध्यमा, द्वापर में परधान ।
तेहि सन मंत्रादिक जपहिं, गुरुमुख भक्त सुजान ॥३०॥

आराधहिं जन सुर करिपूजा ❀ द्वापर धर्म कर्म नहिं दूजा ॥
पुनि प्रगटत कलिकाल करालहिं ❀ तिहुँ युग केर धर्म धरि घालहिं ॥
सतयुग त्रेता द्वापर धर्मा ❀ डाटि भगावत सब सुभ कर्मा ॥

फिरहिं सशंकित जहँ तहँ भागत ❀ अघ औगुन अपार जग जागत ॥
वैर विरोध ठानिजन झगरत ❀ ईर्षा द्वेष दशहु दिशि बगरत ॥
लोभी लम्पट लोल लबारा ❀ होत लोग नाशत सु विचारा ॥
काम क्रोध मद मोह कपट छल ❀ लोभ दम्भ पाखंड प्रबल दल ॥
मत्सर झूठ मूढ़ता माना ❀ सब के उरनि करत अस्थाना ॥
बुद्धि मलीन करत सब केरी ❀ छावति भीतर परम अँधेरी ॥
भागत ज्ञान विवेक विरागा ❀ धीरज धर्म कर्म अनुरागा ॥
वाहिर भीतर पापहि पापा ❀ भावत जननि जरत त्रय तापा ॥

दोहा—चोरी जुआ जवाल वहु, सीखत परतिय गौन ।
खाँयँ मांस मद पान करि, करै कर्म सुभ कौन ॥३१॥

तन तजि प्राण अहारनि माँहीं ❀ जात मरन कर निश्चै नाँहीं ॥
विषयाशक्त जीव कलि माँहीं ❀ लखिसुभसाधनसकलविलाँहीं ॥
जो कोउ जहँ तहँ करै सु काजा ❀ तिन्हि पर कोप करै कलिराजा ॥
धर्म केर त्रय चरण सुहाये ❀ सत्य सौच अरु दया नशाये ॥
बैल सरूप धर्म कर भाई ❀ रहत एक पग दान सहाई ॥
पाप पयोनिधि महँ सब प्रानी ❀ बूड़त कलियुग मन क्रम बानी ॥
पूर्व धर्म जो सुभ श्रुति गावत ❀ सपनेउ सुद्ध न करि कोउ पावत ॥
कलि अनन्य मम नाम सु केरा ❀ रुचत न ताहि प्रपंच घनेरा ॥
विप्र रूप सतयुग तेहि ध्याना ❀ रहेउ परम प्रिय साधन नाना ॥
मानत रहेउ सु ज्ञान प्रधाना ❀ नाम रूप मम व्याज समाना ॥
वहुदिन महँ अति कष्ट कराई ❀ देत रहेउ जीवनि गति भाई ॥

दोहा—ज्ञान गुमानी जानि तेहि, त्रेता क्षत्री रूप ।
पठवउँ जग यग्यादि सो, परचावत बनि भूप ॥३२॥

नाम रूप कुछ मोर प्रचारत ❀ कर्म पहार शीस लै धारत ॥
तन धन नाशि बिपुल दुख पाई ❀ लहत जीव गति कोउ कोउ भाई ॥

नाम रटे विनु सो नहिं मोहीं ❀ पावत सत्य कहौं शिव तोहीं ॥
सो तजि राखेउ कर्म प्रधाना ❀ तेहि लगि सोउ न मोहिं सुहाना ॥
पठवउँ पुनि तीसर युग द्वापर ❀ नाम रूप परचार करन बर ॥
वैस रूप सो पूजा केरी ❀ खोलहि जाय ❀दुकान घनेरी ॥
नाम थोर पूजा वहुतेरी ❀ लगत करावन जीवनि घेरी ॥
करि करि कष्ट सुजन दिनराती ❀ पावहिं गति जो मोहि न सुहाती ॥
पूजा केर न सब कहँ ज्ञाना ❀ कठिन धर्म यह वेद बखाना ॥
सुर स्वभाव जाने विनु कोई ❀ पूजै तौ अपराधी होई ॥
पुनि सव कर अधिकारहु नांही ❀ अवतारनि की पूजा मांहीं ॥

दोहा–सबविधि जीवनि अगम अति, सेवा धर्म निहारि ।
नाम रटावन हेत मैं, पठयेउँ कलिहि प्रचारि ॥२३॥

सूद्र वर्ण कलियुग मम दासा ❀ केवलि जाहि नाम की आसा ॥
मुख में मधुर बैखरी वानी ❀ तेहि सन रटै नाम सुख दानी ॥
श्रीसिय राम नाम अघहारी ❀ रटत अखंड पुकारि पुकारी ॥
नाम अनन्य परम कलिराजा ❀ रटत रटावत परि हरि लाजा ॥
गुप्त भजन मख ध्यान समाधी ❀ नाशेउ कलियुगलखिसउपाधी ॥
तिहुँयुग केर कठिन उपचारा ❀ दुख प्रद लखि जीवनि सब टारा ॥
परचारेउ सियराम सुनामा ❀ देश देश घर घर पुर ग्रामा ॥
कर्मी धर्मी ग्यान गुमानी ❀ घायल कीनेउ वेद पुरानी ॥
निज निज मन की सबको उजानत ❀ नीक विकार तदपि हठ ठानत ॥
हृदय निरोग न काहुइ केरा ❀ राखेउ कलियुग बीर बड़ेरा ॥

❀ देवतावतारों की पूजा रूपी दुकाने दोनों लोकों में जीवोंको कल्यान दाता होती हैं, निंदनीयँ नहीं हैं, नर्कि जीव तौ सूधो वात को उलटी पुलटी समुझि निंदा कियाही करते हैं, जहां २ पूजा की सामग्रीमिलती है, तथा पूजा करने का ग्यान मिलता है, वे पूजा कोही दुकाने तौ कहीं जाती हैं ?

जो कोउ हठ वश करै सुकर्मा ❀ विघ्न प्रेरि नाशै तेहि धर्मा ॥
दोहा—कहत रटो सियराम मुख, कँठी तिलक सुधारि ।
जाय मिलो सिय राम तें, मोर राज जन झारि ॥३४॥

मोर राज्य कोउ कष्ट न कीजै ❀ केवल श्री सियराम रटीजै ।
त्यागहु हठ मम सीख सुमानहु ❀ नाम रटन कर दृढ़ प्रण ठानहु ॥
जो न मानिहैं सीख हमारी ❀ तौ दुख पैहहिं सब नर नारी ॥
तिहुँ युग की गति सह परधामा ❀ देहौं सबहिं रटौ सिय रामा ॥
सुलभनाम तजि सुभगतिलागी ❀ करत कष्ट मम राज अभागी ॥
साधन करि सुरलोकनि जैहौ ❀ राम नाम रटि सियवर पैहौ ॥
जात न जहँ ज्ञानी वैरागी ❀ कर्म धर्म जप तप व्रत रागी ॥
केवलि जो सियराम उचारैं ❀ सोइ सियराम धाम पगु धारैं ॥
येहिविधिकलियुगसबहिंसिखावत ❀ केवलि नामहि रटत रटावत ॥
तेहिकारण कलिअति प्रियमोही ❀ लागत सत्य कहौं शिव तोही ॥
नाम जापकनि सम मोहिं प्यारा ❀ नहिं कोउ तीनउँ लोक मझारा ॥
दोहा—कलि कलियुग के भक्त मोहि, अति प्रिय जो रत नाम ।
तजि तिन्हि के अपराध सब, पुरवौं सब मन काम ॥३५॥

गर्जहिं नाम उचारहिं गावहिं ❀ रटहिं रटावहिं ते मोहिं पावहिं ॥
सकल विधान भजन के जेते ❀ नाम रटन पर वारिय ते ते ॥
सकल भजनि वर भजन समेता ❀ प्रिय न नाम जापक जन जेता ॥
ध्यान समाधि यज्ञ व्रत पूजा ❀ नाम रटन सम सुखद न दूजा ॥
गुप्त भजन मानसी सु सेवा ❀ नाम रटन सम नहिं सुख देवा ॥
जहँ लगि साधन वेद बतावत ❀ नाम रटन समता नहिं पावत ॥
निन्दा नाम रटनियनि केरी ❀ करहिं दिखावहिं नयन तरेरी ॥
तिन्हि कहँ मैं धरि काजसरूपा ❀ मारि गिरावहुँ रौरव कूपा ॥
नाम रटनियनि की रखवारी ❀ करौं सदा मैं धनु शर धारी ॥

श्री सिय राम रटनियनि केरी ❀ सेवा सकल सुखनि की ढेरी ॥
सेवत नाम रटनियनि जोई ❀ ते मोहिं पावहिं शङ्क न कोई ॥

दोहा—श्री सियराम सु नाम मुख, रटत रटावत, जोय ।
हटत न तनु कटि कटि गिरै, मोहि परम प्रिय सोय ॥३६॥

प्रगट सुनाम रटन मोहिं प्यारी ❀ सब भजननि ते अति त्रिपुरारी ॥
सुनि शिव सह समाज हरषायेउ ❀ प्रगट भजन वर भेद सु पायेउ ॥

चौथा प्रश्न ।

नाय शीस बहु विनय सुनाई ❀ औरउ कछु बूझौं सुखदाई ॥
कण्ठी तिलक वेष अँग धारी ❀ ग्रही विरक्त पुरुष वा नारी ॥
रटत न नाम न नाम जापकनि ❀ सेवत सुनत न नाम कथामनि ॥
धारेउ वेष न भजन सुहाई ❀ तिन्हिकीगति प्रभु कहिय बुझाई ॥
सुनि बोले सियवर हरषाई ❀ कहहुँ सुनहु सो मन चितलाई ॥
वैष्णव वेष धारि जो नामहिं ❀ रटत न परम सुलभ सुखधामहिं ॥
सो जिमि वरदी नृप चपरासा ❀ पहिरि न करै काम कछु दासा ॥
भजन विहीन सु वेष उदासा ❀ लगै यथा जल केर बतासा ॥
यथा भ जन विनु वेष मलीना ❀ तथा वेष श्री भजन विहीना ॥
मैंसियबिनु जिमि मोविनु सीया❀ रहहिं उदास संभु निज हीया ॥

दोहा—विद्या विनु नर नारि जिमि, नृपति यथा विनु अयन ।
सन्त सुज्ञान विचार विनु, काजर विनु तिय नयन ॥३७॥

सुन्दर तन विनु बसन शृङ्गारा ❀ पति व्रता शिर जिमि विनु वारा ॥
ऊर्द्ध पुण्ड विनु यथा लिलारा ❀ भट जिमि फीको विनु हथियारा ॥
वर्णाश्रमी यथा विनु कर्मा ❀ वेष हीन जिमि वैष्णव धर्मा ॥
सन्ध्या विनु चौबीसो मुद्रा ❀ विप्र वेद विनु सेवा सूद्रा ॥
फीक भक्ति विनु शुभ आचर्णा ❀ तिमि श्रुति वेष भजन विनु वर्णा ॥

विनु वैराग यथा सन्यासी ❀ ब्रह्मचर्य विनु योगाभ्यासी ॥
मनमुख भाव सुगुरु विनु फीका ❀ तथा भजन विनु वेष अनीका ॥
विनु करनी की कथनी जैसे ❀ वेष भजन विनु जानहु तैसे ॥
अशन लवन विनु दशन सुनाशा ❀ फीको सो मुख लगै उदासा ॥
पुरुष नपुन्सक वाँझ सुतीया ❀ तिमि विनु भजन वेष कमनीया ॥
विनु अनुभव कविताई फीकी ❀ यथा रसोई विनु गो घी की ॥

दोहा–सहर नदी विनु तीर्थजिमि, विनु शुचि सन्त निवास ।
वैष्णव वेष सु भजन बिनु, तेहि विधि लगत उदास ॥३८॥

संसकार पाँचहु मम जैसे ❀ फीके येक येक विनु तैसे ॥
ठाकुर बटुआ विनु शुचि सन्ता ❀ फीक यथा कामिनि विनु कन्ता ॥
मन्दिर जिमि मूरति विनु सूनो ❀ बनिक उदास सु बुद्धि विहूनो ॥
बाग सुमन माली विनु फीको ❀ भजन विना तिमि वेष अनीको ॥
नदी नीर विनु घाट तलावा ❀ नगर सफाई विनु घर छावा ॥
मोर उपासक विनु सम्बन्धा ❀ फीको जिमि पंडित द्विज अन्धा ॥
कुलवन्ती तिय जिमि विनु लाजा ❀ धर्महीन जिमि धनिक समाजा ॥
धन विनु कुटुम सुमन विनुकाजा ❀ तथा भजन विनुवैष्णव साजा ॥
व्यर्थ अर्थ विनु जिमि पढ़नाई ❀ तिमि सुवेष विनु भजन सहाई ॥
गुरु गुरता विनु यथा मलीना ❀ तथा वेष वर भजन विहीना ॥
मम चरित्र श्री नाम विहाई ❀ सन्त सभा जिमि सोह न भाई ॥

दोहा–वैष्णव धर्म विहीन जिमि, विपुल पन्थ मत ज्ञान ।
फीके तेहि विधि भजन विनु, वेष बड़ाई मान ॥३९॥

विरवा वेष भजन वर घेरा ❀ सब प्रकार रक्षक तेहि केरा ॥
वेष भजन विनु दूगर भाई ❀ जिमि लघु बालक विनु पितुमाई ॥
राजा वेष भजन तेहि राजू ❀ बरषा भजन सु वेष अनाजू ॥
यहि विधि जानहु भजन वेषकर ❀ अमल अचल सम्बन्ध परस्पर ॥

एक येक विनु सोहत नाँहीं ❀ भजन वेष समुझहु मन माँहीं ॥
भजन करत वरु वेष न धारहिं ❀ ते न कवहुँ पावहिं भव पारहिं ॥
विनु केवट की जेहि विधि नाई ❀ केहि विधि परले पार सु जाई ॥
तथा वेष विनु भजन सहाया ❀ जानहु तार वृक्ष की छाया ॥
भजन वेष दोउ मोर सरूपा ❀ धारन करत हरत भव धूपा ॥
तारन तरन हरन सव दूषन ❀ भजन वेष दोउ भक्ति विभूषन ॥
भजन वेष विनु भक्ति न होई ❀ भक्ति हींन प्रिय मोहिं न कोई ॥

दोहा—श्री सियराम सु नाम की, रटन भजन शिरमौर ।
वेष सत्य तिमि वैष्णवी, तेहि सम वेष न और ॥४०॥

यही भजन वर वेष सु धारी ❀ मम समीप आवहिं नर नारी ॥
कोटिनि पाप किये किन होई ❀ सर्व धर्म तजि पापी कोई ॥
भजन वेष यह धारन मोरा ❀ करै सु गुरु सन वन्दी छोरा ॥
हुइ अनुकूल शूल सव नाशहिं ❀ अनुभवादिगुन हृदय प्रकाशहिं ॥
सब संशय तजि भजन सु वेषा ❀ धारत नाशहिं कर्म कु रेखा ॥
अपर धर्म करि मोहिं न कोई ❀ पावत जन विधि सम किन होई ॥
भजन वेष मम जब लगि नाँहीं ❀ धारत तवलगि अघ न नशाँहीं ॥
सर्व धर्म तजि भजन सु वेषा ❀ धारत नशै पाप कर लेखा ॥
पाप कपावत पापिनि के उर ❀ भजन वेष हित करत सु सतगुर ॥
अमित जन्म की पुन्य होय जब ❀ भजन वेष मम धारहिं जन तब ॥
पापिनि के उर थर थर काँपत ❀ भजन वेष लखि दाँती चाँपत ॥

दोहा—पापी भजन सु वेष ते, डरपत भाजत दूरि ।
सुकृती जन धारन करहिं, जानि सु जीवन मूरि ॥४१॥

वेष भजन गुरु सन लै त्यागै ❀ तासु ठिकान न नरकौ लागै ॥
कोटिनि जन्म सु कर्म कमावै ❀ भजन वेष विनु मोहिं न पावै ॥
भजन वेष हित करत न देरी ❀ जिन्हैं मिलन की इच्छा मेरी ॥

जिन्हैं न काल दंड की त्राशा ❀ मन बच क्रम इन्द्रिनि के दाशा ॥
तिन्हें न वेष भजन मम भावत ❀ ज्ञान भयेउ पर विलम लगावत॥
अब अव करत मरत तेहि बीचा ❀ पावत दुर्गति सबते नीचा ॥
वेष भजन जिन्हि कहँ प्रिय नाँहीं ❀ महा नीच सब नीचनि माँहीं ॥
भजन वेष दोउ भक्ति सुलोचन ❀ हरन पाप त्रय ताप विमोचन ॥
भजन वेष जिन्हि पै न प्रवीना ❀ तिन्हिकी भक्ति सुलोचन हीना ॥
लोचन हीन भगति विनु कामा ❀ जड़वत जानत सब नर बामा॥
भगति मोरि सेवा कहँ कहहीं ❀ वेष भजन विनु नहिं कोउ लहहीं

दोहा–भजन वेष कर कहेउँ मैं, सत्य शनेह प्रताप ।
सुनि गुनि जो धारहिं सु उर, ते न तपहिं त्रय ताप ॥४२॥

सुनि शिव सादर सीस नवावा ❀ सभा समेत परम सुख पावा ॥

प्रश्न पाँचवाँ ।

पुनि शंकर बोले मृदुबानी ❀ औरउ कछु बूझौं सुखदानी ॥
भलो बुरो सब प्रभुहिं करावत ❀ पुनि केहि लागि जीव दुख पावत
एक कहत सबते प्रभु न्यारा ❀ अगुन अलेप अतनु अविकारा ॥
एक कहत प्रभु नीक करावत ❀ बुरे कर्म जन आप कमावत ॥
केहि कर बात सत्य रघुराया ❀ कहहु बुझाय नाथ करि दाया ॥
सुनि बोले हिय हरषि कृपाला ❀ कोटि अमिय सम बचन रसाला॥
भलो बुरो जो प्रभु के शीसा ❀ धरहिं ते अवुध अज्ञ गौरीशा ॥
सिशुनि अग्नि बीछी दुख दाता ❀ धरन सिखावति कबहुँ न माता ॥
आपहि धरि सिशु अति दुख पावै ❀ जननिहिं मिथ्या दोष लगावै ॥
नीक विकार करन को ज्ञाना ❀ चेतन में राखेउ भगवाना ॥

दोहा-बुरे भले दोउ कर्म कहँ, साँनि रचेउ संसार ।
सो सब मोर सु खेल यह, नहिं कोउ पावत पार ॥४३॥

सब योनिनि महँ नर तनु भूपा ॥ राखेउ चेतन परम अनूपा ॥
चेतनहूँ में तीनि सु भेदा ॥ राखेउ गुप्त न जानहिं वेदा ॥
इक अग्यानी ज्ञानी दूजा ॥ तीसर भक्त करै मम पूजा ॥
तीनिउँ चेतन मोंहिं सुप्यारे ॥ जिमि मातहि निज पुत्र दुलारे ॥
इक अबोध बालक की नाँई ॥ वही कहत सब करत गुसाँई ॥
भले बुरे कर ताहि न ज्ञानहिं ॥ करै आप दूपै भगवानहिं ॥
भले बुरे दोउ कर्म अजानें ॥ करहिं अबुध बालक मन मानें ॥
खेलहिं नाना खेल अनेरे ॥ जिन्हि महँ दुख सुख भरे घनेरे ॥
यदपि मातु पितु बरजत रहहीं ॥ हितकी बात सदा तेहि कहहीं ॥
हित अनहित निज ज्ञान न तेही ॥ तेहि लगि सुनत न सीख सु केही ॥
ताड़तहूँ नहिं मानत मूढ़ा ॥ समुझत वचन भेद नहिं गूढ़ा ॥

दोहा—बुरे भले दोउ कर्म करि, बालक रहित विचार ।
काटहिं पुनि निज कर बयो, भलो बुरो संसार ॥४४॥

भोगत जब निज कर्म कमाये ॥ ईशहिं देत दोष तब जाये ॥
सोइ अज्ञान कहत यह बाता ॥ करवावत सब कर्म विधाता ॥
तेहि लगि ते नाना दुख पावत ॥ प्रभुहिं मृषा जे दोष लगावत ॥
दूसर बालक कछु सग्याना ॥ मातु पितहि अति सुखद सयाना ॥
मध्य अवस्था शील स्वभाऊ ॥ मानत पितु आज्ञा सहचाऊ ॥
अनुचित उचित न करत विचारा ॥ सो शिसु पितहि प्राण सम प्यारा ॥
कहहिं मातु पितु जोइ जोइ बाता ॥ करत पुत्र सो सोइ सुख दाता ॥
नीक विकार काम कछु होई ॥ आज्ञा विनु न करत कछु सोई ॥
थर थर पितु डर काँपत रहही ॥ देखि स्वभाव सुपितु सुख लहही ॥
तेहि सन पितु निज उरकी गोई ॥ भाषत बात प्रेम बश होई ॥
गुण पितु के समुझत निज दोसू ॥ सब विधि तेहि पितु मातु भरोसू ॥

दोहा—तेहि विधि भक्त सुमोंहि प्रिय, तिन्हि सन मैं निजभेद ।

भाखौं सब अति गूढ़हू, जाहि न जानत वेद ॥४५॥
मम सेवक प्रिय मोर सु मरमू ❀ जानत ठीक ठीक गत भरमू ॥
ते मेरे मैं तिन्हके संगा ❀ खेलौं सदा सकल रस रंगा ॥
जिन्हिके केवल मोर भरोसा ❀ चिन्तहिं ममगुण आपन दोसा ॥
निरत नाम मम लीला माँहीं ❀ धर्म कर्म की रुचि उर नाँहीं ॥
मम बल अकड़े रहत सदाहीं ❀ रटहिं नाम काहुइ न डराहीं ॥
करहिं कहहिं अरु चाहहिं काहा ❀ वेदहु लहँहिं न तेहि कर थांहा ॥
नर्क स्वर्ग प्रद धर्म अधर्मा ❀ त्यागि भजहिं मोहि भक्त अभर्मा ॥
मैं मम भक्त सदा साकारा ❀ रहहिं सु खेलन खेल अपारा ॥
मोंहिं न परत भक्तन विनुचैना ❀ तेहि लगि तजौं न तिन्हि दिन रैना
जय सियराम नाम धुनि जहँवाँ ❀ करत भक्त मैं नाँचौं तहँवाँ ॥

दोहा—मोर नाम गुण गण विमल, भक्त सु प्रेम समेत ।
गावहिं जहँ तहँ जाउँ मैं, प्रमुदित तजि सु निकेत ॥४६॥

जो सियराम नाम दिन राती ❀ रटहिं भक्त ते मम संघाती ॥
नाम सु जापक भक्त हमारे ❀ लागत मोहिं प्राणहुँ ते प्यारे ॥
तिन्हकी निन्दा जे सठ करहीं ❀ अमित जन्म सूकर के धरहीं ॥
नाम सु जापक जन मम देही ❀ पूजहिं तिन्हि ते मोर शनेही ॥
नाम जापकनि की सिवकाई ❀ उभय लोक महँ सब सुखदाई ॥
नाम सु जापक मोर सरूपा ❀ लखहिं यथारथ अमल अनूपा ॥
नाम जापकनि मोर प्रभाऊ ❀ विदित यथारथ अपर न काऊ ॥
नाम जापकनि की गति गूढ़ा ❀ समुझहिं कोउ कोउ जन न विमूढ़ा ॥
जिन्हि के गुरु श्री नाम सुजापी ❀ तिन्हि के सम जग कौन प्रतापी ॥
नाम सु जापक भक्तनि केरी ❀ सेवा सीख सकल सुख ढेरी ॥
नाम सु जापक भक्त समाना ❀ प्रिय न मोंहिं कोउ सम्भु सुजाना ॥

दोहा—ग्यानी सुत पितु केर जो, तरुण समर्थ सचेत ।

पितु सम साधत काज सब, ग्रह के सदा सहेत ॥४७॥

पितु सन बूझत बात न कोई ❀ भावत हृदय करत सो सोई ॥
पितहिं समान आप कहँ मानत ❀ सुनत न पितु सिख निज हठ ठानत ।
पिता कहत सुत सिखमम माँनहु ❀ करौ कहहुँ सोइ हठ जनि ठानहु ॥
पुत्र कहत जो पोथिन माँहीं ❀ लिखेउ करब सोइ दूसर नाँहीं ॥
पिता कहत पोथिन महँ झगरे ❀ लिखेउ विपुल मानहु जनि सगरे ॥
कर्मरु ज्ञान उपासन नाना ❀ रोचक अपर यथार्थ भयाना ॥
तीनि काण्ड त्रय क्रियाँ वहोरी ❀ पोथिन में झंझटें न थोरी ॥
अगम सुगम साधन बहु तेरे ❀ तजि सब लागु कहे तू मेरे ॥
अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा ❀ सगुन सुलभ अति सुखद अनूपा ॥
तेहिकी करिसब विधि उपासना ❀ तरु भवनिधि सहु विविधि त्रासना ॥
रटु सियराम नाम सुख दाई ❀ उभय लोक तब करहिं सहाई ॥

दोहा—कर्म ज्ञान योगादि तप, साधन ध्यान समाधि ।
आराधत इन्हि देवगन, सुत बहु करत उपाधि ॥४८॥

सगुन ब्रह्म कर रूप सु नामू ❀ चरित धाम चहुँ अति अभिरामू ॥
निर्विकार निरुपाधि सुगम अति ❀ सेउ तिनहिं सुत करि सु विमल मति ॥
परिहरि तिन्हि साधत जो धर्म ❀ होउ न सिद्धि न नाशत भर्मा ॥
निस्केवल सियराम सु नामा ❀ एक अधार रटहु बशु यामा ॥
यदपि देत पितु सिख सुखदाई ❀ सुनत न सो सुत लहि तरुणाई ॥
सुगम उपाय सु पिता लखावत ❀ मन मुखता बश सुतहिं न भावत ॥
तेहि कारण तेहि सुत पर प्रेमा ❀ रहत न पिता केर प्रद क्षेमा ॥
तेहि विधि ज्ञानी भक्त हमारे ❀ हठ बश भोगत विपति विचारे ॥
भानु प्रभा इव तेज हमारा ❀ व्यापेउ जो सब घटनि मझारा ॥
तेहि कहँ वेद ब्रह्म करि गावत ❀ निराकार निर्गुन कहि ध्यावत ॥
निर्गुन तेज सगुन तन केरा ❀ यह प्रसंग जानत न घनेरा ॥

दोहा–तेजहि कहँ श्रुति ब्रह्म कहि, वरणत पै उर मांहिं ।
ध्यावत सगुन सरूप मम, यह कोउ जानत नाँहिं ॥४६॥

पढ़त सुनत सब ऊपरि बाता ❀ श्रुतिनि हृदय का सो न बुझाता ॥
सगुन रूप मम वेदनि माँहीं ❀ झल झलात पै सूझत नाँहीं ॥
ग्यान विराग हृदय के नयना ❀ निरखहिं जो मम मूर्ति सुखयना ॥
ते सु नयन अघ कीन मलीना ❀ मम सरूप देखहिं किमि दीना ॥
चर्म नयन ते मोर सु रूपा ❀ लखि न परत यह अमल अनूपा ॥
मोर दरश मन बानी पारा ❀ सर्वोपरि सब रहित विकारा ॥
विमल नयन मन बुद्धि सुबानी ❀ होय लखै तब मोहि सुप्रानी ॥
सतयुग होत विमल नर नारी ❀ वेद तत्व के ज्ञाता झारी ॥
द्वितिय अर्ध तीसर चौथाई ❀ चौथे युग कलि कोउ कोउ भाई ॥
ऊपर ते पढ़ि पढ़ि वहु वेदनि ❀ ब्रह्म बनें पीड़ित भव खेदनि ॥
चर्म नयन ते पढ़ि श्रुति अङ्का ❀ डोलत ब्रह्म बनें मति रङ्का ॥

दोहा–मन बुधि चित्त मलीन अति, अहंकार हिय नयन ।
सगुन रूप मम लखहिं किमि, पढ़ि श्रुति मर्दन मयन ॥५०॥

पढ़ि पढ़ि पोथिनि पंडित ज्ञानी ❀ मूदि नयन बैठहिं बनि ध्यानी ॥
करहिं कष्ट बहु निरगुन लागी ❀ बुद्धि मलीन विषय रस पागी ॥
निराकार मम तेजहि ध्यावहिं ❀ मृग तृष्णा इव सान्ति न पावहिं ॥
जरहिं जीव कामादिक आँचा ❀ लोभ मोह वश नाँचहिं नाँचा ॥
कहनिं रहनि मह बीच घनेरा ❀ तेहि पर चाहहिं निरगुन हेरा ॥
झगरत पढ़ि पढ़ि वेद पुराना ❀ सूझत सार न आतम ज्ञाना ॥
नाम रूप मम धाम सु लीला ❀ उपदेशत मम भक्त सु शीला ।
परमसुलभ पतितनि गति दायक ❀ निरूपाधि सबविधि सत्र लायक ॥
मानहिं तिन्हें न झूठे ज्ञानी ❀ निराकार निरगुन के ध्यानी ॥
ध्यान करत मन अमित उपाधी ❀ करत न लागन देत समाधी ॥

निज निज उरकी जो जो बाता ❀ जानत सब ज्ञाता अग्याता ॥
सगुन रूप मम तजि सुख दानी ❀ ध्यावहिं निराकार हठ ठानी ॥
दोहा—कर्म योग जप जाग तप, ध्यान समाधि विचार ।
निराकार आराधना, करहिं ते लहहिं न पार ॥५१॥
यह ग्यानिन कर कहेउ विचारा ❀ जानहिं जो मोहि सबते न्यारा ॥
भाषहिं सोइ हम ब्रह्म सरूपा ❀ परेउ मूढ़ आसा तम कूपा ॥
पढ़ि कछु ग्यान कथा वहिरंगा ❀ ब्रह्म बने मन भोगनि रंगा ॥
निराकार निर्लेप बखानहिं ❀ आपुहि धर्म कर्म नहिं मानहिं ॥
सोइ ग्यानी मम भगति विहाई ❀ ग्यानकांड महँ भूलेउ भाई ॥
आग्या वर्तमान युग केरी ❀ मानहिं ते न चलाई मेरी ॥
सतयुग त्रेतादिक के ग्याना ❀ हठ करि मानहिं तिन्हैं प्रधाना ॥
दूसर भगत जो भगति हमारी ❀ करत करावत भव रुज हारी ॥
पढ़ैं सुनैं निरखैं मम लीला ❀ धारि वेष वैश्नवी रसीला ॥
पूजहिं मम मूरति बसि धामा ❀ रटहिं नाम सियराम ललामा ॥
तन मन धन मम भक्तनि लागी ❀ अरपहिं मोर भक्त अनुरागी ॥
दोहा—भाषहिं सोइ यह बात सिव, नीक करावत राम ।
बुरे काम हम करत सब, निज बुधि बल दुख धाम ॥५२॥
मम मूरति सनमुख दोउ हाथा ❀ जोरि नवावहिं महि महँमाथा ॥
दीन होय निज दोष सुनावहिं ❀ निर्छल हृदय मोहिं ते पावहिं ॥
तिन्हिकर संग करै जो कोई ❀ मम समीपता पावै सोई ॥
मम भक्तनि कर जो सतसंगा ❀ करै अवस्य होय भव भंगा ॥
तीसर अग्यानी जो जीवा ❀ कहत करावत सब सिय पीवा ॥
रूखे ग्यानी अरु अग्यानी ❀ पावहिं मोहि न ये दोउ प्रानी ॥
त्रय जीवनि कर भाउ बखाना ❀ सुनि गुनि समुझहिं सन्त सुजाना ॥
अब बूझहु सो कहौं बहोरी ❀ कथा कहन पर रुचि अति मोरी ॥

श्री मुख बचन अमी रस सानें ❀ सुनि शिव सभा सहित हरषानें॥

प्रश्न छठवाँ।

अब प्रभु कहहु चराचर नाहा ❀ उत्तम वैश्नव के गुण काहा॥
सुनि हँसि बोले कृपा निधाना ❀ उत्तम वैष्णव के गुन नाना॥
दोहा--मैं कछु भाखौं सुनहु सो, वैष्णव तीनि प्रकार।
उत्तम मध्यम अपर लघु, समुझहु सहित विचार॥५३॥
उत्तम वैष्णव अति प्रिय मेरे ❀ जो मन बच क्रम मम पद चेरे॥
नाम रूप मम लीला धामा ❀ सेवहिं होइ अनन्य वशुयामा॥
अपर देवतनि की नहिं आशा ❀ करत हिये मम दृढ़ विश्वासा॥
रँगे रहहिं मम भजन सुरंगा ❀ सादर करैं सु सन्तनि संगा॥
पाँचौ रस उपासना भेदा ❀ जानहिं सब उर परम अखेदा॥
डरैं न कालहु करैं न पापा ❀ ररैं नाम नाशक त्रय तापा॥
तिलक छाप कंठी गर माला ❀ युगल मंत्र उर परम रसाला॥
धारहिं दृढ़ अँग तजैं न कबहूँ ❀ कोटि विघन जो आवैं तबहूँ॥
तजेउ सकल उरते जग नाते ❀ परम अनन्य मोर रस माते॥
निन्दत बन्दत काहुइ नाँहीं ❀ देखहिं मोहि चराचर माँहीं॥
तन मन बचन सुद्ध सब कर्मा ❀ करैं करावैं वैष्णव धर्मा॥
दोहा--अलिन❀ वस्तु मासादि मद, अमल तमाकू भङ्ग।
खात पियत तिन्हि केर ते, करत न कबहू सङ्ग॥५४॥
मम प्रतिकूल पदारथ जेते ❀ खोजि खोजि सो त्यागहिं तेते॥
मम अनुकूलनि ते अति प्रीती ❀ करत सदा नहिं त्यागत नीती॥
तन सम्बन्धिनि निज सम करहीं❀ वेष दिवाय सकल अघ हरहीं॥
जेहि विधि वैष्णव होंइँसु लोगा ❀ करत रहहिं सो सोइ संयोगा॥

❀ खराब-अभक्ष।

जो श्री वैष्णव धर्म न धारत ❀ तिन्हि तन ते सपनेहुँ न निहारत॥
वैष्णव धर्म हीन के भोजन ❀ करत न उत्तम वैष्णव जो जन॥
सेवहिं मन वच क्रम गुरु चरणा ❀ मोते अधिक जानि करि परणा॥
गुरु चरणोदक सीथ प्रसादा ❀ लेत नेम करि हरण विषादा॥
तुलसी सहित अशन जल आदी ❀ अरपि मोहि पुनि पावत स्वादी॥
वैश्नव धर्म पंथ में धीरा ❀ पियतन कबहुँ अनछनो नीरा॥
शृङ्गारादि रसनि कर ग्याना ❀ होत जथारथ हृदय सुजाना॥

दोहा—सगुन रूप आराधना, करहिं करावहिं मोर।
रटहिं नाम सियराम मम, जो भव बंधन छोर॥५५॥

निवसहिं जो वे गेहहु माँहीं ❀ भजहिं मोहि दूसर गति नाँहीं॥
निसि वासर परिवार समेता ❀ सेवहिं मोहि तजि जग के हेता॥
जन्में मरें सजाती लोकी ❀ तजहिं न तउ मम धर्म असोकी॥
उपदेसहिं संगिनि नित एही ❀ भजहु भाय सियराम सनेही॥
धारहु युगल कंठि गर माला ❀ उर्द्ध पुंड सह छापसु भाला॥
नाना साधन जप तप कर्मा ❀ तजि धारहु दृढ़ वैश्नव धर्मा॥
नर वपु लहि सियराम उचारहु ❀ आप तरहु औरनि कहँ तारहु॥
यहि विधि उत्तम भक्त सु मोरे ❀ लावहिं जीवनि सिव मम ओरे॥
ते मम प्रिय कछु संसय नाँहीं ❀ गेह वसौ अथवा बन माँहीं॥
मानहिं जो तिन्हि कर उपदेसा ❀ पावहिं ते मोहि रहित कलेसा॥
बहु गुन उत्तम वैश्नव केरे ❀ कहेउँ कछुक प्रिय बूझे तेरे॥

दोहा—मद्धिम वैष्णव केर अब, लच्छन कहौं बुझाय।
जिन्हि के वश ताकी भई, मद्धिम दशा बजाय॥५६॥

मंत्र अशुद्ध जपत कहुँ नाँहीं ❀ वेष सु निष्ठा नहिं मन माँहीं॥
कबहूँ छापा तिलक लगावैं ❀ धरें दूरि कहुँ सुधि विसरावैं॥
कहुँ टूटी कंठी कहुँ आधी ❀ तजैं कबहुँ जब उपजे व्याधी॥

जो कोउ निन्दा तिलकनि केरी ❀ करै तजैं तौ लाज घनेरी ॥
तिलक लगावत लागत लाजा ❀ पाप करत नहिं होय अकाजा ॥
कंठी तिलक तजैं कहुँ धारैं ❀ जपैं मंत्र कहुँ सुरति विसारैं ॥
गुरु सेवा सन्तनि कर संगा ❀ करैं कबहुँ कहुँ दूसर रंगा ॥
सब देवनि कर भय उर राखैं ❀ रामभक्त हम यह मुख भाखैं ॥
जहाँ जाँयँ तहँ तेहि कर दासा ❀ बनैं हृदय नहिं मम विश्वासा ॥
झूठे भक्त कहावत मेरे ❀ कारज करैं अभक्तनि केरे ॥
मन्दिर जाइ न नावत माथा ❀ सुनत न पढ़त कबहुँ मम गाथा ॥

दोहा–जब कहुँ परत सु सङ्ग महँ, भय वश करत सुकर्म ।
लोग दिखाऊ दम्भ उर, तजैं बहुरि परि भर्म ॥५७॥

कहुँ त्यागहिं कहुँ धरहिं बहोरी ❀ वैष्णव धर्म भक्ति वर मोरी ॥
कहुँ भोजन मम भोग लगाई ❀ पावत तुलसी छोड़ि सुहाई ॥
कहुँ विनु तुलसी भोग लगाये ❀ खात करत कारज मन भाये ॥
स्वारथ साधत वेष सु धारी ❀ जेहितेहिविधिकरिभक्तिहमारी ॥
ये कछु मद्धिम वैष्णव केरे ❀ भाखेउ लच्छण अहैं घनेरे ॥
अब लघु के लक्षण कछु कहऊँ ❀ तिन्हि ते दूरि सदा मैं रहऊँ ॥
मनहीं गुरू सदा तिन्हि केरा ❀ जानन देत सु संतनि नेरा ॥
भगत भगत भाषत सब लोगू ❀ करैं गेह बसि सब रस भोगू ॥
त्यागि मांस मद भगत कहावत ❀ गेहिनि ढिग बहु गाल बजावत ॥
कंठी तिलक वैष्णवी छापा ❀ मनकी धारि बनें निष्पापा ॥
बाहिर कंठी तिलक लगाये ❀ कहा लाभ कह लोग रिझाये ॥

दोहा–करत आचरन मनमुखी, वैष्णव गुरू विहीन ।
मिथ्या भक्त कहाँयँ मम, बुद्धि विषय लवलीन ॥५८॥

कहत करो ग्रह बसि सब कामा ❀ मनते सुमिरहु श्री सियरामा ॥
कंठी तिलक लगावत जोई ❀ तिन्हिते ठीकभगति नहिं होई ॥

यह सब भगति दिखाऊ भाई ❀ मन ते रीझत सिय रघुराई ॥
न्हाय धोय बहु मन की माला ❀ फेरत वैठि हृदय अति काला ॥
सन्तनि निकट कवहुँ जो आवै ❀ सुनैं न तिन्हिकी अपनिहिं गावै ॥
गुरू न कीन वने गुरु आपू ❀ भगत कहाय जरैं त्रय तापू ॥
ग्रह कारज में धन वहु खरचैं ❀ मोहि सन्तनि वातिनिते अरचैं ॥
पढ़ि वहु पोथिनि छाँटत ज्ञाना ❀ पर उपदेश करैं विधि नाना ॥
कहत एक प्रभु भजन सु सारा ❀ अपर झूठ सब जग जंजारा ॥
आप मोह मद पङ्क समानें ❀ उत्तम ज्ञान सिखावत आनें ॥
तन सन्बन्धनि में अति प्रेमा ❀ भजन भाव मनमुखी अनेमा ॥

दोहा–तन माजत मन मैल अति, भक्त कहावत मोर।
मनमुख कंठी तिलक विनु, तरहिं न भवनिधि घोर॥५९॥

मनमुख भगत होयँ कलि कालहिं ❀ आपु नशे औरहु धरि घालहिं ॥
जस चेला तस गुरु मन मुखिया ❀ करतहोयँ ते केहि विधिसुखिया॥
पढ़ि २ पोथीं थोथे ग्याना ❀ करहिं निरूपन अवुझ अयाना ॥
मम प्रसन्नता केहि विधि होई ❀ यह वर भेद न जानहिं सोई ॥
ब्रह्म विचार न आतम बोधा ❀ हृदय विराग न वुधि अविरोधा॥
शृङ्गारादि पंच रस जोई ❀ जिन्हि विनु हमहिं न पावतकोई॥
तिन्हि के भेद भाव विनु जानें ❀ भजहिं मोहि ते जीव अयानें ॥
दास सख्य वासल्य शृङ्गारा ❀ सांति पंच रस ये सु उदारा ॥
इन्हते भिन्न भाव जग जेते ❀ मनमुख सब सिव जानहु तेते ॥
मन मुख भाव धारि कोउ प्रानी ❀ भजहिं मोहि पढ़ि कथा कहानी॥
मर्मी सतगुरु विनु ते मोही ❀ लहहिं न सत्य कहौं सिव तोही ॥

दोहा–नकली वैशनव वनि वकैं, वाद अविद्या जोर।
निंदहिं असली भाविकनि, पावहिं ते दुख घोर॥६०॥

दासी दास सखादि कहावहिं ❀ मनमुख गुरु विनु मोहिं न पावहिं

पुत्र बनें बहु मनमुख मेरे ❀ रहहिं सदा माया मद घेरे ॥
सखी सखा को पुत्र सुदासा ❀ जानहिं तेहि कर भेद न खासा ॥
का खट सम्पति का सरनागत ❀ अर्थ सु पंचक का वैश्नव मत ॥
कवन अवस्था सेवा ग्याना ❀ रसनि केर वर भाव सु ध्याना ॥
कवन रूप रँग रस उपासना ❀ भाव प्रकार सु भेद वासना ॥
संसकार का पंच सुहाये ❀ भव तारक जो वेदनि गाये ॥
दासी दास सखादिक धर्मा ❀ कहा विमल श्री वैश्नव कर्मा ॥
अंतष्करन विषय इद्री गत ❀ का त्रय तन का प्रान पंच भन ॥
कहा सु वैश्नव धर्म सरूपा ❀ कहा निजातम रूप अनूपा ॥
तत्वत्रय का रहस तीनि वर ❀ कहा विसिष्ठा द्वैत सु मत पर ॥

दोहा–शिरी संप्रदा केर का, असली दृढ़ सिद्धान्त ।
जानें विनु ये भेद सब, नसत न दुख प्रद भ्रांत॥६१॥

पढ़ि पोथीं कछु मनमुख बातें ❀ सीखि चहहिं मनमुख कुसिलातें॥
बूझे बिनु उपासना केरे ❀ भेद भाव जो कहेउँ घनेरे ॥
अरु निज आतम बोध बिहीना ❀ पाये बिनु गुरु रसिक प्रवीना ॥
उत्तम वैश्नवता के दावहिं ❀ करत तिन्हैं श्रुति मनमुख गावहिं॥
ग्याता सब उपासना भेदा ❀ विना मिले गुरु नसत न खेदा ॥
विद्या बल चतुराई केरी ❀ वातिनि भगति मिलै नहिं मेरी ॥
विद्या धन बुधि बल चतुराई ❀ मम उपासना विनु दुखदाई ॥
विद्या बाद विखाद बढ़ावन ❀ मम उपासना सोक नसावन ॥
सो उपासना जानहिं जोई ❀ गुरु प्रसाद मोहिं पावहिं सोई ॥
उत्तम वैश्नव सोइ सिव मोरे ❀ रटहिं नाम मम नित मन जोरे ॥
तिलक छाप सुचि कंठी माला ❀ धारि भजहिं मोहि तजि जगजाला

दोहा–झूठे मनमुख भगत वनि, ग्रही विरक्त अयान ।
उत्तम वैश्नव भाविकनि, मूढ़ सिखावहिं ग्यान ॥६२॥

आसा जग की दास सु मेरे ❀ बने रचैं परपंच घनेरे ॥
उत्तम भगतनि की उपहासा ❀ करैं मन मुखी मन के दासा ॥
मनमुखिया लघु भक्तनि केरी ❀ गति मति वर्णिन जाय घनेरी ॥
मनमुख भगत विपुल कलि माँहीं ❀ होत मूढ़ मोहि पावत नाँहीं ॥
बिनु उत्तम वैष्णवता धारे ❀ मोहि न पावत जीव विचारे ॥
त्रय भगतिनि की करनी गाई ❀ बूझहु अब जो तुमहिं सुहाई ॥
सुनि शंकर बोलेउ मृदु बानी ❀ हरष समेत जोरि युग पानी ॥

प्रश्न सातवाँ ।

प्रभु सिय माँहिं एकता जैसी ❀ कहहु बुझाय कृपा करि तैसी ॥
सुनि शिव वचन सिया तन हेरी ❀ लगेउ कहन करि कृपा घनेरी ॥
जिमि तनु छाया आतम देही ❀ तिमि सिय मैं दोउ परम सनेही ॥
जिमि मणि मोल सु भोजन स्वादा ❀ भजन प्रताप भक्ति अहलादा ॥

दोहा-भानु प्रभा ससि चंद्रिका, सुमन सुगन्ध समान ।
सिय मोमें सम्बन्ध मिति, बीच न कछू सुजान ॥६३॥

जिमि विद्या वर विनय सुहाई ❀ पय में घृत घृत में चिकनाई ॥
नीर तरङ्ग सु सीतलताई ❀ फल में रस रस विच पुष्टाई ॥
योगी में जिमि युक्ति अनूपा ❀ तेहि विधि मैं अरु सिय इकरूपा ॥
ब्रह्म तत्व जिमि अनुभव माँहीं ❀ तिमि सिय मो में अन्तर नाँहीं ॥
वीरनि में बल छल जिमि चोरनि ❀ बसत यथा चंचलता घोरनि ॥
अक्षर में जिमि अर्थ समाना ❀ अर्थ बीच जिमि दुख सुख नाना ॥
राम नाम बिच जिमि सब धर्मा ❀ व्यापेउ जिमि कर्मनिमहँ कर्मा ॥
नृपनि वीच जिमि नीति बिराजा ❀ नारिनि माया शब्द सु बाजा ॥
वृक्षनि में हरियाई जैसे ❀ सिय मो में सम्बन्ध सु तैसे ॥
कर्म योग बिच जिमि कठिनाई ❀ भक्ति मोरि बिच सुख सुगमाई ॥
ऋधि शिधि जिमि सुरतरु के माँहीं ❀ सिय मोमें तिमि अन्तर नाँहीं ॥

दोहा-गुरु में दया सु औषधिनि, जिमि निरोगता बास।
सिय में मैं मोमें सिया, निवसहिं तिमि स हुलास ॥६४॥
कर्म ज्ञान उपासना जैसे ❀ व्यापेउ वेद पुराणनि तैसे ॥
सिय मो में 'मैं सिय में भाई ❀ व्यायेउ सकै कवन बिलगाई ॥
सिय प्रति कर मैं बिम्ब सुहाया ❀ तिमिममप्रति की सियसुचिछाया ॥
मो में सिय में भेदी भेदा ❀ कहहिं सहहिं ते जन भव खेदा ॥
सियहिं छोट मो कहँ वड़ मानें ❀ मोहि छोट सिय कहँ वड़ जानें ॥
अज्ञानी ते मलिन विचारा ❀ समुझत नहिं कछु सार असारा ॥
सब विधि मैं अरु सिय दोउ प्रानी ❀ एक बराबर जानहिं ज्ञानी ॥
जो बड़ छोट बखानहिं कोई ❀ तिन्हिकी कबहूँ सुगति न होई ॥
सिय मेरी प्रिय जीवन मूरी ❀ होत न मैं मोते सिय दूरी ॥
रूप सुशील क्षमा चतुराई ❀ ये सिय महँ मोते अधिकाई ॥
तेहि लगि कोउ सुचि सन्त सयानें ❀ मोते सिय कहँ अधिक बखानें ॥
दोहा-सिय की सुनि सु विसेषता, हरषौं अति मनमाँहिं।
प्राण प्रिया सिय मोर शिव, सत्य कहौं तोहि पाँहिं ॥६५॥
सियहिं विहाय भजैं जे मोही ❀ ते जन मेरे पूरे द्रोही ॥
सियहिं मोहि लखि एक अनूपा ❀ जजि भजि उभय अभय सुरभूपा ॥
भाखेउ सिय मो में जस प्रीती ❀ अब बूझौ सो कहौं सनीती ॥
सुनि सिय सहित सभा शिव हरषे ❀ प्रभुहिं सराहि सुमन सब बरषे ॥

प्रश्न आठवाँ।

बोले संकर बहुरि अकामी ❀ तीनि बात पुनि पूछौं स्वामी ॥
को पापी जो नरकनि जावै ❀ को सुकृती जो स्वर्ग सिधावै ॥
को जन आवैं प्रभु के धामा ❀ होंयँ सुखी लखि मूरति श्यामा ॥
तीनिउँ के लच्छण बिलगाई ❀ कहहु कृपा करि जन सुखदाई ॥
बोलेउ दीनबन्धु मुशुकाई ❀ सुनहु शम्भु यह कथा सुहाई ॥

जेहिसुनि समुझि स्वमतिअनुयोगू ❀ धारण करि फल पैहहिं लोगू ॥
पापी पाप कर्म करि मरहीं ❀ ते चौरासी नर्कनि परहीं ॥

दोहा–धर्मातमा सुधर्म करि, मरि पावहिं सुरलोक ।
मोर उपासक मोर पुर, निवसहिं आय अशोक ॥६६॥

प्रथम कहौं पापिनि की करनी ❀ जिन्हि केभारविकल रह धरनी ॥
देखत के दीखत नर नारी ❀ करनी पशु सम अतिअविचारी ॥
मन वच कर्म करहिं नित पापा ❀ धर्मिनि कहँ पीड़हिं करि दापा ॥
कोउ ज्ञानी अग्यानी कोऊ ❀ नर्क निवासी पापी दोऊ ॥
ज्ञानी पापी सगुन स्वरूपा ❀ निन्दहिं मोर सु अमल अनूपा ॥
नाम रूप मम लीला धामा ❀ मानहिं ते न मूढ़ रत कामा ॥
लोचन हीन न सगुन सरूपा ❀ देखहिं मोर परे भ्रम कूपा ॥
मानत नहिं इतिहास पुराना ❀ श्रुतिशास्त्रहु कर नहिं कछु ज्ञाना ॥
पढ़ि सुनि कछु ऊपर की बातें ❀ ब्रह्म कहाँयँ खान यम लातें ॥
नाम रूप मम धाम सु लीला ❀ वेदहिं पढ़ि जानहिं मुनि शीला ॥
ज्ञानी पापिनि वेदनि माँहीं ❀ सगुन रूप मम सूझत नाँहीं ॥

दोहा–मम छाया कर तेज जो, ब्यापेउ घट घट माँहिं ।
मानहिं मुख्य सु ब्रह्म तेहि, मैं तिन्हि सूझत नाँहिं ॥६७॥

चारिउ लोचन हींन अभागे ❀ नखशिख विषय भोग सुखपागे ॥
बातिनि ते बनि ब्रह्म मलीना ❀ नाँचत जग मर्कट इव दीना ॥
अरुझे जग जालनि के बीचा ❀ ब्रह्म कहाँयँ कर्म अति नीचा ॥
मम भक्तनि तें करैं विवादा ❀ मन मुख ज्ञानी सठ मनुजादा ॥
निन्दहिं भक्तनि भक्तिहिं मोही ❀ वैश्नव धर्म केर अति द्रोही ॥
कंठी तिलक देखि खल जरहीं ❀ तेहि लगि घोर नर्क महँ परहीं ॥
कथा कीरतन पूजा मेरी ❀ चहहिं उठावन मूढ़ अनेरी ॥
कहहिं ब्रह्म कर रूप न नामा ❀ इच्छा रहित अजन्म अधामा ॥

यह सब जगत ब्रह्म ही जानों ❀ व्यापेउ घट घट तेहि कहँ मानों ॥
पीतरि पाथर पूजो नाँहीं ❀ प्रीति करो निर्गुन के माँहीं ॥
यहि विधि कहि कहिपापी ज्ञानी ❀ निजसम करहिं जननि अभिमानी ॥
दोहा–भक्ति वेष पूजादि मम, नाम सु लीला धाम ।
मूढ़ छुड़ाय नशावहीं, जीवनि करि रत काम ॥६८॥
आपु नशे तो नशे अधर्मी ❀ सुकृतिनि हूँ कहँ करैं कुकर्मी ॥
झूठे कथन करैं वहु ज्ञाना ❀ हृदय मलीन विकारनि साना ।
भक्ति मोरि भवरोग नशावनि ❀ सर्वोपरि अति सुगम सु पावनि ॥
परि हरि ताहि लगावहिं ध्याना ❀ मन मतङ्ग घूमै चौगाना ॥
भक्ति समान न साधन ग्याना ❀ ध्यान समाधि योग जप दाना ॥
परि हरि तेहि कहँ ज्ञानी पापी ❀ बने मृषा अजपा के जापी ॥
जेकर नामहिं अजपा भाई ❀ तेहि कहँ कहहि जपन अन्याई ॥
निराकार निर्गुण जेहि गावत ❀ ताहि ध्यान चित केहि विधि लावत ॥
इच्छा रहित ब्रह्म कहँ भाखें ❀ आपु करहिं नाना अभिलाखें ॥
सोहं हँसो मुख ते कहहीं ❀ इन्द्रिनिसुखहित बहुदुख सहहीं ॥
माया हित नाँचहिं वहु नाँचा ❀ ब्रह्म कहायँ जरैं त्रय आँचा ॥

दोहा–ज्ञानीपापिनि केरि सिख, सङ्गति अति दुखदाय ।
परिहरि तेहि सज्जन सुमति भजहिं मोहिं चितलाय ॥६९॥
अब अग्यानी पापिनि केरी ❀ वरणों करनी कुटिल घनेरी ॥
असुरनि के भोजन आचरणा ❀ धारि बने निशिचर करिपरणा ॥
मम पद विमुख भये नर नारी ❀ पाप करत निशि दिन अविचारी ॥
हिन्सहि कहँ जानहिं निज धर्मा ❀ जरामूर ते तजेउ सुकर्मा ॥
परतिय गमन जुआ अरु चोरी ❀ भावत तजी भक्ति बर मोरी ॥
करहिं मलिन मासादि अहारा ❀ पाप कर्म पर प्रीति अपारा ॥
मदिरा लहसुन प्याज तमाला ❀ इन्ह सब हित नितरहत विहाला ॥

सुरा तमाल नागिनी भङ्गा ❀ अमलनि पगे रँगे तिय रंगा ॥
बड़े वलिष्ट अनिष्ट अक्रोधा ❀ नखशिख भरे काम मद क्रोधा॥
हँसहिं ठठाय वजावहिं तारी ❀ लखि मम भक्तनि अत्याचारी ॥
कंठी तिलक वेष मम देखी ❀ करहिं मसखरी मूढ़ विशेखी ॥

दोहा--सुनत न उत्तम सीख सठ, बकत आपनी वाय ।
तेहि लगि भोगत दुसह दुख, घोर नर्क महँ जाय ॥७०॥

झगरहिं विना प्रयोजन पापी ❀ छली मलीन असत्य अलापी ॥
भक्तनि ते वोलहिं कटु बानी ❀ करहिं उपाधि अधम अभिमानी॥
धनहित कंठी तिलक सुलेहीं ❀ कारज साधि डारि पुनि देहीं ॥
उदर भरन हित तिलक सुभाला ❀ देत धारि गर कंठी माला ॥
तजि वहोरि मद मास अहारा ❀ करन लगत जिमि सूकर स्यारा ॥
गुरु सन करत कपट छल जोई ❀ अमित जन्म ते सूकर होई ॥
गुरु सन लय जो वैष्णव वेषा ❀ तजत सहहिं ते विपति विशेषा ॥
वैष्णव वेष धारि जो तजहीं ❀ नर तनु पाय न मो कहँ भजहीं ॥
तिन्हि समान कोउ पापी नाँहीं ❀ संकर सत्य कहौं तुम्ह पाँहीं ॥
जन्मत मरत नीच तन पाई ❀ वैष्णव धर्म मोहि बिसराई ॥
ज्ञानी वा अज्ञानी पापी ❀ ममपद विसरि लहत दुखधापी* ॥

दोहा–पापिनि के हितही रच्यो, घोर नर्क अस्थान ।
निवसि तहाँ जन्महि जगत, धरि तनु सूकर स्वान ॥७१॥

नर तन पाइहु भजन सु मोरा ❀ करहिं न ते पावहिं दुख घोरा ॥
कोउ ज्ञानी बनि निरगुन ध्यावत ❀ सुगुन विरोधी गति नहिं पावत ॥
कोउ अज्ञानी पशू समाना ❀ उदर लिङ्ग सुख निरत अयाना ॥
भक्षा भक्ष खाँयँ दिन राती ❀ भक्ति मोरि नहिं तिन्है सुहाती ॥
भक्ति हींन ज्ञानी अग्यानी ❀ जात नर्क मरि पापी प्रानी ॥
पापिनि की यह प्रगट चिन्हारी ❀ भक्तिमोरि तिन्हिलगतिनप्यारी॥

* भरपेट, अघाई ।

कंठी तिलक नाम सियरामा ❀ सगुन सरूप चरित मम धामा ॥
इन्हते विमुख भये जो कोई ❀ नारि पुरुष अति पापी सोई ॥
सोइ पापी नरकनि में जाई ❀ भोगत आपन कीन कमाई ॥
भक्षा भक्ष खात मोहि त्यागी ❀ तिहिकर फल पावत हत भागी ॥
पापिनि के लक्षण कछु वरनें ❀ समुझहिं जे चाहहिं भवतरनें ॥

दोहा–अब सुकृती धर्मातमा, स्वर्ग जाँय जे लोग ।
तीर्थ बर्त दानादि करि, जप तप साधन योग ॥७२॥

तिन्हिके लक्षण कहौं बखानी ❀ बसें जाय जिमि सुर पुर प्रानी ॥
बोलहिं सत्य सु बचन विचारी ❀ सन्तत लगै नीति जिन्हि प्यारी ॥
वैश्नव वेष धारि दृढ़ अङ्गा ❀ पूजें देवनि करहिं सु संगा ॥
विधिवत तीरथ दान सु करहीं ❀ हिन्सा आदि पाप ते डरहीं ॥
विप्र धेनु गुरु साधु सप्रीती ❀ सेवत सबहिं सिखावत नीती ॥
मातु पिता आयसु सिर धारी ❀ करहिं काज ग्रह के सब भारी ॥
तन मन बसन पात्र ग्रह धरनी ❀ राखहिं विमल करहिं शुभकरनी ॥
विद्यार्थिनि पोथी पट भोजन ❀ देत कहावहिं धर्मी सो जन ॥
सुर मन्दिर बनवाय प्रतिष्ठा ❀ करि सेवहिं सन्तन सह निष्ठा ॥
सुनहिं शास्त्र इतिहास पुराना ❀ करहिं नेम व्रत साधन नाना ॥
बापी कूप तलाव खनावहिं ❀ अगम मारगनि सुगम बनावहिं ॥

दोहा–सरितनि सेतु करावहीं, फूल बाटिका बाग ।
लगवावहिं परमार्थ हित, धरमी सह अनुराग ॥७३॥

क्षेत्र सदाव्रत धर्म सु शाला ❀ विरचि करहिं जीवनि प्रतिपाला ॥
भक्षाभक्ष अमल मदिरादी ❀ करहिं न ग्रहन कबहुँ प्रिय बादी ॥
जप तप होम शराध सुतर्पन ❀ करहिं सश्रद्धा कर्म मुदित मन ॥
धर्म जहाँ लगि सुनहिं सु काना ❀ आराधहिं सहि संकट नाना ॥
सबहिं देत सुख मन क्रम बानी ❀ बसहिं जाय ते सुर पुर प्रानी ॥

सन्तोषी शुचि दया निधाना ❀ क्षमाशील उर निर्मल ज्ञाना ॥
भगति भावना निरत अमानी ❀ बोलहिं सबके हित की बानी ॥
करहिं पाठ बहु कहुँ मम नामा ❀ रटहिं रटावहिं हृदय स कामा ॥
शिव विधि विष्णू गणपति भानू ❀ पूजहिं देवी देव कृशानू ॥
सब देवन कर सीथ प्रसादा ❀ पाय बढ़ावहिं उर अहलादा ॥
सबकी अस्तुति सबहिं प्रणामा ❀ करहिं लहहिं ते जन सुरधामा ॥

दोहा—यहि विधि करि शुभ कर्म जन, पावहिं स्वर्ग निवास ।
पुन्यभोगि तहँ गिरहिं पुनि, सहहिं कठिन भवत्रास ॥७४॥

मिटेउ न आवा गमन कलेशा ❀ नर्क स्वर्ग कर दुखद महेशा ॥
हृदय विचारि लखे जो कोऊ ❀ नर्क स्वर्ग दुख दायक दोऊ ॥
नर्क स्वर्ग के करि करि कर्मा ❀ भोगत विपति न नाशत भर्मा ॥
उभय कर्म करि भे जन बौरे ❀ नर्क स्वर्ग महँ डोलत दौरे ॥
चैन न कतहूं पावहिं प्रानी ❀ जन्महिं मरहिं सहहिं हैरानी ॥
कर्म शुभा शुभ तजै कठोरा ❀ रटै नाम मम वन्दी छोरा ॥
नर्क स्वर्ग कर आवा गमनू ❀ छूटै तब पावै मम भवनू ॥
तीसर जो मम भक्त सु प्यारे ❀ पाप पुन्य दोउनि ते न्यारे ॥
तिन्हि के लच्छन कहौं बखानी ❀ पढ़िसुनिगुनिमोहिपावहिं प्रानी ॥
त्यागि सुभासुभ धर्म अधर्मा ❀ पाप पुन्य दोउ लखि प्रदभर्मा ॥
नर्क स्वर्ग के ये दोउ कारन ❀ परिहरि रटहिंनाम भवतारन ॥

दाहा—श्री वैष्णव कर वेष वर, धारि सुदृढ़ सविवेक ।
श्री सियराम सुनाम मुख, रटहिं ठानि उर टेक ॥७५॥

लोक वेद कर डर करि दूरी ❀ चढ़े भजन पथ मति करि रूरी ॥
जागत सोवत मोर भरोसा ❀ राखहिं एक त्यागि गुण दोसा ॥
निन्दत बन्दत काहुइ नाँहीं ❀ ममबल मुदितरहहिं मन माँहीं ॥
हांनि लाभ दुखसुख सम जानी ❀ भजहिं मोहिं दृढ़ व्रत प्रनठानी

मन बच कर्म अनन्य सुमोरा ❀ नाम उचारहिंकरि करि सोरा ॥
आस त्राश नहिं काहुइ केरी ❀ केवलि भगति करें एक मेरी ॥
ग्रह वसि भजन बनें जो नीका ❀ वसैं गेहही तौ लखि ठीका ॥
जो कछु विघन भजन के वीचा ❀ होय तजैं तौ ग्रह लखि नीचा ॥
होत न सब ग्रह के नर नारी ❀ भजन पन्थ अनुकूल पुरारी ॥
बाधक बहु साधक कोइ कोई ❀ ग्रह महँ तेहि लगि भजन नहोई ॥
कठिन कठिन कारज ग्रह केरे ❀ करत भजन महँ विघन घनेरे ॥

दोहा—रहत न मोर अनन्यता, साधत ग्रह के धर्म ।
तन सम्बन्धिनि केर हित, करेइ परत सब कर्म ॥७६॥

मम अनन्यता उर जब आवै ❀ तब सब धर्मा धर्म बहावै ॥
धर्म कर्म सुर पुर जम लोका ❀ देत भगति मम करै अशोका ॥
बिनु अनन्यता मोहि न पावै ❀ यों तौ मम यश सब जग गावै ॥
सो अनन्यता ग्रह बसि नाँहीं ❀ निवहति बहु व्योहारनि माँहीं ॥
जब अनन्यता की तरुणाई ❀ चढ़ति हृदय तब कछुन लखाई ॥
जिमि वरषा की नदी चढ़ाई ❀ करि बोरै दोउ कूलनि भाई ॥
तिमि अनन्यता प्रबल सु मोरी ❀ चढ़ै वढ़ै उर वीच न थोरी ॥
तब न गनें वह धर्म अधर्मा ❀ पाप पुण्य शुभ कर्म अकर्मा ॥
मिलतमोहिजिमिसिन्धुहिंसरिता ❀ गावततिन्हिकरसबजगचरिता ॥
ग्रह सम्बन्धी जन श्रुति धर्मा ❀ तजि साधहिं मम भक्ति अभर्मा ॥
मम शरणागत सर्वस त्यागी ❀ लेत लहहिं ते मोहिं बड़भागी ॥

दोहा—धन विद्या कुल जाति बल, कर्म धर्म अभिमान ।
तजहिं अनन्य सु भक्त मम, सुर पुरादि निर्वान ॥७७॥

तन सम्बन्ध न जब लगि छूटत ❀ तबलगि मोते नेह न जूटत ॥
बहु धर्मनि के डर दुखदाई ❀ मोरि भक्ति विच परदा भाई ॥
सब धर्मनि के परदा टारी ❀ भजै मोहि तब होय सुखारी ॥

मम बल पाय सकल डर त्यागै ❀ केवल मोर भजन रस पागै ॥
तिन्हिके मैं सब पाप विनाशा ❀ करि सुरेउँ निज निकट निवासा॥
पुरवों सब मनोर्थ तिन्हि केरे ❀ जे अनन्य प्रिय भक्त सुमेरे ॥
तिनहीं के हित बहु तन धारी ❀ प्रगटों जग पुनि पुनि त्रिपुरारी ॥
मोर उपासक मेरी सेवा ❀ करहिं त्यागि सब देवी देवा ॥
आश त्राश विश्वास सु जोरा ❀ भाव भरोस एक उर मोरा ॥
तन सम्बन्धी नाते तोरे ❀ सब विधि रँगे भजन रँग मोरे ॥
सब विधि जोरेउ मोसन नाते ❀ निशि दिन रहैं भजन रसमाते ॥

दोहा--भाव सहित बोलहिं बचन, मोते नाते लाय ।
सूधे टेढ़े रस भरे, सुनि मम हिय हरषाय ॥७८॥

प्रेमिनि के वचननि में शंका ❀ करहिं ते जीव अबुध मति रंका॥
जिन्हि जोरे मोते सब नाता ❀ ते जो कहैं सत्य सब बाता ॥
तिन्हि की समता योग न कोई ❀ प्रही विरक्त जीव कोउ होई ॥
वेष बनाय सु समता योगू ❀ होइ न सकहिं प्रेमिनि के लोगू॥
जन अनन्य की गति मति बानी ❀ मोहि परम प्रिय अति सुखदानी॥
मोर अनन्य जननि पर रोसू ❀ करत लगै द्विज गो बध दोषू॥
मोर अनन्य भक्त सिवकाई ❀ कोटिनि सुरतरु सम सुख दाई ॥
मम भक्तनि की सेवा करहीं ❀ ते परिवार सहित भव तरहीं ॥
मेरो भेद भक्त सब जानैं ❀ जो अनन्यता रस सुख सानें ॥
तिन्हि के बचन प्रमाणनि पारा ❀ संशय रहित सत्य श्रुतिसारा ॥
पंडित पढ़ि पढ़ि शास्त्र पुराना ❀ झगरहिंतिन्हिसनसह अभिमाना॥

दोहा--ते जनु हमहिं दिखावहीं, लघु विद्या करजोर ।
अज्ञानी जानत नहीं, जन अनन्य तन मोर ॥७९॥

उर अनन्यता जबलगि नाहीं ❀ तबलगि भक्त न मोर कहाहीं ॥
आये विनु अनन्यता ग्याना ❀ करै न भक्त भजन अभिमाना ॥

भक्ति अनन्य हृदय विनु आये ❀ लहहिं न मोहि कोउ वेष बनाये ॥
भक्ति अनन्य हृदय जब आवै ❀ तबहीं निश्चय जन मोहि पावै ॥
जन अनन्य मम भक्तनि माँहीं ❀ मो समान कछु संशय नाँहीं ॥
वेष पहिरि मम भक्त कहावत ❀ विनु अनन्य व्रत मोंहिं न पावत॥
सेवै चरण अनन्यनि केरे ❀ निवसि कछुक दिन तिन्हि केनेरे॥
जो वे कहैं करै सोइ कामा ❀ लै मम वेष रटै सियरामा ॥
नशै मलिनता होय विमल उर ❀ जमिहै तब अनन्यता अङ्कुर ॥
जब अनन्यता की तरुणाई ❀ चढ़िहै तब मोहि मिलिहै आई ॥
तबलगि भक्ति सु करै हमारी ❀ पूजा पाठ वेष मम धारी ॥
सीखै मम अनन्यता लच्छण ❀ करिसतगुरुगुनज्ञानविचक्षण ॥

दोहा--सब ते परे अनन्य मम, भक्त सु भक्ति सरूप ।
आत्म समर्पण करि सु मोहि, सेवै तजि भवकूप ॥८०॥

जिमि कन्या नाते ग्रह केरे ❀ त्यागि बसै प्रिय पति के नेरे ॥
तिमि अनन्य मम तजि जग नाँते ❀ निशि दिन रहत मोर मत माँते ॥
कोउ निन्दै कोउ बन्दै मारै ❀ जन अनन्य निज भाव न टारै ॥
मोर अनन्यनि की प्रभुताई ❀ कोटिहु मुखते वरणि न जाई ॥
बरणि कछुक मैं तुम्हैं सुनाई ❀ अबका कहौं सु बूझहु भाई ॥
सुनि शिव हरषि परे प्रभु चरणा ❀ सभा सहित सुखजात न बरणा ॥

प्रश्न नवाँ ।

अब प्रभु कृपा सिन्धु रघुराया ❀ बूझौं यह भाखउ करि दाया ॥
प्रभु के अरु श्री सीता केरे ❀ युगल मन्त्र ये भव निधि बेरे ॥
षट षट अच्छर केर सु दोऊ ❀ मन्त्रराज जानत सब कोऊ ॥
मन्त्रराज भव तारक नामू ❀ उभयमन्त्र सब विधि सुखधामू ॥
ये दोउ मन्त्रनि विनु अवराधे ❀ तरहिं न जन बहु मन्त्रनि साधे ॥

दोहा-तिन्हि दोउ मंत्रनि केर सँग, ओंकार केहि हेत ।

लगत न सो समुझाय प्रभु, कहिये कृपा निकेत ॥८१॥

सुनि शंकर के वचन सुहाये ❀ परमारथ साँनें मन भाये ॥
तुम्ह सबु जानहु सम्भु सुजाना ❀ परहित बूझेउ यह सुविधाना ॥
समुझहु सब थोरे महँ ताता ❀ कहों बुझाय यथारथ बाता ॥
निराकार साकार सरूपा ❀ उभय मोर अनवद्य अनूपा ॥
उभय एक यद्यपि नहिं भेदा ❀ सेवत हरत दुसह भव खेदा ॥
कथन मात्र अन्तर कछु भाई ❀ प्रीति परस्पर अति अधिकाई ॥
जिमि रवि सगुनअगुन परकासा ❀ कमलसगुन तिमिअगुन सुबासा ॥
देखिय जिमि नभ शसि साकारा ❀ निराकार तेहि जगत उजारा ॥
नृप सु सगुन तेहि अगुन प्रभावा ❀ सकल प्रजाके ऊपर छावा ॥
सगुन शरीर अगुन तेहि छाया ❀ अक्षर सगुन अर्थ बिनुकाया ॥
कार्यकार्णपुनि मणि जिमि मोला ❀ तिमि निर्गुनमोमें बिच भोला ॥

दोहा—छाया तेज प्रभाव मम, निराकार तेहि वेद ।
बरणहिं तेहिकर नाम यह, ओं हरण भव खेद ॥८२॥

ओंकार निरगुन कर नामा ❀ आवततेहिनसगुन महँ कामा ॥
युगल मंत्र सो मोर सरूपा ❀ सगुनसुखद सबभाँति अनूपा ॥
इन्ह मंत्रनि महँ हम सिय दोऊ ❀ बीज बनें जानत सब कोऊ ॥
बीज समेत सुखद षटअक्षर ❀ दोउ मंत्रिनि के राजत सबपर ॥
सप्तम अच्छर यहि महँ नाँहीं ❀ जोरै तौ अनुचित तेहि माँहीं ॥
सर्वोपरी मंत्र ये दोऊ ❀ इन्हते सिद्धि लही सब कोऊ ॥
ओंकारादिक मंत्र अपारा ❀ युगल मंत्र सबके आचारा ॥
सबके कार्ण सबहिं बल दायक ❀ युगल मंत्र मम सबके नायक ॥
इन्हके निकट न बैठन योगू ❀ बीज मंत्र कोउ सबल निरोगू ॥
समता योग न त्रिभुवन कोऊ ❀ युगल मंत्र के अस जिय जोऊ ॥
कहां सूर्य कहँ शसि तारागण ❀ कहाँ ब्रह्म कहँ जीवमलिन मन ॥

दोहा–कहाँ गुरू कहँ शिष्य गन, कहँ सेवक कहँ भूप।
तिमि कहँ मंत्र अपार कहँ, युगल सुमंत्र अनूप ॥८३॥

इन्हके सम कोउ बीज न मंतर ❀ बैठि सकै जो आय बराबर ॥
हम दोउनि के युगल मंत्र वर ❀ प्राणअधार सु जपहिं निरन्तर ॥
ओंकारादि नाम बहु मेरे ❀ युगल मंत्र के जानहु चेरे ॥
युगल मंत्र सब कहँ सिधि दाता ❀ तिन्हैं सिद्धिप्रद कोउनदिखाता ॥
स्वयं सिद्ध मुद मंगल अयना ❀ सब मंत्रनि के ये दोउ नयना ॥
हित अनहित जो सबहिं लखावत ❀ तिन्हिकीसमता नहिंकोउपावत ॥
दीपक कबहुँ कि रवि हित कारक ❀ युगल मंत्रतिमि निजभवतारक ॥
मंत्र यंत्र बहु बीज विधाना ❀ नहिं कोउ युगल सुमंत्र समाना ॥
इन्हकी उपमा योग न कोऊ ❀ निरुपम निरुपधि मन्त्र सुदोऊ ॥
इन्ह सँग जो कोउ ओं लगावत ❀ युगल मन्त्रजप शिद्धि न पावत ॥
श्री सियमंत्र हीन मम मन्तर ❀ जपतौ लहहिं न सिद्धि नारि नर ॥

दोहा–ओंकार सह युगल वर, मंत्र जपैं जो कोय।
मुक्त होयँ सामीप्य मम, भक्ति न पावैं सोय ॥८४॥

आराधक मम सगुन रूप के ❀ भाविक सेवा सुख अनूप के ॥
मम साकार सरूपहिं ध्यावत ❀ ते न मंत्र सँग ओं लगावत ॥
दासी दास सखादि सुवेषा ❀ धरिममसँगसुख लहहिंविशेषा ॥
सेवा टहल समीप निवासा ❀ युगल मंत्र जपि पावहिं खासा ॥
श्रीं, रां, सह मन्त्र सुदोऊ ❀ जपि जन पावहिं मोहि सबकोऊ॥
ओंकार संयुत जो कोई ❀ जपत मंत्र मम मुक्त सुहोई ॥
जन्म मरन की नाशै त्राशा ❀ सत्य लोक महँ पावै वासा ॥
मम सेवा सुख पावत नाँहीं ❀ तब पछितात अधिक मन माँहीं ॥
पुनि तहँ जपि केवल दोउ मंतर ❀ बसहिं आय मम धाम परात्पर ॥
जो प्रथमहिं ते ओं विहाई ❀ जपहिं सु युगल मंत्र लयलाई ॥

तिन्हि समान सुख ते नहिं पावत ❀ सत्य लोक ते जो जन आवत ॥

दोहा—यह सिद्धान्त सु गुप्त अति, सब कोउ जानत नाँहिं ।
जानहिं ते जन लहहिं मोहिं, अपर परे भ्रम माँहिं ॥८५॥

यह उपासना भेद सु गूढ़ा ❀ जानहिं भाविक सन्त न मूढ़ा ॥
युगल मंत्र कर भेद प्रभावा ❀ जानत नशें सकल दुख दावा ॥
जपत यथा विधि द्वादश अङ्का ❀ पावहिं मोहि सियसहित अशंका॥
हम दोउनि के युगल सु मन्तर ❀ रूप यथारथ नहिं कछु अन्तर ॥
सप्तम अङ्क न तिन्हि सँग साँनें ❀ केवल युगल मन्त्र जप ठानें ॥
सतगुरु सन बूझै सब भेदा ❀ जपै ओं बिनु नाशै खेदा ॥
छाया ब्रह्म निरावय जोई ❀ जपें ओं जेहि ध्यावै सोई ॥
निराकार के ध्यावन वारे ❀ मम मूरति नहिं लखैं विचारे ॥
ओं, ओं, हरिओं उचारत ❀ अलख लखन हित तनमन गारत॥
निराकार जो अलख कहावै ❀ सो केहि भांति दृष्टि में आवै ॥
तेहि के हित मूरख मोहि त्यागी ❀ यतन करत बहु लोग अभागी ॥

दोहा—सब कर हित मैं ही करत, यहि तनते जगजाय ।
अज्ञानी बूझत नहीं, मरत अलखहीं ध्याय ॥८६॥

परसी थारी हमहिं विहाई ❀ माँगत अलख टूकरा जाई ॥
टूकहु मिलत न परत लखाई ❀ तिन्हि हित थारी पाय गँमाई ॥
कबहुँ न होय त्रिप्ति तिन्हि केरी ❀ विनु आराधे भक्ति सु मेरी ॥
हरी ओं तत्सत् यह मन्तर ❀ ग्यानिन कर मोते अति अन्तर ॥
केवल ज्ञानी मोहिं न भावत ❀ भक्ति हींन मम निकट न आवत॥
पूजै मम मूरति पधराई ❀ रटै नाम तजि कादरताई ॥
युगल मंत्र मम जपै अनूपा ❀ पावै मोहिं नशै भव कूपा ॥
कोटिनि गुरु करि सीखै ज्ञाना ❀ लेइ मंत्र बहु पढ़ै पुराना ॥
जप तप व्रत बहु साधन साधै ❀ होय निरामिख सुर आराधै ॥

युगल मंत्र जब लगि नहि काना ❀ लयेउ न तब लगि लह कल्याना ॥
युगल मन्त्र बिनु मोर सु सेवा ❀ लहत न कोउ पूजैं बहु देवा ॥
दोहा—करि करि गुरू फुंकायेउ, कान करोरनि बार ।
जपेउ सहित विधिमंत्र सब, नशेउ न मोह अँधार ॥८७॥
भव तारक यह मन्त्र सु मोरा ❀ लेत न जबलगि बन्दी छोरा ॥
तबलगि आत्म ज्ञान नहिं आवै ❀ आत्मज्ञान बिनु मोहि न पावै ॥
मोहिं मिले बिनु जन विश्रामा ❀ लहत न सपनेउँ मिटत न कामा ॥
अस गुनि सुजन मंत्र गुरु नाना ❀ त्यागि भजहिं मोहिहितकल्याना ॥
युगल मन्त्र धारहिं तजि शंका ❀ करि विरक्त वैष्णव गुरु बंका ॥
युगल मंत्र ओंकार विहाई ❀ जपि जन मिलहिं मोहिं इतआई ॥
सगुन रूपमम जिन्हि कहँ प्यारा ❀ युगल मन्त्र ते जपहिं हमारा ॥
युगल मंत्र बिनु ओं समेता ❀ जपैं सकल मम मंत्र सचेता ॥
युगल मंत्र सियराम सु नामू ❀ उभय एक पावन सुखधामू ॥
सबहिं सुलभ सब कहँ गति दायक ❀ सुमिरतसुगमसबलसबलायक ॥
पतितनि करन पुनीत प्रभावा ❀ नाम मंत्र कर बेदनि गावा ॥
दोहा—प्रणवादिक ओंकार जो, अधिकारिनि बिनु कोय ।
देत लेत अग्यान बस, सुख सिधि लहहिं न सोय ॥८८॥
स्वपच किरात कौल कुविचारी ❀ जमन कसाई कुटिल विकारी ॥
कवनिहुँ विधि मम मंत्र सुनामू ❀ जपि पावहिं गति भगति ललामू ॥
महा महा पापिनि भव पारा ❀ करत मंत्र मम नाम उदारा ॥
विपुल प्रमान प्रत्यक्ष विराजहिं ❀ नाम मंत्र जपि जन अघ भाजहिं ॥
तेहि लगि इन्हकर अधिक प्रभावा ❀ सब मंत्रनि ते बेदनि गावा ॥
मंत्र नाम मम वेष सुधारी ❀ को न तरेउ भवनिधि त्रपुरारी ॥
चतुर जानि अस तजि बहु मंतर ❀ जपहिं नाम मम मंत्र निरंतर ॥
युगल मन्त्र आचारज पाँहीं ❀ लेत सकल दुख दोष नसाँहीं ॥

नारि पुरुष दोउ एकइ गुरुसन ❀ लेइँ मंत्र तजि संक मुदितमन ॥
मातु पितादि पुत्र परिवारा ❀ करैं एक गुरु तजि कुविचारा ॥
देह बुद्धि कर यहाँ न कामा ❀ सब घट एकै आतम रामा ॥

दोहा—आतम सनमुख होय मम, तन पिञ्जर महँ बैठि ।
लीला करै अनेक विधि, विविध शरीरनि पैठि ॥८९॥

नहिं वह पुरुष न प्राकृत नारी ❀ मातु पिता सुत सुता न सारी ॥
आतम मेरी मैं गुरु रूपा ❀ आवै शरण नशै भव कूपा ॥
नाशमान झूठे तन नाते ❀ जिन्हिवश जन मम पद विमुखाते ॥
जग नातिनि की त्यागै शंका ❀ करै एक गुरु मिटै कलंका ॥
युगल मंत्र तिलकादि सु बाना ❀ गुरु सन सादर लेइ सग्याना ॥
सेवै सगुन सरूप सु मोरा ❀ रटै नाम सियराम न थोरा ॥
निरगुणादि साधन समुदाई ❀ ओंकारादिक मंत्र विहाई ॥
अपर देव अवतार अनेका ❀ तजि सेवै मम रूप सटेका ॥
सब कर कारण ईश्वर स्वामी ❀ अवतारी प्रेरक परधामी ॥
जानै मोंहिं रटै मम नामा ❀ श्री सियराम सु पूरण कामा ॥
जपै युगल श्री मंत्र सु राजू ❀ सेवै सतगुरु रसिक समाजू ॥

दोहा—मोसन दृढ़ सम्बन्ध करि, ग्रही होय वा सन्त ।
यहि सिद्धान्त सुधारि उर, मिलै अवसि मोंहिं अन्त ।९०।

निरगुणादि मम रूप अपारा ❀ प्रगटहिं मोते बहु अवतारा ॥
मम आधीन सदा सब कोई ❀ करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
तिमि ओंकार आदि बहु मंतर ❀ राम नाम ते प्रगटहिं सुन्दर ॥
राम नाम युग आखर मेरे ❀ कारण सकल सु मंत्रनि केरे ॥
सर्वोपरि मम नाम सरूपा ❀ वेदनिहूँ अति अगम अनूपा ॥
सो दोउ नाम रूप शिव मोरे ❀ सिय आधीन रहहिं निशिभोरे ॥
जब लगि द्रवति न सिय जेहिपांहीं ❀ तब लगि हम दोउ सूझत नांहीं ॥

सिय आधीन सदा हम दोऊ ❀ रहहिं उपासक जानहिं कोऊ ॥
तेहिलगिसिया सहितमोहिसन्ता ❀ ध्यावहिं सन्तत बैठि यकन्ता ॥
युगल युगल सव मंत्र सुजापहिं ❀ युगल तिलक युग छाप सु छापहिं॥
युगल कंठि गर पूजा ध्याना ❀ युगल २ रूव करहिं विधाना ॥

दोहा—निरगुणादि वहु रूप तजि, ओंकारादिक मंत्र ।
सेवहिं जन मोंहि सहित सिय, करि अनन्य मति यंत्र॥६१॥

मूलहिं सींचैं तरु हरिआवत ❀ हमहिं भजे तिमि सव सुखपावत ॥
देवीं देव ईश अवतारा ❀ मन्त्र यन्त्र तन्त्रादि अपारा ॥
मोर रचीं यह रचना सारी ❀ द्रष्टा दृष्टि सुन्यारी न्यारी ॥
ये सव शंकर खेल हमारे ❀ मोहि भजैं ते इन्ह ते न्यारे ॥
❀युगल मन्त्रमम नाम अद्वन्दा ❀ जपि सेवहिं मोहिंलहहिंअनन्दा ॥
मन वच क्रम अनन्य व्रत धारी ❀ जपहिं मन्त्र मम नाम उचारी ॥
:नाम मन्त्र केवल जो कोई ❀ जपहिं मोंहिं ते पावहिं सोई ॥
बूझेउ सो कहि कथा सुनाई ❀ स्वयं सिद्ध दोउ मन्त्र सु भाई ॥
सुनि शिव युगल सुमन्त्रप्रभावा ❀ सभा सहित अति आनँद पावा ॥
अव हम ओं रहित करि नेमा ❀ जपिहहिं युगल मन्त्र प्रद क्षेमा ॥

❀श्रीसियाराम राम नामऔयुगल मंत्रराज जो षटषट अक्षर के प्रसिद्ध हैं। सो द्वन्द कहिये उपाधी, अछलभतादि, विघ्न विहीन, अधिकारी, अनाधिकारी, स्त्री, पुरुष, ऊँच, नीच. सबको, सव समय, सब दशा में, सब जगह, सब भांति, यजन, भजन, सुमिरन, श्रवण, करने योग्य हैं। सबको श्रमविना सुन्दरगति, मति, रति, भगति, वैराग्यादि सर्व सुखों के दायक, लायक, मन भायक, समर्थ, सहायक, नायक हैं, अपर श्री ओंकारादिक मंत्रों को पात्रा पात्र, काला काल, सुद्धासुद्धादि, विधि विधानों को आवश्यकत्ता होने से सर्व प्रानी मात्रों को यथार्थ सुलभ सुखदाता हो नहीं सक्ते। इत्यादि कई कारणों करि श्री युगल मत्र राज के साथ ओंकार जपने को श्रीमुख तथा श्री रसिकाचार्यों की आज्ञा नहीं है। इति—

प्रश्न दसवाँ ।

एक बात औरहु रघुराई ❀ नाथ कृपा करि देहु बताई ॥

दोहा—श्रीङ्गारादिक रसनि कर, गुरु सम्बन्ध सु देत ।
जेहि बिनु वैश्नव महल यह, लहहिं न रहहिं अचेत॥९२॥

तेहि सम्बन्ध मांहिं यह बाता ❀ लिखी कहहु सो प्रभु जन त्राता॥
जीव सरूप नाम वय सेवा ❀ मातु पिता आदिक सुख देवा ॥
केहिविधि जानहिं गुरु सबभेदा❀ सिष्यहि सिखइ हरैं भव खेदा ॥
सुनि बोले प्रभु हिय हरषाई ❀ बूझेउ नीक बात मोहिं भाई ॥
येहि कर भेद सुनों तुम्ह एहा ❀ आचारज सब मेरिहि देहा ॥
सो आचारज तीनि प्रकारा ❀ कर्मी ज्ञानी प्रेमी प्यारा ॥
तामस कर्म रजो गुन ज्ञाना ❀ प्रेम सात्वकी वेद बखाना ॥
कर्मी गुरू कर्म सह मेरी ❀ भक्ति करावहिं जीवनि घेरी ॥
विपुल कष्ट करि आपु समेता ❀ भजहिं मोहिं सह सिष्य सचेता॥
कवनिहुँ भाव धारि उर अन्तर ❀ आहुति सहित जपहिं ममसन्तर॥
पूजहिं मोहिं रटहिं सिय रामू ❀ संयुत कर्म करहिं सब कामू ॥

दोहा—कर्मी भक्त सु मोर ये, तामस व्रती समेत ।
हठकरि भजहिं सकाम मोंहिं, निज कल्यान सुहेत ॥९३॥

रहत हृदय करनी अभिमाना ❀ करत फिरत जहँ तहाँ बखाना ॥
मम यश श्रद्धा हीननि नेरे ❀ फिरत सुनावत डेरे डेरे ॥
तेहि लगि मैं तिन्हिके उरमांहीं ❀ रहत न कछु झलकै परिछांहीं ॥
दूसर ज्ञानी भक्त सु मेरे ❀ भजहिं मोहिं करि नेम घनेरे ॥
जिन्हिनिज आतम केरसु ज्ञाना ❀ मम सरूप देखहिं धरि ध्याना ॥
विरचि भवन मम मूरति लाई ❀ पधरावहिं विधिवत सुखदाई ॥
सेवहिं साधु सहित विधि नाना ❀ कहहिं सुनहिं नित कथा पुराना॥
झूलन हारी मोर विवाहा ❀ करहिं करावहिं सहित उछाहा ॥

सहित विधान वेष मम धारहिं ❀ आपु तरैं औरनि कहँ तारहिं ॥
श्रुति पुरान मरिजाद समेता ❀ सेवहिं मोहिं नित निवसिनिकेता ॥
चाहहिं कृपा कटाक्ष सु मोरा ❀ जपहिं मन्त्र मम बन्दी छोरा ॥

दोहा—सख्य दास्य रस ज्ञान युत, राजस साज सजाय ।
भाव भरे मरियाद ते सेवहिं मोहिं हरषाय ॥६४॥

आप विलग मोहिं बिलग विचारैं ❀ दास सखादि भाव उर धारैं ॥
जपहिं मन्त्र मम युगल सुनामा ❀ रटहिं रटावहिं निवसहिं धामा ॥
लोक बेद सम्मत उर धारी ❀ पूजहिं मूरति सगुन हमारी ॥
कछु अनन्य गति कछु मन भाई ❀ ज्ञानी भक्तनि हृदय दृढ़ाई ॥
अच्युत कुलकी राखहिं पच्छा ❀ करहिं सकल जीवनि की रच्छा ॥
तिन्हि के उर मैं निवसहुँ जाई ❀ कबहुँ कबहुँ लखिप्रीति सुहाई ॥
तब तिन्हि के मुखते जो बाता ❀ निकसति सरलसत्य सुखदाता ॥
कछुक वार सो पुनि निज ज्ञाना ❀ कथत रहहिं जीवनि प्रतिनाना ॥
तीसर प्रेमी मन क्रम वानी ❀ रटहिं नाम मम दृढ़ प्रण ठानी ॥
सुद्ध सात्वकी भक्त अनूपा ❀ आचारज जग मोर सरूपा ॥
परम अनन्य अभय रस एका ❀ रहहिं सदाँ उर विमल विवेका ॥

दोहा—देखतही के बिलग शिव, मैं अरु प्रेमी मोर ।
पती पत्नी सम एक दोउ, पुनि जिमि नीर हिलोर ॥६५॥

तिलक लिलार सभूषण राजत ❀ पीत वसन सुन्दर तन छाजत ॥
युगल कंठि तुलसी की माला ❀ युगल मन्त्र नित जपहिं रसाला ॥
श्रृङ्गारादि रसनि के ज्ञाता ❀ सब विधि जोरेउ मोसन नाता ॥
कोटिनि विघन होंयँ नहिं डोलैं ❀ वानी सदा यथारथ बोलैं ॥
माया मोह लोभ भ्रम हीना ❀ वेद शास्त्र मम धर्म प्रवीना ॥
परम विरक्त अखेद अगेही ❀ मन क्रम वचन सु मोर शनेही ॥
वैशनव धर्म प्रचारक पण्डित ❀ रटहिं नाम सियराम अखण्डित ॥

अपर वासना सपनेहुँ नांहीं ❀ वसौं सहितसियतिन्हिउरमांहीं ॥
जानहु ते जग मम अवतारा ❀ त्रिगुणातीत सु गति मन पारा ॥
भाव भरे निशिदिन निज रहहीं ❀ तेहिरँगरँगनसकलजग चहहीं ॥
भली भांति जिन्हि आतम ज्ञाना ❀ नखशिख मोर भरोस समाना ॥
दोहा–अस आचार्यनि के शरण, वड़भागी जो लेत ।
संसकार पाँचौ प्रथम, करि तिन्हि के ते देत ॥६६॥
पुनि कोउ जन याँचै सम्बन्धा ❀ जेहि विनु मोर उपासक अन्धा ॥
श्रीङ्गारादि रसनि के संगा ❀ मो सन नातो लाय अभङ्गा ॥
आचारज जीवनि कल्याना ❀ करहिं वजायसु विजय निशाना ॥
दास सखादिक भाव सु तनते ❀ धारहिं दृढ़ अलिभाव सु मनते ॥
काहुइ जब इन्ह भावनि केरा ❀ देन चहहिं सम्बन्ध सु मेरा ॥
तव सतगुरु तेहि जन कर ज्ञाना ❀ बूझत मोसन धरि उर ध्याना ॥
मोर बताये गुप्त सु भेदा ❀ लिखि सम्बन्धनि देत अखेदा ॥
आत्म नाम सेवा सु सरूपा ❀ मातु पितादिक भाव अनूपा ॥
जेहि विधि मोते नाते दारी ❀ लगै जीव की नाशै ख्वारी ॥
लिखेउ सत्य सम्बन्धनि सोई ❀ जेहि विधि आतम मेरी होई ॥
तेहि सम्बन्धहि पाइ सु प्रानी ❀ सेवहिं मोहि नित मन क्रम बानी ॥
दोहा–अचल होय मम चरण रति, गति मति भगति अभेद ।
जिमि कन्यहि बर बरहि तव, नशै कल्पना खेद ॥६७॥
तेहि विधि जीवनि केर सु नाता ❀ लागत मो सन जब सुखदाता ॥
तव चिन्ता नाशै तिन्हि केरी ❀ जन्म मरन की छूटै बेरी ॥
अभय होय सम्बन्ध सुपाई ❀ भजहिं मोहिंसब तजि दुचिताई ॥
सतगुरु जो सम्बन्धनि माँहीं ❀ लिखेउ भेद सो मिथ्या नाँहीं ॥
मो में गुरु में जो कोउ भेदा ❀ कहहिं सहहिं ते जन भव खेदा ॥
अस विचारि सतगुरु की वानी ❀ करै ग्रहण तजि तर्क गलानी ॥

रस ज्ञाता गुरु कर उपदेशा ❀ सुनि धारै उर नशै कलेशा ॥
तेहि में वेद पुराण प्रमाना ❀ खोजै तौ न लहै कल्याना ॥
वेद पुराण शुभाशुभ कर्मा ❀ करहिं निरूपण लौकिक धर्मा ॥
मोर यथारथ भेद न जानत ❀ रस ग्याता जस गुरू बखानत॥
गुरु वचननि महँ मोर सरूपा ❀ झल झलात अति अमल अनूपा॥

दोहा–आतम ग्याता गुरुनि की, बाणी में सन्देह ।
करहिं धरहिं ते स्वान तन, शिषि शठ फाँकहिं खेह ॥६८॥

ततुवेत्ता गुरु सन जो बादा ❀ ठानै तिन्हि जानहु मनुजादा॥
शंका होय सु गुरुहि निहोरी ❀ नाय शीस बूझै कर जोरी ॥
जो प्रेमी सतगुरु ततुवेता ❀ कहैं सुनें तेहि करि चित चेता ॥
समुझि भलीविधि गुणहिय धारै ❀ बार बार तेहि अर्थ विचारै ॥
गुरु द्वारा सम्बन्ध लगावै ❀ मम पद तब बैश्नव मोहि पावै ॥
विनु सम्बन्ध न आतम ज्ञाना ❀ होत पढ़ैं वरु वेद पुराना ॥
यह सु भेद तौ भोदिहि जानत ❀ पण्डित पढ़ि पढ़ि झगरा ठानत॥
विनु सम्बन्ध न चित्त थिरावै ❀ चञ्चल चित जन मोहिं न पावै ॥
सतगुरु सन सम्बन्ध सु लेई ❀ तन मन धन अरपन करि देई ॥
देह ज्ञान तजि आतम रूपा ❀ बूझै गुरु सन अमल अनूपा ॥
आतम ज्ञाता सतगुरु जोई ❀ कहैं धरै उर फुर लखि सोई ॥

दोहा–तब पावै मोहि आतमा, नित्य विहार सु आय ।
मिलै सखी तनु धरि सु निज, मायिक देह विहाय ॥६९॥

आचारज जिमि आतम ज्ञाना ❀ जानहिं तिमि मैं कीन्ह बखाना॥
पुरुष भाव जो जन उर धारा ❀ ते न लखहिं मम युगल विहारा ॥
पुत्र भावना जिन्हि उर माँहीं ❀ धारी ते मोहि पावत नाँहीं ॥
यह संसारी मनमुख ज्ञाना ❀ मम सेवक नहिं करहिं प्रमाना॥
दास सख्य श्रृङ्गार वहोरी ❀ बातसल्य पुनि सान्ति अखोरी ॥

इन्ह पाँचौ रस सहित शनेही ❀ सेवहिं मोहिं भगत धरि देही ॥
सेवा हित मोहिं पुत्र बनाई ❀ सेवत भगत सनेह बढ़ाई ॥
पाँचहु रस के रसिक शनेही ❀ सेवहिं मोहि त्यागी अरु गेही ॥
पुत्र भावना उलटी धारी ❀ हम सन सेवा चहहिं पुरारी ॥
तेहि कारण मम भक्त न मानत ❀ पुत्र भाव मनमुखी बखानत ॥
गुरु विनु सकल कहहिं यह बाता ❀ सियाराम हमरे पितु माता ॥

दोहा—ग्रही गुरुनि कर भाव यह, पञ्च रसनि ते भिन्न ।
तजि तेहि भक्त सु चहहिं मम, सेवा सुख अवछिन्न ॥१००॥

ग्रही गुरू करि जीव न तरहीं ❀ पुनि २ जन्महिं पुनि २ मरहीं ॥
ग्रही गुरू करि गुरू समेता ❀ शिष्य जाय यमराज निकेता ॥
गुरु शिष्य दोउ माया जारा ❀ अरुझेउ केहि विधि लागैं पारा ॥
मन मुख भाव भजन उपदेशा ❀ करत विपुल नहिं मिटत कलेशा ॥
तन सम्बन्धिनि हित धन धामा ❀ मरत सम्हारत रत मद कामा ।
ऐसे गुरु तजि रसिक विरागी ❀ करै गुरू मम पद रस पागी ॥
भाविक पंच रसनि के ग्याता ❀ भजनानन्द जगत बिख्याता ॥
श्री सियराम नाम अनुरागी ❀ जिन्हि सब विषय बासनात्यगी ॥
मम सरूप तिन्हि लखि उपदेशा ❀ लेइ नशें भव जनित कलेशा ॥
गेह रहित तन कर निरवाहा ❀ जहँ तहँ करैं सुबोध अथाहा ॥
मिलें भाग वश अस गुरु जिनहीं ❀ परम धन्य जग जानिय तिनहीं ॥

दोहा—सतगुरु सन्त विरक्त शुचि, भाविक भजनानन्द ।
करै खोजि भवनिधि तरै, परै न गुरुवनि फन्द ॥१०१॥

अत्म सरूप लखावै जैसें ❀ रसिक सुगुरु शिख मानें तैसें ॥
करि विश्वास भावना मोरी ❀ करै वासना सकल बटोरी ॥
तब सन्देह रहित मोहिं पावै ❀ बसै निकट तेहि सुख को गावै ॥
कोटिन सुर नर मुनि सुख साजा ❀ बारति तेहि पर लागति लाजा ॥

मम ढिग जीव सखी तन धारी ❀ जो सुख लहहिं सु अकथ पुरारी ॥
भाविक सकल यदपि प्रिय मोरे ❀ मम हित जिन्हि जग नाते तोरे॥
आलिनि सम प्रिय मोहि न सोई ❀ जिन्हि ते परदा रहेउ न कोई ॥
आत्म समर्पण करि मम रंगा ❀ रँगीं रमें नित सुख मम संगा ॥
यह सुख रसिक सुगुरु करि पावा ❀ तिन्हि कर भेद कछुक मैं गावा॥
मोर बचन सुनि गुनिउर धरहीं ❀ ते जन यतन बिना भव तरहीं ॥
पावहिं भगति कामदा मेरी ❀ जो सब विधि शिव जीवन तेरी॥

दोहा—सुनि प्रभु बचन समेत शिव, प्रमुदित सखी समाज।
भयेउ अधिक जिमि रंक कोउ, पाय अखिल जग राज ॥१०२॥

अस्तुति कीन्ह सकल करजोरी ❀ जय रघुनन्दन जनक किशोरी ॥
जयजनरक्षक सुचि सिखदायक ❀ तुम सम सुखद न कोउ रघुनायक॥
भाखि अनूपम बहु उपदेशा ❀ दीन हमहिं अति सुख अवधेशा ॥

प्रश्न ग्यारहवाँ।

अब यक प्रश्न यही मम स्वामी ❀ केहि विधि तुम्ह रीझहु अभिरामी॥
सो आचरण कहहु करि दाया ❀ करें सकल हम प्रभु मन भाया ॥
प्रभु रीझे विनु सब पुरुषारथ ❀ करत जीव सो जात अकारथ ॥
सिय स्वामिनि सह जिमि रघुराई ❀ रीझहु सोइ प्रभु कहिय बुझाई॥
प्रणतपाल प्रभु सुनि सिव बानी ❀ परम तत्व परमारथ सानी ॥
बोले विहसि सुनों अब सोई ❀ मम प्रसन्नता जेहि विधि होई ॥
यद्यपि मम प्रसन्नता केरे ❀ करहिं जीव गण यतन घनेरे ॥
जप तप योग यज्ञ व्रत धर्मा ❀ वेद पुराण कथित बहु कर्मा ॥

दोहा—सम दम नेम समाधि दृढ़, भजन भाव वैराग।
तीर्थ निवसि लगवावहीं, सुमन बाटिका बाग ॥१०३॥

दान ध्यान जीवनि पर दाया ❀ करत संप्रेम उपाय निकाया ॥
पूजा पाठ साधु सिवकाई ❀ कहहिं सुनहिं मम कथा सुहाई ॥

मम प्रसन्नता हित बहु देवा ❀ आराधहिं करि भूसुर सेवा ॥
बूझत विप्रनि सन्तनि जाई ❀ केहि विधि रीझहिं सिय रघुराई ।
जो वे कहैं करत सोइ सोई ❀ कष्ट सहित मोहिं पावत कोई ॥
मम रीझन कर सहज उपाऊ ❀ भाखों तुम्ह सन त्यागि दुराऊ ॥
येहि कर भेद न जानत कोऊ ❀ जेहि विधिते हम रीझहिं दोऊ ॥
गोई बात रहहिं उर मोरे ❀ भाखों अब शिव बूझें तोरे ॥
जो सुनि धारहिं करि विश्वासा ❀ पावहिं मोंहि नाशहिं भव त्रासा ॥
सब साधन सिधि जेहिआराधे ❀ होंयँ अवश्य प्रथम जो साधे ॥
रहि न जाय कछु कृत पछितावा ❀ मिलै जन्म कर लाभ सुहावा ॥

दोहा—सब साधन ते सुलभ अति, बड़ प्रभाव विधि हीन ।
बिनु श्रम सुमिरत तरहिं भव, खल मल धाम मलीन ॥१०४॥

श्री सिय राम सुनाम उदारा ❀ हम दोउनि के प्राण अधारा ॥
नाम समान न कोउ मोहिप्यारा ❀ साधन साधक यदपि अपारा ॥
करि विश्वास नाम चित चोरा ❀ रटै सदा सो अति प्रिय मोरा ॥
जो सिय राम सुनाम उचरहीं ❀ सिया सहित सो मोहिं वश करहीं ॥
जो सिय राम रटन रस रङ्गा ❀ रहहुँ रीझि तेहि के नित सङ्गा ॥
जय सियराम नाम धुनि गावहिं ❀ बैठि परस्पर ते मोहिं पावहिं ॥
यह धुनि ढोलक झांझ बजाई ❀ करत करावत हिय हरषाई ॥
तहँ हनुमान संग हम दोऊ ❀ सुनत जाय नहिं जानत कोऊ ॥
जहँ सियराम नाम धुनि होई ❀ दुख दलिद्र तहँ रहत न कोई ॥
जिन्हिके मुख सियराम सुनामा ❀ राजत ते मम रूप ललामा ॥
जहँ सियराम सुनाम रटाई ❀ होय तहाँ सुख निवसहिं आई ॥

दोहा—ऋधि सिधि निधि सुर सुगुन सब, सुभ साधन कल्यान ।
नाम जापकनि केरढिग, निवसत सम्भु सुजान ॥१०५॥

जो सियराम नाम अनुरागी ❀ तिन्हि समान नहिं कोउ बड़भागी ॥

जिन्हि सियराम नामधुनिप्यारी ❀ लागहिं ते मम प्रिय त्रिपुरारी ।
जो सियराम नाम अमि चातक ❀ तिन्हि के करों नाश सब पातक ॥
करत नाम धुनि जो जन नाँचैं ❀ ते न बहुरि बहु आँचनि आँचैं ॥
करहिं नाम धुनि हरषित गाता ❀ दशहू दिशितिन्हिकहँकुशिलाता ॥
रटत नाम जो जन हरषावत ❀ अनुभवादि विद्या सो पावत ॥
रटहिं नाम सियराम सपष्टा ❀ तिन्हि के पाप होयँ सब नष्टा ॥
जो सियराम रटहिं लयलाई ❀ मम समीप सो निवसहिं आई ॥
जिन्हि सियराम नाम आराधे ❀ तिन्हिसबविधिसहसाधन साधे ॥
जो सियराम नाम की आशा ❀ धरि उर रटहिं सदा प्रति स्वासा ॥
तिन्हि की रक्षा सुनहु पुरारी ❀ करौं सदा कर शर धनु धारी ॥

दोहा—नाम अनन्य सुभक्त मम, रटत नाम जित जाय ।
पीछे पीछे चलहुँ मैं, जिमि बछरा सँग गाय ॥१०६॥

नाम जापकनि प्रिय जिमि नामू ❀ रटे दिवस निशि तजि सब कामू ॥
रूप उपासक भक्तनि रूपा ❀ धाम निवासिनि धाम अनूपा ॥
लीला वारिनि चरित हमारे ❀ लागहि जिमि प्राणहुते प्यारे ॥
तिमि सियराम नाम अनुरागी ❀ प्रिय लागहिं मोहि जन बड़ भागी ॥
कामिहिंजिमि सुन्दर तिय प्यारी ❀ नामिनि पर तिमि प्रीति हमारी ॥
लोभिहि धन पन परनिहिं प्यारा ❀ नृपहि राज जिमि प्रिय परिवारा ॥
कृषी किसानहिं भूखेहि भोजन ❀ रटैं नाममम प्रिय तिमि सो जन ॥
सुनु सिवसत्यबचनतोहिकहऊँ ❀ नाम रटै तेहि वस मैं रहऊँ ॥
मम प्रसन्नता जो जन चाहैं ❀ रटैं नाम करि नेम निवाहैं ॥
गर्जें रटें जपें सियरामहिं ❀ पढ़ें सुनें समझें मम नामहिं ॥
कहें कहावें गावें नामहिं ❀ ध्यावें पावें ते मम धामहिं ॥

दोहा—मुखमें वाणी वैखरी, तेहि ते रटैं प्रचारि ।
लय लगाय ते लहहिं मोहिं, कर्म सुभाशुभ जारि ॥१०७॥

नाम सु जापक चहुँ युग केरे ❀ प्राणहुँ ते प्रिय शङ्कर मेरे ॥
नाम जापकनि जो कोउ आशा ❀ देइ करौं तेहि कुज़ को नाशा ॥
करै अमित शुभ साधन कोई ❀ मम प्रसन्नता योग न सोई ॥
जब रीझों तब नामहिं गाये ❀ विकौं तासु कर विनहिं मुलाये ॥
जेहि न प्रतीति वचन सुनि होई ❀ रटि सियराम परिचै सोई ॥
नाम उचारत सुख जो होई ❀ जापक कों कहि सकै न कोई ॥
नाम सु जापक उभय प्रकारा ❀ प्रिय दोउ निज निज ठौर हमारा ॥
एक ग्रही अरु यक वैरागी ❀ दोउकी सुमति नाम रस पागी ॥
ग्रही प्रपंचनि साथ सु नामू ❀ रटै गेह बसि हृदय सकामू ॥
ग्रह कारज अति कठिन कराला ❀ तिन्हि करि करै नेम प्रतिपाला ॥
करतौ काज न नाम भुलावत ❀ जेहि तेहिविधि निजनेमपुरावत ॥

दोहा--अमित उपाधिनि सहित मम, नाम रटत ग्रह माँहिं ।
कैसेउ परें कलेश अँग, नामहिं त्यागत नाँहिं ॥१०८॥

ते जन वोवत जनु निज हीया ❀ श्री सियराम नाम वर वीया ॥
जुगवत रहत प्राण को नाई ❀ भजन वीज मम जनि जरिजाई ॥
करत करत जब भजन सुस्वादा ❀ आवत उर बाढ़त अहलादा ॥
बिकट विघन बहु भजनहिं नाशत ❀ तब तेहि गेह काल सम भासत ॥
यम दूतनि सम तन सम्बन्धी ❀ देखि परत बाधक बहु धन्धी ॥
पूत भूत सम नागिनि नारी ❀ पितु यमराज मृत्यु महतारी ॥
भोजन विष भासत धन बीछी ❀ नाम लगनि जेहि लागति तीछी ॥
जबलगि चढ़त न नाम सुरंगा ❀ तब लगि लगत नीक सब संगा ॥
नाम अमल जब चढ़ि अँगजाई ❀ तजै दुखद तब लोक सगाई ॥
पाप पुन्य की परि हरि संका ❀ होत विरक्त बजाइ सु डंका ॥
यहि विधि जग सम्बन्ध शनेहा ❀ ताय तपाय तजे जो गेहा ॥

दोहा--डिगहिं न ते भरि जन्म जन, रटें रटावें नाम ।

जेन केन विधि उदर भरि, मुदित रहहिं वशुयाम ॥१०९॥

नशे सोच सब बिघन कलंका ❀ रटें नाम निशि दिवस अशंका ॥
बैठे बिटपनि तर सुख सांथा ❀ रटि सियराम सु होंयँ सनाथा ॥
छूटे फिरैं रटत सिय रामा ❀ परमानन्द भरे वशुयामा ॥
कोउ निन्दैं कोउ बन्दैं पादा ❀ तेहि कर हरष न हृदय विषादा ॥
करि करि ग्रह दुख सुरति सनेमा ❀ रटि रटि नामहिं पावैं छेमा ॥
जग सुख तनसुख बन्धन भारी ❀ टोरेउ तिन्हि सियराम उचारी ॥
अव न काम कछु नाम विहाई ❀ रटत अखंड अभय लय लाई ॥
नाम जापकनि कर सुख जोई ❀ जानत नाम जापकै सोई ॥
एक कमंडल अथवा करवा ❀ राखहिं नाम रटहिं यक तरवा ॥
सीत निवारण गुदरी एका ❀ राखत नाम रटहिं सह टेका ॥
आशा तृष्णा धोय वहाई ❀ रँगे नाम रँग तजि कदराई ॥

दोहा--तिलक छाप कंठी युगल, आदि सु वैष्णव धर्म ।
धारेउ अङ्ग सु नाम सह, त्यागि सुभा सुभ कर्म ॥११०

जो कोउ जीव शरण में आवत ❀ नाम रटो तेहि यहै सिखावत ॥
वैष्णव धर्म धारि सियरामा ❀ रटो रटावहु परिहरि कामा ॥
यहिविधिजीवनिनिजसमकरहीं ❀ नाम रटाय दुसह दुख हरहीं ॥
विनु वैष्णवी सु दीक्षा लीन्हें ❀ द्रवत न नाम रटन बहुकीन्हें ॥
नामद्रवे विनु द्रवत न हमहूं ❀ कोटिन यतन करै कोउ तबहूं ॥
नाम सु जापक वैष्णव धर्महि ❀ धारे विनु नहिं पावत नर्महि ॥
वैष्णव धर्म हीन जो कोई ❀ मम सेवा सुख पाव न सोई ॥
नाम सु जापक सतगुरु पाँहीं ❀ लेइ वेष अस लखि मन माँहीं ॥
वैष्णव वेष कवच अँग धारै ❀ तब सियराम सु नाम उचारै ॥
तेहि पर मैं श्री नाम समेता ❀ रीझि देत निज पुर साकेता ॥
वैष्णव धर्म विराग अदागा ❀ इन्ह दोउ पर मम बड़ अनुरागा ।

दोहा–बैष्णव धर्म सुधारि मम, रटै नाम तजि गेह ।
तिन्हि भक्तनि पर रहत मम, अतिशय सम्भु सनेह ॥१११॥

ग्रह वसि भक्त रटहिं मम नामू ❀ हृदय वसत परपंच तमामू ॥
ईर्षा, द्वेष, वैर, छल, छन्दा ❀ करत न पावत नाम अनंदा ॥
वहु सम्बन्ध शनेह अनेका ❀ लगें रहत नहिं नाम विवेका ॥
तेहि पर नारि प्रसंग मलीना ❀ करत होय सवशुभ कृत छीना ॥
जिमिबारूदहि अगिनि जरावै ❀ तिमि भजनहिं तिय भोग नशावै ॥
भोगहु तजै तवहुँ दुखदाई ❀ रहव नारि के संग सदाई ॥
विषय निरत इन्द्रीं मन चित्ता ❀ लखत तियहिं चढ़ि आवत पित्ता॥
सक न सम्हारि काम आवेशा ❀ भोगि तियहिंपुनि सहत कलेशा ॥
वहु दिन केरि सु भजन कमाई ❀ भोगि तियहिं छण माँहिं गमाई ॥
भजनानन्दनि कहँ तिय संगा ❀ दुखदाई जिमि बाघ भुजंगा ॥

दोहा–मोक्ष न पावत मोह वश, घरही भजनानन्द ।
उठत रहहिं उर नवल नित, कठिन मनोरथ मन्द ॥११२॥

तिन्हिसँग नामस्वाद नहिंआवत ❀ तेहि लगि ग्रही मोक्ष नहिं पावत॥
तद्यपि आन ग्रहिनि सम मेरें ❀ भक्त न पावहिं दुख्ख घनेरे ॥
मदिरा मास अभक्ष अहारी ❀ विषय निरत भोगत पर नारी ॥
वैष्णव धर्म विमुख बक बादी ❀ अमली हिंसक अबुध प्रमादी ॥
ये सब पापी नरकनि माँहीं ❀ पावत जे दुख वरणि न जाँहीं ॥
सो दुख मोर भक्त नहिं पावत ❀ ग्रह वसि जो मम नामहिं गावत ॥
भजत मोहि ग्रह बसि वड़ भागी ❀ विनु बैराग भक्त अनुरागी ॥
तेहि कारण मरि पुनि नर होई ❀ वहुरि करैं मम भक्ति सु सोई ॥
विमल विराग हृदय जव आवै ❀ तब तजि जगतजीव मोहिपावै ॥
माया वैष्णव वेष अदागा ❀ जीवातमा विमल बैरागा ॥
श्री सियराम सुनाम अनूपा ❀ ब्रह्म अखण्ड अनादि सरूपा ॥

दोहा–जीवातमा विराग वर, वेष सु माया मूल।
ब्रह्म नाम तिहुँ मिलहिं जब,नाशहि संसृति सूल ११३

माया—वेष—ब्रह्म मम नामू ❀ धारक जीव विराग ललामू॥
वेष सुधारि जीव श्री नामहिं ❀ रटि पावहिं वैराग ललामहिं॥
जीव विराग रूप अधिकारी ❀ लहै नाम रटि वेष सुधारी॥
वेष विराग नाम तिहुँ एका ❀ होयँ जगैं तब विमल विवेका॥
खुलें हृदय के तब दोउ नयना ❀ ज्ञान विचार केर सुख अयना॥
तब देखै मोहि जीव अनूपा ❀ मिलै ललकि धरि सखी सरूपा।
वेष विराग धारि जो नामू ❀ गावत पावत ते मम धामू॥
बिना वेष वैराग सुधारे ❀ तरहिं न मनसुख नाम उचारे॥
वेष सिया मैं नाम ब्रह्म बर ❀ जीव विराग सु प्रेम परस्पर॥
तीनों मिलें तबहिं सुख होई ❀ खण्डन करि गति लहै न कोई॥
घर में हृदय विराग न आवत ❀ वेष नाम यद्यपि जन पावत॥

दोह–विमल विराग सुदूत मम, हमहिं मिलावन हार।
तेहि विनु द्रवत न जननि पर, वेष न नाम हमार॥११४॥

इन्द्रिन के सुख विषय अपारा ❀ बिनु विराग नहिं नशत अपारा॥
सहित विराग नाम अरु वेषा ❀ होत न जीवनि सुखद विशेषा॥
अस विचारि वैष्णव मम नामू ❀ रटैं धारि वैराग ललामू॥
ते निशंक मम खास सु सेवा ❀ पावहिं जेहि कहँ तरसहिं देवा॥
मन मुख रटत नाम बहुतेरे ❀ तन मन बचन विषय के चेरे॥
ते मोहिं सपनेउँ पावत नाँहीं ❀ अरुझे जे जग भोगनि माँहीं॥
वेष विराग सहित जो नामहिं ❀ रटिहैं ते पावहिं मम धामहिं॥
तिनहीं के मैं सिया समेता ❀ रीझि बसों सिव हृदय निकेता॥
जीव ब्रह्म माया तिहुँ रूपा ❀ यही विशिष्टा द्वैत अनूपा॥
जीव ब्रह्म माया कर ज्ञाना ❀ जाहि उपासक वही सयाना॥

पूर्ण ज्ञान यह मत मोहिं प्यारा ❀ अचल अनादि अनूपम सारा ॥

दोहा—द्वैता द्वैतक आदि बहु, मत मतान्त संसार ।
प्रगटायेउ श्रुति शास्त्र पै, यह मत खास हमार ॥११५॥

सिया लखन अरुमैं तिहुँ आदी ❀ अहहिं न जानहिं जीव प्रमादी ॥
ब्रह्म जीव अरु तीसरि माया ❀ मिलि सुविशिष्टा द्वैत कहाया ॥
यह मत धारे बिनु मोंहिं कोई ❀ लहहिं न सुर नर मुनि कोइ होई ॥
यहि विधि नाम सुवेष विरागा ❀ तिहुँमोंहिंप्रियजिमितियहिंसुहागा॥
यह विशिष्टा द्वैतहि जानी ❀ धारण करि मोंहि पावहिं प्रानी ॥
त्रय सिद्धान्त किये ये मेरे ❀ धारहिं ते आवत मम नेरे ॥
रटहिं नाम तजि साधन कामा ❀ सहित विराग सुवेष ललामा ॥
सोइ मम प्रीतम प्रान समाना ❀ कहहुँ सपथ करि सम्भु सुजाना॥
तत्वमसी सोहं ओंकारा ❀ हरिओं तत्सत् करै उचारा ॥
पञ्चाक्षर अष्टाक्षर मन्तर ❀ विधिवत जपै अठारह अक्षर ॥
सात करोर मन्त्र श्रुति गावै ❀ जपै सकल सब देवनि ध्यावै ॥

दोहा—पढ़ै वेद साधै सकल, साधन जन्म अनेक ।
अरचै मम औतार सब, देवीं देव जितेक ॥११६॥

सबके मंत्र सुनाम विशेषा ❀ जपै धारि अँग नाना वेषा ॥
पढ़ैं सुनैं नित सबकी गाथा ❀ सबके सनमुख नावै माथा ॥
सब शुभ कर्म करै बहु वारा ❀ साधै धर्मनि सहित विचारा ॥
जब लगि श्री वैष्णव मम रूपा ❀ होइ न रटत सिय राम अनूपा ॥
सहित विराग न तबलगि मोहीं ❀ पावत सत्य कहौं सिव तोहीं ॥
जेहि ध्यावहिं जो तेहि कहँ पावैं ❀ मोर निकट जन केहि विधि आवैं॥
सबकी आश त्रास जब त्यागै ❀ कर्म भर्म निशि सोवत जागै ॥
श्री वैष्णव कर वेष सुधारै ❀ निर्भय श्री सियराम उचारै ॥
सहित विराग यही मम पूजा ❀ करै सदा तजि मारग दूजा ॥

आत्म निवेदन करि मम हाथा ❀ तव सुख करै आय मम साथा ॥
नाम वेष वैराग प्रकाशक ❀ जव लगि मिलत न गुरू उपासक ॥

दोहा–श्रीवैष्णव सु विरक्त शुचि, रत सियराम सु नाम ।
उत्तमकुल विद्वान कवि, मम अनन्य निष्काम ॥११७॥

अस सतगुरु जो चेला पावै ❀ मनमुखता तजि तिन्है रिझावै ॥
तव मैं रीझि देउँ निज धामा ❀ दोउनि के पूरों सव कामा ॥
अस सतगुरु विनु जीव विचारे ❀ वहु योनिनि विच डोलत मारे ॥
मम पद विमुख करै जो कोई ❀ गुरु वनि जीवनि ते खर होई ॥
मम उपासना भजन सु भेदा ❀ रहित वनें गुरू पढ़ि कछु वेदा ॥
युगल मंत्र तजि नाम सु मोरा ❀ वैष्णव वेष सुवन्दी छोरा ॥
मम सरूप कर ध्यान विहाई ❀ अपर तत्व जो देइ दृढ़ाई ॥
फूँकि कान जीवनि विमुखावै ❀ सो गुरु मरि सूकर तनु पावै ॥
जन्म मरनदुख छल अभिमाना ❀ कामादिक विकार अज्ञाना ॥
नाशि जीव के सकल विकारा ❀ दयेउ न विमल विवेक विचारा ॥
दरशायेउ मम रूप न हीया ❀ गुरु वनि मूढ़ कहा तौ कीया ॥

दोहा–विपुल रूप धरि अमित गुरु, वनें ठगन संसार ।
तिन्हि ते कान फुकाय जन, बूड़त सह परिवार ॥११८॥

ठग गुरुअनि के मंत्र निदेशा ❀ सुनि पावतजन कठिन कलेशा ॥
मंगन गुरुआ करि कल्याना ❀ चाहहिं ते जग जीव अयाना ॥
अमली अवुध ग्रही अभिमानी ❀ गुरु करि तरन चहहिं भव प्रानी ॥
अस गुरु लखि पाथर की नाई ❀ तजै चहहिं जो जीव भलाई ॥
विमुख गुरुनि वहु जीव नशाये ❀ वहु मत मंत्र वेष प्रगटाये ॥
श्री वैश्नव मम धर्म विहीना ❀ सव मत मन्तर वेष मलीना ॥
वेष भक्ति मम मंत्र न नामू ❀ जेहि मत महँ सो मत दुख धामू ॥
मम सम्वन्ध हीन मत नाना ❀ वेष भाव सव नर्क समाना ॥

अस विचारि श्री वैष्णव बाना ❀ धारण करै त्यागि मत नाना ॥
रटै नाम सियराम सु मोरा ❀ सहित विराग तरै भव घोरा ॥
यही करार कीन्ह मोहिं पाँहीं ❀ जीवनि घोर गर्भ के माँहीं ॥

दोहा—वैश्नव होय विराग सह, रटिहौं नाम तुम्हार ।
सत्य कहौं प्रभु पद सपथ, हरहु गर्भ दुख भार ॥११९॥

तजि सब धर्म कर्म मन बानी ❀ भजिहौं तुम्हें सदा सुखदानी ॥
तब मैं गर्भ विपत्ति निवारी ❀ बाहिर कीनेउँ दया विचारी ॥
काढ़ि गर्भ ते पालन कीन्हा ❀ जननी द्वारा सब सुख दीन्हा ॥
कछु दिन बीते भयेउ सयाना ❀ गर्भ करार समूल भुलाना ॥
सब जग भार उठायेउ कन्धा ❀ भयेउ विषय रत मूरख अन्धा ॥
निन्दै सन्तनि वेखहि मोही ❀ हितकी कहै लखै तेहि द्रोही ॥
अस गति भई गर्भ दुख भूला ❀ बनि करतार सहै बहु शूला ॥
सुनै न सन्तनि की सुचि बानी ❀ बुद्धि विषय भोगनि अरुझानी ॥
नर तन केर न आनँद पावा ❀ बकि बकि वाय सुजन्म नशावा ॥
इन्ह कर संगति भक्त हमारे ❀ करहिं न भूलिहु लखि मतवारे ॥
विमुखनि की संगति दुख मूला ❀ नाना विधि उपजावति शूला ॥

दोहा—तेहि लगि तजि तिन्हि स्वानसम, भक्त रटहिं मम नाम ।
वैश्नव वेष सु धारि दृढ़, सहित विराग अकाम ॥१२०॥

सो पावहिं सुभगति मति मोही ❀ बारम्बार कही मैं तोही ॥
मम प्रसन्नता केर उपाऊ ❀ कहेउ तुम्हें तजि कपट दुराऊ ॥
तुम्ह सब पर मम प्रीति न थोरी ❀ झूठ न कहौं प्रतिज्ञा मोरी ॥
मम बानी यह सुनि गुनि जोई ❀ धारहिं उर मोहि पावहिं सोई ॥
परम यथारथ बानी मेरी ❀ समुझहु सकल सुखनि की ढेरी ॥
निन्दहिं जे सठ करि उर तर्का ❀ मम बानिहिं ते परिहैं नर्का ॥
भक्तनि काम धेनु मम बानी ❀ उभय लोक सब आनँद दानी ॥

मम आग्या यह जो उर धरिहैं ❀ ते सहजहि भव सागर तरिहैं ॥
कहहिं सुनहिं नित यह मम बानी ❀ ते मोहि सादर पावहिं प्रानी ॥
मम मुख वर्णित यह सुप्रसङ्गा ❀ पढ़ै सनेम होय भव भङ्गा ॥
यह प्रसंग सब भांति अनूपा ❀ पढ़ि सुनि पावहिं जन मम रूपा ॥

दोहा—मेरी अरु मम भक्त की, बानी वेदनि पार ।
समुझहिं ते मोहि पावहीं, गुरुमुख सहित विचार ॥१२१॥

मेरी मम भक्तनि की बानी ❀ समुझहिं सन्त सुआतम ग्यानी ॥
श्रुति पुराण त्रय गुन तम पारा ❀ मम भक्तनि की बानी सारा ॥
समुझहिं अनुभव विद्या वारे ❀ गुणातीत प्रिय भक्त हमारे ॥
अस कहि कृपासिंधु अरगाये ❀ सुनि शिव सभा सहित हरषाये ॥
बार बार वन्दे प्रभु चरणा ❀ परमानँद उर जाय न वरणा ॥
श्रीमुख बानी सब सुख खानी ❀ सुनि सादर सब अति हरषानी ॥
परम दरिद्री पारस पायेउ ❀ वन्ध्या तिय सुन्दर सुत जायेउ ॥
कोढ़ी कर जिमि कुष्ट नशावा ❀ गयोराज जिमि भूपति पावा ॥
विश्व विजय जिमि पंडित पाई ❀ पापिहि मिली भक्ति सुख दाई ॥
जन्म सूर जिमि लोचन पावै ❀ रण ते जीति फौज फिरिआवै ॥
बन्धन ते जिमि बँधुआ छूटै ❀ जिमि विरक्त कर नाता टूटै ॥

दोहा—योगी पाई युगति जिमि, साधक साधन सिद्धि ।
सन्त सु सेवक हर्ष जस, लखि वैशनव की वृद्धि ॥१२२॥

यहि ते कोटिनि गुण अधिकाई ❀ पायेउ सुख जो वरणि न जाई ॥
प्रभु कृत कृत्य कीन कहि गाथा ❀ बार २ पद नावहिं माथा ॥
यहिविधि प्रभु बिनु को समुझावै ❀ जग सब स्वारथ सगो दिखावै ॥
मातु पिता सुत पति तिय भाई ❀ स्वारथ के सब सगे सदाई ॥
स्वार्थ रहित परमारथ रूपा ❀ नाथ एक तुम्ह स्वामि अनूपा ॥
सिय स्वामिनि तुम्ह स्वामी नीके ❀ अपर सनेही गाहक जीके ॥

हम समान को जीव सभागा ❀ जेहिपर प्रभुकर अस अनुरागा ॥
हम कहँ कृपा पात्र निज जानी ❀ नाथ सुनायेउ अमृत बानी ॥
चारि वर्ण आश्रम ते न्यारे ❀ कृपा पात्र जो प्रभु के प्यारे ॥
पूजनीयँ ते सबही केरे ❀ जिन्हि की ओर नाथ हँसि हेरे ॥
सुर मुनि सिद्ध करैं तेहि सेवा ❀ जेहि पर तुम्ह रीझौ सुखदेवा ॥

दोहा—परम धन्य हम नाथ सब, धन्य सु भाग्य हमार ।
जिन्हि पर दम्पति केरि असि, करुना रहति अपार ॥१२३॥

विमुख जीव प्रभु की यह दाया ❀ चहत न ते दुख सहत निकाया ॥
नाना वेष पन्थ मत बादनि ❀ अरुझेउ पीड़ितविपुलविषादनि ॥
भजन भाव बहु कर्म सु योगा ❀ नाथ कृपा बिनु बादि सुभोगा ॥
प्रभु प्रतिकूल सूल सम ज्ञाना ❀ मोक्ष प्रदउ तउ तुच्छ बखाना ॥
प्रभु प्रतिकूल वेष मत ध्याना ❀ वृथा पढ़व श्रुति शास्त्र पुराना ॥
प्रभु प्रतिकूल बादि सब धर्मा ❀ सन्ध्या तर्पण मख शुभ कर्मा ॥
प्रभु प्रतिकूल करावत जोई ❀ जीवनि सो गुरु निशिचर होई ॥
प्रभु प्रतिकूल मंत्र मत वेषा ❀ उपदेशत जीवन करि द्वेषा ॥
पढ़ि श्रुति शास्त्र मनमुखी बाता ❀ कथि श्लोक मिलावहिं त्राता ॥
सोइ परसङ्ग दिखाय दिखाई ❀ जीवनि विमुखी देत बनाई ॥
नाना मंत्र भाउ प्रगटाये ❀ मनमुख गुरुवनि जीव नशाये ॥

दोहा—परिहहिं कुम्भीपाक सो, गुरुआ प्रभु प्रतिकूल ।
रटत न श्री सियराम जो, नाम सकल सुख मूल ॥१२४॥

मनमुख गुरुआ चेलनि साथा ❀ परिहैं नरकनि धुनि हैं माथा ॥
यह सुख तिन्हि कहँ दुर्लभ कैसे ❀ रोगिहिं भोजन स्वाद सु जैसे ॥
अन्धहिं दर्शन मूकहि बयना ❀ दुर्लभ तिमि विमुखनि प्रभु अयना ॥
बधिरनि शब्द अगम जेहि भाँती ❀ विमुखनि तिमि प्रभुभक्तनि पाँती ॥
पति सुख रुइहिंनजिमितियवेवा ❀ विमुखनितिमि दम्पति पद सेवा ॥

हम सब परम पुन्य की रासीं ❀ भई सकल दम्पति पद दासीं ॥
धन्य सुशीला सम्भु सरूपा ❀ प्रभु सन करि ये प्रश्न अनूपा ॥
श्री मुख ते यह कथा सु पावन ❀ कहवायेउ भव ताप नशावन ॥
जो यह पढ़हिं प्रसङ्ग सुहावा ❀ तिन्हिकरनशहिंसकल दुखदावा॥
तब शङ्कर प्रभु पद धरि माथा ❀ कहेउ आजु हम भयेउ सनाथा ॥
श्री मुखवानी सुनि सु अमोली ❀ भयेउ मोर मति परम अडोली ॥

दोहा-एकादश मम प्रश्न के, प्रभु जो उत्तर दीन ।
सुनि गुनि सो निज प्राण सम, दृढ़ करि धारन कीन॥१२५

ग्यारह उत्तर श्रीमुख केरे ❀ सुखद एक ते एक वड़ेरे ॥
उत्तर ग्यारह जो कोउ धारैं ❀ आपु तरैं भव औरनि तारैं ॥
यह शुभ कथा सुनाय सुनाई ❀ करिहौं जीवनि सन्मुख जाई ॥
बसि काशी कैलाश मझारी ❀ करिहौं प्रभु की भक्ति अघारी ॥
श्री सियराम सु नाम उदारा ❀ रटिहौं नाथ सहित परिवारा ॥
मोरे निशि दिन नाम अधारा ❀ रटों त्यागि परपञ्च अपारा॥
काशी अरु कैलाश निवासी ❀ नामहिं रटि गति पावहिं खासो ॥
जिन्हिकर प्रेम नाम में नाँहीं ❀ ते जन सपनेउँ मोहिं न सुहाँहीं ॥
मोहि भजै प्रभु नाम विहाई ❀ ते न लहहिं प्रभु भक्ति सुहाई ॥
पूजत प्रभुहिं न रटत सुनाँऊँ ❀ तिन्हि मैं भूत पिशाच बनाँऊँ ॥
मम पुर बसि जो वैष्णव बाना ❀ धारि रटत सियराम सुजाना ॥

दोहा-ते सब देव समान मोहि, प्रिय प्रभु भगत तुम्हार ।
तिन्हिकी रच्छा करहुँ मैं, सदा सहित परिवार ॥१२६॥

वैश्नव धर्म नाम प्रभु सेवा ❀ धारहिं ते जन मम पुर देवा ॥
श्री सियराम सु नाम उदारा ❀ वैश्नव धर्म सु मोहि दोउ प्यारा ॥
निदरि तिन्हैं जो वन्दहिं मोही ❀ मम पुर बसि ते मेरे द्रोही ॥
ते जन भूत पिशाचनि केरी ❀ पावहिं योनि भगति करि मेरी ॥

मम सिद्धान्त नाम प्रभु सेवा ❀ वैष्णव धर्म मुख्य सुखदेवा ॥
परिहरितेहिहठकरिमोहि ध्यावत ❀ तेहिलगिते सुभ गतिनहिं पावत ॥
मैं सिखवहुँ सियरामहिं ध्यावहु ❀ होय सुवैष्णव नामहिं गावहु ॥
वैश्नव वेष नाम मोहि प्यारा ❀ धारहु सब सुनि वचन हमारा ॥
युगल मन्त्र भव तारक नामू ❀ जपौ सकल निवसहु मम धामू ॥
इन्ह बिनु सुभगति लहत न कोई ❀ सेष गनेश विधिहुँ किन होई ॥

दोहा—वैश्नव वेष सु धारि अँग, रटै नाम सिय राम ।
मम सेवा कर सुफल तब, पावै पद विश्राम ॥१२७॥

यह सिद्धान्त मोर जो कोई ❀ धारत हृदय भगत मम सोई ॥
प्रभुपद विमुख भगति करिमोरी ❀ शुभ गति चहत तासु मति थोरी ॥
भूतनाथ सुरनाथ हमारे ❀ नाम प्रसिद्धि प्रताप तुम्हारे ॥
धरि कुवेष जो केवल मोही ❀ भजें होइ हठि प्रभु पद द्रोही ॥
सोइ जन होत भूत सियनाथा ❀ तिन्हि की बरणों योग न गाथा ॥
दूसर श्री वैष्णव कर धर्मा ❀ धारि रटैं सियराम अभर्मा ॥
भक्त सिरोमणि मोहि जिय जानी ❀ सेवहिं प्रभु पद मन क्रम वानी ॥
सुर सम ते जन अति प्रिय मेरे ❀ ममपुर बसहिं भक्त प्रभु केरे ॥
भूत अवैष्णव वैष्णव देवा ❀ ममपुर निवसि करहिं मम सेवा ॥
सजातीय सुर सब बिधि मेरे ❀ मन वच क्रम जे प्रभु पद चेरे ॥
भूत अवैष्णव पुर चहुँ फेरे ❀ रक्षा हेत बसहिं करि डेरे ॥

दोहा--नकली मोर कुसाज सजि, बने भूत भजि मोहिं ।
असली वैष्णव धर्म मम, धरि सुर सेवहिं तोहिं॥१२८॥

सुनि सिव वचनभक्ति रस सानें ❀ कृपासिन्धु सिय सह मुसुकानें ॥
प्राण समान मोहि अति प्यारे ❀ संकर उभय सरूप तुम्हारे ॥
सखी रूप ते नित मम पासा ❀ निवसि विलोकहु चरित सु खासा॥
सुर बपु धरि काशी कैलाशा ❀ निवसि हरहु जीवनि की त्रासा ॥

रटहु नाम गावहु मम लीला ❀ धारि सु वैष्णव वेष सु शीला ॥
उत्तम तुम्ह मम भक्तनि माँहीं ❀ तब द्रोही जन मोहि न सुहाँहीं ॥
तोहि विनु सेये भक्ति हमारी ❀ लहहिं न कोउ शंकर नर नारी ॥
तोर निन्दकी मोरे द्रोही ❀ भजनहुँ करत न पावहिं मोही ॥
भक्त वसल प्रभु की प्रियवानी ❀ सुनि सिव सहित सभा हरषानी ॥
यह सम्बाद विषाद विकारा ❀ पढ़त सुनत हरिहै भ्रम भारा ॥
समुझहिं जो यह श्री मुख बानी ❀ पावहिं ते सियबर धनु पानी ॥

दोहा- चन्द्रकलादिक आलि तब, सिय रुख लखि हरषाय ।
उठीं सकल सजि आरती, कीन्हेसि गाय बजाय ॥१२६॥

नाचहिं ललना बाजहिं बाजन ❀ सिंहासन राजैं दोउ साजन ॥
कंचन थारनि सजीं आरतीं ❀ लिये करनि बहुअलिं उतारतीं ॥
चारि आरती चरननि फेरी ❀ कटिपर उभय एक मुख केरी ॥
वहुरि सात सब अङ्गनि केरी ❀ कीन्ह आरती उमग घनेरी ॥
चुनिचुनिसुमनसुभरिभरि झोरीं ❀ वरषहिं दम्पति ऊपर गोरीं ॥
चमर छत्र कर विजन सुधारें ❀ बहु सखि भूषन वसनउ वारें ॥
उमा सम्भु अदभुत नचनाई ❀ नाँचहिं हेरि हँसहिं रघुराई ॥
धूप धूम छायेउ सुखदाई ❀ आनँद उमग बरनि नहिं जाई ॥
प्रभु आरति भव आरति हारी ❀ जो कोउ करैं लखें नरनारी ॥
श्री सियराम आरती केरी ❀ झाँकी सकल सुखनि की ढेरी ॥
प्रभुमुख चन्दचकोर नयन करि ❀ तजिनिमेषअलिंलखहिंमोदभरि ॥

दोहा—अर्घ पाद्य पुष्पाञ्जुरी, विधिवत दीन्ह बहोरि ।
अस्तुति लागीं करन सब, प्रेम सहित करजोरि १३०

❀ छन्द ❀

जय सियरघुराई जन सुखदाई कीर्ति सुहाई जग छाई ।
गावहिं श्रुति शेषा ब्रह्म सुरेशा शमन कलेशा गति दाई ॥

जय जय सुर भूपा अद्भुत रूपा छबि सु अनूपा अधिकाई।
जय युगल सु जोरी विमल अखोरी श्यामल गोरी मनभाई ॥१॥
जय जय पिय प्यारी प्रभु अवतारी महिमा भारी विस्तारी।
जय जय जग कारन भव भय टारन पावहिं पार न श्रुतिचारी ॥
जय बहु तनु धारी सँग सुकुमारी जनक दुलारी अतिप्यारी।
सेवहिं अलि बृन्दा पूरन चन्दा दोउ सुखकन्दा मुदकारी ॥२॥
सुर नर मुनिझारी श्रृष्टि अपारी शक्ति तुम्हारी तिय रूपा।
तेहि सङ्ग विहारा रुचि अनुसारा करहु उदारा सिय भूपा ॥
यह भेद सुगूढ़ा लखहिं न मूढ़ा विषय अरूढ़ा अघ कूपा।
प्रभु गति निरुपाधी हरन कुव्याधी बरनत साधी श्रुतिचूपा ॥३॥
जय परम सुजाना देउ सुग्याना जीवनि दाना हरि माना।
जय करुणा सागर सब गुन आगर नट नागर श्री भगवाना ॥
जीवनि पर दाया करि रघुराया हरहु स्वमाया अग्याना।
निज रूपसु पावहिं येहि पुर आवहिं प्रभुहिं रिझावहिं विधिनाना ॥४॥

❀ दोहा ❀

तुम्ह समर्थ सब भाँति प्रभु, हेतु रहित जन पाल।
देउ भगति भव तारिनी, जीवनि हरि जग जाल ॥१३१॥
नरता धारी आतमा, परि जड़ माया फन्द।
ताहि निवारि सु शरण निज, दीजै सिय रघुनन्द ॥१३२॥
यहि विधि अस्तुति करि सु सब, बार बार बलि जाय।
प्रेम सहित दम्पति चरण, परीं हृदय हरषाय ॥१३३॥
कृपा दृष्टि ते हेरि दोउ, दीन सु आशिर्वाद।
सुनि सब हरषीं परस्पर, मिलीं भरीं अहलाद ॥१३४॥

तव शिव दम्पति पाँयँ परि, आशिष आयसु पाय ।
उमा सहित मिलि सबहिं निज, भवन चले हरषाय॥१३५॥
सभा विसर्जन करि सु दोउ, हरषि उठे सियराम ।
गवने भीतर भवन प्रभु, अलिनि सहित सुखधाम॥१३६॥
श्रीलक्ष्मणा सु गंग तट, सीतामढ़ी सु धाम ।
प्रेमलता सु प्रसंग यह, लिखेउ सुमिरि सियराम ॥१३७॥

—००:०:००—

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक
श्री वैशनव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल
शरणजी महाराज उपनाम श्री प्रेमलता जू
कृत श्री प्रश्नोत्तर त्रयोदश प्रसङ्ग
समाप्त शुभम् ॥१३॥

जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

* श्रीः *

अन्तिम ज्ञान प्रसंगारम्भः ।१४।

श्री सतगुरवे नमः ।

दोहा ।

अन्तिम ज्ञान प्रसङ्ग अब, कहौं चतुर्दश गाय ।
पढ़त सुनत समुझत सु जेहि, ममता मद विनशाय ॥१॥
सतगुरु श्रीमुखते कह्यो, यह प्रसंग मोहि पाहिं ।
जसको तस वरन करों, सुनि गुनि भर्म नसाहिं ॥ २ ॥
करत रहौ निज मरन की, निशि वासर उर यादि ।
प्रेमलता सियराम रटि, जानि सकल सुख बादि ॥३॥
हाय दैव केहि विधि मरब, सहि सहि कठिन कलेश ।
प्रेमलता यह चिन्तवन, करि रटु नाम रसेश ॥ ४ ॥
बादर में जिमि बीजुरी, चमकि छिपै छण माँहिं ।
प्रेमलता तिमि जिन्दगी, जग विच सोउ बश नाँहिं ॥५॥
जन्मत मरत कलेश अति, होत बखानत वेद ।
प्रेमलता छूटै न विनु, सुमिरे नाम अखेद ॥ ६ ॥
विच विचहू दुख होत जब, घेरत आइ कुरोग ।
प्रेमलता कछु सुख नहीं, जग विच भूले लोग ॥ ७ ॥
सहेउ कठिन दुख गर्भ महँ, सोइ लरिकाई बीच ।
प्रेमलता गइ तरुणता, परि गृह धन्धे कीच ॥ ८ ॥

घेरि लियेउ पुनि जरठता, जो सब दुख की खानि ।
प्रेमलता बरवश करै, सकल सुखन की हानि ॥ ८ ॥
बूढ़नि की गति होत जो, सो सब देखउ नैन ।
प्रेमलता पायो कहाँ, कहहु जीव सुख चैन ॥ ९ ॥
आदि मध्य अरु अन्त दुख, जेहि तन वश लहजीव ।
प्रेमलता तेहि पालियत, अग्यानी तजि पीव ॥ १० ॥
नाशवान अति दुखद सुख, मायिक प्रभु प्रतिकूल ।
सञ्चि सञ्चि नित धरत तिन्हि, तनहित सहि बहु शूल ॥११॥
खात थोर दुख सहत बहु, जुगवत करत सम्हार ।
प्रेमलता सुख मानितेहि, फूल्यो अति अबिचार ॥ १२ ॥
जेहि सुख कहँ लखि सहस गुन, दुख सम त्यागत संत ।
प्रेमलता तेहि महँ उरझि, सहत अग्य दुख अन्त ॥ १३ ॥
जेहि सुखते दुख ऊपजै, ते सुख दुख सम जानि ।
प्रेमलता तजि ताहि रटि, नाम सकल सुख खानि॥ १४ ॥
पढ़त लिखत बहु दिन गये, भयो न उर आनन्द ।
प्रेमलता सियराम बिनु, रटै न टूटै फन्द ॥ १५ ॥
हरदम रखना चाहिये, सबहिं काल को ख्याल ।
प्रेमलता घूमत सदा, शिरपर कठिन कराल ॥ १६ ॥
फूले फूले फिरत नित, भूले भूले काल ।
प्रेमलता शूले सहत, बिनु सियलाल कृपाल ॥ १७ ॥

अरुझत जाय विषय के जारा ❀ भूलेउ नाम पर्‌यो संसारा ॥
में में करत अजा की नाँईं ❀ करता बन्यो विसरि जग साँईं ॥
परवस पर्‌यो विषय रजु बाँधा ❀ प्रभु तजि भार उठायेउ काँधा ॥
सुख कहँ दुख दुख कहँ सुखमाना ❀ तजि सियराम फिरत बौराना ॥
सूझत नहिं निज लाभ न हानी ❀ कहत सुनत बहु ज्ञान कहानी ॥
नर तनु धरिजो चाहिय कीना ❀ करत न सो भा हृदय मलीना ॥
स्वान सूकरन केर आचरन ❀ लाग्यो करन मानि आपन धन ॥
जीव एक प्रभु अंश सु निर्मल ❀ फस्यो आइ माया के दल्दल ॥
काढ़न हार सु सतगुरु स्वामी ❀ मिलेउ न सो नामी निश्कामी ॥
खैंचहिं नाम सुदाम धराईं ❀ निज दिशि निर्भय शब्द सुनाईं ॥
रक्षा करहिं सु राखि समीपा ❀ बारहिं हृदय ज्ञान को दीपा ॥

दोहा--प्रेमबारि अन्हवाय तेहि, धोवहिं माया पंक ॥
गयेइ वहोरि मिलावहीं, प्रभु सन करि सु निशंक ॥१८॥

शरधा वर विश्वास बढ़ावैं ❀ सम दम संयम नेम सिखावैं ॥
अपर तितिक्षा कहहिं वखानी ❀ सुख दुख सम जानहिं विज्ञानी ॥
भोगनि ते मन देइँ हटाई ❀ सो उपराम कहत मुनिराई ॥
सम दम शरधा अरु विश्वासा ❀ अपर तितिच्छा करहिं प्रकासा ॥
भाषहिं पुनि स्वरूप उपरामा ❀ प्रेम सहित रटवावहिं नामा ॥
षटसम्पति यह अति सुखदाई ❀ जिज्ञासुन की समुझहु भाई ॥
यहि बिनु निवहत भजन न नेमा ❀ प्रगटत नहिं प्रभु गुरु पद प्रेमा ॥
तिमि षट शरणागति बिनु जाँनें ❀ भटकत जीव फिरहिं दुखसाँनें ॥
द्रवत न तिन्हि पर कबहुँ सियावर ❀ कोटिनि भजन करैं बरु तजिघर ॥
खट शरणागत भेद बखानौं ❀ प्रेमसहित सुनि गुनि उर आनौं ॥

दोहा--एकादश सु प्रसंग महँ, षट शरणागत भेद ।
लिखे कहहुँ कछु अपरहू, सुनि गुनि नाशै खेद ॥१९॥

संग्रह प्रभु अनुकूलहि करिये ❀ निन्दा अस्तुति होय न डरिये ॥
प्रतिकूलहि कहँ त्यागि सु दीजै ❀ होय परम प्रिय मोह न कीजै ॥
गोपत्त्वु प्रभु घट घट व्यापा ❀ अस लखि काहुइ देइ न तापा ॥
सोइ प्रभु रक्षा करहिं हमारी ❀ सदा सकल दिशि सब दुखटारी॥
प्रभु सन्मुख शिर नाय निहोरी ❀ निज अवगुन भाषै कर जोरी ॥
सब सन दीन वचन लघुताई ❀ धारि रटै सियराम सदाई ॥
कारपण्यता यहि कर नामा ❀ राखै उर न कपट छल कामा ॥
षष्टम सर्व समर्पण कीजै ❀ प्रभु कर तन मन धन सुख लीजै ॥
होइ इकन्त रटै नित नामहिं ❀ बैठिनिचन्त सकलसुख धामहिं ॥
एक भरोस आश विश्वासा ❀ राखै प्रभु कर तजि सब आशा ॥
प्रभु जो करैं धरै शिर सोई ❀ ममहित जानैं यहि महँ होई ॥

दोहा—जीवनि कर प्रभु हित सदा, चाहत अनहित नाँहिं ।
यह विश्वास सु धारि दृढ़, मुदित रहहिं मन माँहिं ॥२०॥

षट शरणागति ये उर धारौ ❀ षट रिपु जीति प्रीति सञ्चारौ ॥
तब षट ऊर्मिनि आपहि नाशै ❀ जिन्हके अछत न भजन प्रकाशै ॥
भूख प्यास निद्रा लरिकाई ❀ पुनि २ जनम मरन बिरुधाई ॥
अतिशय दुखद कठिन ये रोगा ❀ जिन्हि के विवश परे सबलोगा ॥
सुमिरत नाम कटहिं सब बाधा ❀ ते सबकहहिं प्रथम जिन्हिसाधा ॥
नामहिं रटत सु षष्ट प्रयोगा ❀ सिद्ध होत बिनु जप तप योगा ॥
आकर्षन उच्चाटन मारण ❀ अस्तम्भन मोहन वशकारन ॥
अर्थ धर्म अरु काम मोक्ष भल ❀ करतल होत नाम रटि चहुँफल ॥
अष्टशिद्धि नव निधि गति पाँचो ❀ सिद्ध होत रटि नामसु साँचो ॥
नवधा भगति परा अरु प्रेमा ❀ पावहिं रटि सियराम सनेमा ॥
गुरु बिनु ये सब कौन लखावै ❀ को भव सागर पार लगावै ॥

दोहा—नाम सु जापक गुरुबिना, जीव परे भव कूप ।

मोह मान मद पान करि, विसरेउ आपन रूप ॥२१॥
महा मलिन तनु आमय खानी ❀ तेहि महँ मानि रहे सुखप्रानी ॥
लोहू पीव मास मल मूता ❀ नश नश भरयो विकार बहूता॥
हाड़ थूक कफ पित्तरु लारा ❀ मज्जा कीच आँव नश बारा ॥
ज्ञानदृष्टि ते देखउ भाई ❀ कहि न जाय तनु की मलिनाई॥
पावन अशन वशन बर भूषन ❀ करत सबहिं यह देह सदूषन ॥
मूत करत पी सुरसरि नीरहिं ❀ विष्ठा करत खाइ अन खीरहिं ॥
खाय गाय जो वही पदारथ ❀ आवै तौ सबहिनि के स्वारथ ॥
यह तनु सर्वस खाइ नशावै ❀ काहुइ के कछु काम न आवै ॥
सोइ तनु मलि मलि करतसफाई ❀ अति अविचारी लोग लुगाई ॥
केश बढ़ाइ फुलेल लगावत ❀ अतर कान महँ धरि हरषावत ॥
टेढ़ी पाग बाँधि मुँह देखै ❀ आपु समान न काहुइ लेखै ॥
दोहा–उतपति निज अरु गर्भ दुख, जन्म मरन कर शोक ।
विसरि बनेउ प्रभु विमुख सठ, बलीदान के बोक॥२२॥
पान खाइ इतराइ चलै मग ❀ निरखत छाँह मरोरत अँगपग॥
मूँछ उमेठि गर्व की बातैं ❀ करै करावैं जीवनि घातैं ॥
चढ़ि चढ़ि गज घोरनि गर भावै ❀ ऊँचो बैठि अधिक हरषावैं ॥
धन मद मत्त भयेउ अति अन्धा ❀ सीस उठायेउ जग को धन्धा ॥
काम कोह मद मत्सर माना ❀ कपट दम्भ छल लोभ समाना ॥
जन्म गयो धन धाम सम्हारत ❀ झूठनि सङ्ग गाल वहु मारत ॥
भूलि गई सुधि जन्म मरनकी ❀ गर्भ बास महँ कौल करन की ॥
आयू बहै पवन ज्यों पानी ❀ बालपनें ते आई ज्वानी ॥
लागेउ होंन स्वेत कच कारे ❀ तबहुँ न तजत मोह मद मारे ॥
खेलत खात काल धरि खायेउ ❀ छनमें तनको बार न लायेउ ॥
दोहा–गज घोरा ग्रह नारि सुत, तन धनादि परिवार ।

छन मैं छूटे सकल सुख, परेउ काल के जार ॥२३॥

ज्यों चिरियाँ ऊँची तरुडारा ❀ बैठी हेरत अपन अहारा ॥
जहँ कहुँ देखै उड़त फतङ्गा ❀ पकरि खाय तेहि सहित उमङ्गा ॥
तेहि पच्छी कहँ बाज अनासा ❀ पकरै झपटि देइ अति त्राशा ॥
येहि विधिसब शिरकालकराला ❀ घूमत तुम भूले केहि ख्याला ॥
सतगुरु खोजि बेगि वर कीजै ❀ नाम रटन उपदेश सु लीजै ॥
त्यागि सकल ग्रह केर कुनाता ❀ रटहु नाम निशि दिन जन त्राता ॥
झूठे जग घर केर शनेही ❀ अन्त न देत काम कछु तेही ॥
स्वारथ के सब सगे विचारहु ❀ ज्ञान दृष्टि दै तिन्है निहारहु ॥
मातु पिता भ्राता सुत नारी ❀ सबते ये सम्बन्धी भारी ॥
तेऊ सब स्वारथ विनु बाता ❀ बूझत नहिं जिउ तिन्हि सँगराता ॥

दोहा—जिन्हि कहँ तुम हित मानि नित, सेयेउ सहित सनेह ।
सो सब स्वारथ के सगे, प्रभु विनु रहित सँदेह ॥२४॥

करहु परिक्षा तजि ग्रह कामा ❀ खरचहु खाय बैठि वसुयामा ॥
होइहैं तुरत सकल दुख रूपा ❀ दरशावत जे प्रेम अनूपा ॥
साँचे हित तुमरे सियरामा ❀ जिन्हि दीनी यह देह ललामा ॥
गर्भहि ते तुमरे हित कारी ❀ भये विचारहु राम खरारी ॥
रह्यो न तहँ कोउ नाते दारा ❀ धन बल विद्या भवन भँडारा ॥
पराधीन परि तहाँ सहे दुख ❀ ऊपर चरण हेट मल महँ मुख ॥
बाँधे सकल अङ्ग अकुलावत ❀ बश न चलै कछु अति दुख पावत ॥
जरै जहाँ जठरानल भारी ❀ तपै अँवा इव उदर मझारी ॥
नहिं तहँ पवन न सीतल पानी ❀ नहिं कोउ साहि सुनैया बानी ॥
रज वीरज सो परम मलींना ❀ तेहि ते तुम प्रगट्यो सु प्रवीना ॥

दोहा—जल सीकर ते पिंड करि, तेहिते मनुषा कार ।
विरचेउ अंग उपांग सह, को तोहि सहित विचार ॥२५॥

श्रवण नाशिका नयन वदन वर ❀ विरचेउ को पग लिङ्ग गुदा कर ॥
सकल सुअङ्ग अनूप बनाये ❀ बाहिर भीतर जात न गाये ॥
उदरहि महँ यह अदभुत रचना ❀ कीन जौन तेहि भजु मन वचना ॥
सोवै जगै खाय मुख बोलै ❀ सुनै गुनै चख मूदै खोलै ॥
बैठै उठै चलै अरु देखै ❀ केहिके वल तू ताहि न लेखै ॥
पढ़ै लिखै बहु कथा कहानी ❀ समुझावै कहि कहि मृदुबानी ॥
जग के काज करै विधि नाना ❀ वल ते बुधि ते वजत सयाना ॥
अचरज जन्य अनूप मकामा ❀ प्रगटावत रचि अति अभिरामा ॥
माटी पाथर काँच काठ ते ❀ गढ़ि काढ़त वहु रूप ठाठते ॥
धातु पाट पट हाड़ चामकी ❀ रचै वस्तु वहु मोल दाम की ॥

दोहा–कल वल बुद्धि विचार अँग, प्रभु मद पाय सुजीव ।
प्रगटत ख्याल अनूप निज, करता वनि तजि पीव ॥२६॥

वरणौं जो इक इक चतुराई ❀ तौ सब आयू जाय सिराई ॥
देखि जगत की अदभुत रचना ❀ अचरज होतकहै किमि बचना ॥
येक ते एक बड़े बुधिवन्ता ❀ जिन्हिके गुणकरमिलै न अन्ता ॥
प्रेरक प्रभु कर नाम विसारा ❀ जिन्हि दीन्हेउबुधिवलसुविचारा॥
श्रवण शक्ति राखी जो कानन ❀ लखन नयन बोलन को आनन ॥
सूँघन शक्ति नाक में राखी ❀ रसना लेति स्वाद सब चाखी ॥
दशो द्वार दश सुर वैठारे ❀ विनु आज्ञा ते टरत न टारें ॥
उर मन बुद्धि चित्त हंकारा ❀ राखेउ प्रभु दै ज्ञान विचारा ॥
नव नारीं सोइ तार लगाया ❀ जठरानल राखी करि दाया ॥
पाँच पञ्च पुनि पंच सुप्राना ❀ रचि राखेउ प्रभु कृपा निधाना ॥
कुञ्ज वहत्तर चारि सु वानी ❀ रचि राखेउ तनु विच सुखदानी ॥

दोहा–गुन सुभाव इन्द्रीं सुदश, रक्षक विषय समेत ।
विरचेउ प्रभु सुबिचित्र तेहि, निरखहिं सन्त सचेत ॥२७॥

अञ्जन इक अद्भुत रचि राखा ❀ उदर माँझ जो जाय न भाखा ॥
अति विचित्र ताकी सब करनी ❀ कवनिउँ विधि सोजाइ न बरनी ॥
सानि अन्न जल पेरि पचावै ❀ सार काढ़ि अँग २ पहुँचावै ॥
पुनि जल मलहिं बिलग करि भाई ❀ निज निज थलहिं देइ पहुँचाई ॥
चाचरि आदिक पंच सुमुद्रा ❀ रचि राखेउ प्रभु सबके उद्रा ॥
ज्ञान विचार विराग विवेका ❀ भरेउ विरचि गुन अगुन अनेका ॥
हाड़ चाम की रचि यह काया ❀ ता मधि भरि राखी बहु माया ॥
उलटि दृष्टि देखत जन योगी ❀ तनु रचना जानहिं नहिं भोगी ॥
तनु रचना जिन्हि लखी सुनयना ❀ सतगुरु कृपा रुकेउ मन बयना ॥
मगन रहैं तेहि रचना माँहीं ❀ जग प्रपंच तिन्हि सूझत नांहीं ॥

दोहा—नखशिख अंग अनूप सब, सुभग एक ते एक ।
रचेउ ईश अद्भुत जगत, निरखहिं सहित विवेक ॥२८॥

अस कायहि जो रचि बिनशावत ❀ तेहि प्रभु कहुँ ते जन नित ध्यावत ॥
एकौ अङ्ग भङ्ग जो होई ❀ तेहि तस करै सु अस नहिं कोई ॥
जेहि प्रभु की यह अनुपम रचना ❀ ताहि भजहिं जन मन क्रम बचना ॥
तेहि प्रभु बैठि सुदेह मझारी ❀ सबहि नचावत इच्छा चारी ॥
प्रेरक परम प्रकाशक सोई ❀ घट घट व्यापित जानत कोई ॥
छण में रचैं अमित ब्रह्मण्डा ❀ करै पलक महँ पुनि सतखण्डा ॥
कोप करै तौ कौन उबारै ❀ दया करै तेहि फिरि को मारै ॥
सब ते बड़ी साहिबी भारी ❀ पावहिं पार न शिव श्रुति चारी ॥
जब चाहैं तब जो करि डारै ❀ अस नहिं कोउ जो आज्ञा टारै ॥
सृजि पालहिं पुनि करहिं विनाशा ❀ जिमि बाजीगर केर तमासा ॥
रहत सदा जीवन के संगा ❀ खेलत धरि धरि तन बहु रंगा ॥

दोहा—कच्छ मच्छ कौलादि तन, जीवनि हित प्रभु धारि ।
हरत सकल दुख देत सुख, खल दल बल संहारि ॥२९॥

अस प्रभु ते करि कपट मूढ़ नर ❀ चाहहिं सुख ते मन्द मन्दतर ॥
गर्भहि ते जिन्हि कीन सहाई ❀ तेहि तजि चाहत मूढ़ भलाई ॥
बीर बनें कोउ धीर अमीरा ❀ कोउ पंडित कोउ पीर फकीरा ॥
कोउ गुणवन्त सन्त बुधिवन्ता ❀ सब कर प्रेरक इक सियकन्ता ॥
तेहि बिनुसुर मुनिअसुरचराचर ❀ मृतकहोतनहिंसकहिंस्वकृतकर ॥
परो रहै अनुपम यह देही ❀ जस की तस जब तजै सनेही ॥
तन की सकल विभूति बड़ाई ❀ गुण बल कीर्ति कला चतुराई ॥
चेतन संग जाय छण माँहीं ❀ रोकि सकै तेहि अस कोउ नाँहीं ॥
बड़े बड़िनि की सुन्दर काया ❀ चेतन बिना लगति भय दाया ॥
परसत पाप विलोकत त्राशा ❀ लागत बिनु प्रभु केर प्रकाशा ॥

दोहा– रज वीरज की देह यह, महा मलिन श्रुति गाव ।
प्रिय लागति अति सबहिं सो, सियवर शक्ति प्रभाव ॥३०॥

ताहि निरादरि जीव अभागी ❀ करत यतनबहु सुखसिथिलागी ॥
चाहत अपनोइ नाम चलायो ❀ करता बनि भरता बिसरायो ॥
कर पद नयन नाक मुख काना ❀ काज करन कर बुधि बल ज्ञाना ॥
कवन दीन तेहि कहँ बिसरावा ❀ करै सकल आपन मन भावा ॥
जो प्रभु करैं लुञ्ज पग पानी ❀ आँधर बहिर मूक अज्ञानी ॥
करि न सकहु पुनि कछु प्रभुताई ❀ दुर्गति होइ जो बरनिन जाई ॥
गर्भ बास की सुरति भुलाई ❀ सीखि लीन अब बहु चतुराई ॥
परवश तब से अबहूं जानों ❀ प्रभु उपकार हृदय महँ आनों ॥
उदरमाँझ रखवारी जैसी ❀ करी करत प्रभु अबहूं तैसी ॥
जेहि विधि भीतर जीवजिवायेउ ❀ तेहि विधि बाहिर दूध पिवायेउ ॥
प्रगटायेउ पुनि मुख में दन्ता ❀ खान पदारथ बहु सिय कन्ता ॥

दोहा–भोजन त्रिविधि प्रकार के, प्रगटायेउ भगवान ।
करन खानकी बुद्धि पुनि, दीन सु कृपा निधान ॥३१॥

रसना दई स्वाद जो चाखै ❀ खाटे मीठे वचन सु भाखै ॥
भरि भरि पेट खात रस अनरस ❀केहिविधिपचतआचरज मोहिअस।
बाहिर हूं सुन्दर सब अङ्गा ❀ रचेउ कृपालु अनूप सु ढङ्गा ॥
जड़ चेतन सब केर शरीरा ❀ रचेउ विचित्र विचारहु धीरा ॥
तन के रचे अङ्ग सब सेवक ❀ यथा योग सब विधि सुख देवक ॥
चरण उठे वैठें अरु चालैं ❀ तैसेहि हाथ सकल अँग पालैं ॥
सूंघै नाक निहारैं नयना ❀ सुनैं कान मुख बोलत बयना ॥
निज निर्वाह करन को ज्ञाना ❀ सब सामायन सहित सुजाना ॥
दीन सबहिं सबकी प्रतिपाला ❀ करी करत करिहैं सु दयाला ॥
भूषन वसन अशन असवारी ❀ रचेउ सबहिं सुख देन खरारी ॥
इक इक वस्तु अनूप अपारा ❀ रचि प्रगटी जग हित करतारा ॥

दोहा–युग विधि रचना रचेउ प्रभु, जड़ चैतन्य अनूप ।
चारि खानि योनी बहुरि, लख चौराशी रूप ॥३२॥

नारि पुरुष दुइ रूप बनाये ❀ सब योनिन महँ सुखद सुहाये ॥
तत्व एक गुण अङ्ग स्वभावा ❀ नारिन कर प्रभु भिन्न बनावा ॥
विविध प्रकार भोग सुख सामा ❀ दर्शनीय अरु खाद्य ललामा ॥
जेहि जस योग रची तेहि लायक ❀ सीतां वर प्रभु अग जग नायक॥
सब पर आपन आज्ञा राखी ❀ महिमा जासु अगम श्रुतिभाखी ॥
सब योनिन पर यह नर चोला ❀ रचि राखेउ प्रभु अति अनमोला॥
निज समान नर देह बनाई ❀ दीन ज्ञान गुण बुधि अधिकाई ॥
यहि तनके सब सुख आधीना ❀ करि राखे प्रभु परम प्रवीना ॥
भक्ति मुक्ति आदिक चारिउ फल ❀ सुलभ होत सब सुकृत आय भल ॥
यहि तनु कहँ कछु अगम न भाई ❀ उभय लोक की भूति भलाई ॥
मानुष तनु याचत मुनि देवा ❀ येहि ते होय सु प्रभु की सेवा ॥

दोहा–मानुष तनु प्रभु भक्ति कर, अधिकारी सु अभेद ।

भक्ति हीन अति अधम गति, पावत गावत वेद ॥३३॥

भक्ति विवश प्रभु रहत सदाई ❀ सीतावर कृपालु रघुराई ॥
नर तनु भक्ति भजन अधिकारी ❀ तेहि लगि यहि कर महिमा भारी॥
बड़े भाग ते यह नर देही ❀ मिलत बखानत सन्त सनेही ॥
नर तनु लहि न भक्ति मन लागा ❀ तौ त्रिभुवन तेहि सम न अभागा ॥
भजन हेतु धरि मानुष देही ❀ विषय भोग कर भयेउ सनेही ॥
जो सुख सब योनिन में पावत ❀ सो सुख कहँ यह तनु धरि धावत॥
तजि प्रभु भक्ति भजन सुखधामा ❀ लागेउ करन पशुनि के कामा ॥
तेहि लगि पुनि चौरासी जावै ❀ जन्मत मरत दुसह दुख पावै ॥
सो केवल गुरु बिनु निज रूपा ❀ भूल्यो जीव सु अमल अनूपा ॥
विषयी गुरु बगरे जग माँहीं ❀ परमारथ पथ जानत नाँहीं ॥
भक्ति करत सोउ विषय समेता ❀ तेहि लगि होत न हृदय सचेता ॥

दोहा—दाम काम के वाम के, गुरुआ भगत विशेष ।
होत तजिय तिन्हि करिय गुरु, राम भगत गत द्वेष ॥३४॥

जन्म मरन भव वन्धन तुरुआ ❀ वह वर भजन न जानत गुरुआ ॥
सतगुरु मर्मी मिलत न कोई ❀ करै विमल उर मन मल धोई ॥
दिखरावै बर भजन अकारा ❀ भजै शिष्य तव सहित बिचारा ॥
पावै नर तनु कर फल जोई ❀ आवा गमन बहुरि नहिं होई ॥
भजन भाँति बहु वेद बखानत ❀ तेहिकर भेद सु सतगुरु जानत ॥
गुरुअनि अगम भजन कर भेदा ❀ जो सब भाँति हरै भव खेदा ॥
विषय अमल छकि गुरुआ ज्ञानी ❀ करत बात सब स्वारथ सानी ॥
तिन्हिकर संग भूलि नहिं कीजै ❀ सतगुरु खोजि सु तन मन दीजै ॥
भजन हेतु मानुष तनु पावा ❀ करिय वेगि तजि जग ते दावा ॥
छण छण छीजत जात सुआयू ❀ सोखत जलहि यथा रवि बायू ॥
निकसि गर्भ ते बाहिर आवत ❀ तेहि दिन ते मृतु वदन समावत ॥

दोहा—जननी जानत पूत मम, दिन दिन होत सयान ।
घटत जाय तेहिं बयस नित, काल निकट नियरान ॥३५॥

लरिकाई केहि भाँति बिताई ❀ खेलत खात न परी लखाई ॥
तब न रह्यो कछु माया मोहा ❀ काम दम्भ छल कपट न कोहा ॥
राग रोष ईर्षा मद माना ❀ रहेउ न लोभ द्रोह खल नाना ॥
विद्या बल न विभूति सगाई ❀ खेलत रहे खाइ अँगनाई ॥
भजन विचार विवेक विहीना ❀ रहत रहे नित पर आधीना ॥
कोमल अङ्ग सकल सुखदाई ❀ हाव भाव गति बरणि न जाई ॥
लाज काज चिन्ता चतुराई ❀ रही न सुमति कुमति गुमड़ाई ॥
बालक जानि सकल जन प्रीती ❀ करत रहे छमि चूक अनीती ॥
पुनि कछु भये बड़े सब अङ्गा ❀ पलट्यो सब शिशु पन कर ढङ्गा ॥
पढ़न लगेउ विद्या चतुराई ❀ कामादिक कछु व्यापेउ आई ॥
वह सुख गयो हजारनि कोशा ❀ घेरन लगेउ आइ गुण दोषा ॥

दोहा-विद्या वनिता विषय के, जबलगि परेउ न फन्द ।
तबलगि बालक बयस में, रहेउ परम आनन्द ॥३६॥

व्याह भयेउ पुनि नारि सु पाई ❀ भोगन लगेउ सनेह बढ़ाई ॥
हम हम लाग्यो करन बहोरी ❀ माया विवश भई मति भोरी ॥
भयेउ काल वश पितु महतारी ❀ तब सब विपता निज शिरधारी ॥
अतिशय लगेउ करन मनमानो ❀ होइ स्वतन्त्र सु पाइ जवानी ॥
नारि विवश भा मन क्रम बानी ❀ जो वह कहै करै हितमानी ॥
उपजन लगे पूत बहु कन्या ❀ लखि लखि तिन्है होत अति धन्या ॥
लालन पालन करन सु लाग्यो ❀ युवती लरिकन के सुख पाग्यो ॥
काहुइ करधरि चलन सिखावत ❀ काहुइ गोद राखि हलरावत ॥
काहुइ कंठ लाय मुख चूमत ❀ काहुइ काँध चढ़ाइ सु घूमत ॥
काहुइ पकरि लेइ हँसि कनियाँ ❀ बैठी पलंग निहारति धनियाँ ॥

यहि आनँदत्रिच होइ सु अन्धा * तरुणाई नासेउ करि धन्धा ॥

दोहा—घरमें बाहर गोदमें, खाट पेट में पूत ।
भरे न उर संतोष तउ, भयेउ काम वश भूत ॥३७॥

लगे होन सुत सुता सयानें * व्याहन लगेउ सु खोभि ठिकानें ॥
लग्यो वढ़न अव बहु परिवारा * सबकी करत सु सार सम्हारा ॥
त्रिलग विलग बहु घर सम्हराये * पूत पतोहुन लागि सुहाये ॥
आमद थोर खर्च बहु वाढ़ा * खान लगे पुनि करि करि काढ़ा ॥
नाते दार भयेउ बहु तेरे * ते नित आवत जात अनेरे ॥
साहू कार करै नित तंगा * काहे न देत रुपैया नंगा ॥
वासन बेचि सु कछुक चुकाये * हाथ जोरि तेहि पद शिरनाये ॥
भोजन वसन लागि हैरानी * सहन लग्यो किमि कहौं वखानी ॥
होन लगे पुनि नाती पोता * तिन्हि हित फिरै वैलज्यों जोता ॥
भोजन बसन न जुटत जुटाये * सहत कलेश जात नहिं गाये ॥
बाढ़्यो बंश दरिद्र अपारा * थकें अँग सब हिम्मत हारा ॥
देत न कोउ उधार अब दामा * चिन्ता विवस रहत वसुजामा ॥

दोहा—चौथेपन भा द्रव्य विनु, काल रूप परिवार ।
लगे देन दुख विविध तउ, चेतत नहीं गमार ॥३८॥

जन्मत मरत परत बहु दुखिया * सबहिं सम्हारत बनि रसुखिया ॥
ते निज २ मतलब हुसियारा * जिन्हि के हेतु जन्म सब हारा ॥
अब आयो चढ़ि शीस बुढ़ापा * उपजावत सो बहु परितापा ॥
तरुणाई कर सुख अति दूरा * गयो उखरि जिमि जरते मूरा ॥
विरुधाई के दुख अति भारी * बात न बूझै कोउ हितकारी ॥
कम्पत चरण हाथ अरु शीसा * सुनत न श्रवन नयन नहिं दीशा ॥
श्रवै नाक जल मुखते लारा * टूटेउ दाँत भयेउ शित बारा ।
बोलत और कढ़त कछु औरा * लोग कहत बुढ़वा भा बौरा ॥

सिकुरि सिकुरि भा ढीलो चामा ❀ रहेउ न बल तन तेज न कामा ॥
चलत रह्यो ऐड़ात सदाई ❀ निदरत सबहिं पाइ तरुणाई ॥
पान खाइ दै तिरछी टोपी ❀ निरखत रह्यो पराई गोपी ॥
बोलत रह्यो गर्व की बानी ❀ बल को रह्यो परम अभिमानी ॥

दोहा—भक्षा भक्ष अहार करि, पोसेउ मलिन शरीर ।
जीवत रहेउ निहारि तेहि, परिहरि सिय रघुबीर ॥३९॥

सो अब उठत भूमि कर टेकी ❀ चेतहु लखि उर दशा विवेकी ॥
लाठी धरि मग कम्पत चालत ❀ डग मग डगमग सबअँग हालत ॥
झुकी घेंट कटि धनुषा कारा ❀ भई नश्यो सब ज्ञान विचारा ॥
रे रे बुढ़वा कहि सब जाती ❀ निदरि पुकारहिं दिन अरु राती ॥
नाती पूत न सुनत सिखावा ❀ करत सकल निज निज मनभावा ॥
नारिहु तज्यो जानि अति बूढ़ा ❀ हुइ न सकत अब विषया रूढ़ा ॥
जिन्हिके हित तू अति दुख पायो ❀ करिकरि धन्धा जन्म नशायो ॥
सो अब तोर मरन मगु हेरत ❀ कहि कहि कटुक वचन सबटेरत ॥
टूटी खाट बिछौना हीना ❀ परे रहै तेहि माँहिं मलीना ॥
चाहे भोजन बसन न पावत ❀ माँगत पानी पाथर लावत ॥
दुर्लभ भयो अटारिन चढ़िबो ❀ अँधरनिजिमिपोथिनिकरपढ़िबो ॥
सुधि करि २ सुख कोठनि केरा ❀ दुखित रहत लखि नीचे डेरा ॥

दोहा—तन मन धन ते विरचेउ, ऊँचे महल सुयोग ।
होत रहे चित चकित तिन्हि, लखि लखि सुर मुनि लोग ॥४०॥

सोवत रह्यो जहाँ तिय संगा ❀ कंठ लगाय पागि रस रंगा ॥
तहँ अब जाब कठिन भा भाई ❀ चढ़ी आय शिर अति बिरुधाई ॥
नीचे पर्‍यो पौरि में परवश ❀ रहत सहत दुख दुसह कर्म जश ॥
घरके ऊपर मौज उड़ावत ❀ सो अकेल नीचे दुख पावत ॥
मलि मलि धोवत रह्यो जुदेहा ❀ तेहि कर भई दशा अब येहा ॥

घेरेउ कंठ बात कफ आई ❀ घुर घुर करै न बोलि सकाई ॥
कोउ न सहाय करै तेहि बेरा ❀ झूठ जगत महँ तेरा मेरा ॥
जो दुख होत जान तेहि सोई ❀ कहि समुझावै केहि विधि कोई ॥
बीछी सहस डङ्क की पीरा ❀ जन्मत मरत होत कहैं धीरा ॥
प्रभु विमुखनि भक्तनि कहँ नांहीं ❀ सांच लिख्यो सब पोथिनि माँहीं ॥
अस विचारि तजि लोक सगाई ❀ भजौ परम प्रिय सिय रघुराई ॥

दोह–उत्पति पालन प्रलय जो, छनछन में संसार ।
करत ताहि भजु तर्क तजि, मन बच कर्म गमार ॥४१॥

तिन्हि विनु कोउ न हितजग बीचा❀ भूलि परो जनि भव भ्रम कीचा ॥
गर्भहि ते प्रभु कीन सहाई ❀ मरन प्रयन्त न सुरति भुलाई ॥
तिहुँ पन के सुख दुख समुझायेउँ ❀ कछुक गर्भ की कथा सुनायेउँ ॥
कायागढ़ को ज्ञान बतायो ❀ जस कछु भेद गुरू ते पायो ॥
अपरउ कहे अनेक प्रसंगा ❀ ऊपर समुझहु ज्ञान अभंगा ॥
कहिहौं औरहु जो मोहि सूझै ❀ तरिहैं भव विनु श्रम जो बूझै ॥
साँचे सतगुरु विनु यह भेदा ❀ कवन लखावै हरन कुखेदा ॥
जीव सहैं दुख सतगुरु हीना ❀ तजि प्रभु पद भये परम मलीना ॥
लख चौराशी योनिनि जाई ❀ सहत विपति जो जात न गाई ॥
एक एक योनिनि के बीचा ❀ लाखनि वर्ष सहहिं दुख नीचा ॥
पर्वत सर्प विटप पाखाना ❀ इन्हकर आय दीर्घ बखाना ॥

दोहा–जड़ चेतन जहँ लगि जिते, भले, बुरे बड़ छोट ।
सकल जीव दुख सहहिं सोइ, जिन्हि के करतब खोट ॥४२॥

कीट फतिङ्गादिक दुख रूपा ❀ जन्मत मरत परे भव कूपा ॥
जिन्हि कर जीवन जीव अहारा ❀ तिन्हि करहोय न कबहुँ उबारा ॥
अण्डज पिण्डज उष्मज आदिक ❀ चारि खानि भाखैं वेदादिक ॥
अण्डज पच्छी कीट कहावत ❀ बहुविधिसो अतिशय दुख पावत ॥

मारि खात एकनि इक परवस ❀ भरमत एक अशन हित दिशि दश॥
प्रद्धादिक चढ़ि गगन मझारा ❀ खोजत व्याकुल फिरत अहारा॥
निशि प्रवेश लखि होय दुखारी ❀ बैठत आइ वृत्त मन मारी॥
तेहि पर बरसेउ पाथर पानी ❀ चलै पवन निशि भइ भय दानी॥
जाँयँ कहाँ कतहूं गम नाँहीं ❀ उड़ि २ गिरत दुखी महि माँहीं॥
तरुनि निवास करहिं जे जीवा ❀ वर्षा ऋतु दुख सहहिं अतीवा॥
थलचर चींटीं आदि सियारा ❀ रहहिं जे विल करि भूमि मझारा॥

दोहा—गोजर बीछी सर्प कृमि, वनवासी पशु भूरि।
पथिक दीन धन हीन जिन्हि, तजेउ सु प्रभु सुख मूरि॥४३॥

वर्षा ऋतु महँ अति दुख पावत ❀ व्याकुल इत उत घर बिनु धावत॥
उष्मज त्रिण वृत्तादिक नाना ❀ अचल खड़े दुख सहहिं महाना॥
कोउ काटत कोउ आग लगावत ❀ त्वचहिं छीलि कोउ दुख उपजावत
ग्रीषम वर्षा हिम दुख शीसा ❀ ठाढ़े सहैं अचल दिन तीसा॥
मारग में तिमि दूब दुखारी ❀ रहत सहत पद त्राननि मारी॥
पिंडज त्यों पशु मानुष जानों ❀ बहु प्रकार कहि सकौं कहाँनों॥
इक इक कर दुख देखि कराला ❀ कम्पत उर अति होत विहाला॥
बरद जुते हर गाड़िनि बीचा ❀ खैंचत बल करि मारहिं नीचा॥
घायल अँग अति वृद्ध शरीरा ❀ खात न घास जियत पी नीरा॥
तबहुँ न तजत ताहि हतियारा ❀ जोतत गाड़िनि भरि भरि भारा॥
चलि न सकत व्याकुल मग माँहीं ❀ गिरत घुटुरुअनि तनु शुधि नाँहीं॥

दोहा—मार्ग अगम पुनि भार बहु, त्तुधित सरोग शरीर।
गिरत हारि लेखि दुसह दुख, सब विधि होय अधीर॥४४॥

उतरि दंड ते बहु विधि मारै ❀ टोरै पूँछ न दया विचारै॥
क्षुधित त्रशित वल हीन शरीरा ❀ बोलि न सकै सहै अति पीरा॥
बाँधै रहत तहाँ अति कीचा ❀ ठाढ़े रहत दुखित तेहि बीचा॥

नोचैं बायस धावनि कीरा ❀ परे सहहिं दुख दुसह अधीरा ॥
यहि विधि एक्कनि केर तुरंगा ❀ धावत चलहिं विकल सब अङ्गा ॥
दौरत ही सब जन्म नशावत ❀ पिटि पिटि कोड़नि अति दुखपावत
त्यों खर ढोवत बहु विधि भारा ❀ घायल तनु पर सहि नित मारा ॥
करि निज काज बाँधि पग हाँकत ❀ उचकत फिरत दूव लगि झाँकत ॥
मिलत न कहुँ भरि उदर अहारा ❀ परवश पर्यो सहत दुखभारा ॥
तेहि विधि गज धरि दीर्घ शरीरा ❀ बँध्यो जँजीरनि रहत अधीरा ॥
बट पीपर कर काठ चवावत ❀ तेउ कबहूं भरि उदर न पावत ॥

दोह- दीर्घ देह धरि दीर्घ दुख, सहत पर्यो आधीन ।
लखहु लोग यह होय गति, सिय वर भजन विहीन ॥४५॥

पीलवान शिर अङ्कुस मारत ❀ उपजत दुख तव अति चिंघारत ॥
बड़े बड़े लादत कसि भारा ❀ तेहि पर चढ़ि बैठत असवारा ॥
होय रोगवश गिरै भूमि जव ❀ कवन उठाय सकै तेहि कहँ तब ॥
एकै करवट परि दुख पावै ❀ अबल भयो तनु उठि नहिं जावै ॥
को बूझै तेहि मन की बाता ❀ पर्यो विवश महि अति दुखपाता
सकल योंनि महँ जीव कलेशा ❀ सहत फिरत येहि भाँति हमेशा ॥
पुनि कूकर सूकरनि निहारो ❀ मोर कहा अति हित चित धारो ॥
भोजन बास शरीर मलीना ❀ सहत परम दुख पर आधीना ॥
पेटनि लागि फिरहिं नित धावत ❀ पै भरि उदर कबहुँ कहुँ पावत ॥
टुकरनि पर लरि मरत अयानें ❀ देखउ खोलि सुनयन सयानें ॥

दोहा–क्षुधा विवश पर घरनि में, इत उत लखि घुसि जात ।
देत ग्रही लखि दंड अति, तजत न यदपि रिरात ॥४६॥

सब योनिनि के दुख जो कहऊँ ❀ अमित जन्म तउ पारन लहऊँ ॥
ज्ञान दृष्टि करि लखहिं सुजाना ❀ सब योनिनि के दुख सुख नाना ॥
पराधीन सब योनिनि माँहीं ❀ रहत जीव गति पावत नाँहीं ॥

नींद बैर भय विषय अहारा ❀ ये पाँचनि वश जीव अपारा ॥
जन्मत मरत विविधि दुख पावत ❀ सतगुरु विनु पुराण श्रुति गावत॥
लखि २ तिन्हिकी विपदा भारी ❀ काँपत उर अति होत दुखारी ॥
अज्ञानी नर बूझत नाँहीं ❀ भूलि रहे भोगनि सुख माँहीं ॥
माया वश निज मरन विसारा ❀ तेहि लगि धरयोशीस जगभारा॥
नाशवान सुख लगि अरुझायेउ ❀ अन्ध वधिर भा उर तमछायेउ ॥
ते पर दुख सुख सुनत न देखत ❀ हानि लाभ कछु होइ न लेखत ॥

दोहा—स्वारथ साधक कुटिल अति, भजन विचार विहीन ।
ब्रह्म बनें डोलें जगत, करतब हृदय मलीन ॥४७॥

सुख दायक भक्तनि के ग्याना ❀ परि हरि मूढ़ चहहिं कल्याना ॥
ऐसे अग्य अकोविद प्रानी ❀ विपुल भरे जग गुण अभिमानी ॥
ततु वेत्ता कोउ सन्त सुजाना ❀ परमारथी विगत मद माना ॥
सुर दुर्लभ मानुष तनु पाई ❀ प्रभु पद कमल रहे लव लाई ॥
ज्ञान विचार विबेक विरागा ❀ भरे सकल गुण हृदय अदागा ॥
ते देखहिं प्रभु कृत जग लीला ❀ सावधान मन करि सम शीला ॥
पद्म पत्र इव जग ते न्यारे ❀ प्राण समान सु प्रभु के प्यारे ॥
तेउ योनिन दुख देखि कराला ❀ प्रभु पद पंकज नावहिं भाला ॥
त्राहि त्राहि करि विनय सुनावत ❀ कान पकरि रद जीह दवावत ॥
जनि ये दुख प्रभु हमहिं भोगावैं ❀ अस विचारि उर भय उपजावैं ॥
प्रभु स्वतंत्र पुनि वे परवाही ❀ वहुरि चराचर मालिक आही ॥

दोहा—पर्वत ते राई करैं, राइहि मेरु समान ।
सुई द्वार काढ़ें जगत, अस समर्थ भगवान ॥४८॥

ता प्रभु ते निर्भय जे प्रानी ❀ रहत सहहिं ते वहु हैरानी ॥
सन्तकरहिंतेहिस्ववशभजनवल ❀ तदपि डरात सनीति चलहिं थल ॥
खल मद मत्त मलिन उर वारे ❀ तजि प्रभु भय सहैं संकट भारे ॥

सुनहिं न ते सन्तन की वानी ❀ मूढ़ मोह वश अति अज्ञानी ॥
नरतनु पाइ पशुनि की करनी ❀ करत कुटिल अति जाइ न वरनी ॥
भगवत भजन न भक्तनि मानत ❀ मनमुख सठ दारुण हठ ठानत ॥
आपुहि बनें गुरू गुण धारी ❀ परम कुतर्की मति अविचारी ॥
गुरुहु करत सठ श्रुतिपथत्यागी ❀ अनाचार मनमुख भ्रमपागी ॥
सिखासूत्र प्रभु भक्ति विरोधी ❀ मिथ्या ब्रह्म ज्ञान रत क्रोधी ॥
नाम रूप प्रभु के गुण धामा ❀ परिकर चारि जनन अभिरामा ॥
कंठी तिलक भागवत धर्मा ❀ ते तिन्हि गुरुनि तजेउ प्रद नर्मा ॥

दोहा-प्रभु कर वैशनव धर्म यह, असली अचल अनादि ।
तजि तेहि प्रगटेउ मन मुखिनि, भगति हीन मतवादि ॥४९॥

यती गुसाँई आदि उदासी ❀ बाढ़े अमित अधर्म प्रकाशी ॥
मानि मानि तिन्हिकी सिख प्रानी ❀ भयेउ नर्क गामी अज्ञानी ॥
जो पर ब्रह्म ताहि नहिं जानत ❀ जीवहि कहँ सठ ब्रह्म बखानत ॥
जेहि महँ विन्दु शिन्धु सम बीचा ❀ तेहि कहँ कहत बराबर नीचा ॥
सेर सुमेर दीप रवि जैसे ❀ ब्रह्म जीव महँ अन्तर तैसे ॥
राउ रङ्क पुनि उड़ गण चन्द्रा ❀ सम न होत भाखैं ते मन्दा ॥
गृही सन्त सुचि अण्ड कल्पतरु ❀ सम न होयँ यह ज्ञान हृदय धरु ॥
जीव ब्रह्म कर अन्श बखाना ❀ सूक्षम दीर्घ ब्रह्म जग जाना ॥
प्रभु समर्थ जिउ तेहि आधीना ❀ रहत कहहिं श्रुति सन्त प्रवीना ॥
ब्रह्मादिक सुर नर मुनि ईशा ❀ ध्यावहिंजेहिआयसु धरि शीसा ॥
बरषत नीर पवन संचारत ❀ शेष धरैं महि यम जग मारत ॥

दोहा-अनल जरावै जासु बल, जल तेहि देइ बुझाय ।
मारै विष ज्यावै अमी, जेहि प्रभु आयसु पाय ॥५०॥

जेहि भय रवि शसि करैं प्रकाशा ❀ ठाढ़े शिन्धु सभय चहुँपासा ॥
सदा एक रस अभय अदागी ❀ अजय अचिन्त अखंड अरागी ॥

एक अरोष अगाध अनन्ता ❀ अद्‌भुत गुण जेहि गावहिं सन्ता ॥
शिव अज बिष्णु आदि दिगपाला❀ जासु चरण नित नावहिं भाला ॥
तेहि समान गुरुआ अज्ञानी ❀ कहहिं कुजीवनि मति भ्रम सानी॥
राग रोष छल रत मद माना ❀ तिन्हि कहँ मूढ़ कहत भगवाना ॥
अस गुरुअनि केफन्द न परिये ❀ मोर कहब अति हितचितधरिये ॥
जीव सदा ईश्वर आधीना ❀ ईश स्वतन्त्र सु कहहिं प्रवीना ॥
जीव ईश मायाहि प्रिय भारी ❀ दोउन कर सेवा अधिकारी ॥
ईश्वर राम जानकी माया ❀ सेवक जिउ लखनादि निकाया॥

दोहा—कारण जीवनि के लखन, धरि सोइ विविध शरीर ।
नाना विधि अनुकूल रुचि, सेवत सिय रघुवीर ॥५१॥

सेवहि जीव परम धन मानत ❀ करितेहिंजन्मसफलनिजजानत ॥
सेवा लहि अति होत सुखारी ❀ विनु सेवा उपजै दुख भारी ॥
सेवहि जीवन जानि न त्यागत ❀ मन बच क्रम सेवहिं रसपागत ॥
सेवा विनु कोउ हितू न देखत ❀ सेवा हीन मरन निज लेखत ॥
सेवा विनु सब सुख दुख जानी ❀ त्यागहिं जिमि चातक सर पानी ॥
प्रभु सेवा रत तत सुख भोगी ❀ तजि वियोग नित रहत सँयोगी ॥
सेवहि जानि सु परम अधारा ❀ तजत न सपनेउँ जे सविचारा ॥
सेवा के सु अनन्य अदागी ❀निशि दिन रहत चरण लय लागी॥
सेवा सुख पर सब सुख वारे ❀ विनु सेवा कहुँ रहत न न्यारे ॥
जिन्हिकें सेवहिं केर अधारा ❀ खान पान सुख सकल विसारा ॥

दोहा—चातक स्वाति चकोर शशि, नवल नारि पति साथ ।
लोभी धन ज्वारी जुआ, मीन यथा प्रिय पाथ ॥५२॥

प्रभु सेवा में अस अनुरागे ❀ मनके सकल मनोरथ भागे ॥
सेवा सुख महँ रहहिं सुमाते ❀ तजेउ निदरि जग केर कुनाते ॥
सेवा रत मन भा निष्कामा ❀ बिसरी लोक लाज दुख धामा ॥

सेवा लीन भये तन मन की ❀ नाशी चाह चमारिन धनकी ॥
सेवा सुख राते दिन राती ❀ बिसरि गई सब जाति कुजाती ॥
सेवा सुख रसमें मन बोरा ❀ तजेउ वृथा जग तोरा मोरा ॥
सेवा हीन मलीन अभागी ❀ जरत ताप त्रय भोगनि पागी ॥
प्रभु सेवा तजि चाहत मेवा ❀ ते खल होइहैं काल कलेवा ॥
स्वामी बनें छाँड़ि सिवकाई ❀ तेहि लगि भोगत विपति सदाई ॥
सेवा हींन राँड़ अस डोलत ❀ भ्रम दायक बानी बहु बोलत ॥
सगुन ब्रह्म की तजि सिवकाई ❀ निर्गुण मत चहैं मूढ़ चलाई ॥

दोहा–जेहि के चरण न हाथ मुख, अंग न इन्द्री कोय।
धोखा ब्रह्म कहाय सो, काहुइ सुलभ न होय ॥५३॥

निर्गुनियाँ डोलत जग व्राता ❀ बिनु दूल्हा की मनहुँ बराता ॥
इष्ट हीन अति दीन दुखारे ❀ फिरत विपुल जिमि कागा कारे ॥
अहं ब्रह्म कहि गाल बजावहिं ❀ टुकरनि कहँ कूकर इव धावहिं ॥
जीव धर्म सेवा सु बिसारेउ ❀ स्वामी बनि अधर्म विस्तारेउ ॥
नरतनु धरि जो चाहिय कीना ❀ तजि तेहि ब्रह्म बनें मति हीना ॥
सेवा तजि बनि बैठेउ देवा ❀ तेहि लगि ते भये काल कलेवा ॥
प्रभु विमुखन की जोगति होई ❀ प्रथमहिं मैं कछु बरणी सोई ॥
इन्हकर चरित संग दुख रूपा ❀ तजिय चहहु जो सुख सुअनूपा ॥
मैं करि संग रंग पहिचाना ❀ विमुखनि कर सब मनमुख ज्ञाना ॥
तेहि लगि कछुक कहेउ येहि हेता ❀ होइहैं सुनि गुनि सुजन सचेता ॥
अहं ब्रह्म बादी नर नारी ❀ जानहु सकल नर्क अधिकारी ॥

दोहा–सगुन ब्रह्म आराधना, करि उतरौ भव पार।
निर्गुन मत जनि सुनहु कोउ, जो निज चहहु उबार ॥५४॥

निर्गुनियनि के करतब गन्धे ❀ जे आचरहिं जीव ते अन्धे ॥
भीतर आन कहत कछु आना ❀ कर्म आन मति आनहिं बाना ॥

बचननि ते बनि सियवर दासा ❀ भेद लेत मिलि हृदय दुराशा ॥
आप जाँयँ निरगुनियाँ नरके ❀ आनहुँ करत धर्म ते फरके ॥
खैंचत आपन ओर अभागी ❀ जो कोउ प्रभु सेवा अनुरागी ॥
कंठी तिलक भागवत धर्मा ❀ ताहि कहत निरगुनियाँ भर्मा ॥
जो प्रभु प्रिय श्रुति पथ आरूढ़ा ❀ जानत भगवत तत्व निगूढ़ा ॥
सगुन उपासक दृढ़ व्रत स्याना ❀ ते न सुनहिं निरगुन मत काना ॥
प्रभु सेवा विच रहत सु लीना ❀ प्रमुदित जिमि अगाध जल मीना
निरगुनियनि के जाल न आवत ❀ मन क्रम बचन इष्ट पदध्यावत ॥
राम भक्ति चिंतामनि भाई ❀ निरगुन मत अति धोखा धाई ॥

दोहा—जिन्हिके उर निवसति सदा, जोरी सिय रघुवीर ।
मुख सियराम सुनाम दृढ़, डिगहिं न ते मति धीर ॥५५॥

जिनहिं सेइ अधमौ पावत गति ❀ उभयलोकसुखसुयशविमलमति
वरणौं अब तिन्हिकी कछु करनी ❀ सबहिं सुखद भव सरिता तरनी॥
श्री सियराम अनन्य उपासी ❀ अविचल मिथिलाअवध निवासी
श्री सियराम प्रसाद सु पावहिं ❀ अन्य देवता द्वार न जावहिं ॥
श्री सियराम उपासक प्यारे ❀ लगहिंजिनहिंजिमिनयननितारे॥
श्री सियराम रूप अनुरागी ❀ सेवत सकल बासना त्यागी ॥
श्री सियराम नाम गुण गाथा ❀ कहहिं सुनहिं मिलि सन्तनिसाथा
श्री सियरामहिं अर्पि पदारथ ❀ करहिं ग्रहन उर बोध यथारथ ॥
समय विलोकि करहिं सब सेवा ❀ श्री सियरामहिं लखि निज देवा॥
❀ऊष काल उठि करि शुचि अङ्गा ❀ केवल प्रेमहिं लेइ सुसंगा ॥

दोहा—ज्ञान ध्यान जप योग तप, तीरथ व्रत अनेक ।
तजि सु उपासक प्रेम रँग, रँगेउ धारि दृढ़ टेक ॥५६॥

❀ऊष काल इसीको ब्रह्म मूहूर्त कहते हैं २ अरुणोदय ३ प्रातः काल ४ सूर्योदय प्रभु आराधकों को प्रथम काल में उठि भजन करना चहिये ।

तन मन ते करि गुरुहिं प्रणामा ❀ विधिवत सेवहिं श्री सियरामा ॥
कनक भवन अति अनुपम राजै ❀ द्वार द्वार प्रति नौवत बाजै ॥
रचना अद्भुत वरणि न जाई ❀ विहरहिं जहँ श्री सिय रघुराई ॥
अमित कुञ्ज पै आठ प्रधाना ❀ जहँ सियराम करहिं सुख नाना ॥
सयन कुञ्ज सब भाँति सुहावा ❀ कहि न जाय मनहीं मन भावा ॥
जहँ सियराम सयन नित करहीं ❀ अमित काम रति मति मद हरहीं ॥
सेवहिं अलि गन अमित करोरीं ❀ पूर्ण ससिहिं जिमि चितइ चकोरी ॥
अरुणोदय शुभ समय विचारी ❀ प्रभुहिं जगावहिं गाय सु नारी ॥
जगे जानि सब नइ बलिजाई ❀ वैठारहिं सेजनि उठँगाई ॥
करि सु आरती गाइ बजाई ❀ मज्जन कुञ्जहिं जाँयँ लिवाई ॥

दोहा—कर्मी ज्ञानी बावरे, भुस कूटा चख हीन ।
निराकार भाषहिं जिन्हें सो भक्तनि आधीन ॥५७॥

करि विनती चौकिनि पधरावहिं ❀ उबटि सुगंधित नीर न्हवावहिं ॥
अङ्ग अँगौछि सुपट पहिरावत ❀ पुनि शृङ्गार कुञ्ज महँ ल्यावत ॥
देइ सु आसन हँसि वैठारत ❀ भूषन वसन नवल अँग धारत ॥
नख सिख लों शृङ्गार अनूपा ❀ सजि अवलोकहिं सुखद सरूपा ॥
दरपन लयसखि वदन दिखायेउ ❀ लखि सियराम परम सुखपायेउ ॥
वहुरि कलेऊ कुञ्ज पधारेउ ❀ आलिनि भूषन वसन सु वारेउ ॥
दधि चूरादि मधुर मृदु मेवा ❀ कीन यथा रुचि कलित कलेवा ॥
अचइ पान पाये सुख धामा ❀ श्री सियराम सु पूरन कामा ॥
वैठे सुख अलि गावन लागीं ❀ श्री सियराम रूप अनुरागीं ॥
भोजन कुञ्जहिं ते इक आली ❀ आई बोलि सबहिं लै चाली ॥

दोहा—हास विलास सु परस्पर, करत विविधि सियराम ।
अनिर्वाच्य सुख सखिन कहँ, देत सदा सुख धाम ॥५८॥

भोजन कुञ्जहिं जाइ कृपाला ❀ पायेउ विविधि सुअशन रसाला ॥

सखिनि सहित हँसि २ सियरामा ❀ दीन सबहिं आनन्द ललामा ॥
उठे अचइ मुख कर पद धोये ❀ सखिन अँगोछि भाग्य निज जोये॥
आसन आनि अतर वर पाना ❀ दीन कोन विधिवत सनमाना ॥
कछुक बैठि आलिन सुख दीना ❀ सयनकुञ्ज पुनिगमन सुकीना ॥
कुञ्जेश्वरिनि सुसेज सुहाई ❀ प्रथमहिं राखी रुचिर बनाई ॥
पौढ़े दोउ तहँ जाइ सनेही ❀ श्री रघुनाथ सहित वैदेही ॥
एक याम तहँ करि विश्रामा ❀ केलि कुन्ज गमने सियरामा ॥
बैठे जाइ सिंहासन दोऊ ❀ लखि छवि भईं मुदित सव कोऊ ॥
लगीं करन कौतुक विधि नाना ❀ केलि कला सव कुशल सुजाना ॥

दोहा—चपला सीं चमकहिं अलीं, छन छनमें वहु रूप ।
धरि धरि प्रभुहिं दिखावहीं, अद्भुत अकथ अनूप ॥५९॥

एक याम अति आनँद कीना ❀ प्रभुहिं रिझाइ अपनपौ दीना ॥
प्रभु सुख मानि सङ्ग लय ललना ❀ चले हिंडोल कुञ्ज दुख दलना ॥
रतन हिंडोरे बैठेउ जाई ❀ दै गर भुज दोउ सिय रघुराई ॥
गाइ बजाइ झुलावन लागीं ❀ हँसि हँसि प्रभुनि रूप रस पागीं ॥
पावस ऋतु जो अति सुखदाई ❀ झूलन कुन्ज रहत नित छाई ॥
श्रीसियरामहिं परम अनन्दा ❀ झूलि झुलाइ दीन अलि वृन्दा ॥
रास कुन्ज की विनय सुनाई ❀ हरषि चले उठि सियरघुराई ॥
रास कुञ्ज की शोभा जैसी ❀ उपमा योग न त्रिभुवन तैसी ॥
देखत ही सव विधि वनि आवै ❀ अद्भुत रचना कहि नहिं जावै ॥
बैठि तहाँ सिंहासन चारू ❀ अवलोकहिं दोउ रास विहारू ॥

दोहा—अमित कोटि वैकुण्ठ कर, वैभव भोग विलास ।
लाजत निज निज प्रभुनि सह, लखि सियराम सुरास ॥६०॥

नृत्य गान कल कुशल अलीगन ❀ सेवहिं सियरामहिं समर्पि मन ॥
याम एक लखि रास विलाशा ❀ सवहिं प्रसंशि वढ़ाइ हुलाशा ॥

आलश वश कछुसियहिंनिहारी ❀ सयन कुञ्ज की कीन तयारी ॥
समय सुहावनि सेजनि आई ❀ करि व्यारू पौढ़े सुखदाई ॥
प्रथम सु जागि जहाँ ते गयेऊ ❀ तेहि निकेत पुनि आवत भयेऊ ॥
सगुन उपासक प्रान समाना ❀ सेवहिंनितसिय पियहिं सुजाना ॥
कुञ्ज कुञ्ज प्रति विविधि प्रकारा ❀ आरति भोग सु न्यारा न्यारा ॥
सेवहिं नित मन ते मन जोरें ❀ सियरामहिंजिमिशसिहिंचकोरें ॥
अष्ट कुञ्ज महँ प्रभु वशुयामा ❀ करहिं सु जो जो चरित ललामा ॥
सगुन उपासक रहहिं जे सङ्गा ❀ अवलोकहिं ते मुदित अभङ्गा ॥

दोहा—रँगेउ न मन यहि सुखसु जिन्हि, रटेउ न श्री सियराम ।
रसिक सन्त सेये नहीं, जीवत सो केहि काम ॥६१॥

श्री सियराम चरित कर स्वादा ❀ लेत न मूढ़ बकत बहु वादा ॥
है अपार सुख कछुक वखाना ❀ जानहिं रसिक सुजान न आना ॥
धनि धनि रसिक सुजन बड़भागी ❀ सगुन उपासक तत सुख पागी ॥
सिय सियवर के अनुपम अङ्गनि ❀ परसित्रिलोकहिं सहितउमंगनि ॥
सगुन उपासक नित सुख लूटत ❀ निरगुनियाँ लखिरशिर कूटत ॥
रसिकनि कर सुख ते का जानें ❀ निरगुनियाँ अज्ञान दिमानें ॥
रसिक रहहिं सेवा सुख सानें ❀ अपर न सुनैं न गुणैं बखानें ॥
एक भरोस आश विश्वासा ❀ राखत सियरामहिं कर खासा ॥
वैर भाव तजि सब सन प्रीती ❀ करहिं कपट छल छांड़ि सनीती ॥
सबके प्रिय सब कहँ सुखदायक ❀ परमारथ पथ रत सब लायक ॥
सतवादी सुचि अन्न अहारी ❀ मन क्रम बचन सुदृढ़ व्रत धारी ॥

दोहा—रोंम रोंम दुख ऊपजै, विनु कारण कोउ दंड ।
देइ न दूषहिं प्रभुहिं तउ, तजहिं न इष्ट घमंड ॥६२॥

सब सन मिले रहैं पुनि न्यारे ❀ पदुम पत्र इव जगत मझारे ॥
गावहिं सुनहिं इष्टगुन गाथा ❀ हिलिमिलिमुदितसजातिनिसाथा ॥

राग रोष मद मान न मोहा ❀ दम्भ कपट छल काम न कोहा ॥
प्रण करि निवसहिं इष्टनि धामा ❀ रटहिं सदा सियराम सु नामा ॥
कहहिं करैं सोइ झूठ न बोलहिं ❀ लालच लोभविवश नहिं डोलहिं॥
नाम रूप गुण धाम धारना ❀ इष्ट अङ्ग कोउ लहत पार ना ॥
पाँचनिहूं के भेद सु जानत ❀ इन्हते विमुख तिन्हें नहिं मानत ॥
इष्ट विमुख सुरपति सम राजा ❀ होइ न राखहिं तेहि सन काजा ॥
बोध यथारथ विद्या केरा ❀ बिचरहिं अवनि असंग अडेरा ॥
बोलहिं बहुत न विना प्रयोजन ❀ करहिं न मलिन अदेखे भोजन ॥

दोहा—खैंच खाँच के, पाप के, ब्याह श्राद्ध नृप केर ।
करत न भोजन मलिन, लखि नाशत भजन घनेर॥६३॥

पियहिं छानि जल थलहिं निहारत❀ चलहिं बचाय जीव नहिं मारत॥
करत न पाप न काहुइ तापा ❀ देत बिचारत रहहिं सु आपा ॥
आप सहहिं दुख परहित लागी ❀ रटहिं नाम निशि दिन जग जागी॥
सगुनउपासक अतिप्रिय लागत ❀ निरगुनियनि के संग न पागत ॥
जेन केन विधि निज निर्वाहा ❀ करहिं सुखेन त्यागि जग चाहा ॥
प्रभुहिं समर्पे विनु कछु सामा ❀ करहिं न ग्रहण जानि दुखधामा॥
रहहिं धीर दुख सुख अति पाई ❀ मान न शोक हर्ष अधिकाई ॥
सावधान चित वित न बटोरहिं ❀ भजहिं सदा सियराम किशोरहिं ॥
राउ रंक सम जानि निदेशा ❀ देइ हरत सन्देह कलेशा ॥
काहुइ ते कछु लैन न दैना ❀ निर्मल मन बच कर्म सुखैना ॥

दोहा—इष्ट भरोसो इष्ट बल, इष्ट आस विश्वास ।
इष्ट रङ्ग नखशिख रँगे, लखहिं न जगत बिलाश ॥६४॥

ज्ञान विचार विराग विवेका ❀ भक्ति भावना भाव अनेका ॥
क्षमा दीनता शील सु दाया ❀ सम दमादि उर वसत निकाया ॥
भजनानन्द सुलोक उजागर ❀ कवि कोविद मति मान सुनागर ॥

भाग्यवन्त मन इन्द्री जीता ❀ गुरु प्रभु सन्त शास्त्र पद प्रीता ॥
एकै रंग ढंग दिन राती ❀ भावत नीति सु संग सजाती ॥
अभय अखेद अभेद अमानी ❀ मानद धर्म शील मुद दानी ॥
शरणपाल सर्वग्य सुजाना ❀ इष्ट चरित चिन्तक गुण नाना ॥
परधन विष नागिन सम नारी ❀ भोग रोग सम जग सुखखारी ॥
जे सियराम उपासक प्रानी ❀ तिन्हि के गुण को सकै बखनी ॥
विधि हरि हर श्रुति शेष गनेशू ❀ नारद सारद सुकवि दिनेशू ॥

दोहा--भौमा भगवानादि अरु, चतुर्व्यूह श्री कन्त ।
निज निज शक्तिनि सहित सब, निशि वासर श्रीमन्त ॥६५॥

प्रभु प्रिय जीवनि के गुण गावहिं ❀ विविधि भाँति पै पार न पावहिं॥
मैं मति मन्द सकौं किमि गाई ❀ पावहिं मसक कि नभ की थाई ॥
मैं निज मनहिं प्रबोधक जानी ❀ कहेउँ सुगुन दस बीस बखानी ॥
छमिहैं सज्जन मोरि ढिठाई ❀ जे सियराम रसिक सुखदाई ॥
वैश्नव मुख्य धर्म के ज्ञाता ❀ ते मेरे हित गुरु पितु माता ॥
मुख्य धर्म गति भक्ति सु सेवा ❀ पूजा पाठ टहल सुख देवा ॥
सब विधि सुलभ सबहिं कलिजोई ❀ कहहुँ यथा मति साधन सोई ॥
भजन भजन सब करत बखाना ❀ भजन भेद बड़ कोउ कोउ जाना ॥
कोउ कह भज धातू सिवकाई ❀ कोउ कह भजन भावना गाई ॥
कोउ पूजइ पाठइ कह भजना ❀ कोउ कह भजन मंत्र कर यजना॥

दोहा--धाम बास सतसंग अरु, तीरथ व्रत उपवास ।
ऊर्द्ध बाहु मौनादि बहु, भजन कवन पै खास ॥६६॥

कोउ ज्ञानहिं ध्यानहिं क्रत कर्महिं ❀ भजन कहत योगादिक धर्महिं ॥
भजन बिपुल सब में पै लागी ❀ भजन एक निरुपाधि अदागी ॥
सब विधि सुलभ सबहिं सुखदायक ❀ भजननि मूल मुख्य निर्मायक ॥
श्रम बिनु फलत कठिन कलि माँहीं ❀ आराधन सु अगमता नाँहीं ॥

हनुमत करि आराधन पाये ❀ श्री सियराम भयेउ मन भाये ॥
महादेव आराधेउ काशी ❀ देत सुनाय सबहिं गति खासी ॥
सावधान होइ सुनहु सुजाना ❀ नाम चरित कछु करौं बखाना ॥
श्री सियराम नाम प्रभुताई ❀ श्री सियरामहुँ सकहिं न गाई ॥
नारद शेष सु कबि बड़भागी ❀ भयेउ नाम रटि प्रभु अनुरागी ॥
षटमुख गणप पूज्य पद पायेउ ❀ नामहिं रटि त्रिभुवन यश छायेउ॥

दोहा--पारबती सुनि सम्भु सन, नाम परत्व अपार ।
सहस नाम तजि विष्णुके, लगीं रटन इकतार ॥६७॥

सवरी गीध भालु कपि निसिचर ❀ नाम उचारि सु लह्यो धामपर ॥
ध्रुव रटि नाम अनूपम ठामा ❀ पायेउ अविचल अभय अकामा॥
रटेउ नाम प्रहलाद सु गाढ़े ❀ पाथर ते जिन्हि नरहरि काढ़े ॥
अजामील गज गणिका कीरा ❀ नाम उचारि लगेउ भव तीरा ॥
कामध्वज कबीर रविदासा ❀ नामहिं रटि पायेउ पद खासा ॥
किन्नर नाग मनुज मुनि दानें ❀ ऊँच नीच अज्ञान सयानें ॥
नामहिं रटि सादर गति पाई ❀ जड़ यमनादिक सदन कसाई ॥
श्री कूवादिक जे सुचि सन्ता ❀ नामहिं रटिपायेउ भव अन्ता ॥
अग्र कील काल्हू रटि नामहिं ❀ गयेउ बजाइ निशान सुधामहिं ॥
नाभा तुलसीदास सुजाना ❀ नामहिं रटि भये ब्रह्म समाना॥
श्री युगल अनन्य शरण जू नामहिं ❀ रटि रटाय पाये सिय रामहिं ॥

दोहा—लछिमन किला प्रसिद्ध जग, अवध सरयु तट खास ।
युगल अनन्य सु शरण रटि, नामहिं कीन्ह प्रकास ॥६८॥

मम स्वामी सियराम सरूपा ❀ रटि रटाय निज नाम अनूपा ॥
अवधहिं गोवध बन्द करायेउ ❀ बन्दि परे बहु सन्त छुड़ायेउ ॥
परिचय दिये विपुल भूपालहिं ❀ नाम प्रभाव प्रगटकलि कालहिं ॥
नाम रसिक जन लागत प्यारे ❀ राजत अवध सु सरयु किनारे ॥

सद्गुरु सदन विरचि अस्थाना ❀ सेवहिं गुरुपद पद्म सुजाना ॥
सोहइ संग सु सन्तनि भीरा ❀ रटत रटावत नाम सु धीरा ॥
ध्यान भक्ति भावना भँडारा ❀ सब सुभ गुण सम्पन्न उदारा ॥
यद्यपि समदरशी जन त्राता ❀ तदपि अधिक सेवक सुखदाता ॥
मोपर करि निरहेतुक दाया ❀ उपदेशेउ बर भाव निकाया ॥
एक दिवश करि कृपा अपारा ❀ नाम रहस्य सु कह्यो उदारा ॥

दोहा–स्वामी राम सु वल्लभा, शरण नाम गुरु मोर ।
ढिग बैठारि सु बोलेउ, बचन अमिय जनु बोर ॥६९॥

सुनु सियलाल शरण मम बानी ❀ सावधान होइ अति सुखदानी ॥
कहेउँ न सबहिंजानि अति गूढ़ा ❀ नाम रहस्य न बूझहिं मूढ़ा ॥
तीनिउँ लोक भुवन दशचारी ❀ नाम समान न कोउ हितकारी ॥
यद्यपि जग वहु साधन धर्मा ❀ योग यज्ञ जप तप व्रत कर्मा ॥
तीर्थाटन हरि हरिजन सेवा ❀ भक्ति भावना अर्चन देवा ॥
ज्ञान ध्यान परमारथ स्वारथ ❀ नाम समान न सुखद यथारथ ॥
जजन भजन विद्या बर दाना ❀ सपनेउँ सुखद न नाम समाना ॥
मंत्र यंत्र तंत्रादिक टोंना ❀ षट प्रयोग मुखराई+ मोंना ॥
नाम रटन सम सब सुखदानी ❀ नहिं कोउ त्रिभुवनसुनुममबानी ॥
सत्य सुमति गति रति बुधताई ❀ सुभ समर्थ सुरतरु सुरगाई ॥

दोहा–श्री सियरामहुँ ते अधिक, नाम सुलभ सुखकारि ।
यह प्रभाव लखि घरनि सह, निशि दिन रटत पुरारि ॥७०॥

राम नाम सम हितु हितकारी ❀ देख्यो सुन्यों न जगत मझारी ॥
पोषक जन शोषक अविचारा ❀ राम नाम कामद श्रुति सारा ॥
बिनु श्रम भवनिधि पार उतारत ❀ सादर रटत अमित अघ जारत ॥
अशरण शरण सुभग सब लायक ❀ नाम सकल मुद मंगल दायक ॥

+ बहुत बोलना ।

प्रेमलता सियराम समाना ❀ नहिं कोउ हित वद वेद पुराना ॥
लखि सुनि सब ग्रन्थनि कर सारा❀ काढ़ेउ केवल नाम उदारा ॥
सो मैं तो सन कहेउँ बखानी ❀ जानेउ सदा सत्य मम बानी ॥
अब बरणौं नव नाम प्रकारा ❀ जिनिविनुखुलतनहृदयकिवारा॥
यदपि रटै कवनिउँ विधि नामहिं ❀फलहिं अवसि पूरहिं सब कामहिं
तदपि नव प्रकार सह जोई ❀ रटिहहिं तिन्हैं परम सुखहोई ॥

दोहा—सुनि गुनि धरहु विचारि उर, ये नव नाम प्रकार ।
यहि विधि रटिहहिं जीह जो, उतरहिं ते भवपार ॥७१॥

प्रथम जगत के भोगन त्यागै ❀ मोहनिशा सोवत ते जागै ॥
दूजे तजै गेह अस्थाना ❀ कर्म शुभा शुभ दुख प्रद नाना॥
तीजे तजै पञ्च अभिमाना ❀ कामादिक अवगुण अज्ञाना ॥
चौथे चञ्चलता जग आशा ❀ तजै विपुल सुख विषय विलासा॥
पाँचे पञ्च तत्व की काया ❀ तेहि महँ राखै मोह न माया ॥
छठें करै गुरु वैश्नव जानी ❀ भजनानन्द रसिक विज्ञानी ॥
यशी विरक्त लोक विख्याता ❀ श्री सियराम नाम रस ज्ञाता ॥
सप्तम प्रभु शरणागत धर्मा ❀ बूझै तिन्हि गुरु सन तजि भर्मा॥
अष्टम धारि सुनाम उदारा ❀ आयसु पाइ रटै इक तारा ॥
सेवै गुरुपद रहि नित पासा ❀ करै नाम कर दृढ़ अभ्यासा ॥

दोहा—नाम रसिक गुरु हीन अरु, खूब रटे बिनु नाम ।
उर अनुभव प्रगटत नहीं, जेहि बिनु द्रवत न राम॥७२॥

नवम नेम नामइँ कर राखै ❀ अपर धर्म धरि देइ सु ताखै ॥
करै बैखरी ते उच्चारण ❀ श्री सियराम नाम भव तारण ॥
त्यागि शुभासुभ सर्बस नामहिं ❀जानि रटै निशिदिन अभिरामहिं॥
सोवत जागत खात सु पीवत ❀ जे जन रटि सियराम सु जीवत॥
तिन्हि कहँ सर्व काल कल्याना ❀ निवसहिं निकट सदा भगवाना ॥

अब सुनु अपर भेद षट भाखों ※ तो सन कछु दुराय नहिं राखों ॥
तात देखि मति छुद्दढ़ सु तोरी ※ राम नाम शसि रसिक चकोरी ॥
तेहि लगि होत हरष अति मोहीं ※ नाम रहस्य सुनावत तोही ॥
ये षट भेद न जानत कोई ※ सावधान सुनि धरु उर गोई ॥
कृपापात्र जन करिहहिं धारण ※ लागत जिन प्रिय नाम उचारण ॥

दोहा–रटत नाम वहु मनमुखी, विनु जानें ये भेद ।
तेहि लगि होत न विमल उर, नशत न नाना खेद ॥७३॥

प्रथम भेद यह सिय विनु रामहिं ※ जजत भजत ध्यावत बशुयामहिं ॥
ते शठ सपनेउँ सुख नहिं पावत ※ जजि भजि ध्याइ सुप्रभुहिं खिझावत॥
अह्लादिनी शक्ति प्रभु केरी ※ सिय तेहि तजि सुख चहत अनेरी ॥
※दूसर षट संयम विनु नामहिं ※ रटि चाहत खल कुशल सुधामहिं ॥
गिरिजा प्रति जो सम्भु बखानें ※ कोउ कोउ नाम उपासक जानें ॥
नाम प्रतापप्रकाश सु माँहीं ※ लिखे खोजि समुझौ गुरु पाँहीं ॥
तीसर भेद सुनों प्रिय येहा ※ नाम नेम कीजै भरि देहा ॥
दूसर ओर न मनहिं डुलावै ※ केवल नाम निरन्तर गावै ॥
तजि सियराम नाम महराजा ※ करै जन्म भरि अपर न काजा ॥
सब प्रकार लखिहैं जब अपना ※ रीझि नाम हरिहैं कलि तपना ॥

दोहा–हिय अनन्यता गति विना, द्रवत न नाम कृपाल ।
रटै जानि अस सर्व तजि, नामहिं तीनिहुँ काल ॥७४॥

चौथ भेद यह सुनि उर धारौ ※ मन बच क्रम ते हिन्सहि टारौ ॥
राम नाम मय विश्व निहारी ※ सब सँग बर्तहु दया विचारी ॥
हिन्सा सम नहिं कवनिहुँ पापा ※ नामहुँ रटत मिटत नहिं तापा ॥

※ १ शुद्ध सूक्ष्म भोजन करना २ कम सूतना ३ कम बोलना ४ इंद्रियों को विषय से रोकना ५ नाटक तमासे न देखना ६ येकान्त अखेद स्थान में निवास करना, जहाँ अपने से और को, और से अपने को, खेद न होय।

पञ्चम पञ्च कहाय प्रपञ्चनि ❀ परि न जरै बहुविधि जग अञ्चनि ॥
बैठि इकन्त नाम लय लावै ❀ मुदित मधुकरी मागि सु खावै ॥
सुखिया बनि सुखिया जगमाँहीं ❀ है न भयो कोउ होनेंउँ नाँहीं ॥
अस विचारि नामामृत पीजै ❀ नामहिं तजि कहुँ चित्त न दीजै ॥
षष्टम भेद सभाव प्रतीती ❀ रटै नाम तजि तर्क अनीती ॥
यहि विधि नाम रटत दिन थोरे ❀ उपजहि आनँद अति उर तोरे ॥
जेन केन विधि नाम उचारत ❀ तरत आप ते आनहुँ तारत ॥

दोहा—जागत बागत खात अरु, बैठत उठत परात ।
जहँ तहँ रहि सियराम मुख, रटत लहहिं कुशिलात ॥७५॥

बिनु साधन सिधि देत सुहाई ❀ केवल नाम रटत लयलाई ॥
भेद प्रकार बिधान समेता ❀ द्रवत सिघ्र प्रभु कृपा निकेता ॥
स्वामिहिं प्रिय सेवक अनुकूला ❀ होत हरत तेहि कर सब शूला ॥
प्रतिकूलनि ते लेत स्वकामा ❀ भाव भगति जस तस दै दामा ॥
तिमि प्रभु नामहिं भाव समेता ❀ रटत होत उर अद्भुत चेता ॥
तेहि लगि भाखेउँ भेद प्रकारा ❀ अब सुनु अष्ट विधान उदारा ॥
इन संयुत जे नाम उचरिहैं ❀ गोपद इव ते भव निधि तरिहैं ॥
अष्ट विधान सु मोद निधाना ❀ जानहिं कोउ कोउ सन्त सुजाना ॥
प्रथम विधान सु नाम उचारन ❀ करै बैखरी ते भव तारन ॥
अन्तर जपै सु जाप कहावै ❀ अपर जीव के काम न आवै ॥

दोहा—मुक्त होत अन्तर जपे, भक्ति न पावत जीव ।
भक्ति विहीन न मिलत प्रभु, प्रणतपाल सिय पीव ॥७६॥

नाम प्रभाव सु वेद बतावै ❀ करै उचारन सुनै सुनावै ॥
बाहिर नाम सु रटत रटावत ❀ रोम रोम प्रति उर धुनि छावत ॥
बाहिर ते भीतर धसि जाई ❀ नाम रटत रटवावत भाई ॥
गर्जै रटै उचारै गावै ❀ नाँचि नाँचि ध्वनि करै करावै ॥

यहि विधि करत करत अनुरागा ❀ उपजइ सोवत जागहिं भागा ॥
अन्तर जपन करहिं ते प्रानी ❀ मनमुख मूरख मलिन अजानी ॥
तिन्हिकर कहा सुनिय नहिं काना ❀ हिलि मिलि करिय नाम गुणगाना ॥
द्वितिय विधान नाम कर नेमा ❀ करै अचल अविछिन्न सप्रेमा ॥
जबलगि लय न लगै इकतारा ❀ तबलगि नेम करै सबिचारा ॥
गृही विरक्त होइ कोउ जाती ❀ रटै नाम प्रण करि दिन राती ॥

दोहा—धर्म कर्म व्रत तीर्थ तप, साधन सिधि समुदाय ।
तजि निर्भय प्रण करि रटै, नामहिं नेह बढ़ाय ॥७७॥

प्रण धारिनि कहँ सिय रघुराई ❀ देत दरश प्रभु सब सुखदाई ॥
सवा लाख नित नेम विरागी ❀ करै अखंड होइँ बड़ भागी ॥
स्वासनि के बाईस हजारा ❀ रटै विलग उतरै भव पारा ॥
गृही रटै इक लाख नेम करि ❀ गुरुसन बूझि रीति उर दृढ़ धरि ॥
सिय युत राम नाम लय लाई ❀ रटै बैठि सब काम विहाई ॥
याम मध्य पच्चीस हजारा ❀ होत खूब हम कीन विचारा ॥
यहि ते अधिक रटै जो कोई ❀ मिथ्या बादी जानिय सोई ॥
नाम नेम बिनु रटत घनेरे ❀ लहहिं न ते सुख नेमिनि केरे ॥
नेम विहीन न कौनिहुँ कामा ❀ होत जनन दायक अभिरामा ॥
नेमहिं सब रिधि सिधि कर दाता ❀ नेम विना नहिं द्रवत विधाता ॥

दोहा—नाम नेम दृढ़ धारि उर, रटै रटावै खूब ।
दुखहु परे त्यागै नहीं, भूमिहिं जिमि घुड़दूब ॥७८॥

साँचे नेमिनि केरि बड़ाई ❀ रही छाय तिहुँ लोक सुहाई ॥
नर शरीर धरि तजि कदराई ❀ नाम रटिय करि नेम सदाई ॥
तीसर वर विधान सुनु येहा ❀ दाम बाम मधि करिय न नेहा ॥
कंचन कामिनि काल समाना ❀ भजनानँद कहँ वेद बखाना ॥
इनसँग निबहत भजन न कबहूं ❀ करै कोटि सम दम व्रत तबहूं ॥

भजनानँद रबि निर्मल चन्दा ❀ ग्रसत राहु जिमि ये दोउ मन्दा ॥
बाम दाम कर तजै प्रसंगा ❀ भजनानँद जन जानि भुजंगा ॥
युवती धन दोउ रैनि अँधेरी ❀ तेहि महँ पग २ विपति घनेरी ॥
ये दोउनि के रँग जे राते ❀ ते जन सपनेउँ प्रभुहिं न पाते ॥
मनचितबुधिहिंमलिनकरिडारत ❀ भजनभाव हरि जनम विगारत ॥

दोहा–धन दारा दोउ विघन निधि, मारत जनन बुड़ाय ।
आपहु जात विलाय पुनि, प्रभु ते विमुख कराय ॥७९॥

एकइ मन दुइ चारि ठिकानें ❀ लगत न निश्चय कहत सयानें ॥
सुत वित नारि जगत व्यवहारा ❀ भजनानन्दनि दुखद उचारा ॥
बाम दाम तहँ राम न नामा ❀ रामनाम जहँ दाम न वामा ॥
भजन सहायक ज्ञान विरागा ❀ भक्ति विवेक विचार सु त्यागा ॥
सम सन्तोष दया दम धर्मा ❀ सेवत भजनहिं तजि बहु कर्मा ॥
कामादिक खल भोग सहायक ❀ भजन पन्थ ते अतिदुख दायक ॥
कंचन कामिनि भोगनि मूला ❀ भजन विनाशक प्रद बहु शूला ॥
असविचारितजिदोउदुखखानी ❀ रटिय नाम निशि दिन मुददानी ॥
चौथ विधान मध्य चित दीजै ❀ नाम रटत सन्देह न कीजै ॥
होयँ महाधम कैसेउ पापी ❀ नर्क न जात सु नाम अलापी ॥

दोहा–क्रीय मान संचित बहुरि, आगे के जो पाप ।
रटत नाम सियराम मुख, नशत सहित त्रयताप ॥८०

त्रिविधि पाप तिहुँ कालनि केरे ❀ जरत उचारत नाम बड़ेरे ॥
अजामील से अगणित पापी ❀ तरेउ नाम संकेतिक जापी ॥
जो सियराम नाम नित रटहीं ❀ तिन्हिकर दुसह दोष दुख कटहीं ॥
कैसेउँ जो सियराम उचारत ❀ आप तरहिं ते आनहुँ तारत ॥
गुरुमुख सुनि विधिवत लयलाई ❀ रटहिं नाम ते जग सुखदाई ॥
सबरी गज गणिका खग कीरा ❀ नाम उचारि लहेउ रघुबीरा ॥

बालमीकि रटि उलटो नामा ❀ बरणेउ सियबर चरित ललामा ॥
ध्रुव प्रह्लाद विभीषण नारद ❀ लहेउ ऊँचपदवद श्रुति सारद ॥
हनूमान शंकर गणनायक ❀ भयेउ पूज्य रटिनाम सुलायक ॥
यमन हराम उचारि परम पद ❀ गयेउ बजाय सुडङ्क सन्त वद ॥

दोहा—जिन्हि पापिनि के भाग विधि, सुखके लिखे न अंक ।
भयेउ नाम रटि ब्रह्मते, नाशेउ सकल कलंक ॥८१॥

अस विचारि तजि शङ्क सँदेहा ❀ निर्भय नाम रटिय करि नेहा ॥
नाम रटनि निष्फल नहिं जाई ❀ सकल प्रकार सबहिं गतिदाई ॥
अपर सर्ब साधननि सु माँहीं ❀ है सँदेह सिधि होइ कि नाँहीं ॥
रामनाम महँ करिय न शंका ❀ सुमिरत सबहिं देत गति बङ्का ॥
तुलसिदास कृत ग्रंथ विचारहु ❀ सतगुरु कृपा प्रकाश निहारहु ॥
पतीत पावन नाम राम को ❀ सबविधिसुलभसुखदतमामको ॥
रटत रटत उर केर किवारा ❀ खोलत अवसि सुनाम उदारा ॥
रटैं जाइ प्रण करि इकतारा ❀ नाम नाशिहहिं पाप पहारा ॥
अस जिय जानि मानि मम बाता ❀ रटिय नाम तजि तर्क कुनाता ॥
अब सुनु पंचम कहउँ विधाना ❀ नाम अर्थ सह रटहिं सुजाना ॥

दोहा-वैष्णव सन्त सबोध गुरु, करि सु नाम लव लीन ।
तेहि सन सीखै नामके, अर्थ भेद होइ दीन ॥८२॥

अर्थ विना श्रुति स्मृति पुराना ❀ मंत्र यंत्र जप पोथी पाना ॥
भूठ भारवत लादे डोलैं ❀ अमली ज्यों अर बर वच बोलैं ॥
लिखब पढ़ब सोधब श्रम दायक ❀ होत अर्थ विनु व्यर्थ अलायक ॥
बाँचत अर्थ शब्द विनु जानें ❀ तिन्हैं बखानत अज्ञ सयानें ॥
शब्द अर्थ दोउनि कर ज्ञाना ❀ जेहि कहँ ते बुधिवन्त बखाना ॥
जपहिं मंत्र विनु अर्थ विचारे ❀ ते न लहहिं सुख मन मतवारे ॥
मुखते श्री सियराम पुकारै ❀ मन ते नाम सु अर्थ विचारै ॥

तिन्हि कहँ सब सुख सुकृत सुहाये ❀ मिलत आय श्रमबिनुअबुलाये ॥
जे श्री नाम अर्थ के ज्ञाता ❀ ते जन सब लोकनि के त्राता ॥
राम नाम कर अर्थ अनूपा ❀ समुभत नशहिं दोष दुख धूपा ॥

दोहा--ज्ञाता नाम सु अर्थ के, कोउ कोउ सन्त उदार ।
मिलैं भाग बश खुलैं तौ, उर के कठिन किवार ॥८३॥

कोटिनि रटै अर्थ बिनु नामा ❀ होइ न निर्मल हृदय अकामा ॥
रटहिं नाम जे चिन्तहिं अर्थनि ❀करहिं ते बश सियराम समर्थनि ॥
नाम बोध विनु अर्थ न होई ❀ बोध विहीन बुद्धि उर सोई ॥
नाम अर्थ चिन्तत बुधि जागै ❀ होइ प्रकाश हृदय तम भागै ॥
उघरहिं नयन सु ज्ञान बिचारा ❀ भासहिं तव प्रभु चरित उदारा ॥
होइ मगन मन नशहि कलेशा ❀ द्रवहिं राम सियवर अवधेशा ॥
नाम प्रभाव सकल सुख करतल ❀ होत सअर्थ रटत भावत भल ॥
षष्ठम वर विधान अब भाखौं ❀ तो ते गोइ न कछु उर राखौं ॥
नाम जापकनि कर सुचि सङ्गा ❀ कीजै खोजि सु सहित उमङ्गा ॥
असली नाम जापकनि केरी ❀ सेवा सकल सुखनि की ढेरी ॥

दोहा--कोटिनि तीरथ दान बहु, करै जन्म भरि कोय ।
नाम सु जापक एक की, सेवा सम नहिं होय ॥८४॥

जिन्हि के उर सियराम निवासा ❀रटहिं नाम निशिदिन प्रति स्वासा॥
काहुइ ते कछु लैन न दैना ❀ तिन्हिकर सङ्ग सकल सुखऐना ॥
नाम रसिक जन जग बहु नाँहीं ❀कहुँ कहुँ कोउकोउ लाखनिमाँहीं ॥
जिनहिं नाम तजि अपर न कामा ❀ रटहिं रटावहिं जग अभिरामा ॥
सहि श्रम नाम सु करहिं प्रचारा ❀ तन मन धन नामहिं पर वारा ॥
जहाँ जाँयँ तहँ जय सियरामा ❀ जय सियरामजयजयसियरामा ॥
यह ध्वनि करहिं करावहिं पावनि ❀ जीवनि के त्रय ताप नशावनि ॥
जिन्हि कहँ गेह न देहहिं प्यारी ❀ जीवहिं श्री सियराम उचारी ॥

नाम रटत आलश नहिं लागत ❀ अपने रंग सु आनहुँ पागत ॥
सन्मुख डटत हटत नहिं हारत ❀ जय सियराम सुनाम उचारत ॥
दोहा—तन ते मन ते बचन ते, एक नाम की टेक।
धारी दृढ़ त्यागत नहीं, आयेउ विघन अनेक ॥८५॥
राग न रोष न माया मोहा ❀ राम नाम रत सुख सन्दोहा।
अस सन्तनि की संगति सेवा ❀ मंगल मूल सु सब सुख देवा ॥
सहिदुख कीजै तिन्ह की संगति ❀ होय विमल उर बढ़इ सुरंगति ॥
विनु सतसंग सु बोध न होई ❀ कोटिनि भजन करै किन कोई ॥
मन मुख नाम रटत बहु प्रानी ❀ करत सु संग लजत अभिमानी॥
नाम अर्थ बर भेद निगूढ़ा ❀ विनु सतसंग न जानैं मूढ़ा ॥
नाम रसिक जो सन्त पुराने ❀ विचरत अवनि अभय मस्ताने ॥
देखत फीक नीक ते नीका ❀ तिन्ह कर संगसु बोधक ही का ॥
निदरत तिन्हि कहँ जानि अजाती ❀ जो सियराम रटैं दिनराती ॥
जाति धर्म गुण धन अभिमानी ❀ मिलत न नामिनिते अज्ञानी ॥
दोहा—जग सुख त्यागी नाम के, अनुरागी जो सन्त।
तिन्हिते करहिं विरोध ते, पावहिं शोक अनन्त ॥८६॥
निवसि गेह अस्थाननि माँहीं ❀ रटत नाम सुख उपजत नाँहीं ॥
जाति आदि मद मलिन बिचारा ❀ मिटत न उघरत कपट किवारा ॥
विनु सेये विरक्त अनुरागी ❀ नाम रसिक होइ उर न अदागी ॥
रटिय नाम नामिनि सँग कीजै ❀ मान मोह मद तजि सुखलीजै ॥
अब सुनु सप्तम सुभग बिधाना ❀ सावधान होइ सुमति सुजाना ॥
नाम रहस्य सु सुनैं बखानैं ❀ ममन करै धारै सनमानैं ॥
नाम सु महिमा जहँ कहुँ पावै ❀ पढ़ै गुनै समुझै समुझावै ॥
नाम जापकनि नाम सु गाथा ❀ परम सुखद जिमि बीरनि भाथा॥
नाम महातम विनु कछु जानें ❀ परत न नाम रूप पहिचानें ॥

नाम चरित जे कहहिं कहावहिं ❀ ते सियराम रूप जन पावहिं ॥

दोहा—रटहिं नाम अकि नाम यश, कहत सुनत पुलकाँहिं ।
नाम विहाइ सु आन गति, तिन्हिकहँ सपनेउँ नाँहिं ॥८७॥

नाम कथा जिन्हिकहँ प्रिय नाँहीं ❀ अन्ध उपासक ते जग आँहीं ॥
रटत नाम महिमा नहिं जानत ❀ मनमुख तिनकहँ सन्त बखानत ॥
सुख न होत महिमा विनु जानें ❀ कितनेउ भजन करौ हठ ठानें ॥
नाम चरित जिन्हि के मन भावैं ❀ उभय लोक ते सब सुख पावैं ॥
नाम चरित तजि अपर कहानी ❀ सुनत न नाम रसिक विज्ञानी ॥
महिमा जानि सु नाम उचरहीं ❀ ते जन बिनु श्रम भवनिधितरहीं ॥
कवनिउँ कवि कृतकवनिउँ वानी ❀ होइ नाम यश सुनहिं सुज्ञानी ॥
एक याम अथवा दुइ यामा ❀ सुनै नाम यश रटि सियरामा ॥
बाढ़त अधिक प्रतीति सु प्रेमा ❀ सुनत नाम महिमा प्रद छेमा ॥
नाम चरित करि संग्रह पासा ❀ राखहिं नाम उपासक खासा ॥

दोहा—नाम रटन अरु नाम धुनि, नाम कीर्ति छपवाय ।
विस्तारहिं संसार महँ, जड़ जीवनि गति दाय ॥८८॥

नामानन्य न दूसर बानी ❀ कहहिं न सुनहिं प्रपञ्च कहानी ॥
महिमा मनन सु नाम उचारन ❀ करिये सदा सकल दुख टारन ॥
अष्टम अब विधान सुनि लीजै ❀ मन वच कर्म सुधारन कीजै ॥
राम नाम बल करिय न पापा ❀ काहुइ भूलि न दीजिय तापा ॥
प्रभुहिं सुहात न पर. दुखदाई ❀ कितनेउँ करै भजन सिवकाई ॥
भजनानन्द पाप जो करहीं ❀ ते सब प्रभु के माथे परहीं ॥
जन के पापहिं आप कृपाला ❀ भोगत अस प्रभु परम दयाला ॥
भजनानँद बनि जीव दुखावत ❀ पुनिपुनि तेजनु प्रभुहिंखिझावत ॥
हिन्सा अरु हिन्सकी कुजन ते ❀ बचै लगै सियराम भजन ते ॥
डरि डरि चरण धरणि पर धारै ❀ पापिनि ते बचि नाम उचारै ॥

दोहा—पाप पुन्य दोउनि तजै जजै निरन्तर नाम ।
सावधान मनते रहै, करै न निन्दित काम ॥८९॥

फूलै फरै भजन सुख होई ❀ नित नव तब प्रभु रीझैं सोई ॥
पुनि सु निवृत्ति वृत्ति अँग धारै ❀ निवहै इकरस तेहि न बिसारै ॥
बहुरुपिया इव नित नव वेखा ❀ धारण करै न देखी देखा ॥
अशन बसन व्यवहार विचारा ❀ जगते रहै सन्त कर न्यारा ॥
ठाटि फकीरी ठाठ निराला ❀ प्रमुदित रटै नाम हरहाला ॥
माँगि खाय दिनमें इकबारा ❀ तजै शुभाशुभ जग व्यवहारा ॥
रूप पुरी श्री मिथिला खासी ❀ नाम पुरी तिमि राजत काशी ॥
लीलापुर सु राम को नगरा ❀ अवध धाम धामनि महँ अगरा ॥
चित्रकूट बन कीन विलाशा ❀ सियसियबरकछुदिनकरिवासा ॥
श्री सियराम उपासक सन्ता ❀ विचरहिं इन्हबिच जाँयँन अन्ता ॥

दोहा—तीन लोक चौदह भुवन, सात दीप नव खंड ।
नाम रसिक देखैं सकल, इनहीं बिच ब्रहमंड ॥९०॥

मिथिला अवध सु कामद काशी ❀ तजहिं न जे सियराम उपासी ॥
अखिल लोक लोकनि के भोगा ❀ साधन सिद्धिसु जप तप योगा ॥
कर्म धर्म व्रत तीरथ यागा ❀ पूजा पाठ सु भक्ति विरागा ॥
ग्यान ध्यान सेवा सुख नाना ❀ धाम काम विश्राम सु दाना ॥
जाति पाँति विद्या परिवारा ❀ गुण बल बुद्धि सु सकल पसारा ॥
जहँ लगि जो कछु वेद उचारा ❀ नामिनि सकल नाम पर वारा ॥
नाम रटन लागी अति प्यारी ❀ रटहिं सप्रेम पुकारि पुकारी ॥
धन्य धन्य जग ते वड़ भागी ❀ जे सियराम नाम अनुरागी ॥
रटिये नाम सेइ अस नामी ❀ तजि प्रपञ्च बहु होइ अकामी ॥
लघु जीवन मन चित नहिं थीरा ❀ आराधिय केहि सरुज शरीरा ॥

दोहा—मन बच क्रम ते करहु जो, सुकृत कुकृत बसुयाम ।

सो सब लखहु विचारि उर, तजि विवाद दुखधाम ॥९१॥

हृदय मलीन पाप चहुँ फेरे ❀ घेरें रहत अगुन बहु तेरे ॥
मिलत न संग सु सन्तनि केरा ❀ घट घट कीनेउ कलियुग डेरा ॥
शुभ में घुसे अशुभ बहु आई ❀ लखि न परत उर कारिख छाई ॥
सब कृत भये राखकर होंमा ❀ करतब हीन दिवस जिमि सोंमा ॥
नाम निरोग सु चहुँयुग राजत ❀ विजय नगारे दिशि दश बाजत ॥
अस विचारिपरिहरिसबसाधन ❀ करहिं सन्त सुचि नाम अराधन ॥
रटहिं सुनाम सदा निरुपाधी ❀ सबते सब प्रकार चुप साधी ॥
परहिं न ते भव निधि भ्रम जारा ❀ कवनिउँ विधि जिन्हि नाम सुधारा ॥
यदपि विधान सु भेद प्रकारा ❀ संयम नेम समेत विचारा ॥
रटन कहेउँ श्री नाम उदारा ❀ तदपि न रोक रटै इकतारा ॥

दोहा—सौंन सुगन्ध समेत जिमि, तिमि संयम सहनाम ।
संयम हींनहुँ नाम प्रिय, जिमि सुवास बिनु दाम ॥९२॥

जेन केन विधि नाम उचारै ❀ बनै जहाँ लगि संयम धारै ॥
संयम सहित देत सुख सारा ❀ बिनु संयम दुख हरत अपारा ॥
सब प्रकारसब कहँ सुख धामा ❀ रटत देत अभिमत फल नामा ॥
विधि समेत अथवा विधिहींना ❀ रटै खूब तजि भोग मलींना ॥
सबते बड़ विधान इक येहा ❀ रटै नाम बहु तजि सब नेहा ॥
रटत रटत प्रगटत सु विरागा ❀ होत अमल उर जागहिं भागा ॥
कालबिवशतनुलखि तजि मोहा ❀ रटिय नाम सब सुख सन्दोहा ॥
रटहु रटावहु नाम शनेहा ❀ सब दिन मम उपदेश सु येहा ॥
कैसेउ सहै कलेश शरीरा ❀ आवहिं विघन विपुल दुखभीरा ॥

दोहा—निशि दिन पुनि जल बीचि सम, इक आवत इकजात ।
तिमि दुख सुख तन नगर में, प्रगटत कबहुँ दुरात ॥९३॥

नाम न तजै न उर घबरावै ❁ सावधान होइ रटै रटावै ॥
नाम रटन निज जीवन जानैं ❁ तेहि बिनु मृतक शरीर सु मानैं॥
चाहै कवनिउँ सिद्धि न सामा ❁ रटै निरन्तर नाम अकामा ॥
यहि विधि करि उपदेश उदारा ❁ लगे रटन गुरु नाम सुप्यारा ॥
तब मैं हरषि दंडवत कीना ❁ जो कछु कहेउ सु शिर धरि लीना
पुनि कर जोरि सु विनय सुनाई ❁ बारबार चरणनि शिर नाई ॥
सतगुरु कीन सु कृपा अपारा ❁ दै उपदेश हरेउ भ्रम भारा ॥
सतगुरु बिनु यह भेद सु गूढ़ा ❁ सपनेउँ लहहिं न मनमुख मूढ़ा॥
जय जय जय श्री सतगुरु देवा ❁ द्रवेउ नाथ मोपर बिनु सेवा ॥
कीन अहेतुक कृपा कृपाला ❁ प्यायेउ नाथ नाम रस प्याला ॥

दोहा—मृतक जियायेउ हृदय मम, नाम अमीरस प्याय ।
प्रणतपाल गुरुदेव की, प्रेमलता बलिजाय ॥६४॥

सब विधि कीन नाथ हित मोरा ❁ दै उपदेश कुबन्धन तोरा ॥
रटिहौं नाम सदा अब स्वामी ❁ जन्म जन्म प्रभु अन्तरयामी ॥
यह बरदान सु देउ दयाला ❁ तजौं न कबहूं नाम कृपाला ॥
कहेउ स्वामि जो जो रुचितोरी ❁ होइहि पूर सु आशिष मोरी ॥
जो यहि पढ़हिं सुनहिं सविचारा ❁ पैहहिं ते नामामृत सारा ॥
श्री सतगुरु उपदेश अनूपा ❁ धारण करि न परिय भ्रम कूपा॥
तजि अभिमान सु नयन उघारी ❁ सुनिय गुनिय यहि होव सुखारी॥
ग्रन्थ सु सतगुरु कृपा प्रकाशा ❁ हरन मोह तम भव भ्रम त्राशा ॥
सतगुरु कृपा लिखेउ रटि नामा ❁ पढ़त सुनत जेहि नशिहहिं कामा॥
मैं सियज़ाल शरण अविचारी ❁ अधम अज्ञायक अबुध अनारी ॥

दोहा--भूमि बीज मय नखत नभ, तिमि मम तन मय पाप ।
कहौं कहाँ लगि गाय प्रभु, सतगुरु माई बाप ॥६५॥

कपटी कुटिल कठोर कुवादी ❁ सब विधि विषय भोग अहलादी॥

काम आदि अघ अवगुन गेहा ❀ दाम चाम सन अधिक शनेहा ॥
लक्षण सकल असन्तन केरे ❀ निवसहिं सदा सुखी उर मेरे ॥
करै करत जो पाप अकाजा ❀ बरणत तिन्हें लगत अतिलाजा ॥
सब प्रभु जानत अन्तर यामी ❀ करत न प्रगट सु जन अभिरामी॥
तेहि लगि मैं निज औगुन थोरे ❀ प्रगटेउँ कछु लिखि कागज कोरे॥
ऐसेउ खल पर करि अति दाया ❀ श्री सत गुरु यह ग्रन्थ लिखाया॥
केवल नाम रटाइ रटाई ❀ जानिय कछु न मोरि प्रभुताई ॥
नाम जापकनि ते कर जोरी ❀ माँगउँ बर बरदान निहोरी ॥
निजदिशि लखि करि कृपा अहेतू ❀ दीजिये युगल नाम भव सेतू ॥

दोहा–कर्म धर्म धन धाम सुख, स्वर्ग न पद निर्वान ।
चाहत माँगौं नाम रट, केवल देउ सुजान ॥९६॥

सब विधि लखि मोहि आपन चेरा ❀ रटवाइय सियराम सबेरा ॥
जो कछु अनुचित ग्रन्थ मझारी ❀लिखेउँ छमिय तेहि अबुध विचारी
पुनि पुनि नामिनि के गहि चरणा ❀ माँगौं बर सुनाम अघ हरना ॥
रटिय रटाइय नाम निहोरों ❀ बारबार कहि कहि कर जोरों ॥
जय सियराम नाम सुख धामा ❀ जय श्री नाम रसिक अभिरामा॥
जय सतगुरु करुणेश दयाला ❀ जय सियराम रूप जन पाला ॥
जय श्री मिथिला अवध निवासी ❀ नाम रूप गुण रत सुखरासी ॥
जय जय सब सन्तनि के चरना ❀ हरन मोह मुद मंगल करना ॥
सब मिलि मोपर कृपा सुकीजै ❀ श्री सियराम रटन बर दीजै ॥
नाम रटत मैं जो सुख पावा ❀सो न जात मुख केहु विधि गावा॥

दोहा–जबते गुरु सन नाम मैं, पाय रटेउँ मनलाय ।
तबते नाशेउ मोह भ्रम, दुख दायक समुदाय ॥९७॥

देखेउँ करि सब साधन करमा ❀ भयेउ न सुख उर गयेउ नभरमा॥
जबते सतगुरु नाम रटायेउ ❀ तबते अति विश्राम सु पायेउ ॥

तेहि लगि करौं विनय सब पाँहीं ❀ नाम अधार एक कलि माँहीं ॥
रटिय नाम सब काम विहाई ❀ पावहु गे शुभ गति मति भाई ॥
सब कर मत श्री नाम उचारन ❀ देखिय सुनिय ग्रन्थ बहु पार न ॥
ततुवेत्ता जो सन्त उदारा ❀ रटहिं नाम तेउ लखि श्रुति सारा॥
जो कलिकाल कठिन युगवीचा ❀ धोवन चहहिं हृदय की कीचा ॥
मिलनचहहिंविनुश्रमसियरामहिं ❀ रटैं सदा सियराम सुनामहिं ॥
जीतन जंग निरोग शरीरा ❀ चहहिं जान भव सागर तीरा ॥
सुन्दरता धन पुत्र सु बामा ❀ चहहिं रटैं सो नाम ललामा ॥

दोहा–उभय लोक के सर्व सुख, श्री सियराम मिलाप ।
चाहहु तौ सियराम मुख, रटहु हरन त्रय ताप ॥६८॥

जो सज्जन यह ग्रन्थ नेम करि ❀ पढ़हिं सुनहिं विस्वास हृदय धरि ॥
पावहिं सो सब सुख निरुपाधी ❀ जन्म मरन कर नसहिं कुव्याधी ॥
श्री सियराम सु रहस्य अनेका ❀ जानहिं जनयेहि पढ़ि स विवेका ॥
सप्त नवहा यकहा जोई ❀ करिहहिं प्रभुप्रिय हुइहहिंसोई ॥
यक सत आठ पाठ दसवारा ❀ करि पावहिं सिय वर सु उदारा ।
पूजहिं पोथिहि भोग लगाई ❀ गावहिं ढोलक झांझ बजाई ॥
कहहिं कथा समुझहिं समुझावहिं ❀ गर्भ कलेश न ते जन पावहिं ॥
येहि महँ जो दस चारि प्रसंगा ❀ लिखे लखहिं तजि कपट कुरंगा ॥
पैहहिं ते उपासना स्वादा ❀ श्री सियराम भजन अहलादा ॥
लिखि लिखाय छपवाय प्रचारा ❀ करहिं तरहिंभव सह परिवारा ॥
प्रभु उपासना अघम उधारनि ❀ करहुप्रचार जननि भवतारनि ॥

दोहा--श्री सियराम उपासक, शृङ्गारी सविचार ।
तिन्हि कहँ सब विधि ग्रन्थ यह, हुइहैं प्राण अधार ॥६९॥

तजि बहु ग्रन्थ पन्थ मत आसा ❀ राखहिं इक२ यहि कहँ पासा ॥
तिन्हि कर भगतिभावना ध्याना ❀ रहहिं येक रस आतम ग्याना ॥

रटि सियराम पाठ यहि केरे ❀ करहिं तरहिं ते भव विनु वेरे ॥
अपरनि उर कलियुग कटकाई ❀ भरी विनासक सुभकृत भाई ॥
काम क्रोध मद मोह विकारा ❀ दम्भ कपट छल लोभ असारा ॥
राग द्वेष ईर्षा अकड़ाई ❀ छाय रही सबके उर भाई ॥
निन्दा झूठ मसखरी बादू ❀ प्रिय लागत अति करतब जादू ॥
आमिष भोजन अमल अहारी ❀ भयेउ लोग बहुजग अविन्चारी ॥
पाप बुद्धि उर कथनी नीकी ❀ वेष परम शुचि करनी फीकी ॥
पर दूषन खोजत नित डोलत ❀ हंसि२ दुखद बचन कटु बोलत ॥
थोरेहि दिननि माँहिं यह हाला ❀ भयेउअवहिं बहुदिन कलिकाला ॥
मूरति मंदिर टूटन लागे ❀ अबहीं ते हुइहै का आगे ॥
अन्नादिक घृत बसन पदारथ ❀ महँगे भयेउ बढ़ेउ अतिस्वारथ॥
परमारथ दिन दिन घटि होई ❀ शुभ कृत सुद्ध करै कोइ कोई ॥

❀ दोहा ❀

देखहु हिय के खोलि चख, अन्त रंग बहिरंग ।
जीति रहेउ कलि काल सब,धर्म कर्म करि जंग ॥१००॥
पोथिनि में रहिहहिं लिखे, धर्म कर्म समुदाय ।
कल्पतरू जिमि चित्र कर,करि न सकै कछु भाय ॥१०१॥
कछु दिन महँ नशिहहिं सकल, जो कछु शुभ कृतहोत ।
रहिहै येक आधार पटु, राम नाम दृढ़ पोत ॥१०२॥
श्री सियराम सुपाल वर, बल्ली भाव अदाग ।
गुरू खिवैया प्रेम डर, डंडा दोउ दिशि लाग ॥१०३॥
श्री वैष्णव कर वेष चर, सोइ अटूट पतवार ।
अपर सुगुन सामान बहु, चलनि रटनि यकतार ॥१०४॥

नाम नाव पर चढ़हिं जे, यहि विधि जनक कलिकाल ।
सोइ विनु श्रम तरि घोर भव, पैहहिं श्री सियलाल ॥१०५॥
निज निज इष्टनि सहित सब, आराधक कलि वीच ।
नशिहहिं केवल नाम इक, रटि उतरहिं भव नीच ॥१०६॥
हुइहैं भ्रष्टा चर्ण सब, वर्णाश्रम के लोग ।
तरिहहिं श्री सियराम रटि, बिनु प्रयास जप योग॥१०७॥
अस विचारि हठ छाँड़ि जो, अवहीं ते सियराम ।
रटैं सु वैष्णव होय जन, पैहहिं सोइ प्रभु धाम ॥१०८॥

❀ छन्द ❀

यह युग कलि काला कठिन कराला धरि सब घाला धर्म धरा ।
वर्णाश्रम केरे कर्म करेरे तजेउ घनेरे नारि नरा ॥
मद मत्सर माना अवगुण नाना सब उर थाना आय करा ।
विद्या वुधि वानी स्वारथ सानी भई कहानी कथा परा ॥ १ ॥
वाढ़ेउ व्यभिचारा लोक अपारा सार असारा लखि न परै ।
नाशेउ जप जागा ज्ञान विरागा अघ दल जागा प्रवल तरै ॥
वहु सम दम ध्याना शुभ कृत दाना कथहिं पुराना कोउ न करै ।
भये लोक अधीरा सरुज शरीरा वहु विधि पीरा प्रान दरै ॥ २॥
केहि विधि जप योगा करैं सरोगा भव भ्रम भोगा वुधि नाशी ॥
बितई लरिकाई अरु तरुणाई प्रवल बुढ़ाई परकाशी ॥
प्रभु भजन विहीना कुगति मलीना भोगत दीना अघरासी ॥
अजहूं करि दाया भजु रघुराया जेहिकर माया दोउ दासी ॥ ३ ॥
सियराम सुनामा रटि वसु यामा तजि भ्रम बामा करु चेता ।
प्रभु कृपा अगाधा छमि अपराधा हरिहहिं बाधा करि हेता ॥

कैसेउँ कोउ नामू रटत ललामू पावत धामू साकेता।
श्री नाम प्रभावा बेद बतावा जाय न गावा है जेता ॥ ४ ॥

दोहा।

कैसहु पामर पतित जड़, सब नीचनि में नीच।
रटै नाम सियराम मुख, परै न ते भव कीच ॥ १०९ ॥
श्रीसियराम सु नाम विनु, सुगति न तीनिउँ काल।
पावहिं कोउ कलि सौंहँ करि, कहौं बजाइ सु ताल ॥ ११० ॥
सुचि सन्तनि प्रति विनय यह, जीवनि सन सियराम।
रटवाइय कलि काल दै, वैष्णव वेष ललाम ॥ १११ ॥
बहुरि गृहस्तनिते विनय, करौं सुनों सब जाति।
वैष्णव वेष सुधारि अँग, रटहु नाम दिन राति ॥ ११२ ॥
मरन समय हित नामकर, अबहीं ते अभ्यास।
करहु सु दृढ़ यह विनय मम, तजि सब साधन आस ॥ ११३ ॥
प्रेमलता पर करि दया, रटहु नाम सियराम।
उभय लोक सब सकल सुख, पैहहु अति बिश्राम ॥ ११४ ॥
प्रगटत जिन्हि ते रूप बहु, लोकपाल अवतार।
सो सियराम सु नाम रटि पैहौ मन गुन पार ॥ ११५ ॥
देत जु पूरनता सबै, आप रहैं भरपूर।
नेति नेति जेहि कहत श्रुति, का जानै तेहि क्रूर ॥ ११६ ॥
कर्म धर्म योगादि बन, तेहि महँ भूले जीव।
नाम रटे बिनु सपनेहुँ, लखहिं न ते सिय पीव ॥ ११७ ॥
शिव बिधि विष्णू आदि बहु, ईश्वर प्रभु भगवान।
लोक पूज्य जिन्हि की कृपा, सोइ सियराम सुज़ान ॥ १९८ ॥
जिन्हि कर मर्म न लहत कोउ, वे सबकी गति जान।
सोइ साकेताधीश प्रभु, सिय बर कृपानिधान ॥ ११९ ॥

आत्म निवेदन करत जो, सखी भाव उरधारि।
ते तिन्हिकहँ अति प्रियसु जिमि, पतिहिं पतिव्रतनारि ॥१२०॥
श्री शृंगार सु रस विना, सखी भाव अति दूरि।
तेहि बिनु आत्म समर्पन, होइ न सकत सुख मूरि॥ १२१ ॥
आत्म समर्पन विनु नहीं, मिलत परात्पर राम।
राम मिले विनु स्वप्नेहुँ, जीव न लह विश्राम ॥१२२॥
विन विश्राम न रटि सकहिं, जन सियराम सु नाम।
नामरटे विनु भगति रति, मिलहिं न सब सुखधाम॥ १२३ ॥
प्रेम भगति विनु दूरि अति, वैष्णव वेष ललाम।
वेष हींन सियराम जन, द्रवत न सुभ गुन ग्राम॥ १२४ ॥
सन्त द्रवे विनु वेष प्रभु, नाम धाम गुन रूप।
इन्ह की महिमा को कहै, जो सब भाँति अनूप॥ १२५ ॥
नाम रूप यश धाम अरु, वेष प्रभाव विहीन।
धारन होत न हृदय दृढ़, नशत न पाप मलीन॥ १२६ ॥
पाप अछत करतव्य सब, वृथा यथा दिन चन्द।
अस विचारि यहि पंथ चढ़ि, भजहु सिया रघुनन्द ॥१२७॥
आजि कालि करि मरिय जनि, वेगि सुवैष्णव वेष।
धारन करि सियराम मुख, रटिय रटत जेहि शेष ॥१२८॥
छन छन छीजत जात यह, आयू धन सुख मूल।
तजि बिलम्ब सियराम मुख, रटहु हरन सब शूल ॥१२९॥
श्री सियराम उपासना[१], नाम रटन[२] सखि भाव[३]।
वैष्णव[४] वेष सु श्रेष्ठ चहुँ, सब प्रकार श्रुति गाव ॥१३०॥
सतगुरु सन चारिउ सु ये, धारन करहिं सचेत।
आराधहिं दृढ़ नेम करि, पावहिं ते साकेत ॥१३१॥
श्री सियराम समीपता, सेवा रुचि अनुकूल।
लहहिं रसिक इन्ह चारि के, आराधक सुख मूल ॥१३२॥

पच्छपात की बात जो, करै तासु शिर गाज।
परै बखानी सत्य सब, समुझौ तजि कुसमाज ॥१३३॥
अन्तिमज्ञान प्रसंग यह, पढ़ि सुनि हृदय विचारि।
प्रेमलता पर करि कृपा, रटहु नाम भ्रम टारि ॥१३४॥
प्रभु प्रेरित यह ग्रन्थ मैं, लिखेउँ तदपि कछु भूल।
भई होय तेहि सन्त शुचि, सोधि करैं अनुकूल ॥१३५॥
सज्जन सन्त मराल सम, गहहिं छीर तजि नीर।
युगल नाम मुक्ता चुगहिं, प्रेमलता मति धीर ॥१३६॥
नाम जापकनि के सुपद, बन्दौं बारम्बार।
मोरि सुधारहिं सकल ते, गुण ग्राही सविचार ॥१३७॥
नाम जापकनि की कृपा, पाय गाय सियराम।
विरचेउ बृहद् उपासना, रहस—रहस कर धाम ॥१३८॥
पढ़ि सुनि धारहिं हृदय जो, गावहिं करहिं प्रचार।
पावहिं ते सियराम कर, रहस सकल सुखसार ॥१३९॥
भक्ति भाव वहु भेद वर, सिय पिय मिलन सुपंथ।
जनिहहिं विनु श्रम नारि नर, पढ़िहहिं जो यह ग्रन्थ ॥१४०॥
नशिहहिं बहि रँग ग्यान सब, जड़ नरत्व अभिमान।
पढ़त सुनत समुझत सु यह, ग्रंथ द्रवहिं भगवान ॥१४१॥
विमल आतमा रूप निज, जो त्रय तन के पार।
सूझहिं सो सुनि समुझि पढ़ि, ग्रन्थहिं बारंबार ॥१४२॥
अवुधनि ते विनती करौं, माथ नाय कर जोरि।
आत्म रूप समुझे विना, ग्रन्थहिं देउ न खोरि ॥१४३॥
रस अनन्यता रूप निज, अरु उपासना भेव।
ये तीनों समुझे विना, ग्रन्थहिं दोष न देव ॥१४४॥
सुजन समुझिहहिं भनित यह, रसिक उपासक जोय।
सुख पइहहिं सो अबुध जो, निदरहिं तौ का होय ॥१५५॥

कविता दिंदा जोग मम, आसय अस्तुति जोग।
निंदा अस्तुति उचित दोउ, करिहहिं पढ़ि सुनि लोग ॥१४६॥
रसिक उपासक लहहिं सुख, जिन्हि कहँ प्रिय सियराम।
काव्य दोष तजि समझिहैं, आसय हृदय ललाम ॥१४७॥
सज्जन जब सुख पायहैं, पढ़ि सुनि समुझि विचारि।
हुइहैं तब श्रम सफल मम, तिन्हैं प्रसन्न निहारि ॥१४८॥
तिन्हि के कर कमलनि सु यह, ग्रन्थ समर्पन मोर।
पढ़ि सुनि समुझि प्रचारहीं, रसिक संत चित चोर ॥१४९॥
रटि सियराम सु नाम मुख, गुरु प्रभु कृपा सु पाय।
विरचेउ रसिकनि हेतु यह, ग्रन्थ सकल सुखदाय ॥१५०॥
मारुत नंदन की दया, पाय सु भयेउ प्रचार।
बाधा विघ्न अनेकनि, नाशेउ बीर उदार ॥१५१॥
घरही ते अपनाय प्रभु, मोपर भयेउ दयाल।
अंजनि नंदन वीरवर, सरन दीन सियलाल ॥१५२॥
विद्या वुद्धि सु देइ मोहि, लिख वायेउ यह ग्रन्थ।
श्री सियराम सु मिलन कर, दिखरायेउ प्रिय पन्थ ॥१५३॥
करि सु कृपा निर हेतु सोइ, रट वावहिं सियराम।
प्रेमलता वंदैं चरन, जिन्हि के सुर बसु जाम ॥१५४॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नामध्वनि प्रचारक श्री
वैष्णव धर्मावलम्बी परमहंस श्री १०८ श्री सियलाल
शरणजी महाराज उपनाम श्रीप्रेमलता जू कृत
अन्तिम ज्ञान वरणनो नाम चतुर्दश
प्रसंगः समाप्तम् ॥ १४ ॥
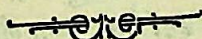
उत्तम श्री वैष्णवों की शुभ लक्षणावली

❀ दोहा ❀

श्रीवैश्नव सियराम के, सुदृढ़ उपासक संत।
तिन्हि के सुभलच्छन कछुक, कहहुँ सुनों रसवंत ॥१॥
पढ़ि सुनि हृदय बिचारि जो, धारहिं करि विस्वास।
पावहिं ते सियराम पद, टहल सु महल निवास ॥२॥

॥ बार्ता ॥

प्रथम तौ जय सियराम जय जय सियराम नाम धुनी औ श्री सियाराम सियाराम रटना बराबर—आप तथा औरों से काराया करते हैं। रात्री में बिना देखे भोजन—जल ग्रहन नहीं करते, बनाये हुए अन्नादि पदार्थों को, थोरा २ अलग ले जाय चाखकर, तब प्रभू को अर्पन करते हैं। तन, मन, बस्त्र, बर्ताव के पात्र निवास स्थल शुद्ध रखते हैं। कोई बढ़ियाँ पदार्थ मिलने पर, कहते हैं, कि प्रभू के कृपा से मिला है। रास्ते में चींटी आदि को बचाय के चलते हैं। अपने शरीर सम्बन्धियों के जन्मने मरने तथा और कोई उपाधि आने पर भी भगवत भागवत धर्म, कंठी तिलकादि अपने नित्य कर्म को नहीं त्यागते। इष्ट विरोधी सम्बन्धियों से भी प्रेम नहीं करते। जो वस्तु इष्ट को भोग अर्थात् समर्पण करना निषेध है। जैसे—मसूरी, बन्दा गोभी, वैगन, लहसून, प्याज और निरस पदार्थ, गाँजा, तमाकू, खैनी, पीनी, बीड़ी, सिग्रेट, ताड़ी, अफीम, भाँग, मदिरादि मादक वस्तुओं को प्राणान्त होने पर भी ग्रहन नहीं करते, सतसंग प्रभु कथा बार्ता के मधुकर होते हैं। प्रायः करके अपने इष्ट, नाम, रूप, लीला, धामादि के परम

अनन्य होते हैं। अन्य देवतों की आशा स्वप्न में भी नहीं रखते निन्दा तौ जीव मात्र की भी नहीं करते। क्रोध तथा कुवाक्य ताड़नादि सात्वकी, चिञ्चित्, परोपकारार्थ ही ग्रहण करैंगे। अन्यथा नहीं, गृहस्थाश्रम में भी, रोजगारादि करते हुए, प्रभूही के भरोसे पर दृढ़ रहते हैं। शरीर पर कितनाहूं कष्ट आने पर प्रभू को दोष नहीं लगाते। निन्दा सुनि नाराज, प्रसंशा सुनि प्रसन्न नहीं होते। प्रभु प्रिय भक्तों से अधिक प्रेम करते हैं। बैठना उठना, चलना, बोलना, खाना, पीना, सर्व व्योहार, जिन्हका शान्ति और विचार पूर्वक होता है। विना छाना जल दूध, रस, मूत्र सम, औ विना प्रभु अर्पण किया भोजन तुलसी दल हीन, विष्टा समान जानते हैं, वड़े भोरही उठि प्रथम अपना कृत्य नाम रटते हुए तिलक, छापा, मन्त्र, जप, श्री गुरू, भगवान की पूजा, पाठ, दंड-वत, चरणामृतादि दिव्य व्यवहार करि, तब पीछे संसारी कार्य्य करैंगे। कहीं फँस जाने पर भी किसी वख्त अपना यह नेम करि तब भोजन करैंगे, हिन्साते बहुत डरते हैं। पाप नहीं करते। श्री गुरु, भगवान भक्तों की यथा शक्ति सेवा सतकार तन, मन, धनादि से करते हैं। धर्म कार्य्यों में सहायता देते हैं। श्री वैष्णव धर्म के प्रचारक होते हैं। तिलक, कंठी, माला, पूजा, पाठ का सामान पूरा पूरा बढ़ियाँ रखते हैं। तर्जनी अँगुली माला से नहीं लगाते, नाम रटने का नेम हमेशा रखते हैं। भजन करने के समय प्रपंचकी बात नहीं करते। मरने को नहीं डरते। संबन्धियों के बियोग तथा मरने और प्रिय वस्तु के नष्ट होने पर, रञ्ज नहीं करते, संसारी पदार्थों को नाशमान जानते हैं। भजन, पूजा, पाठ, में बिच्छेप परता है, उसी दिन अपना मरना मानते हैं। अपना समय बृथा नहीं विताते। अपने दोष औ प्रभू गुरू के गुन समुझते हैं। श्री गुरू को भगवान हूँ से बढ़िके मानते हैं। जाति, विद्या, धनादि का

अभिमान नहीं रखते, भगवानके उत्सव जन्म बिवाह झूलाहोरी आदि करते और कराते हैं। पर स्त्री को पुरुष, पुरुष को स्त्री, भाई बहिन के समान देखते हैं। विषयासक्त नहीं होते। विमुखी दुष्टों के वचन सुनते नहीं। प्रभु कार्य भजन में आगे, और संसारी प्रपंचों में पीछे रहते हैं। किये हुए सुकृत को सब से कहते नहीं फिरते। प्रभु गुरु भक्तों प्रति दीन, और धनाडय, अभिमानी, विषयी जीव से बे परवाही हो, अकड़े रहते हैं। संसार में प्रभू की कारीगरी देख देख मस्त रहते हैं। शरीर और शरीर सम्बन्धियों के निमित्त विशेष श्रम तथा विस्तार नहीं करते। मरने पर हरवख्त निश्चय रखते हैं। यथा लाभ में सन्तोष करि सुखी रहते हैं। कामादिक निकी आग में नहीं जरते, मान देते हैं। चाहते नहीं, वड़े धीर दृष्ट व्रत, शुद्ध, शान्त, वैराग्यादि सर्वगुण सम्पन्न होते हैं। पतिव्रता स्त्री की नाँई, अपने प्राण पति प्रभू को आत्म समर्पण करि उन्हीं के आनन्द में निमग्न रहते हैं। प्रभु जैसे राखें उन्हीं की खुशी में अपनी खुशी मिलाय देते हैं। हमेशा अपने को अल्पग्य औ अपराधी ही मानते रहते हैं। किसी की निन्दा तथा अपनी प्रशंसा सुनि, प्रसन्न नहीं होते। दूसरे का अपने संग किया अपराध अपनी करी भलाई भुलाय देते हैं! शुभ कर्मो का फल प्रभू से औ मनुष्यों से, अच्छे करतव्य का बदला नहीं चाहते। ज्ञान, कर्म कांडी, विशेष कर्मो को त्यागि, केवल भगवत सम्बन्धी ही कर्मो को ग्रहण करते हैं। करने वालों को मना भी नहीं करते, एकादशी आदि व्रत करते हैं। नहीं करते तो निन्दा भी नहीं करते। श्री गुरु, प्रभु की शीथ प्रशादी जूठनि, चरण धोवनि पाय कृत कृत्य हो जाते हैं। प्रभू के प्यारे श्री वैष्णवों से भाई पना राखि खान पानादि व्यवहारों में अभेद बुद्धि करि डालते हैं। अपने सन्तानादि बच्चों को भगवत भक्तों के शुद्ध आचरण बाल्य अवस्था से

ही सिखाय देते हैं। अपने शुभ अस्थल घरों पर उर्द्ध पुंडतिलक धनु वाणादि आयुध, निज २ इष्टनि के नाम लिखे रहते हैं। श्री तुलसी, पुष्पों के वृक्ष लगायें रहते हैं। देश, नगर, पुर, ग्राम, परोसी परिवारादि सत संगियों को श्री वैष्णव भगवत भक्त बनाने का हमेशा उद्योग किया करते हैं। कण्ठी कण्ठ में तिलक छाप ललाटदि अंगों में बराबर स्पष्ट धारण करें रहते हैं। तुलसी काष्ट के भूषन बनाय बनाय पहिरते हैं। पीले वस्त्र पहिरते हैं। हजारा माला पीले रूमाल में भरके गरे में डारि के फेरा करते हैं। सौच, स्नान, सयनादि समय में माला नहीं पहिरते। भजनानन्द श्री वैष्णव वृन्दों को देखि अत्यन्त प्रसन्न होते हैं। चौराशी लाख योनियों का कष्ट देखि २ अधिक २ भजन में सावधान होते हैं। गर्भ में जो स्वास २ प्रति प्रभू से नाम रटने का करार किया है उसकी हमेशा याद राखि पुराया करते हैं। मैं, अरु माया तथा प्रभू का स्वरूप, अरु पहिचान क्या है, इसके खोज में रहते हैं। नाम रटने तथा प्रभु चरित्र सुनने से कभी अघाते नहीं जो कुसंग बस अवैष्णव भगवत भागवत धर्म विरोधी गुरू करि भी लेते हैं। तौ ज्ञान भये पर उसे त्यागि, निःसन्देह दूसरा बढ़ियाँ खोजि श्री वैष्णवाचार्य गुरु करि मंत्रादि पंच संसकार कराय लेते हैं, भगवान के शरण आने में बढ़ियाँ दिन मुहुर्तादि प्रमाण नहीं खोजते। विना प्रयोजनी बात नहीं बोलते, भोजन निद्रादि व्यवहार जहाँ तक हो कमतीही स्वीकार करते हैं अवैष्णवों के हाथ से तामसी देवी देवतों के भोग लगे, शुद्धाशुद्ध पदार्थ नहीं ग्रहण करते हैं, श्री शिव जी की मूर्ति साथ पूजनादि व्योहार करते हैं, लिङ्ग स्वरूप से नहीं, परन्तु निन्दा अभाव भी नहीं करते, भ्रम अज्ञान वश पूर्वज जो भूत प्रेतादिक की पूजा तामसी पदार्थों से करते रहे, उस ठिकाने वे श्री हनूमान जी

की पूजा आरम्भ करि देते हैं। देखा देखी तथा सिखाने पर भी विजातीय अन्य मतावलम्बियों के आचरन ग्रहन नहीं करते, अपने लिये मनुष्यों से दीन होकर अन्न वस्त्र धनादि मागना मरना समुझते हैं। श्री शृङ्गारादि दास, सख्य, वात्सल्य रसों के द्वारा आचार्यों से भली भाँति भेद भाव बूझि युगुल स्वरूप श्रीसीताराम जी की ही सुद्ध उपासना करते हैं। मन मुखी आचरण उपासना पंच रसों से भिन्न, गुरु उपदेश विना नहीं करते। जान अनजान में किसी के साथ कुछ अपराध हो जाता है। तौ क्षमा कराय लेते हैं। आचार्यों से पाया मंत्रादि उपासना भेद, भाव, लोभ लालच वस जहाँ तहाँ, न कह कर प्राणों की नाईं छिपाय जुगवते रहते हैं। पूर्व परिपाटी अनुकूल श्री शृङ्गारादि रसों का आचार्यों से सम्बन्ध दासी दास सखादि भावों को अवश्य लेकर खूब समुझि लेते हैं; श्री गुरु भगवान ते, कोटिनि दुख परने पर भी निस्केवल प्रेम भक्ति ही माँगते हैं,। संसारी नाशमान पदार्थ देने पर भी श्वीकार नहीं करते। धन पुत्रादि सारीरिक सुखों को, प्रभु प्रेम भक्ति पर न्योछावर करि डारते हैं। संसारी दुष्ट जीवों के लजाये लजते, और डराये डरते नहीं। अपना परात्पर श्री वैष्णव धर्म कंठी तिलकादि वेष उपासना, वीरता पूर्वक सांगोपांग दृढ़ धारन करते हैं। सर्व अवतारिनि पति परात्पर प्रभु श्री साकेता धीश, सर्व नियन्ता, सर्वेश्वर श्री सीताराम जी महाराज के खास इस श्री वैष्णवी धर्म सनातनी के सामने सर्व धर्म मत पन्थ उपाय, आश्रम, वेष, सिद्धान्तों, को स्वप्ने में भी मन में नहीं लावते। वीच वीचौत्रा, अर्थात वीचही ते प्रगट भये जानि कर, सनातनी श्री वैष्णव धर्म के ज्ञाता आचार्य्यों से सेवा सतसंग करि, श्री वैष्णव धर्म अवलम्बियों को; क्या कर्तव्याकर्तव्य है, सो भले प्रकार जानि बूझि उसी के अनुकूल आचरन करि कृतार्थ हो,

प्रभुको प्राप्त होते हैं। कलिकाल में प्रभु धर्म विमुख नानामत मार्ग जीवों को जो नर्क दाता प्रगटि रहे हैं। और प्रगटेंगे, सनातनी श्री वैष्णव धर्म रूपी वृक्ष पर लताकी नाईं, तथा चन्द्रसूर्य पर ग्रहण की नाँईं छाय जायेंगे। किंचित काल के लिये अपना प्रभाव चित्रमाँसे के घाँस फूँस की नाँईं संसार में फैलाय, सद्धर्म रूपी, मर्गों को आच्छादित करि देइँगे। पुनः काल पाय नाश को प्राप्त होजायँगे ! जैसे ग्रीषम पाय, घास फूँस, हिम रितु पाय, मसकादि, प्रवल बायू पाय, कुहिरा-कहां के कहां बिलाय जाया करते हैं। श्री भगवत धर्मावलम्बी श्रीवैश्नव जन श्री सीताराम जी महाराज की अनेक विघ्न बाधा होते हुये भी, सेवा, पूजा, आराधना, दृढ़ता पूर्वक किया ही करते हैं। अपने सनातनी धर्म से एक छन मात्र भी च्युत नहीं होते। प्रभु भक्तों की महिमा अनन्त अगाधतर हैं। इन्हीं लोगों के हृदय रूपी कोठों में प्रभु धर्म रूपी बीज, भरा रहि जाता है। सुद्ध सत जुगादि पाय विस्तार को प्राप्त हो जाता है। प्रभु आराधक भक्त जन बड़े सुद्ध सावधान सरवग्य होते हैं। चारि वेद, छः सास्त्र, अठारह पुरानादि, तथा सर्व विद्याओं के भले प्रकार तात्पर्य के ग्याता होते हैं। औ खट संपत्ति, खट सरनागति, शृङ्गारादि, पंचरस, विसिष्ठा द्वैतादि चतुष्ट उपासना—सालोक्यादि पंच मुक्तीं, नवधादि द्वादस भक्तीं, अपने इष्ट की पहिचान—त्रपादादि प्रभु की विभूतीं—प्रभु के नाम रूपादि चारों के भेद भाव—ग्यान कर्मादि त्रयकांड—रोचकादि त्रय किरियां, अष्टांग जोग के भेद—पूरक कुंभक रेचकादि ध्यान की क्रियां—रहस्यत्रय तत्व त्रय—निजात्म बोध—माया तथा प्रभु स्वरूप का ग्यान—प्रभु की नित्य नैमित्य लीला के भेद, साकार निराकार का विचार—अर्थ पंचकादि उपासना के संपूर्न अन्तरंग बहिरंग भेदों के भली भाँति ग्याता औ

उपदेसक होते हैं। जिन्हि सब भेदों के जाने विना वैश्नव श्री वैश्नव पद को पाय नहीं सक्ते, इसलिये वो अपने २ आचार्यों के बताये 'हुये मार्गो' पर अखंड अनन्यता पूर्वक जन्म परियंत निर्वाह करि प्रभु के आवा गमन रहित धाम में प्राप्त हो युगल सरकार की सामीप्य सेवा में परिकरता पाय परम सुखी होते हैं। अपना नित्यकर्म तिलक छापादि करि मंत्र राज के जपांत में माला समेत हाथ जोरि सीश नवाय प्रार्थना पूर्वक आसन पर ही वैठे, श्रीगुरु मूर्ति का ध्यान करि कहते हैं। की श्री सीताराम चन्द्रार्पनमस्तु श्रीगुरु चरन कमलेभ्यो नमः, श्रीसीताराम चरन रति मोरे—अनुदिन वढ़ौ अनुग्रह तोरे, श्री सीताराम नामानुरागी सर्वे वैश्नवेभ्यो नमः, सबहिं बंदि मागों बर येहू। सियरामनाम सों सहज सनेहू, सर्वे परिकर गनेभ्यो नमः, श्री मत्सीता रामचन्द्र चरनौ सरनं प्रपद्ये श्रीमते श्रीसीताराम चन्द्राय नमः हे प्रभु त्राहिमां पाहिमां सर्व अपराध क्षमा करि रक्षा कीजियें अपना नाम रटवाइये, उपाधीं व्याधियों से बचाइये, वाने की लाज राखिये, आपकी जय हो, जय हो, जय हो, ऐसा करने से वे कभी प्रभु गुरू की कृपा से अपने नित्य नेम भक्ति भावना से विचलित नहीं होते, रंग चढ़ता वढ़ता ही चला जाता है, नये २ मनमुखी

मतवादी कलिकाली धर्म खंडियों का ज्ञान रूपी लासा, अपने प्रेम भाव रूपी पखौवनि से कदापि नहीं लगने देते, खलों के बचन रूपी फतिङ्गें उन्हकी दृढ़ शान्ति रूपी बिजली की रोशनी पर शिर पटकि २ मर जाते हैं। उसको किञ्चित भी हानि नहीं पहुँचती। प्रभु की कृपा रूपी चिमनी बड़ी मजबूत अभंग श्री वैष्णव धर्म रूपी प्रकाश की सदैव रक्षक है। सर्व सज्जन गृहस्त अपना कल्याण चाहने वाले भाइयों से प्रार्थना है। कि गुरु करना तौ वहुत जरूरी वात है, विना गुरु किये हुये का सर्व शुभ कर्म धर्म

नाशहो जाता है। केवल पापही की मूर्ति वह होता है। उसके हाथ का अन्न विष्टा, जल मूत्र, दूध लोहू के समान लिखा है, इस वास्ते गुरुमुख अवस्य सिघ्रही होना उचित है। तौ गुरु वहुत, शिखा सूत्रादि प्रभु धर्म कर्म हींन अभक्षी चेटकी नेटकी संसार में केवरा के गाछ को नाँई वढ़ते जाते हैं। उन्हसे उपदेश लेने वालों के सर्व शुभ कर्म धर्म सीघ्रही नाश हो जाते हैं। काहे की गुरुकी प्रसादी, चरणामृत, सिष्यको पावना परम धर्म लिखा है। चरण सेवादि सवही व्यवहार करना परता है। इसलिये आपलोग, वढ़ियाँ भजनानन्द ब्राह्मण शरीर विद्यामान, आत्म स्वरूप ज्ञाता, श्री सीताराम जीका दृढ़ उपासक, विरक्त, श्रीवैष्णव धर्मावलम्बी इन्द्री जीत खोजि कर गुरू किया करैं। तौ आमके आम, गुठली के दाम वनें रहैं लोक परलोक दोनों, वर्णाश्रम धर्म कर्मके समेत, भली भाँति वनि जायेंगे निःसन्देह सत्य शिद्धान्त है, पच्छ पात की वात न समुझौ, विचार करो, विलम्ब करने का काम नहीं। शरीर का कौन ठिकाना कव छूटि जायगा। शिघ्र श्री वैष्णव गुरु करि सुन्दर भगवान का वेष तिलक कंठी आदि धरन करो। निर्भय होय मुख से श्री सियाराम सियाराम नाम रटो रटाओ, सन्देह रहित, सव सुख प्रभु प्रसन्नता समेत अवश्य पाओ गे। इस ग्रन्थ का जो पाठ करैंगें, सुनेंगे समुझेंगे प्रचार करेंगे। उन्हपर श्री सीताराम जी महाराज परम प्रसन्न होय, सब दुःखों का नाश करि, लोक में सर्वानन्द देइ रक्षा करेंगे। अपनी तरन तारनी भक्ति, ज्ञान वैराग्यादि दिव्य गुनों के साथ श्री सियाराम नाम में अखंड श्नेह प्रदान करि, अन्त में अपने नगीच परात्पर धाम श्री साकेत में निवास देयँगे। जो धाम देवतों को भी दुर्लभतर है, इति।

॥ शुभ लक्षणावली समाप्त शुभम् ॥
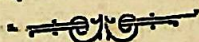
श्री शिव पार्वती सम्बाद।

श्री पार्वती जी बूझती भई, कि हे महाराज आपने हम से नव रसों के भेद भली भांति विलग विलग करि कहे। तिन्ह में पांच रस दास, सख्य–वात्सल्य–शान्ति–शृङ्गार–प्रभु परात्पर श्री सीता राम जी की उपासना के कारण कहे। तिन्हि सब में भी आप बारंबार शृङ्गार रस को रसराज–रस कारण मुख्य प्रधानादि बखान किये, तिस्का भेद कृपा करि कहिये। मेरा सन्देह दहिये।

श्री शिवजी बोले, हे प्रिया तुम बड़ी चतुर हो। अच्छा प्रश्न किया, सुनों सावधान होकर, हम कहते हैं। जिस कारण से श्री शृंङ्गार रस सर्वोत्कृष्ट पद अपने आश्रृतों को देने वाले हैं। इस भेद को सामान्य मनुष्य तथा देवता भी नहीं जानते। जिसपर अह्लादिनी सर्वेश्वरी जगत जननी आद्या शक्ति श्री जानकी जी कृपा करती हैं, सोई जानता है। श्री शृंङ्गार रसका प्रधान भाव प्रभु में पति पत्नी धर्म है, प्राप्ती का अन्तिम दरजा है। पति पत्नी भाव विहीन आत्म समर्पण होती ही नहीं। जिस आत्म निवेदन, विना करोरनि यत्न करने से भी प्रभु प्राप्त अर्थात् यथार्थ रूप से नहीं मिलते, न प्रशन्न होते हैं। पति पत्नी के सदृश 'वे पर्द जीवात्मा प्रभु की सेवा अधिकारिनी नहीं होती, तब तक सुख कहाँ, सर्व रसनि की खानि तथा आचार्य रस विस्तारक पत्नी है। समय समय पर पत्नी में सब रस वर्तमान आय होते हैं, विज्ञजन प्रभु कृपापात्र जानते हैं। जैसे भोजन करवाते समय, पति में पत्नी का वात्सल्य भाव–अर्थात् पुत्रवत दुलार प्यार पूर्वक नाना व्यंजन पवाय पुष्ट करना चाहती है। स्नानादि सेवा तेल लगाना, उबटन करना, धोती अँगौछादि फीचना-सय्या बिछाय सयन कराना, चरण दाब्रना, इत्यादि समय दास रस जानों

कोई प्रकार के उत्सव विवाह यज्ञादि कर्मों में सलाह देना, और अपनी सखी सहेलियों को लेकर पति को सहायता देने समय सख्य रस जानो, पति का मन कोई समय किसी कारण से उद्वेग खेदादि क्रोध के बश होय तौ, मन्द मन्द मुशिक्याती हुई, हाथ धर प्रेम पूर्वक एकान्त ले जाय, ऐसा समझाय देती है, जो एक दम निशोच हो जाता है। उस समय वह पत्नी साक्षात् सान्ति रस का रूपही हो जाती है। सैनेश्च भार्य्या नखसिख से अपने प्राण पति की, पत्नी भोग रूप ही है। इस प्रकार सब रस यथार्थ पत्नी में निवस्ते हैं, और यह पत्नी भाव कोई रस में नहीं जा सकता, कारण पति पत्नी की देह अभेद हो जाती है। परदा कहा भतार से जिन्हि देखी सब देह, इसी वास्ते श्रृङ्गार भाव और रसों में नहीं संघटित हो सक्ता, एक श्रृंगार ही रसकी उपासना करने से सर्व रसों की उपासना आपही हो जाती है, एकै साधे सब सधे सब साधे सब जाँयँ, हे पार्वती, जीवात्मा का सरूप यथार्थ शक्ति का न जान कर ही अन्य अन्य रसों की भावना की जाती है। जब आत्मा अपने स्वरूप को यथार्थ चीन्हेगी, तब सर्व भावों को त्रिण सम त्यागि इन्हीं श्री श्रृङ्गार रस द्वारा इस अन्तिम पति पत्नी असीम सुख की पात्रा प्रभु साथ होगी। जन्मना मरना छूट जायगा। श्रीगार रस अरु श्री सीताराम जी कारण कार्य्य के सदृश अभेद हैं, इस कारण श्रीश्रृँगार सर्वेश्वर प्रधान सर्व रस कारण कहलाते हैं, इस भेद को मैं भली भाँति जानता हूं। श्रृङ्गार रस विना किसी का निर्वाह नहीं जैसे राजा विना प्रजा का निर्वाह नहीं होता। मनुष्य से लेकर देवी देव चेतन मात्र भगवान पर्य्यन्त श्री श्रींगार रसाश्रित हो रहे हैं, विचार करि देखौ, सब कोई अपना २ इष्ट देवतों का पहिले श्रींगार करि लेते हैं, तब दूसरा कार्य करतें हैं। पदत्राण से

लेकर शीस तक के भूषण वस्त्र सर्व श्रृङ्गार ही तो हैं ? प्रत्येक अङ्ग की वस्तु अङ्गों की रक्षक होते हुए भी शोभा बढ़ाने वाली भी होती है। सर्व श्रृङ्गार करि पादत्राण न पहिरै, तौ अशोभित लगैगा, नहाना, तैलादि लगाना, केश वनाना रखाना पान खाना सर्व श्रृङ्गार ही है, इसवास्ते श्रृङ्गार सव के कारण मूल भये इन्ह के विना पशू घोड़ा हाथी ऊँटादि भी अशोभित होते हैं, श्रृङ्गार महा माङ्गलिक पदार्थ हैं, सबके परम उपास्य देवता हैं, जो अपनी अज्ञानता वश श्रृङ्गार को न मानें, तो अपने २ इष्ट देवतनि समेत नग्न अमङ्गलिक रूप से रहा करें अहर्निशि, तब न मानना उचित है। परन्तु हो नहीं सक्ता, श्रृङ्गार के आश्रित अवश्य होना ही परेगा, हो ही रहे हैं, हे प्रिये जव स्वयं भगवान ही का श्रृङ्गार विना निर्वाह नहीं, तव इतर जीवों की कथाही क्या है ? श्रृङ्गार ही करि के भक्त भगवान की पूजा प्रतिष्ठा आदर भाव भक्ती करते हैं, सर्व लोकों में श्रृङ्गार ही करि प्रभु की शोभा गाई जाती है। लीला स्वरूप अथवा आर्चा विग्रह वा साक्षात सर्व श्रृङ्गार हीन असोभित से भासते हैं, औ पहिचान भी नहीं होती है। खंडित औ नग्न मूर्ती को पंडित अशुभ अमंग-लीक बखान करते हैं, इससे सिद्ध भया, कि प्रभु के मांगलीक विग्रह के भी मांगलीक श्रृङ्गार ही ठहरे। इस लिये प्रभु मूर्ती के भी साक्षातकार कर्ता, श्री शृङ्गार ही कारण हैं। मूल हैं, प्रधान हैं, मुख्य हैं श्रींगार ही के आधीन प्रभु समेत अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड के जड़ चैतन्य सर्व जीव हो रहे हैं। जड़ों में भी वृक्षों की पत्ती फूल फल श्रीङ्गार ही हैं, पक्षियों के भी पंख चोंचादि श्रीङ्गारही हैं, नंगे रहने वालों के भी केस भौहें पपनी नाक कान शरीर में सर्व अङ्ग श्रींगार हीं हैं, एकहू अङ्ग भङ्ग होय तौ अशोभित और अप्रिय भसता है। इसलिये हे प्यारी श्री श्रृङ्गार विना आत्मा परमात्मा

कोई का निर्वाह नहीं है, नहीं है। हे प्यारी इस बात को मैंने करोरों वर्ष भजन करि प्रभु की कृपा से जाना है, बिना श्री शृङ्गार रसका आश्रय लिये किसी का कल्यान नहीं नहीं, प्रथम मैं भी इस भेद को न जानि कर बहुत भाँति प्रभु आराधन किया। परन्तु कुछ सुख न भया। तब श्री राम नाम को सर्व साधनों से श्रेष्ठ फल प्रदजानि दिव्य सहस्र वर्ष तेलवद्धार रटन किया, तिन्हिके प्रभाव से श्री रामजी महाराज मुझे अति दुर्बल शरीर खेद खिन्न मन से दर्शन दिये। मैं बूझा कि हे दीनबन्धु यह दशा क्यों हो रही है, महाराज ने कृपा करि कहा, कि तुम मेरी प्राप्ती के लिये अनेक साधन किये, मेरा नाम भी रटे, परन्तु मेरी महाशक्ति अहलादिनी शृङ्गार मूर्ति श्री जानकी जी के विहीन होने से मैं अशोभित असमर्थ और असक्त हूँ। कुछ कर नहीं सक्ता, इस वास्ते तुम उन्ह के शरण होउ, तो मैं तुम्हें सर्व सुख प्रद होऊँ इतना कहि अन्त र्धान हो गये, तब मैं नाम रटते हुये, श्री जानकी जी का आराधन शृंगार भाव समेत किया, शीघ्र श्री जानकी जी हृष्ट पुष्ट श्री राम जी समेत दरशन दिये। तब कृतकृत्य हो श्री जानकी स्तवराज से स्तुति किया। करोरों वर्ष के श्रम का सुन्दर फल पाय परम सुखी भया हूं। अब यह निश्चय करि चुका हूँ। कि अखिल ब्रह्माण्डेश्वरी कर्ता, भर्ता, हर्ता, सर्व शक्ति धाम, स्वतन्त्र बिलासिनी अहलादिनी, उभय विभूति नायका, हमहिं आदि सर्व देव औ दनुज ईश्वर अवतारादिकों को, अपनी आज्ञा में बर्तानेवालीं, उत्पन्न करने वालीं, परम कृपा खानि श्री शृंगार रस की एक अद्भुत अनूप मधुर मनोहर मूर्ति श्री जानकी जी, श्री राम परब्रह्म को रमाने वाली हैं। अखिल ब्रह्माण्ड जड़ चेतन रचना उन्ह का खेल है, भृकुटी विलास हैं, कार्य कारिणी माया रुख लखि छन छन बनाती और बिगारती रहती है, अनन्त कोटि जीवात्मा इसमें काम करने

वाली हैं, सो सर्व श्री जानकी जी की ही शक्ति सखी सरूपा हैं, नाना तनु धरि खेल दिखाय रहीं हैं। इस सुख के भोक्ता, महा पुरुष एक श्री राम जी हैं। दूसरा कोई पुरुष नहीं, त्रिपाद विभूति से लेकर अनन्त ब्रह्माण्ड श्रीजानकी जी की शक्ति सरूप तथा भोग रूप हैं। पुरुष केवल श्री रामही हैं। सो भी श्री सर्वेश्वरी श्री जानकी जी के इच्छावर्ती तदाधीन हैं। श्रीजानकीजीके विना किसी जीवात्मा को अपनी तथा जीव आत्मा की यथार्थ इच्छानुसार मिलि मिलाय नहीं सक्ते। न कोई भक्तों के मनोर्थ पुराय सक्ते हैं। आचार्येश्वरी श्री जानकी जी के साथ आराधन करने से प्रभु सर्व सामर्थ युक्त सर्व सुख प्रद होते हैं। इस वास्ते हे देवी तुम्ह तौ स्वयं शक्ति रूपा हौ, श्री जानकी जी को अपनी स्वामीनी, और श्री राम जी को स्वामी मानि, पति पत्नी सखी भाव से सेवा किया करो, हम भी ये रुद्र शरीर से श्री जानकी जी की आज्ञानुसार संसार का संहारादि काम करते हैं। आत्म स्वरूप से सुसीला नामकी सखी हो हमेशाँ श्री सरकार की परात्पर श्री साकेत धाम गोलोक श्री कनक महल में उन्ह की रुचि अनु कूल सम्यक प्रकार की खास सेवा करि अकथनीय आनन्द लूटते हैं। जिन्हि पर श्रीजानकी जी की परम निर्हेतुकी कृपा होती है। सोई जीव मिथ्या वाशुदेव वत् नरत्व स्थूल देहाभिमान त्रिण सम त्यागि सब सखी सरूप आत्मा का बोध पाय श्री शृङ्गार रस द्वारा पति पत्नी मधुर अन्तिम भाव रसिक रसाचार्यों से सेवा सम्बन्धादि पंच संसकार स्वीकार करि श्री युगल सर्कार की यह देव दुर्लभ महली सेवा में प्राप्त हो आवा गमनादि जन्म मरन के घोर दुख ते छूटि हम सबके समान अखंड परमानन्द कों पाय परम सुखी होते हैं। हे प्रिया हम त्रिदेवादि, देवता; नारदादि रिषी मुनि ईश्वरावतार सब कोई निज पर स्वरूप ग्याता आचार्य इस स्थूल शरीर से नैमित्य

लीला में सेव्य, सेवक, सख्य वातसल्यादि का प्रभु की इच्छानुकूल काम देते हुये भी नित्य अपने सखी सरूप से नित्य साकेत विमल त्रिगुना तीता तीत अखंड विहार श्री सीता राम जी महाराज के में स सेवा उपस्थित रहते हैं। यह सुख प्राकृत जीव देह धन विद्यादि अभिमानी अग्यानियों को अति दुर्लभ तर है। मैंने तुम्हारे बूझने पर पात्रा जानि गुप्त से गुप्त रहस्य कह सुनाया, सबसे कहने योग्य नहीं, विमुखी सुनेंगे भी तो अबोध कन्या, रानीत्व, अमृत तुल्य भोजन रोगी की नांई, स्वीकार न करेंगे, ताते उन्हते कहना न कहना समान हीं है, ऊषर में बरषाना है। हे गिरिजा यह सुख मैं श्री सियाराम नाम रटि पाया है। सत्य कहता हूं, जो कोई इस सुख का इच्छा करै, सो कोई उत्तम श्री वैशनवाचार्य से पंच संसकार कराय खूब श्री सियाराम नाम रटै रटावै, सो अवश्य अपने मनोर्थ को पावेगा। ये श्री सिया नाम सँग श्रीराम नाम रटने से सर्व सुखों की प्राप्ती शीघ्र नामानुरागियों को होती है। ये बात सब कोई नहीं जानते, इसी कारण नाम रटते हुये भी सुख नहीं होता। हे देवी तुम्ह श्री सिया राम रटा करो, अरु जय सियाराम जय जय सियाराम यह महली धुनी अपनी सहेलियों के साथ किया करो. बड़ा सुख पावोगी मेरे सदृस। यह श्री सिया राम नाम अरु जय सियराम जय जय जय सियराम धुनि साकेती है। श्री जानकी जी की सखी समाज यही धुनि सुनाय २ युगल सरकार को परम प्रसन्न किया करती हैं, ये धुनी करने वारों तथा श्री सियाराम सियाराम नाम रटने वारों को श्री सिया स्वामिनी जू का वरदान हैं, की जो मेरे श्री सिया नाम समेत श्री राम नाम रटैंगे, ते निसंदेह करोरों महा २ पापों का नाश करि हमको पाय परम प्रसन्न होयेंगे, इतना कहि श्री संकर जी श्री सियाराम नामामृत पान करने लगे। श्री पारबती देवी श्री शंकर-परम श्री रामभक्त के मुखार-

बिन्दसे सुधा सरिस सुखसानी बानी सुनि बारंबार गद गद होती भई,चरणोंमें शीस नवाय हाथ जोरि नम्रता पूर्वक पुनः बोलीं। प्रभु अब एक बात यह और बूझती हूं, कि आप बार बार श्री सिया नाम की महिमा मुझसे कहा करते हैं। और रटते भी रहते हैं। सो श्री सीता नाम और श्री सिया नाम में कितना अन्तर है, कृपा करि यह भी सन्देह दूरि करि दीजिये। श्री शिवजी श्री गिरिजा जी के प्रश्न सुनि बड़े प्रसन्न हो, बोले हे देवी आप बड़ी उपकारिनी हौ, श्री सिया नामको सब कोई नहीं जानते। केवल श्री रघुनाथ जी के जनाये मैं जानता हूं। श्री राम जी श्री सिया नाम का हमेशा जप किया करते हैं। मुझे बड़ी कृपाकरि आपनें श्री रामनाम के साथ जपने को आपही दिया है। तबसे मुझे श्री राम नाम में बड़ा सुख स्वाद मिला है। श्री सिया नाम बड़े मीठे मंजुल, सुलभ, सुखदाई जापकों को हैं। सम्पूर्ण ऋद्धिसिद्धि शुभगुण ज्ञान विद्या विवेकादि के घर, माधूर्य्य रस के भरे खरे असली अनादि प्रभू के परम प्यारे प्राण अधारे हैं। श्रीसीता नाम रूप में, श्री सिया नाम रूप में कुछ भेद नहीं है। इतना समुझौ-जैसे दीपक-दिया-बीज-बिया-पति. पिया तैसे-सीता, सिया एकही है। श्री सीता नाम का मात्रा दीर्घ होने से श्री राम नाम के साथ सिघ्र सुद्ध रूप से चल नहीं सक्ते। सितरम सितरम हो जाते हैं। अरु एकही प्रकार से इन्हका उच्चारण होता है। सीता इति-अरु श्री सिया नाम चारि प्रकार से उच्चारण होते हैं। यथा-सीया-सीय-सिय-सिया, इन्ह नामनि के साथ कितनाहूं कोऊ सिघ्र श्री राम नाम रटैं, अशुद्ध कभी न होवेंगे। और भेद श्री सिया नाम श्रेष्ट होने का यह है। कि श्री जनक सम्बन्ध से श्री जानकी नाम भयो, भूमि से प्रगट ने से भूमिजा नाम परा, श्री मिथिला सम्बन्ध से श्री मैथिली, हलके अग्रभाग सीत द्वारा-सिंहासन उत्पन्न भया-इससे श्री सीता नाम परा, परन्तु यह श्री सिया नाम सिद्धः

स्वरूप अनादि कार्य कारणादि रहित स्वयम् हैं। जैसे श्री राम नाम स्वयम् हैं। और प्रभु के सम्पूर्ण नामों में बड़े हैं, तैसे श्री सिया जू के नामों में श्री सिया नाम बड़े हैं, हे देवि ? यों तो ये दोनोंके अनन्त नाम हैं। कौन हूँ नाम में किसी का मन लगजाय, रटन करै तौ अवश्यही आनन्द पावैगा। परन्तु इन्ह श्री सिया राम नाम को कहीं मनुष्य अपने ही वरषों से बारह वरष हू रटि लेवै, सतगुरु से भेद पाय कर तौ निःशन्देह सम्पूर्ण शिद्धियों का स्वामी बनि जाय, औ श्री सिया राम जी महाराज के उसे दर्शन भी हो जाँयँ। हे प्रिया जो सुख सिद्ध जीवों को श्री सिय राम नाम रटने से होता है। सो अपर साधनों से कोटिनिहूँ जन्म में नहीं हो सक्ता है। परन्तु अधिक रटन करै। कारण यह है। कि जब जीवात्मा चौराशी लाख योनि की लीला समाप्त करि मनुष्य की योनि में जाती है तब गर्भ ही में अधिक प्रार्थना करने पर प्रभु कृपा करि दर्शन देते हैं गर्भ के दुखते छुड़ावते हैं। तब जीवात्मा प्रार्थना करती है। कि हे नाथ अब कब दर्शन दीजियेगा। तब प्रभु कहते हैं, कि अन्तर्यामी रूप से तो मैं तेरे संग सदाही रहूंगा, परन्तु साक्षात् दर्शन तौ जब तू नौ नौका श्री सियाराम नाम रटि पुराय देयगी उसी दिन होगा। फिर कभी वियोग न होगा। इतना कहि प्रभु अन्तर्धान हो जाते भये श्री पारबती जी बूझती भई। कि हे प्रभु नौ नवका मैं नहीं समुझी। श्री शिवजी बोले कि हे देवी मृत्युलोकमें जन्मने वारे मनुष्यों का जीवन स्वासों के आधीन रहता है, स्वासा श्री सियाराम नाम के आधीन राखी हैं। आठ पहर में इक्कीस हजार छःसौ वार स्वभाविक शरीरों से निकलते औ प्रवेश करते हैं, स्वास स्वास पर एक एक नाम प्रभु ने मनुष्यमात्र पर दंड राखा है। इस ऋण के न देने से ही जीवात्मा प्रभु से विमुख हो चौराशी लाख योनियों में चली जाती है। बड़े दुख पाती है। आन युगों में तो बड़ी बड़ी

आयु होती हैं। परन्तु कलियुग में सवा सौ वर्ष की आयू होने से इस ऋणि से सिघ्रही छुटकारा पाय जीवात्मा प्रभु को प्राप्त हो जा सक्ती है। केवल नौ नवका नामही रटने से-नव नवका यह है- यथा निन्यान्नव्वे करोड़-निन्यान्नव्वे लाख-निन्यान्नव्वे हजार-नवसौ निन्यान्नव्वे-९९९९९९९९ नव नव के अङ्कों का इकट्ठा हो जानाही नव नौका भये, हे देवी यही नव नौका कहलाते हैं। इतना नाम रटे विना जीवात्मा मानव तन पाकर प्रभु प्रति करार किये हुए ऋणते उऋण नहीं होती, उऋण भये विना कल्याण नहीं होता जब इस बात का सतसंग द्वारा ज्ञान होता है। तब नाम रटने की क्षुधा बढ़ती है। उसे फिर यही सूझता है। कि कैसे नव नौका नाम सिघ्र पुराय प्रभु दर्शन पाऊँ। यही खोज में दिन रात वह आत्मा रहती है, नाम जापकों से भेद पाय अखंड श्री सियाराम नाम रटना रूढ़ हो जाती है। हिम्मत बाँध कर खूब लय लगाय रटने से एक घण्टा में दश हजार सियाराम नाम होते हैं, एक लाख नित्य रटने से मनुष्यों के वर्षों से २८ वर्ष में नौ नौका नाम पूरेंगे नव वर्ष पूरेंगे तब दृश्य पदार्थों से विमल वैराग्य होगा, निज पर स्वरूप जानने वाला दिव्य विवेक विचार होगा, हृदय में अनुभव विद्या का परम प्रकाश होगा। आश्चर्य जन्य बानी में अकथ कथने की सक्ती होगी। दूसरा भाग पुराने पर अठारहवें वर्ष में निर्विघ्न लोक मान्य पदवी होगी, देवतों के सदृश प्रभाव होगा, मनुष्य पना निवृत्य हो जायगा, सर्व सिद्धियों का स्वामीत्व होगा, बचन उसका वेद प्रमाणों की नाँई माननीयँ होगा, दीर्घायू होगा, सर्व पाप छय हो जाँयेंगे, पुनः तीसरे भाग पूराने पर २८ वर्ष में तौ वह जीवात्मा, श्री सियाराम जी के सदृश प्रतापवान हो जायगी। हे शिवे मैं सत्यासी सहस्र वर्ष की समाधी लगाय, यही श्री सियाराम नाम का अखंड रटि स्वाद लिया करता हूं। यद्यपि श्री सियाराम जी

महाराज को प्राप्त होने के अमित उपाय हैं। और अमित उनके नाम हैं। परन्तु हे अनघे ? मैं वारम्वार तुमसे सत्य सत्य कहता हूं। मेरे तौ प्राण अधार ध्येय, धारणा, इष्ट, उपाय, सर्वश्व श्री शृङ्गार रसोत्तम जी की भावना समेत श्री सियाराम नाम महाराजा धिराज हैं। हे प्यारी, बरानने बोलो, अपनी सहेलियों के साथ जय सियराम जय जय सियराम जय सियराम जय जय सियराम यह ध्वनि आरंभ कराय श्री सङ्कर जी पुनः श्री सियाराम नामा मृत पान करने लगे। श्री पार्वती जी, यह अपूर्व प्रसंग श्री सिव जी से सुनि गुनि धारण करि महा मोद पाय श्री शिव भक्तराज जी की अस्तुति करि वारम्बार चरणो पर शिर रखती भई। तबसे उनकी आज्ञानुकूल श्री श्रींगार रसोत्तम की भावना समेत श्री सियाराम नाम की रटन धुनि अपनी सहचरीं दुर्गा देवियों समेत अखंड काशी कैलासादि निज स्थलों में करने लगीं। इति

दोहा।

उमा शंभु संवाद यह, सुनि गुनि करि विश्वास।
धारहिं उर ते पावहीं, सिय पिय महल सुखाश ॥१॥
भाविक भाव विचारहीं, करहिं कुतर्की तर्क।
भाविक भगवानहिं लहैं, रहैं कुतर्की फर्क ॥२॥

जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

प्रभु सेवा में बत्तिस अपराध।

प्रभु सेवा, ये बत्तिस अपराध बराय के पूजकनि-कों कर्तब्य है यथा—

❀ दोहा ❀

कहौं सुनहु बत्तीस जो, सेवा में अपराध।
सेवक ते प्रभु के निकट, होत सु महा असाध॥
१ २ ३
प्रभुढिग हँसे ठठाय अरु, भोजन करै कि सयन।
४ ५ ६
रोवै तजै कि पवन अध, बोले मिथ्या बयन॥
७ ८
संसकार के हीन तनु, कुसमय सेवा ठान।
९
पाणि पाद धोये विना, मन्दिर करै पयान॥
१० ११
मंत्रनि विनु पूजा करै, विधि विहीन अस्नान।
१२
प्रभु सन्मुख चाखे विना, अशन धरै अज्ञान॥
१३ १४
निरस बस्तु अर्पै प्रभुहिं, अकि विनु छानो नीर।
१५ १६
बैठे पाँव पसारि कै, प्रौढ़ासन प्रभु तीर॥

१७ १८
जाय इष्ट ढिग अमल करि, पहिरि अशुचि पट अङ्ग ।
१९
मनमानी सेवा करै, करि श्रुति आज्ञा भंग ॥
२०
भोग मन्त्र मुद्रा सु बिनु, प्रभुनि लगावै भोग ।
२१ २२ २३
खाँसै अकि छींकै निकट, परसैं प्रभुहिं सरोग ॥
२४
बैठे अकि ठाढ़ो रहै, असावधान दै पीठि ।
२५
निरखैअकिप्रभुसुछबितजि, औरनि तन दै दीठि ॥
२६ २७
अभय रहै प्रभुते सदा, सेवा करै सकाम ।
२८ २९
सुनै न चरित स्वइष्ट के, रटै न नाम ललाम ॥
३०
षट्सम्पति शरणागति, प्रभु सुभाव रस भाव ।
जाने बिनु पूजा करै, सो नर नरकै जाव ॥
३१
धरत न हृदय अनन्य गति, मति भटकत चहुँओर ।
प्रेमलता तेहि लागि प्रभु, द्रवत न वन्दी छोर ॥
३२
प्रभु प्रसाद पावत नहीं, बाँटि सजातिनि संग ।
छिपिछिपि भोगत भाग पर, पोषत आपन अङ्ग ॥
ये बत्तिस अघ दुखद अति, इन्हि समान,बहु पाप ।
होत रहत अनयास नित, जीवनि ते प्रद ताप ॥

अघ बराय निज इष्ट पद, सेइय परम सचेत ।
सन्त सजातिनि संग नित, बहु विधि निवसि निकेत ।।

❀ वार्ता ❀

।। सबते सेवक धर्म कठोरा ।।

जैसे राजा लोगों के सेवक राजा का रुख राखि सुभावानुकूल भय संयुक्त सेवा करते हैं, तिससे अनन्त कोटि विशेष प्रभु सेवा में सावधानता की आवस्यकता है, यद्यपि प्रभु कृपासिन्धु जनके दोष देखते नहीं, तथापि जनों को भी निर्दोष रहि सेवा करनी उचित है । जिस्में सुशील साहब को संकोच न होय, यह प्रार्थना है ।

❀ इति प्रभु सेवा में ३२ अपराध वर्णन समाप्तम् ❀

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ।।
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ।।
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ।।

❀ अथ ❀

सतसंग के ८२ अपराध वर्णन।

❀ वार्ता ❀

सतसंगानुरागी सन्त सज्जनों से प्रार्थना है, कि इन्ह व्याशी अपराधों से बचें, तब सतसंग को अपूर्वानन्द हृदय में प्रकाशित होयगा, सतसङ्ग करते जन्म बीत जाता है। परन्तु जसका तस हृदय वना रहता है। कुछ भी कथादि वक्ताओं की विमल बात का असर छू नहीं जाता, तिस्का येही व्यासी अपराध कारण है। लिखा है, कि एक घरी, अरु आधी में भी आध घरी जो सतसंग हो जाय, तौ कोटिन अघ अपराध नाश हो जाते हैं, सतसंग का वड़ा प्रभाव है, परतु निर्दोष होय तौ, इसलिये सतसंग करने वाले सज्जनों को अवश्य नीचे लिखे इन्ह व्यासी अपराधों को जानि त्यागनों उचित है यथा—

❀ छन्द ❀

१ २ ३ ४ ५ ६
कपट दम्भ पाखण्ड कुमति ईषा अभिमाना।
७ ८ ९ १० ११
काम क्रोध मद लोभ अजित इन्द्री अज्ञाना॥
१२ १३ १४ १५ १६
चञ्चलमन उर गर्व कथैनिज सुनैं न आना।
१७
सन्तसंग में बैठि बुद्धि चहुँदिशि दौराना॥१॥

१८
सतसँग सेवा भजन करत अति आलस आवै ।
१९
निन्दा अस्तुति सुनत हर्ष दुख हृदय बढ़ावै ।
२० २१ २२
द्विविधा उर पर आश संग कुमतिन को भावै ।
२३ २४
बिनु श्रद्धा फल चाह करै कटु वचन सुनावै ॥२॥
२५ २६ २७ २८
लोकलाज व्योहार विषय तृष्णा सन्सारी ।
२९ ३० ३१ ३२ ३३
मोह मान कुलअहं अधिक निरखै परनारी ॥
३४
त्यागि इष्ट विस्वास हृदय लोलुपता धारी ।
३५
शृष्टिहिं लखै न एक ब्रह्ममय अति अविचारी ॥३॥
३६ ३७
कामिन कौ सतसंग तत्व प्रभुको नहिं जानै ।
३८
परम गुप्त गुरु शब्द पाइ जहँ तहाँ बखानै ॥
३९ ४०
पढ़ि सुनि तजै सुसंग आपु कहँ पण्डित मानै ।
४१
रटै न सीताराम मन्मुखी निज हठ ठानै ॥४॥
४२
पहिरि फकीरी वेष करै जीवनि की आशा ।
याचत पेट खलाय कहावत सियबर दासा ॥
वृथा बितावत बयस ऐस बिनु रञ्च न त्रासा ।
४३
भूला आतम रूप मौत निज फिरै हुलाशा ॥५॥

सियबिनु सुमिरै[४४] राम अमल[४५] छकि ध्यान लगावै ।
नाम रटत कदराय[४६] उदर भरि[४७] भोजन खावै ॥
लिखि पढ़ि ठानै बाद[४८] जगत सों नेह[४९] बढ़ावै ।
करनी करै मलीन[५०] ढोंग रचि सुबुध कहावै ॥६॥
दिनसोवै[५१] निशि खाय[५२] अनछनो[५३] पीवै पानी ।
रामचरित[५४] तजि सुनै लाइ मन विषय कहानी ॥
हिन्सानिरत[५५] मलीन बुद्धि भोगन में सानी[५६] ।
सेवत विविधि कुदेव[५७] छाँड़ि सियबर अज्ञानी ॥७॥
प्रभुसन करै दुराव[५८] गुरू कहँ मानुष[५९] जानैं ।
भक्ति करै विनु भाव[६०] सन्त की जाति[६१] बखानैं ॥
श्री प्रसाद[६२] कहँ अन्न मंत्र कहँ न्यून[६३] प्रमानैं ।
चरणोदक[६४] जलभाव मुर्ति महँ जड़[६५] बुधि आनैं ॥८॥
वैष्णव वेष बनाय पुजावत जग में देही ।
शिशनोदर[६६] के दास कहावत राम सनेही ॥
कथै सदा परदोष[६७] तोष विनु याचत[६८] गेही ।
वेश्या बञ्चक भाँड़ भाटवत जानो तेही ॥९॥

६९
श्री सियराम उपासक होकर जगते जाँचै ।
७०
विना वोध वैराग मूढ़ मरकट ज्यों नाँचै ॥
रटत न सीताराम जरत कामादिक आँचै
७१
विमुख सन्त गुरु संग मोद उर केहि बिधि माँचै ॥१०॥
७२
दाम .चाम सों प्रीति रीति की बात न भावै ।
७३
धनिकन को सनमान दीन को आँख दिखावै ॥
७४
मन वच. कर्म मलीन आपु शुभ ग्यान बतावै ।
७५
पर निन्दा अपवाद निरत नित रारि बढ़ावै ॥११॥
७६ ७७ ७८
धर्म हींन निर्दया कुतर्की शङ्काकारी ।
७९ ८० ८१ ८२
अविवेकी उन्मत्त प्रमादी इच्छाचारी ॥
ये व्यासी अपराध महाठग दुर्जय भारी ।
प्रेमलता तजि बेगि भजन सँग सम्पति हारी ॥१२॥

॥ कुण्डलिया ॥

व्यासी ठग मोटे बिकट, भजन वित्त हरि लेत ।
प्रभुसन विमुख कराय सठ, लख चौराशी देत ॥
लख चौराशी देत यतन करि तजिये प्यारे ।
रटिये श्री सियराम नाम होइ जग ते न्यारे ॥
पैहौ परमानन्द परम तब शुभ गति खासी ।
प्रेमलता सतसङ्ग भजन सुख हर अघ व्यासी ॥१॥

इति सतसङ्ग के व्यासी अपराध वर्णनम् ।

अथ दश नामापराध वर्णन ।

❀ वार्ता ❀

श्री सीताराम तथा श्री सियाराम युगल नाम जापकनि कों यद्यपि दश नामापराध नहीं स्पर्श करते, तथापि नामानुरागी भाई जो श्री नाम महाराज से सर्बानन्द चाहते हैं, दोनों लोकों में, सो अवश्य ये दुखदाई दश अपराधों को वराय नामामृत पान करैं, रटैं, रटावैं, इन्ह दश अपराधों के संयुक्त जो नाम रटते हैं, उन्हको कभी नाम रटने का सुख, स्वाद, सिद्धि, प्राप्त न होगा, इस लिये नीचे लिखे दश नामापराधों को भली भाँति बिचारि त्यागैं, तब नाम रटन रस पागैं, अरु जो निरापराध रटने वारे नामानुरागी सज्जन हैं, उन्हकी सेवा सतसंग करि सम्पूर्ण नाम रटने के भेद भाव बूझ लेंइँ, मनमुखता त्यागि देइँ, इन्ह दश नामापराधों समेत तव देखो, नाम रटने में कैसा अपूर्वानन्द सुख स्वाद मिलता है।

❀ इति प्रार्थना ❀

॥ दोहा ॥

दश नामापराध जो, नारद प्रति सनकादि ।
कहे कहत सो सुनहु अब, प्रेमलता जन आदि ॥१॥

साधू निन्दा प्रथम अघ, प्रेमलता जिय जानि ।
रूषि जाँयँ सियराम अरु, होय सकल हित हानि ॥२॥

सन्त निन्दकी जीव जो, प्रेमलता अघ रूप ।
ज्ञान ध्यान सेवौ करत, अवसि परै भव कूप ॥३॥

निन्दा तो सबकी तजै, प्रेमलता मति धीर।
द्रवै पराई पीर लखि, रटै सिया रघुबीर ॥४॥
ईश्वर देव शिवादि जो, प्रभु सम कहै बखानि।
प्रेमलता अपराध सो, कठिन दूसरो जानि ॥५॥
प्रभु ईशन के ईश जो, सीता पति सुखकन्द।
तिन्हकी उपमा योग को, प्रेमलता मति मन्द ॥६॥
तीसर यह अपराध अति, प्रेमलता दुख धाम।
सुनि गुनि नाम महात्म्य जो, रटत न तजि छल काम ॥७॥
नाना संशय तर्क करि, देत सुजन्म नशाय।
रटत न सीताराम सठ, प्रेमलतहि गति दाय ॥८॥
चौथ महा अपराध यह, करहिं नाम बल पाप।
प्रेमलता दोउ लोक अति, उपजावत परिताप ॥९॥
करत नामबल पाप जो, प्रभुहिं खिझावन हेत।
प्रेमलता सो मन्द मति, इन्द्रिनि विवश अचेत ॥१०॥
पञ्चम यह अपराध सुनु, प्रेमलता धरि ध्यान।
साधन नाम समान कलि, गति प्रद कहत अयान ॥११॥
धर्म कर्म साधन अमित, होहिं कि नाम समान।
प्रेमलता मुद मोद प्रद, नाम सकल सुख खान ॥१२॥
अष्टम अति अपराध सुनु, प्रेमलता मति धीर।
जानि जानि जो करत अघ, सो पावत भव भीर ॥१३॥
जानि २ अघ करत जो, ग्रसित मोह मद व्याल।
प्रेमलता सो अधम अति, उबरु न काहू काल ॥१४॥
सप्तम सतगुरु देव की, करै अवज्ञा मूढ़।
प्रेमलता लखि दीन जो, देत सु तत्व निगूढ़ ॥१५॥

कह्यो श्रवण लगि नाम रटु, सतगुरु दीन दयाल।
प्रेमलता सो त्यागि सठ, बहुरि पर्‍यो जग जाल ॥१६॥
अष्टम वेद पुराण कर, सार भागवत धर्म।
धारन करत न मोह वश, जपत नाम युत भर्म ॥१७॥
शुभ उपदेश न सुनत सठ, मन मुख भ्रष्टाचर्ण।
प्रेमलता केहि भांति सो, पावहि भगवत शर्ण ॥१८॥
नवम महा अपराध सुनु, प्रेमलता तजि वाद।
रटत नाम त्यागत नहीं, आलस नींद प्रमाद ॥१९॥
आशावध उन्मत्त अति, तजत न मोह विकार।
प्रेमलता परपञ्च युत, रटत नाम अविचार ॥२०॥
दशम घोर अपराध यह, प्रेमलता प्रद क्लेश।
इच्छा विनु जो लोभ बश, करत नाम उपदेश ॥२१॥
अधिकारी विनु देत जो, नाम परत्व सु गूढ़।
प्रेमलता लालच विवश, अविचारी सो मूढ़ ॥२२॥
यहि विधि दश अपराध विनु, प्रेमलता दिन रात।
रटै नाम घन मोद प्रद, तजि ममता मद जात ॥२३॥
जो कदापि भावी विवश, अपराधौ बनि जाय।
प्रेमलता तौ त्राहि कहि, नामहिं रटें नशाय ॥२४॥
नाम सनेहिन की करै, सेवा भाव बढ़ाय।
प्रेमलता मन क्रम वचन, रटै नाम लय लाय ॥२५॥
सीता संयुत राम जो, रटत सन्त जन कोय।
दश नामापराध तेहि, प्रेमलता नहिं होय ॥२६॥

॥ इति दश नामापराध वर्णनम् सुभम् ॥

अथ

दंडवत विधि लिख्यते ।

दोहा

नाशा, उर, कर युगल अरु, उभय जानु, दोउ पाद ।
अष्ट अङ्ग धरि भूमि नति, करै हरै उन्माद ॥१॥
नाशा, दोउ, कर, जानु, पद, सप्त अङ्ग महि लाय ।
बैठि करै नति इष्ट ढिग, प्रेमलता अघ जाय ॥२॥
अथवा मन, शिर, नयन, ते, इष्टहिं नवे बिशेष ।
प्रेमलता प्रभु भाव बस, राम ब्रह्म सीतेश ॥३॥
जनते चहत न कबहुँ कछु, कृपासिन्धु सियराम ।
सेवक रुख जुगवत रहहिं उलटौ पूरण काम ॥४॥

इति दण्डवत विधि ।

अथ द्वादश तिलक विधि ।

दोहा

प्रथम ललाट, सु कण्ठ, उर, नाभि, कुच्छि, दोउ ओर ।
आदि अन्त युग पृष्ठ पर, चारि भुजनि चितचोर ॥१॥

इति तिलक विधि ।

श्री सीतारामजी के चरण चिन्ह वर्णन

छन्द ।

छत्र १ कमल २ जव ३ अङ्कुश ४ पवि ५ शर ६ शक्ति ७ सर्प ८ स्यन्दन ९ अभिराम । हल १० मूशल ११ यमदण्ड १२ कोणखट १३ स्वतिकरेखा १४ ऊर्ध १५ ललाम ।। केतु १६ चक्र १७ तरु १८ मुकुट १९ सिंहासन २० चामर २१ अम्बर २२ पुरुष १३ सुमाल २४ दक्षिण पद श्रीराम चन्द्र के प्रेमलता ये चिन्ह रसाल ।।१।। शंख १ जम्बुफल २ कलश ३ पताका ४ बीण ५ चन्द्रिका ६ धनु ७ तूणीर अर्धचन्द्र ९ भुवि १० हंस ११ वेणु १२ वर गदा १३ मत्स्य १४ श्री १५ सरयू नीर १६ ।। पूर्णचन्द्र १७ अग्निकुण्ड १८ सुत्रिवली १९ बिन्दु २० जीव २१ गोपद २२ त्रयकोन २३ ।। अष्टकोन २४ सिय चरण चिन्ह ये प्रेमलता धनि जाने जोन ।। २ ।।

दोहा ।

चरण चिन्ह करु चिन्तवन, रटिये मुख सियराम ।
श्रवण कथा सेवा करन, प्रेम सु लता ललाम ।।१।।

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम ध्वनि प्रचारक
श्री वैष्णव धर्मावलम्वी परमहंस श्री १०८ श्री
सियालाल शरणजी महाराज उपनाम श्री
प्रेमलता जू कृत चरण चिन्हादि
वर्णन समाप्तः ।। शुभम् ।।

क्रमते प्रसंगों के नामादि बर्णन

दोहा ।

गुरुप्रसंग(१) पुनि नामकर,(२) बहुरिरूप(३) कर जोय ।
पुनि लीला(४) श्रीधाम(५) पुनि, श्री उपासना(६) होय ॥१॥
बहुरि उपासक(७) सप्तमा, संसकार,(८) पुनि पाँच ।
अष्टजाम(९) सरनागती,(१०) दसम हरन भव आँच ॥२॥
खट संपत्ति सुग्यारहवाँ, सब प्रकार प्रद छेम ।
बहुरि बारवाँ सुखद अति, भक्ति प्रार्थना प्रेम ॥३॥
त्रय दसवाँ सुप्रसंग सुचि, प्रश्नोत्तर अभिराम ।
अन्तिम ज्ञान प्रसंग पुनि, चतुर दसो सुख धाम ॥४॥

सोरठा ।

दश, अरु चारि प्रसंग, विरचेउ श्री सियराम रति ।
समुझत ग्यान पतंग, उगय जाय तम तोंम फटि ॥१॥
पाठ प्रसंगनि केर, फेर फार जो करहिं जन ।
तिन्हि कहँ पातक ढेर, लागहिं भाखों सबहिं सन ॥२॥

दोहा ।

अर्थ भाव जाने विना, पलटहिं पाठ अयान ।
अबुधनि करहिं प्रबोध ते, भाखि आन की आन ॥१॥
वैश्नव रसिक उपासक, पुनि अनन्य सियराम ।
भजनानन्द सु अनुभवी, बीतराग गुन ग्राम ॥२॥

नाम रूप लीलादि के, ज्ञाता भले प्रकार।
स्वादी दम्पति केलिके, जो मन वानी पार ॥ ३ ॥
वासी श्री साकेत के, जहँ श्रुति सास्त्र पुरान।
पढ़े काम आवत नहीं, केवलि केलि प्रधान ॥ ४ ॥
अवलोकहिं वसि धामसो, सियबर सँग बसुजाम।
धारि सखी सुचि रूप तहँ, पुरुषनि कर नहिं काम ॥ ५ ॥
तिन्हि की वानी अगम अति, यद्यपि सरल यथार्थ।
पर परमारथ रस भरी, रहित विषय सुख स्वार्थ ॥ ६ ॥
समुझहिं किमि जो लोक सुख, रते पंच मद मान।
भूले आतम रूप निज, पढ़ि श्रुति शास्त्र पुरान ॥ ७ ॥
झगरहिं नाना अर्थ करि, पलटहिं ग्रन्थनि पाठ।
समुझाये समुझैं न जिमि, नवत न उकठा काठ ॥ ८ ॥
वैश्नव वेष सु धारि अँग, प्रभु प्रतिकूल कुकर्म।
करत स्वार्थ लगित्यागि निज, सुचि श्री वैश्नव धर्म ॥ ९ ॥
श्री वैश्नव पर धर्म महँ, लागत दाग निहारि।
सिखवै कोउ तिन्हि तासु सँग, ठानत उलटी रारि ॥१०॥
तिन्हिके मैं बंदौं चरन, जानि स्व भ्रात अबोध।
पढ़ि सुनि गुनि यह ग्रन्थ मम, समुझौ करहु न क्रोध ॥११॥
सुचि संतनि ते विनय यह, अबुधनि देउ सुग्यान।
जेहि ते वैश्नव धर्म की, निंदा सुने न कान ॥१२॥
जो हम करहिं न, निन्दित, प्रभु प्रतिकूल कुकर्म।
तौ किमि निंदहिं लोग जग, यह श्री वैश्नव धर्म ॥१३॥
येक करत सब लाजहीं, संत सचेत सुजान।
तेहि लगि करहुं सु प्रार्थना, अबुधनि दीजै ग्यान ॥१४॥

आश्रित मैं मन बचन क्रम, श्री वैश्नव कुल केर।
अनुचित लखि हित की कही, मानिये निज जन हेर ॥१५॥

ज्यों की त्यों बरनन करी, आँखिनि देखी रीति।
पढ़ौ कढ़ौ संसार ते, रटि सियराम सप्रीति ॥१६॥

श्रीसियराम नामाष्टक लिख्यते।

जप तप संयम नेम अपारनि किये कठिन व्रत तीरथ धाम।
नृत्य गान विग्यान ध्यान बहु करि देखे अभ्यास तमाम॥
दान धर्म सुभ कर्म कमाई करि २ त्रितयो जन्म ललाम।
प्रेमलता पै सब विधि पाये सबते अच्छे जय सियराम ॥१॥

मीन बराह कमठ नरहरि वलि वामन राम कृष्ण घनस्याम।
बौध कलंकी व्यास पृथ्थु हरि हंस मन्वंतरि हयग्रिव नाम॥
यग्यरिषभ ध्रू धेनु धन्वंतरि वद्री कपिल सनक जित काम।
प्रेमलता पै सब विधि पाये सब ते अच्छे जय सियराम ॥२॥

सेतुवंध रामेश्वर त्रप्री लछिमन बाला जी सरनाम।
श्री जगदीश्वर पूजनीयँ जग गंगा सागर सम्भल ग्राम॥
पसुपति शंकर मुक्ति नरायन श्रीरण छोर द्वारिका धाम।
प्रेमलता पै सब बिधि पाये सब ते अच्छे जय सियराम ॥३॥

तप्त कुण्ड गंगोत्तरि धारा हरिद्वार केदार ललाम।
मान सरोवर पंपासर श्री लछिमन झूला कठिन सुठाम॥
गिरि सुमेर कैलास हिमाचल विंध्याचल आदिक अभिराम।
प्रेमलता पै सब बिधि पाये सब ते अच्छे जय सियराम ॥४॥

कासी पुरी अयोध्या मिथिला मथुरा चित्रकूट प्रदकाम।
रामराज श्री विष्णु क्रांची पद्मनाभ उज्जैन ललाम॥

निमिसारन्य सुकुरूक्षेत्र कल गोदावरी हरन अघ धाम।
प्रेमलता पै सब बिधि पाये सब ते अच्छे जय सियराम ॥५॥

मंदोदरी अहिल्या कुंती द्रौपदि तारा आदि सु बाम।
कामधेनु सुर भोग कल्पतरु सुखद पदारथ अपर तमाम॥
ब्रह्मलोक वैकुण्ठ अमरपुर आँनँद मय गावत श्रुतिसाम।
प्रेमलता पै सब विधि पाये सब ते अच्छे जय सियराम ॥६॥

जोग साधना जादू टोंना मौन तपस्या बन आराम।
रबि शसि ग्रहा नक्षत्र लगन दिन निगमागम बुध जन विश्राम॥
भूत प्रेत सुर साधु सिद्ध मुनि देखेउ विधि सिधि विद्या धाम।
प्रेमलता पै सब विधि पाये सबते अच्छे जय सियराम ॥७॥

सैव सात्त वैश्नव संन्यासी खट दरसन अवधूत अठाम।
मतवादी वहु वेष संप्रदा देखेउ मारग दाहिन बाम॥
कर्म उपासन ग्यान कांड तिहुँ किरियाँ करतव किय बसुजाम।
प्रेमलता पै सब विधि पाये सबते अच्छे जय सियराम ॥८॥

दोहा।

अष्टक श्रीं सियराम कर, पढ़ि सुनि समुझहिं जोय।
श्री सियराम सुनाम महँ, दृढ़ सनेह तेहि होय ॥१॥

इति श्री जय सियराम जय जय सियराम नाम धुनि प्रचारक श्री
बैश्नव धर्मावलंबी परमहंस श्री १०८ श्री सियालाल शरण-
जी महाराज उपनाम श्री प्रेमलताजू कृत अन्तिम
ग्यान चतुर्दसो प्रसंग सुभम् भूयात्
श्री सीताराम नामा-
र्पण मस्तू।

आरती

आरति करिय हरषि सुखदाई ।

कलि मल समन दमन भव रुज सब
भक्त जनन सुर तरु अमराई ॥१॥

अधम उधारन कलुष विदारन
महिमा अमित तिलोकनि छाई ।

विमुखनि करि सनमुख प्रभु पथ पर
हठि २ धरि २ देत चढ़ाई ॥२॥

श्री सियराम विलास रास रस
प्रगटावत उर मोह नसाई ।

तारन तरन करन मुद मंगल
हरन अमंगल दुख दुविधाई ॥३॥

विविधि भाव अनुराग भक्ति की
सुर सरिता जग दीन बहाई ।

श्री उपासना रहस ग्रन्थ कलि
प्रगटि सुप्रभुता अकथ दिखाई ॥४॥

छाइ रही ध्वनि अखिल धरातल
कैसी यह अद्भुत कविताई ।

यक यक अक्षर ब्रह्म वधादिक
नाशक पाप प्रपंचनि भाई ॥५॥

वैश्नव कुल कर परम सहायक
धर्म कर्म सव देत बुझाई ।
पाँचौ रस के रसिकनि सुखप्रद
शृङ्गारिनि कहँ पै अधिकाई ॥६।
पढ़त सुनत समुझत यहि उर जन
पैहहिं गति मति रति भ्रमजाई ।
मधुर लता गुरु पद सु प्रेम दृढ़
माँगति देहु नाशि मलिनाई ॥७॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥
जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

जय सियराम जय जय सियराम ।
जय सियराम जय जय सियराम ॥

परमहंस श्री सिया लाल शरणजी महाराज

उपनाम 'श्री प्रेमलता' कृत

पुस्तकों की सूची